रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड-2

رامائن والمیکی

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

लेखक
सुमेर चन्द

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ९०१ (उ.प्र.)

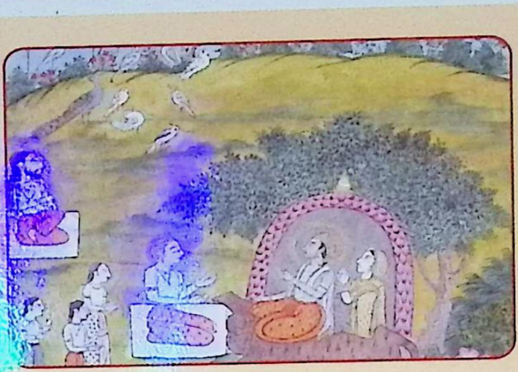

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

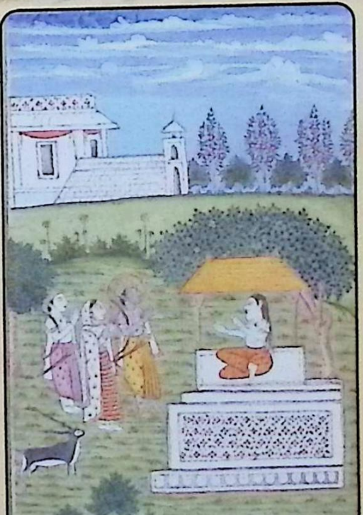

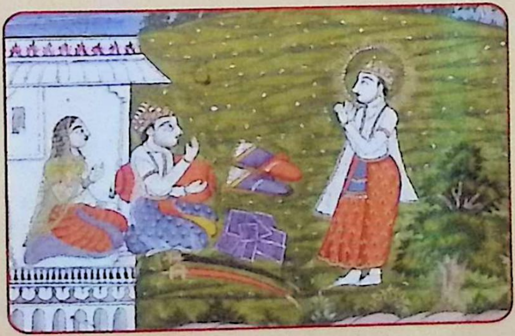

रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड द्वितीय
(पृष्ठ ३५४ से ५१७ तक)

رامائن (والمیکی)

लेखक
सुमेर चन्द

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
एवं
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ६०१ (उ.प्र.)

© रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, (उत्तर प्रदेश)

पुस्तक का नाम : रामायण (वाल्मीकि) खण्ड द्वितीय
लेखक : सुमेर चन्द
अनुवाद एवं सम्पादन : प्रो०शाह अब्दुस्सलाम
डॉ० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी
प्रतियाँ : 1000
मूल्य : ₹ 5000/- प्रति सेट (३ खण्ड)

प्रकाशक : विशेष कार्याधिकारी
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी,
रामपुर (उत्तर प्रदेश)

मुद्रक : डायमंड प्रिंटर्स, नई दिल्ली-११०००२

Name of the Book : **RAMAYAN (Valmiki) Vol. II**
Name of Author : **Sumair Chand**
Annotated & Translated by : Prof. Shah Abdus Salam
& (Late) Dr. W. H. Siddiqui

Published by : O.S.D. Rampur Raza Library,
Rampur (U.P.)

Printed by : Diamond Printers, New Delhi-110002

Price : **₹ 5000/- per set(in 3 Vol.)**

Rampur Raza Library
Hamid Manzil, Rampur-244901 (U.P.)

Phone Library : 0595-2325045, 2327244
0595-2325346
Fax : 0595-2340548
Website : www.razalibrary.com
Email : osdrampurrazalibrary@gmail.com

रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड द्वितीय

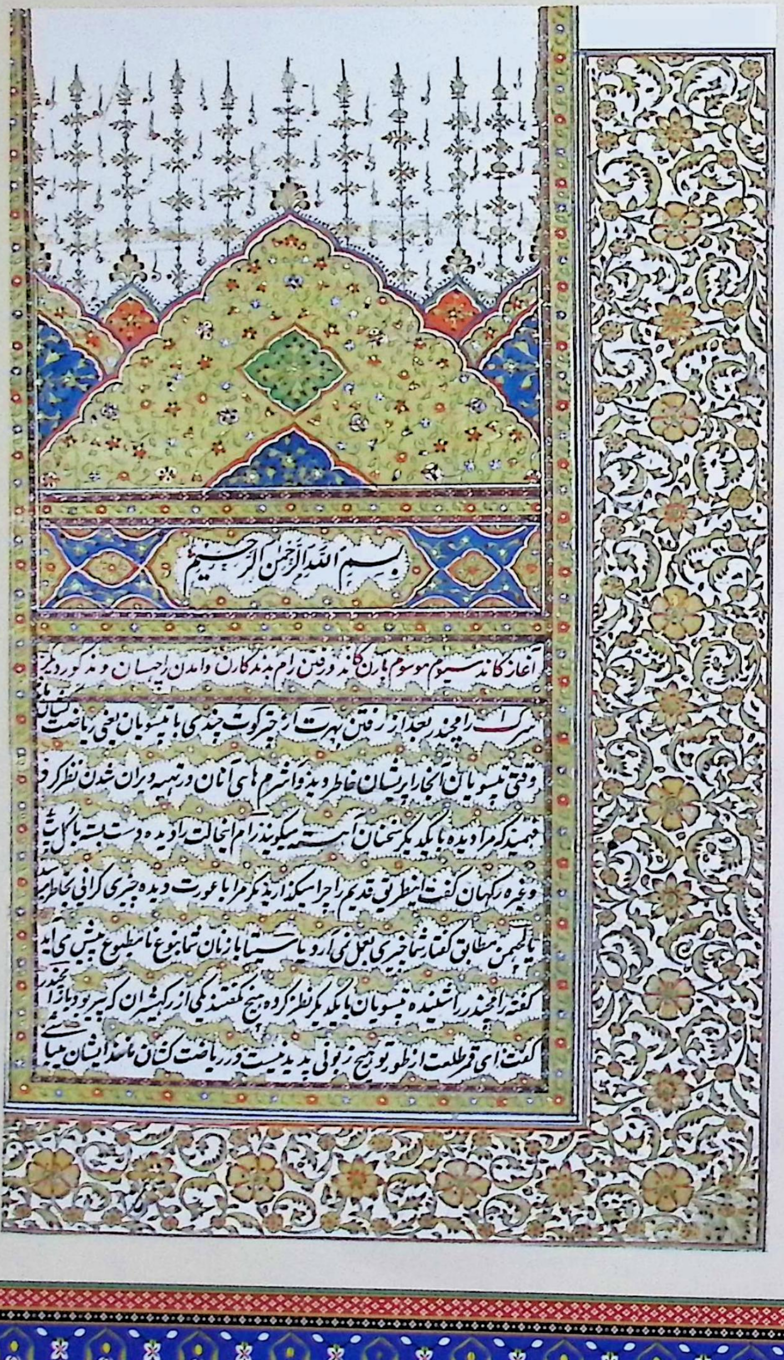

بسم الله الرحمن الرحیم

آغاز کاند سیوم موسوم بارن کاند در رفتن رام بدندکارن و آمدن راچهسان و ند کور دیگر

سرگ ا رامچندر بعد از رفتن بهرت از چترکوت چندی با تپسویان یعنی ریاضت کشان

وقتی تپسویان آنجا را پریشان خاطر دیده و از شرم های آنان در تهیه ویران شدن نظر کرد

فهمید که مرا دیده با یکدیگر سخنان آهسته میگویند رام این حالت را دیده دست بسته با کل ایشان

و غیره رکهان گفت این طریق قدیم را چرا بگذارید مگر مرا با عورت دیده چیزی گرانی بخاطر رسید

یا لچهمن مطابق گفتار شما چیزی بعمل نمی آرد یا سیتا با زبان شما بنوع نامطبوع پیش می آید

گفته رامچندر را شنیده تپسویان با یکدیگر نظر کرده هیچ نگفتند یکی از رکهیشران که پیر بود باز رامچندر

گفت ای قمر طلعت از طور تو هیچ زبونی پدید نیست در ریاضت کشان مانند ایشان میباشی

आरंभ करता हूँ मैं उस परमात्मा के नाम
से जो बड़ा दयालु और कृपालु है

तृतीय काण्ड

अरण्यकाण्ड

राम के दण्डकारण्य जाने, राक्षसों के आने और अन्य घटनाओं का वर्णन

भरत के चित्रकूट से जाने के पश्चात् रामचन्द्र कुछ समय तक तपस्वियों के साथ तपस्या करते रहे। एक दिन उन्होंने वहाँ के तपस्या करने वालों को चिन्तित देखा और वहाँ के आश्रमों तथा चरागाहों का उजड़ा होना अनुभव किया। उन्होंने अनुभव किया कि यह लोग मुझे देखकर आपस में एक दूसरे से मध्यम स्वर में बातें कर रहे हैं। राम ने यह स्थिति देखकर बड़े ही सम्मान से कुलपति आदि ऋषियों से कहा ''आप लोग अपनी प्राचीन विधि क्यों छोड़ रहे हैं ?संभवतः मुझे स्त्री के साथ देखकर आप लोगों को कुछ कठिनाई हो रही है या फिर लक्ष्मण आप लोगों की इच्छानुसार कोई कार्य नहीं कर पा रहे हैं, अथवा सीता आप लोगों की स्त्रियों के साथ असामान्य रूप से व्यवहार कर रही है।'' रामचन्द्र की बात सुनकर तपस्वियों ने एक दूसरे को देखा परन्तु कुछ नहीं बोले। उनमें से एक जो वृद्ध था उसने रामचन्द्र से कहा हे चाँद तारे ! ''तुम्हारे आचार, व्यवहार में कोई दोष विद्यमान नहीं है। तुम तपस्या करने वालों में उन्हीं की भाँति रहते हो

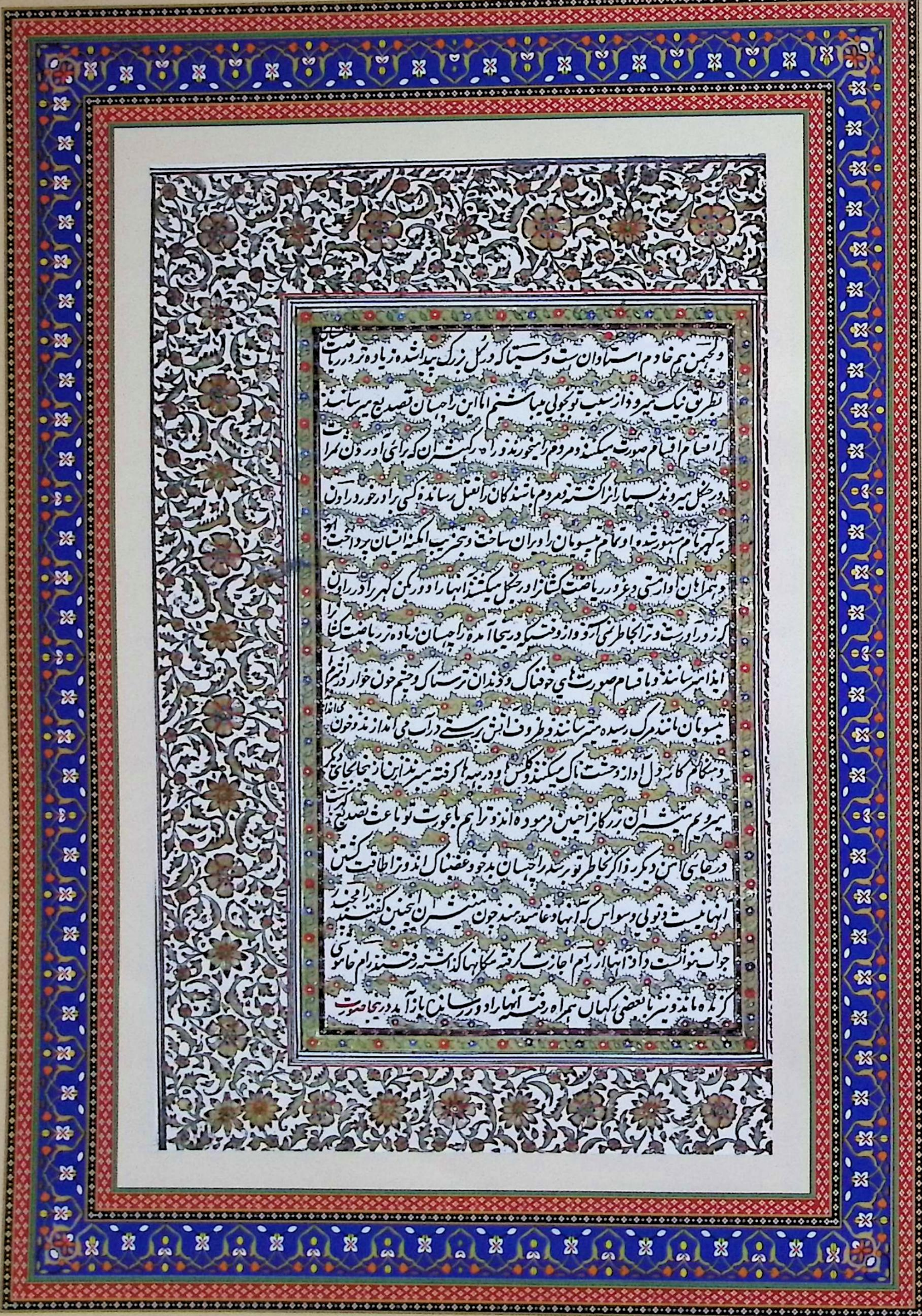

وهمچنین هم خادم استاد ان است و سیتا که در گل زرگ پیدا شده زیاده تر در ریاضت
بطریق نیک میرود از سبب تو بخوبی میباشیم اما این راچهسان قصد تصدیع میرسانند
را اقسام اقسام صورت میکنند و مردم را میخورند و رهگیران که برای آوردن ثمرات
در جنگل میروند بسیار از آنها کشته و مردم باشندگان را بقتل رسانده کسی را در خورد راون
به کهر نام مشهور شده او تمام پیسومان را ویران ساخت و بتخریب الکمه انسان پرداخت او
و همراهان او از مستی و غرور در ریاضت کشان او در جنگل میکشند آنها را دور کن کهر را در راون
را زور آورست و ترا بخاطر نمی آرد و از وقتیکه درینجا آمده راچهسان زیاده تر ریاضت کنان را
ایذا میرسانند و باقسام صورتهای خوفناک و دندان ترسناک و چشم خون خوار در آشرم
پیسومان مانند مرگ رسیده میرسانند و ظروف آتش پرستی در آب می اندازند و خون
و هنگام کار دل آزار وحشتناک میکنند و گلس ها و در بیشه ها گرفته میبرند این از ینجا بجای دیگر
میرویم بیشتران بزرگان از چنین فرموده اند و ترا هم باعورت تو باعث تصدیع
در جای این دیگر را اگر بخاطر تو برسد راچهسان بدخو و غضبناک اند و ترا طاقت کشتن
آنها نیست و تولی و سواس که آنها دغا میدهند چون بیشتران اینچنین گفتند رامچند را
جواب نتوانست داد آنها از رام اجازت گرفته مکانها گذاشته رفتند رام خاموش
گردیده ماند و نیز با بعضی رکهان همراه رفته آنها را در رسانیده باز آمد درینجا صورت

और लक्ष्मण भी गुरुओं का सेवक है, तथा सीता जो कुल वंश में उत्पन्न हुई हैं अधिकांश तपस्या में श्रेष्ठ मार्ग पर चल रही है। आपके साथ हम लोग सुख शान्ति के साथ रहते हैं। परन्तु ये राक्षस कष्ट पहुँचाते हैं जो नाना प्रकार का रूप धारण करते हैं और मानवों को खा जाते हैं। और जो रखशीर फल लाने वन जाते हैं उनमें से अधिकांश का उन्होंने वध कर दिया है।

उन्होंने वहाँ पर रहने वाले मानवों को मृत्युलोक पहुँचा दिया है। रावण का कोई अनुज भ्राता है जो खर के नाम से प्रसिद्ध है उसने समस्त तपस्या करने वालों को नष्ट कर दिया है और उनके घरों को भी नष्ट कर रहा है। वह और उसके साथी आमोद और घमण्ड के नशे में मस्त तपस्या करने वालों का वध कर रहे हैं, उनको दूर भगाइये। रावण का भाई खर शक्तिशाली और बलशाली है तथा वह आपको भी कुछ नहीं समझता। जबसे वह यहाँ आया है राक्षस अधिकांशतः तपस्या करने वालों को यातना दे रहे हैं। विभिन्न प्रकार के भयानक रूप बनाकर दांत निकालकर भयानक आँखों के साथ तपस्या करने वालों के आश्रम में मौत की भाँति पहुँचकर डराते हैं। अग्नि, पूजा के बर्तनों को पानी में फेंक देते हैं और खून बहाते हैं। कार्य के समय भयानक आवाज़ निकालते हैं और कलस दरबा उठा ले जाते हैं। इसीलिये हम यहाँ से दूसरे स्थान पर जा रहे हैं। मुनीश्वरों ने बड़ों को यही आदेश दिया है और आपके लिये भी खर आपकी पत्नी सहित कष्ट का कारण है। आप भी शान्ति वाले किसी स्थान पर चले जाइये यदि आप चाहें। राक्षस बुरे आचरण वाले और क्रोधी हैं और आप में इनको मारने की शक्ति नहीं है। आपको इसकी आशंका नहीं है कि वह धोखा देंगे"। जब मुनीश्वरों ने यह बात कही तो रामचन्द्र उत्तर नहीं दे सके। वे सब राम से अनुमति लेकर अपना घर छोड़कर अन्यत्र चले गये। राम चुपचाप वहीं रहे और कुछ ऋषियों के साथ जाकर उनको दूर तक पहुँचाकर पुनः आ गये।

چترکوٹ و پرن شالا رام و صورت رام و سیتا و صورت منیشران و طاؤس و دیگر

جانوران

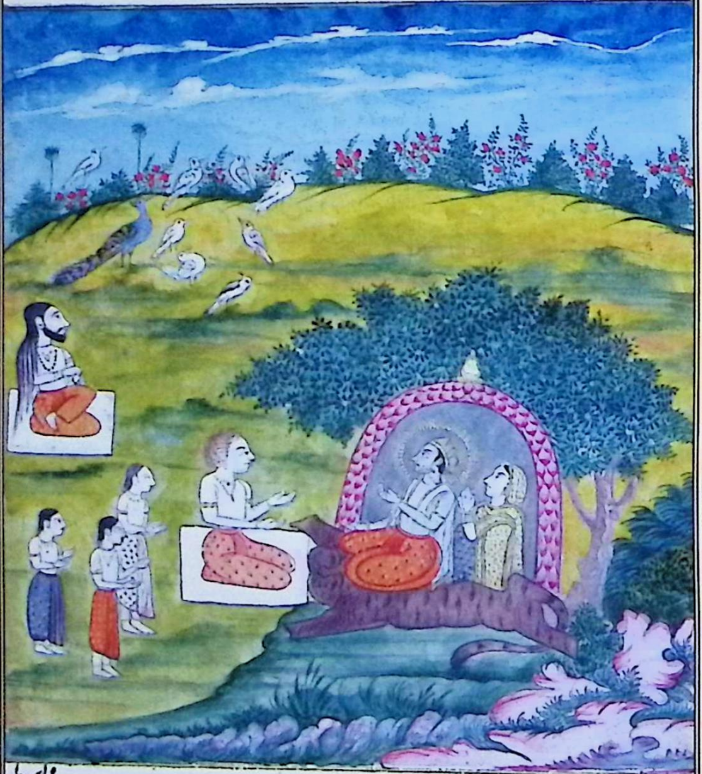

واسطه

سرگ کوچ رام از چترکوٹ بعد رفتن منیشران رامچندر را هم بودن آنجا خوش نیامد بچند

اول اینکه بهرت اینجا را دیده و مادران هم درینجا رسیدند شاید که مرا یاد کرده باز درینجا آیند

و اینمکان آب را فیلان وغیره خراب میکنند و دیگر اسکی لچهمن را هم بی رکهان اینمکان

فوش

चित्रकूट और राम की पर्णशाला (कुटिया) का चित्र। राम और सीता का चित्र। मुनीश्वरों की यात्रा और मोर आदि जानवरों का चित्र।

सर्ग–२

राम का चित्रकूट से प्रस्थान

मुनीश्वरों के जाने के बाद रामचन्द्र को भी वहाँ रहना कई कारणों से सुखद और अच्छा नहीं लगा। प्रथम यह कि भरत ने यह जगह देख ली थी और माताएँ भी यहाँ पहुँच गयी थीं। उन्होंने सोचा कि मुझे याद करके वे लोग पुनः यहाँ आए और इस स्थान को और यहाँ के जल को हाथी आदि नष्ट करें। दूसरे यह कि लक्ष्मण को भी ऋषियों के बिना यह स्थान अच्छा नहीं लग रहा है,

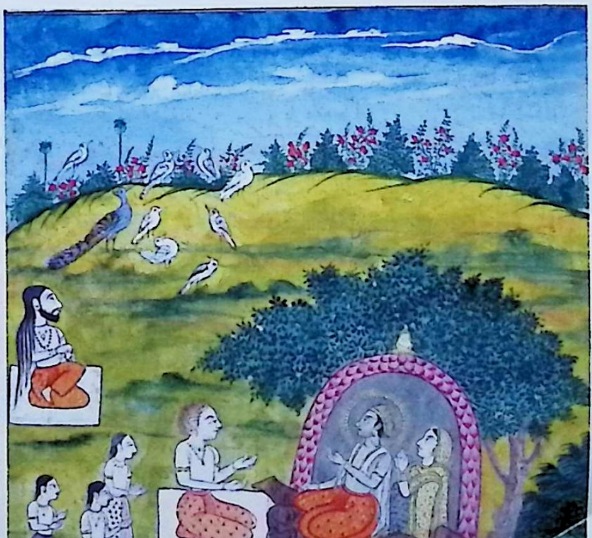

خوشش نمی آید و سیتا هم بودن اینجا نمیخواهد پس بهتر آنکه بجایی دیگر رویم رامچندر
این سخن بخاطر کرده از انجا برخاست و بآشرم آن رکهه رفت و سیتا و لچهمن را
همراه گرفت در انجا رسیده نمسکار نمودند و او مانند پدر بر ایشان شفقت و مهربانی
فرمود و انسویا عورت او که بریاضت پیر و صاف دل شده بود تسلی و دلاسا نمود
و بر سیتا بآیین نیک مهربانی کرد بعد ازان آترمن گفت ای رام این انسویا
از طریق تپ و ریاضت تا ده هزار سال تپ کلان کرده این بجایی مادرست و وقتی
تا ده سال قحط افتاد و باران نبارید تمام لوک سوختن گرفت این انسویا ثمرات
و اشجار و مول شکل گنگا گشته از خود آفرید و وقتی این انسویا برای کار دیوتاها
ده شب را یکشب نمود لهذا ازین همگنان قابل نمسکار است اینکه خالی از غصه است
و ستی است سیتا را نزد این بفرست چون آترمن چنین گفت رامچندر قبول کرد
به سیتا گفت که فرموده رکهه شنیدی حالا زود نزد انسویا برو سیتا بپاس خاطر رام
بسرعت تمام نزد انسویا رفت دید که زنی پیر شکسته حال افتاده و موی سر سفید گشته
و از ضعف مانند کدلی کالبد میلرزد و سیتا او را نمسکار کرده گفت من میتهلی ام یعنی دختر
راجه میتهل یعنی جنک ام و او خیریت و تندرستی ازو پرسید و گفت ای سیتا ترا
طالعمند و دهرم چارنی دیدم که آسایش راج و بزرگی اقبال را گذاشته همراهی رام گرفتی

और सीता भी यहाँ नहीं रहना चाहती। अतः उचित यही है कि हम दूसरे स्थान पर चले जाये। रामचन्द्र मन में यह बात सोचकर वहाँ से उठे और उस ऋषि के आश्रम में गये। सीता और लक्ष्मण को साथ लिया और वहाँ पहुँचकर नमस्कार किया। उसने पिता की भाँति इन लोगों को आशीर्वाद दिया। उसकी पत्नी अनसूया ने जो तपस्या के कारण बूढ़ी और सुहृदय हो चुकी थी सान्त्वना और ढाढ़स बँधायी तथा सीता पर भली प्रकार दया की। उसके पश्चात् आर्यमन ने कहा ''हे राम ! इस अनसूया ने तपस्या और तप के रूप में दस हजार वर्ष तक कठिन तप किया है यह तुम्हारी माता के समान हैं। किसी समय में दस वर्ष तक अकाल पड़ा था और वर्षा नहीं हुई थी, समस्त लोक जलने लगे थे, तो इस अनसूया ने फल और वृक्ष गंगा की भाँति स्वयं से उत्पन्न किया। एक बार अनसूया ने देवताओं के कार्य के लिये दस रातों को एक रात बना दिया। अतः हम सबकी ओर से ये आदर पाने योग्य हैं। यह जो क्रोध से रहित है और सती है, सीता को उनके पास भेजो। जब आर्यमन ने यह कहा तो रामचन्द्र ने उसकी बात मानते हुए सीता से कहा कि तुमने ऋषि का आदेश सुना।' अब शीघ्रता से अनसूया के पास जाओ। सीता राम की सेवा व प्रसन्नता के लिये शीघ्रता से अनसूया के पास गई। उन्होंने देखा कि एक बुढ़िया अत्यन्त दयनीय दशा में पड़ी हुई है। उसके सिर के बाल सफेद हो चुके है और दुर्बलता के कारण कुंडली कदली वृक्ष की भाँति काँप रही है। सीता ने उसको नमस्कार करते हुए कहा ''मैं मैथली हूँ अर्थात् राजा मैथिल की पुत्री अर्थात् जनक की पुत्री हूँ।'' उसने उनसे कुशल क्षेम और स्वास्थ्य के विषय में जानकारी ली और कहा- ''हे सीता ! मैंने तुम्हें सौभाग्यवती और धर्म परायण देखा कि तुमने राज्य का सुख चैन समस्त सुविधाएँ, सम्मान, आदर, और उच्च स्थान छोड़कर राम की संगति स्वीकार की।

مانند روهنی که با ماه باشد شوهر خود را خواه در شهر باشد خواه در صحرا بد طینت
یا پاکباز آنان که دوست دارند پیوسته بسرگ روند شوهر خواه بی شعور باشد
خواه مغلوب شهوت خواه بی زر عورات را بجائی بجائی خداوند هست بهتر از
شوهر هیچکس بزرگی دهندهٔ زن نیست تو ریاضت بزرگ نمودی جشن و دهرم
خواهی یافت و مثل تو عورتان مانند نیکوکاران بسرگ میروند سیتا خوشوقت
شده در جواب گفت از تو این عجب نیست که میفرمائی من هم همین میدانم که همیشه
مرا پیر و مرشد شوهر است اگر مفلس باشد و یا نادان چه جائی آنکه هنرمند و معزز و مشفق
و مسخر الحواس و کم خواهش و دهرماتما و عزیز باشد و چنانچه کوشلا مادر خود را میخواهد
همچنان مادران دیگر را میخواهد در آمدن این جنگل مخوف از سبب او دلم ایمن است
انچه هنگام دست گرفتن در ازدواج حضور آتش و گروها انچه پدر گفته مرا خاطر نشین است
و آن اینست که بغیر خدمت شوهر عورات را هیچ ریاضت بالاتر نیست و ساوتری
از خدمت شوهر که ستت ونتا نام داشت بسرگ رفت راقم ترجمه گوید این مقدمه در
پرب مهابهارت مذکور است و ارندهتی از خدمت شوهر که بسشت باشد
بسرگ رفته اند و روهنی بی ماه یک لمحه هم نمیماند انسویا این را شنیده خوشدل شد
گردیده سر سیتا بوسید و گفت این سخن لایق تست و بر تو مهربان هستم بفرما چکنم که تو

रोहिणी की भाँति जो चन्द्रमा के साथ रहती है, जो स्त्रियाँ अपने पतियों की चाहे नगर में हो या वन में या गलत रास्ते पर हों, चाहे पवित्र हों मित्र मानती हैं और पसन्द करती हैं, वे सदा स्वर्ग में जाती हैं पति चाहे मूर्ख हो या काम वासना से ग्रसित हो या निर्धन हो वह स्त्रियों के लिये ईश्वर के स्थान पर होता है। पति से अच्छा कोई व्यक्ति स्त्री को वरीयता देने वाला नहीं है तुमने बड़ी तपस्या की है तुम धर्म पाओगी और तुम जैसी स्त्रियाँ अच्छे लोगों की भाँति स्वर्ग में जाती हैं। सीता ने प्रसन्न होकर उत्तर में कहा ''आपकी ओर से यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है जो आप कह रही है। मैं भी यही समझती हूँ कि मेरे लिए मेरे पति ही धर्म गुरू हैं। चाहे वह निर्धन हों या अबोध हों, चाहे वह गुणी हो आदरणीय हों प्रिय हों इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाले हों या इच्छाएँ कम रखने वाले और धर्मात्मा प्रिय हों। जैसे वह अपनी माँ कौशल्या को चाहते हैं, इसी प्रकार अन्य माताओं को भी चाहते हैं। इस भयानक वन में आने के सम्बन्ध में उनके कारण मेरा मन सुरक्षित एवं सन्तुष्ट है। विवाह में अग्नि और गुरुओं के सामने हाथ पकड़ते समय मेरे पिता ने जो कुछ कहा था वह मुझे आज भी भली प्रकार याद है। वह यह है कि बिना पति की सेवा किये स्त्रियों के लिए कोई भी तपस्या महान नहीं है। सावित्री पति सत्यवान की सेवा के कारण स्वर्ग में गई। अनुवादक कहता है कि यह मुकदमा महाभारत के अरण्य पर्व में उल्लिखित है और अरुन्धती अपने पति वशिष्ठ की सेवा के कारण स्वर्ग में गई। रोहिणी बिना चन्द्रमा के एक पल भी नहीं रहती है।'' अनसूया ने यह सुनकर प्रसन्न होकर सीता के मस्तक को चूमा और कहा यह बात तुम्हारे ही योग्य है मैं तुम पर दयावान हूँ।

نیم و تب مرا هست هرچه خواهی بخواه سیتا گفت چون تو بر من مهربان هستی
همه کردی انسویا از خرمی گفت مالا ردب و اسواب و پیرایه‌ها و انگ راگ بلیپن
یعنی بخوشبوی که بر تن بمالند از من بگیر که بسبب اینها خالی از پیرایه‌ها حسن و خوبی خواهند ماند
هرگاه انگ راگ بر تن ضماد کنی مانند لچهمن بستن زیب آور خواهی گشت سیتا آن اسواب و انگ راگ

و پیرایه‌ها و مالا از شادی بگرفت در اینجا صورت آشرم اتر من رکهه و صورت انسویا پیرزن
زوجه او و صورت سیتا با پیرایه‌ها و انگ راگ و مالا و ردب بخشیده انسویا و صورت رام و لچهمن

و صورت آهوان و طایران و درختان

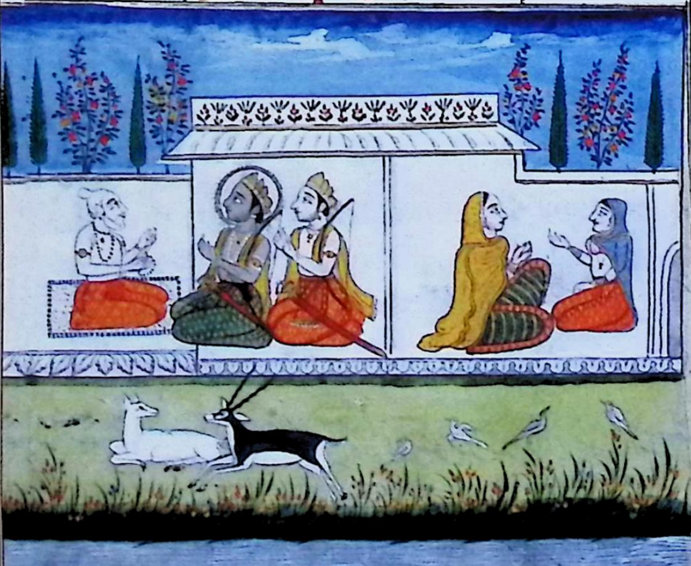

क्योंकि मुझमें तप और तपस्या का बल है जो चाहो माँगो।" सीता ने कहा आप जब मुझ पर दयालु हैं तो जैसे आपने सब कुछ कर दिया। अनसूया ने प्रसन्नता से कहा मालारदब असवा, वस्त्र और सुगन्ध जो कि शरीर पर मलते हैं मुझसे ले लो कि इनके कारण से वस्त्रों से रहित होकर भी सौन्दर्य और गुण शेष रहेंगे। जैसे ही तुम सुगन्ध शरीर पर लगाओगी लक्ष्मी और विष्णु की भाँति सुन्दर हो जाओगी। सीता ने वह सामान, सुगन्ध कपड़े, माला प्रसन्नता से ले लिया।

अत्रि ऋषि के आश्रम का चित्र- उसकी पत्नी बूढ़ी अनसूया का चित्र- अनसूया का सीता को दिये हुए वस्त्र, सुगन्ध और माला का चित्र, राम व लक्ष्मण और हिरन, पक्षी और वृक्षों का चित्र।

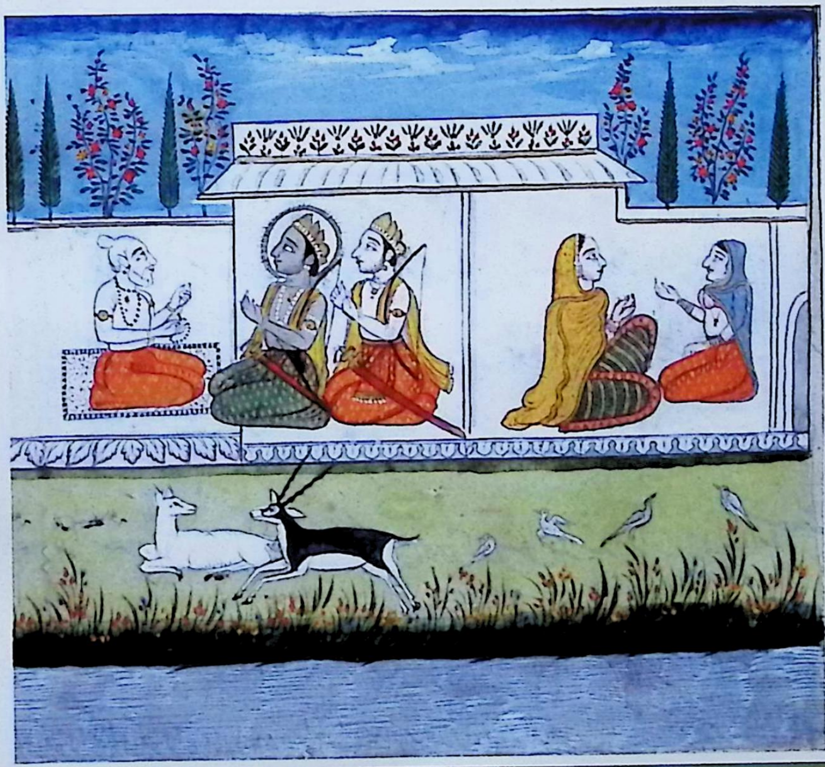

سرک گفتار سیتا سیتا بخشش انسویا را گرفته دست بسته بخدمت ایستاده بود
که آن پیرزن از سیتا سخن آغاز کرد که در سیمبر تو هنگام انعقاد اینعقد راجه‌ها آمدند
با رامچندر چگونه پیوند شد این را شنیدن آرزو دارم بنوعیکه بوده است بگو سیتا
گفت که راجه شهر متهلا جنک نام پدر من از چهتر دهرم و عدالت راج میکرد او
با عورت خود دهرم ستکار میکرد و عجائب تماشا نظر نمود که مینکا نام اپسرا بصورت
خوب در هوا میرود و هر ده طرف را روشن ساخته راجه او را دیده مغلوب شهوت
گشت مانند کسان او را عقل دور کننده جبر پیدا شد و نطفه او بر افتاد و بخاطر کرد
که اگر از مینکا و از من فرزندی پیدا شود بمن که بی اولادم عین عنایت ایزدی شود
ناگاه از غیب آوازی بزبان انسانیه در آمد که ترا دختری پیدا شود بحسن و خوبی آراسته
وقتی قلبه رانی بنمود ناگاه از جائی که از نوک نوع زمین شکافته بود بحضور او ارض را
سوراخ کرده من پیدا آمدم راجه جنک مراد دیده تعجب نمود و عورت از محبت خاک آلود مرا
در کنار گرفت و گفت که این دختر منست و بر آسمان نقاره‌ها نواختند و گلها بر زمین
انداختند و آوازی از غیب آمد که این دختر از مینکا پیدا شده و این بفنون آراسته
خواهد شد چون هنگام قلبه رانی از زمین بر آمدم به سیتا نام شهرت یافتم پس از آن راجه
نذو جناو چون پدر و مادر براحت تمام پرورش دادند چون بالغ شدم برای دادن من

بشوهر

सर्ग-३

सीता की वार्ता

सीता अनसूया का उपहार लिये हुए करबद्ध उसकी सेवा में खड़ी थी तभी इस वृद्धा स्त्री ने सीता से इस प्रकार वार्ता आरंभ की कि "तुम्हारे विवाह के समय स्वयंवर में इतने अधिक राजा आये थे, रामचन्द्र से कैसे सम्बन्ध हुआ, मैं यह सुनना चाहती हूँ, जिस प्रकार यह घटना घटित हुई बताओ।" सीता ने कहा कि "नगर के राजा और मेरे पिता मिथलाजनक नामी धर्म और न्याय के साथ शासन करते थे। एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ धार्मिक स्थान में व्यस्त थे कि कदाचित उन्होंने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा। देखा कि मेनका नामक अप्सरा अच्छी और सुन्दर रूप में, वायु चल रही है और अट्ठारह दिशाओं को प्रकाशित किये हुए है। राजा इसको देखकर कामवासना से ग्रसित हो गये। लोगों की भाँति उनकी बुद्धि ऐसे समय पर लुप्त हो गई। उनका नुत्फ़ा गिर पड़ा और उन्होंने हृदय में सोचा कि मेनका और मुझसे कोई सन्तान उत्पन्न हो तो यह मुझ पर ईश्वर की महान कृपा होगी। क्योकि मैं निःसन्तान हूँ। अचानक दूसरे लोक से व्यक्त स्त्री की वाणी आयी कि तुम्हारे एक पुत्री उत्पन्न होगी जो सौन्दर्य और गुणों से सुसज्जित होगी। एक दिन वह खेत जोत रहे थे कि हल की नोक से पृथ्वी फाड़कर उनकी सेवा में पृथ्वी में छेद करके मैं उत्पन्न हुई। राजा जनक ने मुझे देखकर आश्चर्य किया और स्त्री ने वात्सल्य वश मिट्टी में सनी हुई मुझको गोद में ले लिया और कहा "यह मेरी पुत्री है।" आकाश पर प्रसन्नता के ढोल बजाये गये पृथ्वी पर पुष्प वर्षा की गई। दूसरे लोक से एक वाणी आयी कि "यह पुत्री मेनका से उत्पन्न हुई है, और यह समस्त कलाओं तथा गुणों से पूर्ण होगी।" चूँकि मैं खेत जोतते समय पृथ्वी से प्रकट हुई थी इसलिये सीता के नाम से प्रसिद्ध हुई। और उसके पश्चात् राजा और उसकी पत्नी ने माता पिता की भाँति सुख सुविधाओं के साथ मेरा पालन पोषण किया। जब मैं वयस्क हुई तो मुझे

بشوهر پدر من متفکر گشت و در تلاش شوهری که بحسن و خوبی و هنر نظیر من باشد
شد ناگاه او را بخاطر رسید که سنبهر این دختر را بنمایم و کمانی که بر آن او را از مهربانی
داده بود و از شخص کم زور کشیدن و زه نمودن آن دشوار مینمود آن را بدین شرط
بر روی کار نهاد که هر راجه که این کمان را برداشته کند و بکشد او شوهر سیتا باشد
سرگ دیگر در گفتار سیتا آن کمان را برای سنبهر نهاده پدر من ایلچیان را برای طلب
راجه ها فرستاد چون آمدند پدر من اعزاز و اکرام شان نمود چون در مکان کمان
رفتند و کمان را دیدند که مانند دست فیل مخوف است همگنان با یکدگر نظر کرده چشم بر زمین
دوختند و طاقت کشیدن آن ندیده برگردیدند پدر مرا بعد رفتن آنها تردد و تفکر
زیاده گشت بعد مدت بسیار این رامچندر بطریق تفرج با لچهمن در آنجا رسید
و مرا هم خوشوقتی در دل حاصل آمد که اگر رامچندر شوهر من شود خوب است القصه رام
نزد پدر من آمده نمسکار کرد چون که نسب اچهواکو برابر نسب پدر من بود او را خیریت
و تندرستی پرسید رامچندر بعد ادای جواب گفت آن کمان را که صدها مردم کشیده
من هم از خوشوقتی آرزوی دیدن و کشیدن میدارم پدرم دست او گرفته در خانه
کمان رفت رامچندر آن کمان را برداشت و بزنگی برکشید که از میان بشکست
از آوازه اش که مانند برق بود بسیار کس بیهوش شده بر زمین افتادند الارلم

पति को सौंपने के लिए मेरे पिता चिन्तित हुए और किसी ऐसे पति की खोज आरंभ कर दी जो सौन्दर्य गुणों में मेरे समान हों। अचानक उनके हृदय में विचार आया कि मैं इस पुत्री का स्वयंवर रचाऊँ और एक धनुष जो वरुण ने उनको अपनी कृपा से दिया था से किसी कमजोर व्यक्ति से खींचना और चिल्ले पर चढ़ाना कठिन प्रतीत होता था उसको इस शर्त पर सामने रखा कि जो राजा उस कमान को उठाकर खींच लेगा वही सीता का पति होगा।

सर्ग–४

सीता की वार्ता के वर्णन में

वह कमान स्वयंवर के लिये रखकर मेरे पिता ने राजाओं को बुलाने के उद्देश्य से दूतों को भेजा। जब वह आए तो मेरे पिता ने उनका आदर सत्कार किया। जब वे लोग कमान के स्थान पर गये और उसको देखा कि हाथी के पाँव के समान भयानक है तो सबने एक दूसरे को देखते हुए अपनी दृष्टि पृथ्वी पर गाड़ दी और उसको खींचने की शक्ति अपने अन्दर न देखकर वापस लौट गये। उनके जाने के पश्चात् मेरे पिता की चिन्ता और दुख बहुत अधिक बढ़ गया। एक लम्बे समय के पश्चात् यह रामचन्द्र भ्रमण करते हुए लक्ष्मण के साथ वहाँ पहुँचे। मुझे भी हृदय में प्रसन्नता हुई। यदि रामचन्द्र मेरे पति बन जाएँ तो अति उत्तम होगा। अन्ततः राम ने मेरे पिता के पास आकर नमस्कार किया। चूँकि इक्ष्वाकु का वंश मेरे पिता के वंश के बराबर था इसलिए उन्होंने उनका कुशलक्षेम पूछा। रामचन्द्र ने उत्तर देने के बाद कहा कि वह कमान जिसे सैकड़ों व्यक्ति खींच चुके हैं मैं भी प्रसन्नता से उसे देखने और खींचने की इच्छा रखता हूँ। मेरे पिता उनका हाथ पकड़कर कमान वाले घर में ले गये। रामचन्द्र ने वह कमान उठा ली और इस प्रकार खींचा कि वह बीच से टूट गयी। उसकी ध्वनि से जो बिजली के समान थी बहुत से लोग मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

قبت شد

و لچهمن و پدر من چون راجه جنک آن زور و قوت معائنه نموده بسیار خوشنو
و ظروف آب را برداشته خواست که مرا برامچندر بدهد رام گفت که مرا اجازت پدر
که راجه اجودهیا است در کار است بعد از آن پدر من خسر مرا طلب داشت و باجازت او
مرا برام پیوند داد از آن زمان از محبت او با وجودی که در صحرا میروم در دل من جا کرده است
انسویا این کیفیت را شنیده دست بر سیتا گذاشته سر او را بوسه داد و گفت
برای من نیک بیان کردی آفتاب غروب گردید و شب در رسید و طیور که برای
روزی در روز پریشان شده بودند باشیانه های خود رسیدند و آواز میکنند
اینک برهمنان غسل نموده کلس یعنی سبوی برنجی از آب پر کرده برگشته می آیند
و اگن هوتر که بدستور احسن کرده اند دخان مانند رنگ کبوتر مینماید کوه ها نیله
بنظر می آیند و آهوان در دربهه بیخ چراگاه خواب میکنند شب از انجم پیراسته شده
و ماهتاب نیز بر فلک طلوع گردید تو نیز پیش رام برو و پیرایه را در بروی من
بپوش سیتا بروی پیرایه را پوشیده او را نمسکار کرده پیش رام آمد رامچندر
او را از پیرایه های دب یعنی چون دیوتا آراسته و بپارچه های زر پیراسته دیده
انسویا را ستایش کرد و سیتا ماجرای عورت رکهه و دادن پیرایه و مالا و پارچه
وغیره بتفصیل بیان کرد رام و لچهمن هر دو خوشوقت شدند از ین اعزاز سیتا که از

کاردو میان

राम, लक्ष्मण और मेरे पिता को छोड़कर सब गिर पड़े। जब राजा जनक ने वह शक्ति और बल देखा तो बहुत प्रसन्न हुए और पानी का बर्तन उठाकर चाहा कि मुझे रामचन्द्र को दे दें। रामचन्द्र ने कहा कि मुझे अपने पिता की, जो अयोध्या के राजा हैं की अनुमति की आवश्यकता है। उसके पश्चात् मेरे पिता ने मेरे ससुर को बुलाया और उनकी आज्ञा से मेरा सम्बन्ध राम से कर दिया उस समय से उनका प्रेम, मेरे वन में होने के बाद भी, मेरे मन में बसा हुआ है।'' अनसूया ने यह वर्णन सुनकर सीता के सर पर हाथ फेरते हुए उसके सर का चुम्बन लेते हुए कहा कि ''मेरे लिए तुमने उसका भली प्रकार वर्णन किया। सूर्य अस्त हो गया रात्रि आ पहुँची, और पक्षी जो दिन में अपने भोजन के लिए चिन्तित थे अपने अपने घोंसलों में पहुँच गये और चहचहा रहे हैं। देखो ब्राह्मण स्नान करके ब्रजी मटका पानी भरकर उठाये चले आ रहे हैं और अग्नि जो उन्होंने जला रखी है उससे कबूतर के रंग की भांति धुआँ निकल रहा है। पहाड़ नीले दिखाई दे रहे हैं, और हिरन शयनागार में सो रहे हैं। रात्रि तारों से सुसज्जित हो चुकी है, और आकाश पर चन्द्रमा भी निकल आया है। तुम भी राम के पास जाओ और वस्त्र मेरे सामने पहनो।'' सीता उसके सामने वस्त्र पहनकर और उसको नमस्कार करके रामचन्द्र के पास आईं। रामचन्द्र ने इनको रेशमी वस्त्र से देवता की भाँति सुसज्जित और सोने के आभूषणों के सुसज्जित देखकर अनसूया की प्रशंसा की। सीता ने ऋषि की स्त्री और उसके आभूषण, माला तथा पारचा आदि देने का विस्तार से वर्णन किया। राम और लक्ष्मण दोनों सीता के इस सम्मान से प्रसन्न हुए,

که از آدمیان دشوار بود آنشب با تپسویان گذراند چون صبحدم آنان غسل نموده
اکن هوتر کرده فارغ شدند رامچندر اجازت رفتن خواست آنا گفتند که درین دشت
از راچهسان بهوشیاری باید بود رام دست بسته ایشان و آنان سوستین یعنی
دعا کردند رام معه سیتا و لچهمن داخل جنگل شد چنانکه ماه در زیر میغ در آید صورت

جنگل و کوه و درختان و آهوان و صورت رام و سیتا و لچهمن پیش پس

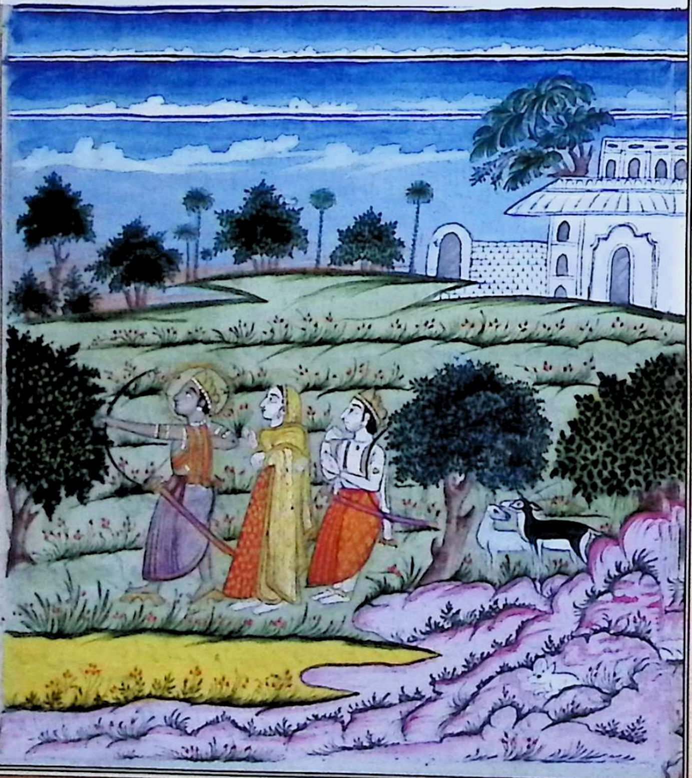

जो मनुष्यों के लिए कठिन था। वह रात उन्होंने तपस्या करने वालों के साथ व्यतीत की। प्रातः जब वे स्नान करके और अग्नि पूजा करके निवृत्त हुए तो रामचन्द्र ने जाने की अनुमति माँगी तब उन्होंने कहा कि इस वन में राक्षसों से चौकन्ना रहना चाहिये। राम हाथ जोड़कर खड़े हुए और उन्होंने प्रार्थना की। राम – सीता लक्ष्मण के साथ वन में प्रविष्ठ हुए जैसे कि चन्द्रमा मेख के नीचे आता है।

वन, पहाड़, हिरनों का चित्र और आगे पीछे राम, सीता और लक्ष्मण का चित्र।

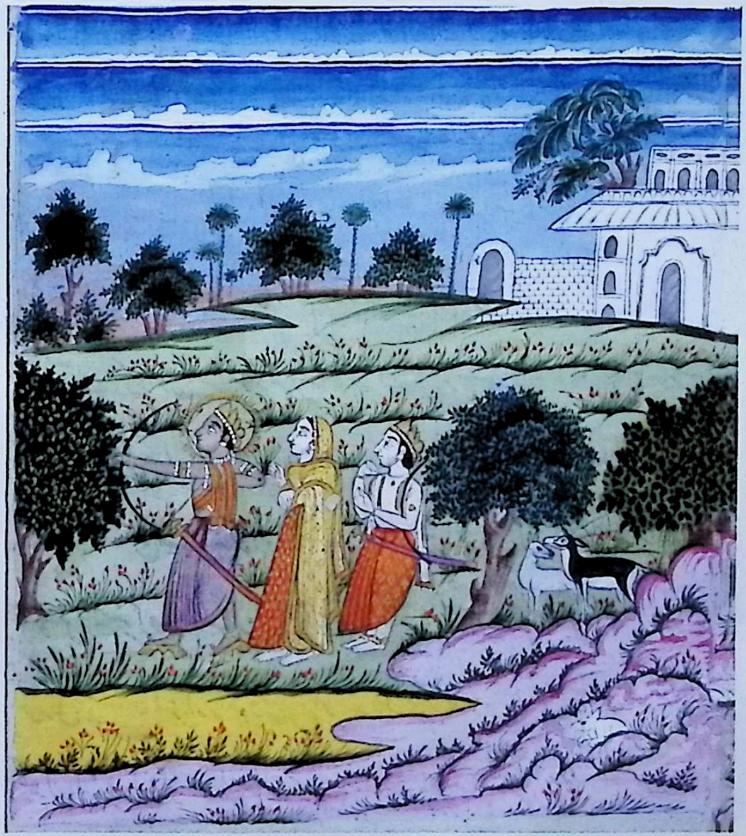

سیر کردن تپسویان بعد داخل شدن در صحرای دندکارن مکان تاپسان یعنی زهادرا
دید که ایشان بلباس دولت برهمنی کش و چیر دارند و مانند آفتاب روشن اند
و پناه جمیع ذیحیات و ستایش کرده اپسراها هستند و آن مکان از آتش و ظروف
اجن و کشش و کلس و ثمرات و بیخها برآراسته و از اشجار و گل و مول و از آواز
برهمنان بیدخوان که برگ خشک را غذا سازند زیباست رامچندر آنرا دیده کمانرا
بزه کشیده نزدیک رفت ایشان از ضمیر روشن رام و سیتا را دیده بانواع ادعیه
اعزاز و اکرام ساختند و بتماشای صورت سیتا که خوش شکل و نوجوان مانند لچهمی برهما
پیدا کرده رامچندر صحرا کرد را داده بود پرداختند و رام و سیتا هم نظر کشاده همه برهمنانرا
بطریق عجایبات دیدند ایشان رام را در پرن شالا جا داده آب و مول و بار و گل حاضر کردند
و گفتند که راحت بخش مردم و پناه همه و قابل پرستش راجه و دارنده دند مرشد و
شل آندر و الی چهارم حصه ست از سبب راجه جهان انواع راحت می یابد و تو مایانرا
حافظ و حارس هستی خواه در شهر خواه در صحرا مایانرا که دند و غصه گذاشته ایم
و حواس را مسخر کرده نگاهبان توئی اینقدر بگفتند و از پهل و گلها و مول و دیگر انواع
خورنی جنگلی اعزاز رام و لچهمن نمودند و رام پرستش آنان شل آندر که از دیوتا
قبول کند قبول کرده در آن مکان منزل ساخت و با سیتا و لچهمن ماند درینجا صورت مکان

सर्ग-५

तपस्या करने वालों को देखना

उन्होंने दण्डक वन में प्रविष्ट होने के पश्चात् तपस्या करने वालों का स्थान देखा कि यह लोग दौलत ब्रह्मणी के वस्त्र में कुश और चीर (वल्कल वस्त्र) रखते हैं और सूर्य की भाँति चमकते हैं। समस्त जीवधारियों के संरक्षक और अप्सराओं की ओर से प्रशंसा के पात्र हैं। वह स्थान उन्होंने अग्नि, स्रुवा आदि पात्रों, मृगचर्म, कुश, कलश, फल-मूल, वृक्षों और फूलों से सजा रखी है। वेद पढ़ने वाले ब्राह्मणों से, जो सूखे पत्तों से अपना भोजन बनाते हैं, सुशोभित है रामचन्द्र इसको देखकर और कमान को चिल्ले पर उतार निकट गये। उन्होंने अपने ज्ञान से राम सीता को देखकर विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं से उनका सम्मान किया और सीता की छवि देखने में व्यस्त हुए जो लक्ष्मी और ब्रह्मा की भांति सुन्दर एवं नवयुवती थीं और रामचन्द्र उन्हें वन में लाये थे।

राम और सीता ने भी सारे ब्राह्मणों को अजूबे के रूप में देखा। उन्होंने राम को पर्णशाला में स्थान देकर जल, फल- मूल, फूल प्रस्तुत किया और कहा कि लोगों को सुख चैन तथा संरक्षण देने वाले पूजा योग्य राजा, इन्द्र की भाँति चौथाई भाग के मालिक हैं। राजा के द्वारा संसार वाले हर प्रकार का सुख पाते हैं और आप हमारे संरक्षक हैं चाहे शहर में हों या वन में। हम सबकी रक्षा करने वाले जो जीवमात्र को दण्ड देना एवं क्रोध को छोड़ चुके हैं और अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखते हैं, आप ही हैं। इतना कहते हुए उन्होंने फल -मूल और फूल आदि भाँति-भाँति के खाने योग्य जंगली फलों से राम लक्ष्मण का सम्मान किया। राम ने उनकी पूजा, इन्द्र के समान जो देवता से स्वीकार करते हैं स्वीकार करके उसी जगह निवास किया और सीता तथा लक्ष्मण के साथ वहीं रहे।

تاپسان و درختان و برآنها طایران و آهوان و گلها و صورت رام و سیتا و لچهمن

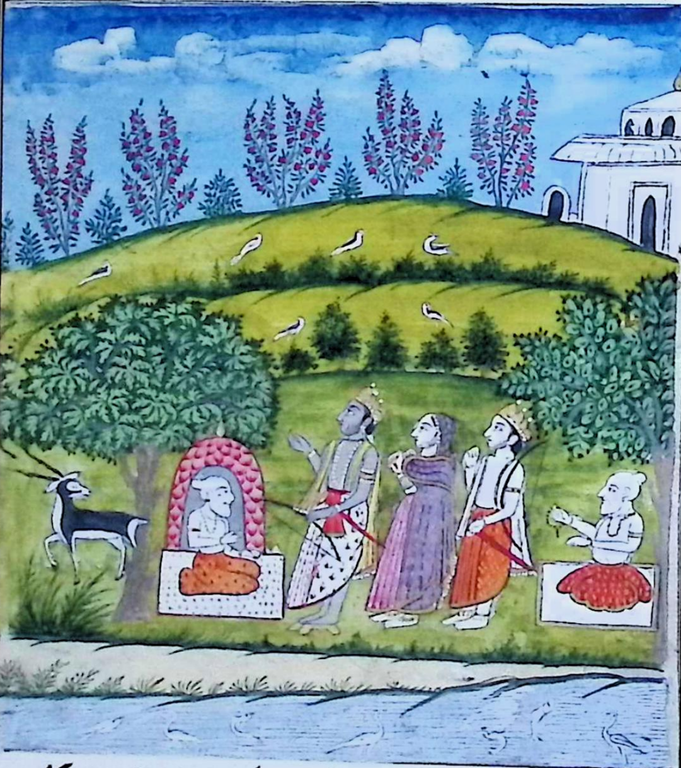

سرگ دیدن براوهه رامچندر آن شب بآسایش گذرانیده هنگام طلوع آفتاب
ازانان اجازت گرفته پیشتر در صحرا درآمد هاموئی دید که بانواع بهائم و شکار دول
دار
که قسمی از شیر باشد پرست و اقسام جانبهای آب که بر کنارهٔ آنها درختان سخت و خار
هستند و طیوران و جهلکا وغیره در آوازند دران جنگل شخصی مانند قله کوه ایستاده

तपस्या करने वालों के स्थान और वृक्षों का चित्र। जिन पर पक्षी बैठे हैं। मृग और फूल का चित्र तथा राम, सीता और लक्ष्मण का चित्र

सर्ग-६

रामचन्द्र वह रात शान्ति से बिताकर सूर्य उदय के समय उनसे अनुमति लेकर आगे वाले वन में प्रविष्ठ हुए। एक ऐसा वन देखा जो पशु और शेर की एक विशेष जाति शार्दूल से भरा है। जल के तालाब हैं जिनके किनारे कठोर और कटीले वृक्ष उगे हैं। पक्षी और झींगुर आदि शोर मचा रहे हैं। इस वन में एक व्यक्ति पहाड़ की चोटी के समान खड़ा है।

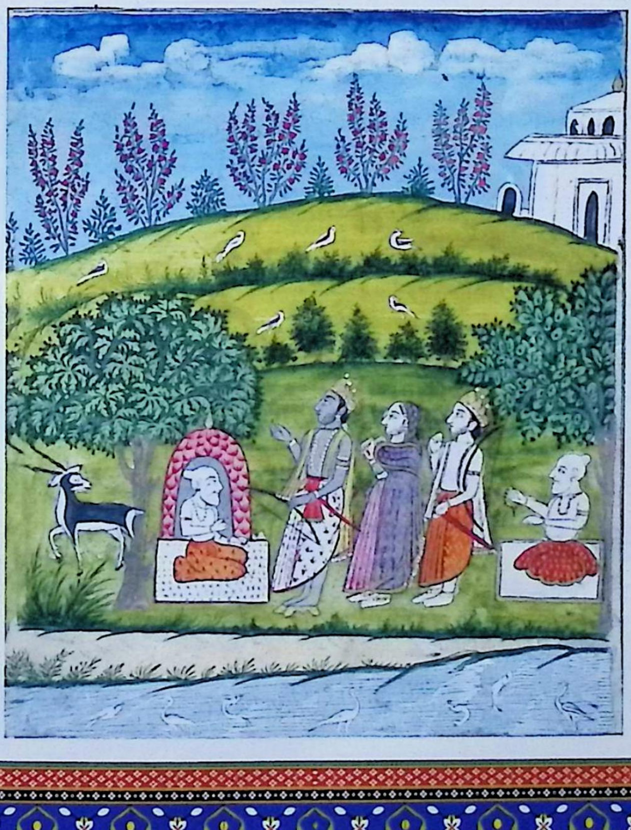

وبد و چشم او خلاف طور و بینی مانند چکر و دهن مانند آتش و شکم بنوعی که هرچه خورد غاب سود
دلسان سوزنده و کالبد بسیار کلان و شول در دست بنوعیکه هشت شیر را کشته
و سر یک فیل را با دندان جدا کرده بالای او نهاده و از پوست شیر با خون آلوده
پوشش کرده مثل جم در نمودار است! و رام و لچهمن و سیتا را دیده زبان بکیده
از غصه دویده آواز خوفناک نمود که زمین بلرزید و سیتا برداشته در کنار گرفته
گفت شما هردو جوان چیر و جٹا داشته با عورت در دندکارن که در آمده اید و بطریق
تاپسان میباشید با عورت چکار دارید شما بطریق ادهرم میروید و عذاب میکشید
و منی ها را عیب نهاده اید و من براده نام راچهس هستم و این جنگل از منست من اینجا
همیشه گوشت منی ها میخورم این بگفت و سیتا را در کنار گرفته بسمت آسمان در رفت
و گفت این عورت اهلیه من شود و شما هردو غدار را خون مینوشم سیتا را در کنار
گرفته از خنده بدین آئین میگفت و سیتا مانند نهال کدلی در لرزه بود رام اینحالت را
بلچهمن گفت به بینید که دختر راجه جنک و اهلیه من و سنه دشرته که سزاوار راحت است
در کنار این غول راچهس چه تصدیعها میکشد و هوش میبازد آنچه دولت برائی من بعد
همه بکیکئی مبارک باد و از راج پسر خوشوقت شود من برائی آرام جهانیان صحرا گزیدم
حالا مرا غیر ازین که سیتا را کسی بگیرد و رنج زیاده تر نیست و مردن پدر و رفتن راج

در حساب

उसकी दोनों आँखें सामान्य से अलग नाक चक्र के समान, मुँह अग्नि के समान और पेट ऐसा है कि जो कुछ खाता है अदृश्य हो जाता है। जीभ जलने वाली और शरीर बहुत बड़ा है। हाथ में शूल ऐसे हैं कि जैसे आठ शेर मारे हों और एक हाथी का सर दांत सहित अलग करके उसकें ऊपर रखे हुए और शेर की रक्त सहित खाल पहनाए हुए यम की भाँति प्रकट है। उसने राम, लक्ष्मण सीता को देखकर क्रोध से दौड़कर ऐसी भयानक ध्वनि निकाली कि पृथ्वी काँप गयी। उसने सीता को गोद में उठाकर कहा तुम दोनों युवक चीर और जटा रखकर स्त्री के साथ जो दण्डकवन में आए हो तपस्या करने वालों की भाँति रहते हो तुम्हें स्त्री से क्या कार्य। तुम दोनों धर्म के विरुद्ध जा रहे हो, और पाप का कर्म कर रहे हो, तुमने मनु के नाम को कलंकित किया है, और मैं विराध नामक राक्षस हूँ। यह वन मेरा है। मैं सदा यहाँ ऋषियों का मांस खाता हूँ। यह कहकर वह सीता को बगल में दबाकर आकाश की ओर चला गया और फिर कहा ''यह स्त्री मेरी पत्नी होगी और मैं तुम दोनों गद्दारों का रक्त पिऊँगा।'' वह सीता को बगल में लिये हुए हँसते हुए यह कह रहा था और सीता कदली (केला) के पौधे की भाँति काँप रही थी। राम ने यह स्थिति देखकर लक्ष्मण से कहा देखो ! राजा जनक की पुत्री, मेरी पत्नी और दशरथ की बहू जो सुख की भागीदार है वह इस दुष्ट राक्षस की गोद में है, वह कष्ट उठा रही है, चेतना खो रही है, जो कुछ सम्पत्ति मेरे लिये थी, वह कैकेयी कितनी सौभाग्यशाली है, वह अपने पुत्र के राज्य व शासन से प्रसन्न हो। मैंने संसार वालों के सुख के लिये वन जाना पसन्द किया है। इस समय मेरे लिए इससे अधिक और कष्ट की बात कोई नही है कि कोई अन्य मेरी सीता को स्पर्श कर ले। इस दुख की तुलना में पिता का मरना और राज्य का चला जाना, किसी गणना में नहीं है।

درحساب نیست مفارقت سیتا دل مرا برهم میکند انچنین میکفت وکوهر اشک
می سفت که لچهمن از غصه کفت تو خداوند لوکها مثل اندر هستی چرا چون غربا
در پستی هستی مرا بفرما که بیک تیر این را میکشم وزمین را خون او بنوشانم غصه
بیشتر که از بهرت موقوف داشته بودم حالا بر براد به رها کنم چنانچه اندر بحر را

برکوه کذارد حالا از زور بازوی سر او بر زمین افتد دراینجا صورت براده راچهس
شول در دست کرفته و بر آن یک سر فیل و شیران بر داشته و سیتا را بر دست نهاده و شعله از دهان
برآورده و صورت رام ولچهمن و تالاب و فیل و آهوان و طایران و درختان وغیرا

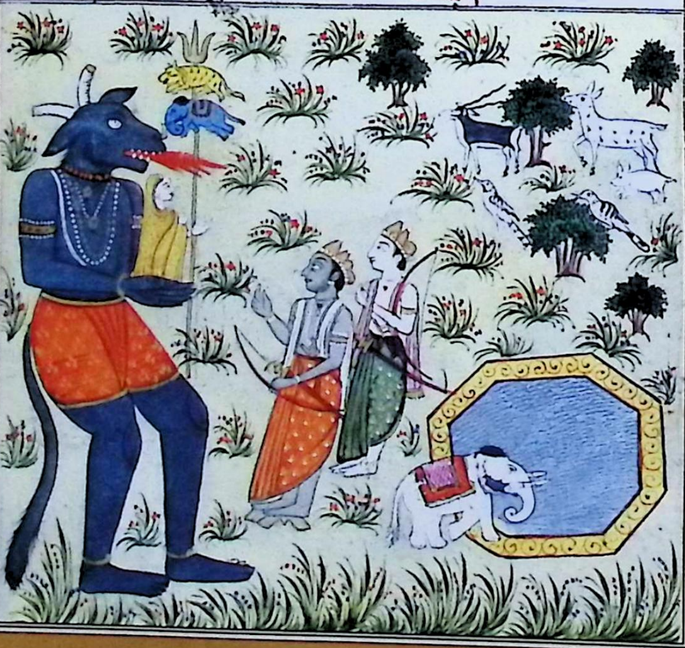

सीता का वियोग, हृदय को दुखी कर रहा है। वह यह कहते जाते थे और अश्रु के मोती बहाते जाते थे कि लक्ष्मण ने क्रोध से कहा ''आप इन्द्र की भाँति समस्त लोक के देवता हैं। क्यों दीन दुखियों के समान आचरण कर रहे हैं ? मुझे आज्ञा दीजिये कि एक ही बाण से उसका वध कर दूँ और धरती को उसके रक्त से सींच दूँ। जो क्रोध मैंने पहले भरत से रोक लिया था अब उसे विराध पर इसी भाँति उतारूंगा जैसे इन्द्र वज्र को पर्वत पर छोड़ देते हैं। अभी बाहुबल से उसका शीश पृथ्वी पर गिरता है।

विराध राक्षस का चित्र जो हाथ में त्रिशूल लिये हुए हैं जिस पर एक हाथी और शेर का शीश उठाए हुए हैं। सीता को हाथ में उठाए हुए हैं और मुख से अग्नि की ज्वाला निकल रही है तथा राम, लक्ष्मण, कुण्ड, हाथी, हिरन, व पक्षियों आदि का चित्र।

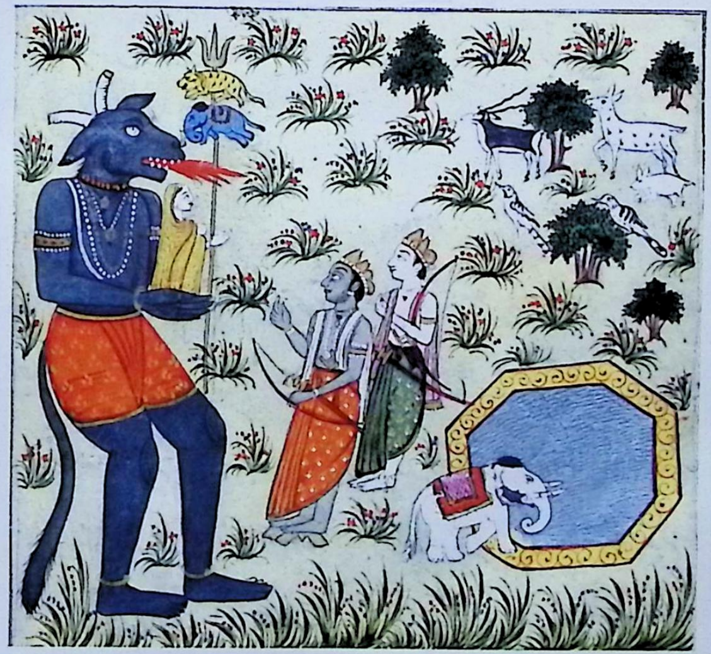

سر گشته شدن برادهه رین آشنا برادهه گفت من میپرسم شما کیانید و کجا میروید
رامچندر گفت از اولاد اجهوا کو هستیم و چهتری ایم در صحرا میکردیم و تو کیستی
که درین صحرا گردی ما هم بدانیم گفت پسر جکب ام و مادر من ستر هند است و برادهه
نام منست اینعورت را بگذارید و شتاب بگریزید والا از زندگا دل بردارید رام
از خشم چشم سرخ کرده گفت دهک یعنی لعنت تراست زود مایوس میشوی نه این
زن را خواهی گرفت و نه از دست من زنده خواهی رفت در همین گفتگونی این بردو
لچهمن کمان را زه کرده چند تیر به برادهه زد که خون او بر زمین روان شد راجهس شور
نموده شول را که مانند دهوجا اندر بلند بود برداشته بر لچهمن روان کرد که زد
رامچندر فوراً دو تیر زده آن شول را بر هوا بپراند و تیر سیوم زراندود در جگر برادهه
چنانکه او سیتا را گذاشته بیجان شده افتاد و از ترس کف بر دهن آورده قی خون
کرده بخوشی دست بسته برام گفت همچو تو فرزند مادر و پدر رستگار میسازد سیتا و لچهمن
طالعمند هستند پیش ازین شنیده بودم و سیتا را برای غصه کردن شما گرفته بودم زیرا که
از شاپ کبیر در وجود راجهس آمده ام و تونبر نام گندهرب هستم چون او را بر خود مهربان
نمودم گفت شاپ تو از زمان دور شود که رامچندر پسر دشرته ترا بکشد تو آندم صورت
اصلی یافته بمکان خود خواهی رسید انیقدر کبیر مرا هنگامی که به رنبها اپسرا میل داشتم

सर्ग-७

विराध का मारा जाना

इसी मध्य विराध ने कहाः मैं पूछता हूँ कि तुम लोग कौन हो और कहाँ जा रहे हो ?रामचन्द्र ने कहा : ''हम इक्ष्वाकु की सन्तान हैं और क्षत्रिय हैं। वन में घूम रहे हैं। और तुम कौन हो जो कि इस वन में घूम रहे हो?हम भी तो जानें। उसने कहाः ''मैं 'जव' नामक राक्षस का पुत्र हूँ और मेरी माता का नाम 'शतह्दा' है और विराध मेरा नाम है'' ''इस स्त्री को छोड़ दो और जल्दी से भाग जाओ अन्यथा जीवन से हाथ धो बैठोगे।'' राम ने क्रोध से आँखे लाल करते हुए कहा। धिक्कार है तुझ पर तू अतिशीघ्र निराश होगा। न इस स्त्री को ले सकेगा और न मेरे हाथ से जीवित बचेगा।'' दोनों की इस वार्ता के मध्य राम और लक्ष्मण ने कमान खींचकर कुछ बाण विराध को ऐसे मारे कि इसका रक्त धरती पर बहने लगा। राक्षस ने शोर करते हुए त्रिशूल को जो इन्द्र के ध्वज की भाँति ऊँचा था उठाकर लक्ष्मण पर वार किया। रामचन्द्र ने तुरन्त दो बाण मारकर इस त्रिशूल को वायु में उछाल दिया और तीसरा तीर चलाया तो वह विराध के हृदय में ऐसा धंसा कि वह सीता को छोड़कर निर्जीव होकर गिर पड़ा और भय के कारण मुँह पर झाग लाते हुए तथा रक्त की उल्टी करते हुए प्रसन्नता से हाथ जोड़कर राम से कहाः ''किस माता - पिता के तुम जैसे पुत्र, लोगों को मुक्ति दिलाते हैं? सीता और लक्ष्मण भाग्यशाली हैं। मैंने इससे पहले सुना था और क्रोध दिलाने के लिये सीता को ले लिया था क्योंकि मैं कुबेर के शाप के कारण राक्षस की योनि में आया और तुम्बुरु नामक गन्धर्व हूँ। जब मैंने उसे स्वयं पर प्रसन्न कर लिया तो उसने कहा कि तुम्हारा श्राप उस समय समाप्त होगा जब दशरथ के पुत्र रामचन्द्र तुझे मारेंगे। उस समय तू अपना असली रूप पाकर अपने स्थान पर पहुँचेगा। यह बात कुबेर ने उस समय कही थी जब मैं रंभा नामक अप्सरा की ओर कुदृष्टि रखता था।

کفته حالا از لطف تو از شاپ رها شده بمکان خود میروم ترا نیکوی نصیب باد و از ینجا
یک کروه شبر بهنک نام راکه که مانند آفتاب روشن است میباشد بسرعت آنجا روید که بهتری
حاصل خواهد شد و این لاش مرا در آبت یعنی مغاک اندازید که این دهرم راچهسانست و از ینجه
وجود راچهس مرده همیشه بسرک میباشد این بگفت و قالب بگذاشت و بسرک شتافت لچهمن آبت
کنده لاش اورا که مانند کوه بود برداشته مدفون ساخت و رام برای تسلی و رفع رنج سیتا
با لچهمن بدین آیین سخنان پرداخت که این صحرا تصدیع آورست باید که زود بمقام شبر بهنک

رویم آن هر دو کماندار دران مرغزار مانند مهر و ماه نمودار بودند درینجا صورت رام و لچهمن
و سیتا هر دو کمان کشیده و راچهس برادهٔ سه تیر خورده مرده افتاده و شول بطرفی
با سر فیل و شیر و صورت صحرا و آهوان و شتران و طایران و درختان و غیره آن

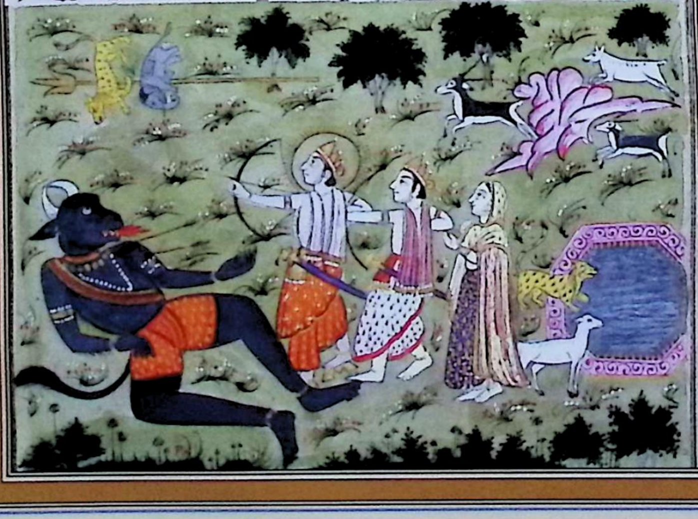

अब मैं आपकी कृपा से शाप मुक्त होकर अपने स्थान पर जाता हूँ। आपको अच्छा फल मिले। यहाँ से एक कोस की दूरी पर शरभंग नामक ऋषि जो सूर्य की भाँति चमकते हैं, रहते हैं। शीघ्रता से वहाँ जाइये, भलाई प्राप्त होगी। और मेरा यह शव मिट्टी में ढक दीजिए गड्ढ़े में गाड़ते ही वह शरीर दिया छोड़ और स्वर्ग में चला गया। लक्ष्मण ने प्रयास करके उसके शव को जो पहाड़ की भाँति था उठाकर गाड़ दिया और राम ने सीता का दुख दूर करने और इसकी सन्तुष्टि के लिये लक्ष्मण से इस प्रकार वार्ता आरंभ की। ''वन कष्ट पहुँचाने वाला है चाहिए कि हम शीघ्रता से शरभंग के स्थान पर पहुँच जायें। वह दोनों धनुषधारी इस वन में सूर्य व चन्द्रमा की भाँति उपस्थित थे।

राम, लक्ष्मण और सीता का चित्र, दोनों धनुष खींचे हुए हैं। और विराध राक्षस तीन तीर खाकर मुर्दा पड़ा हुआ है। उसका त्रिशूल हाथी और शेर के सर सहित एक ओर पड़ा हुआ है और वन, हिरन, पक्षी तथा वृक्ष आदि का चित्र।

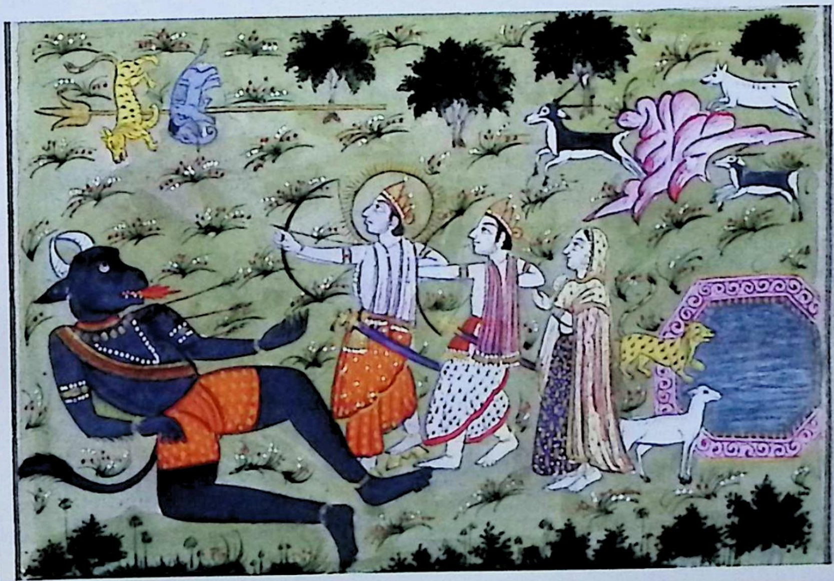

ذکر رفتن نزد شربهنگ رکهه چون براده راچهس راکشته بآشرم یعنی مکان شربهنگ
رکهه رفتند از قوت و هرم او انجا تماشاء عجیب دیدند که اندر بشکل روشن مانند آفتاب
و آتش و پیرایه که از خود روشن شوند پوشیده بررتهه که از اسپان تیز رفتار در هوا ایستاده
و بزمین پیوند نکرده پیش شربهنگ حاضر گشته و چتر او مانند سفید ابر و شکل قمر با مالا از اقسام
زیب آورست و چامر یعنی مگس ران و بجن یعنی باد کش زنان شکیل گرفته میزنند و گندهرب
و دیوتا و سدها و مهر کهه در هوا ایستاده تعریف میکنند این را دیده رامچندر بلچهمن گفت
اسپان اندر که شنیده بودم بهوا میروند همان هستند و اینجا که نزدیک رتهه ایستاده اند
کنڈل یعنی گوشواره و کهرگ یعنی شمشیر دارند و متحمل اند و سینه شان مانند آتش مینماید
و عمر ایشان قریب بیست و پنج ساله مینماید اینجا دیوتاها اند لهذا با سیتا قدرے
اقامت کن تا ازین والی رتهه واقف شوم بعد از ان لچهمن با سیتا ایستاده ماند
و رامچندر بآشرم شربهنگ روان شد اندر رامچندر را دیده از دور برتهه گفت
زود ازینجا باید رفت تا رام با ما هم سخن نشود مرا دیده خود را اگر نارتهه یعنی مقصود حاصل
خواهد دانست و هنوز این را کارهائی بزرگ کردنست بعد فراغ تشتا که ایام بودن
صحر است بدیدن من سزاوارست چون اندر از من اجازت گرفته بآسمان رفت بعد
رام در مکان اگن هوتر شربهنگ رسیده اورا گرفت و سیتا و لچهمن هم قدم گرفتند

सर्ग-८

शरभंग ऋषि के पास जाना

जब विराघ राक्षस को मार चुके तो शरभंग ऋषि के आश्रम अर्थात् उसके स्थान पर गये। उन्होंने वहाँ धर्म की शक्ति का अद्भुत खेल देखा कि इन्द्र सूर्य की भाँति प्रकाशित रूप से साथ, और अग्नि के वस्त्र जो स्वयं प्रकाशित होते हैं, पहने एक ऐसे रथ पर सवार कि जिसके तीव्र गति वाले घोड़े हवा में खड़े हैं और पृथ्वी से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। शरभंग के सामने प्रस्तुत हैं और उनका छत्र, सफेद बादल के समान और चन्द्रमा की भाँति हीरे, जवाहरात से सुसज्जित है। चामर अर्थात् मक्खियाँ हाँकने वाली और व्यजन अर्थात् पंखा झलने वाली सुन्दर स्त्रियाँ अपने कार्य में व्यस्त हैं। उस समय गन्धर्व, देवता, सिद्ध और महर्षिगण हवा में खड़े होकर प्रशंसा कर रहे हैं। यह देखकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा, इन्द्र के घोड़े जिनके विषय में मैंने सुना था कि हवा में चलते हैं, वही हैं। यह जो रथ के निकट खड़े हैं हाथों में तलवार लिए कुन्डल धारी सौ-सौ युवक हैं। उनकी छाती आग के समान दहकती है। उनकी आयु लगभग पच्चीस वर्ष लगती है, यह सब देवता हैं। अतः सीता के साथ थोड़ी देर रुको ताकि मैं उस रथ के मालिक के विषय में मालूम करूँ। उसके बाद लक्ष्मण सीता के साथ खड़े रहे और रामचन्द्र शरभंग के आश्रम की ओर चले। इन्द्र ने रामचन्द्र को दूर से देखकर देवताओं से कहा कि यहाँ से शीघ्र चलना चाहिये ताकि राम हमसे वार्ता न कर सकें। मुझे देखकर स्वयं को कृतार्थ अर्थात् उद्देश्य की प्राप्ति समझेंगे जबकि उसे बड़े-बड़े काम करने हैं। तपस्या अर्थात् वन में रहने की अवधि को पूरा करने के बाद मुझे देखने के योग्य होंगे। जब इन्द्र मनु से आज्ञा लेकर आकाश पर चले गये तो उसके बाद राम ने शरभंग की अग्निहोत्र के स्थान पर पहुँचकर उसके पाँव पकड़ लिये सीता और लक्ष्मण ने भी पाँव पकड़े मनु ने वन के फल प्रस्तुत किये।

مُن ثمرات صحرائی پیش آورد رامچندر از و کیفیت آمدن اندر پرسید او بتفصیل
بیان کرد و گفت مرا اندر برداده که ترا به برهم لوک میبرم و آنان که دلرا مسخر نکرده اند
بدشواری میشوند و تو بزور ریاضت سزاوار آنجا شده ای آرام من ترا دیده
توقف کردم تا پرستش مسافر رسیده بکنم بعده بروم که از نیکار برفتن برهم لوک و
دیولوک سزاوار شده ام بلکه تو آن لوک ها را بگیر و آرام بکن رامچندر گفت من هم
بودن لوک خواهش نمیکنم مرا با تو در صحرا آرزوست شربهنگ گفت تو پیش
سوتچهن رکهه برو او برای بودن تو مکان مشخص نشان خواهد داد و این راه مکان
اوست اما مهورت یعنی دو گهری باش که من وجود خود در آتش هوم بکنم چنانچه پوست
کهنه را مار بگذارد بعده او آتش روشن کرد و از منتر هوم نمود پس داخل نار شد و
موی و پشم و چرم و استخوان و گوشت و خون او همه را آتش بسوخت و او
بصورت کمار یعنی دوازده ساله از آتش برآمد و بالا رفت از لوک اگن هوتریان
و رکهیان و سرگ کرمان و دیوتاها گذشته به برهم لوک رسید و برهما را
باپس روان او بدید برهما این را دیده گفت خوب کردی که آمدی

در ینجا صورت مکان سوتچهن رکهه و صورت نشستن او در هوم و صورت
رام و لچهمن و سیتا استاده شدگان و صورت سوتچهن از آتش هوم

रामचन्द्र ने उससे इन्द्र के आने का कारण पूछा उसने विस्तार से बताया और कहा मुझे इन्द्र ने वचन दिया है कि तुझे ब्रह्मलोक में ले जाऊँगा और जिन लोगों ने अपने मन को वश में नहीं किया है उन्हें कठिनाई होगी। तुम तपस्या के बल से वहाँ का अधिकार प्राप्त कर चुके हो। हे राम ! मैं तुम्हें देखकर रुक गया ताकि आये हुए अतिथि का सत्कार करूँ, उसके बाद जाऊँ। क्योंकि इसी कार्य से मैं ब्रह्मलोक और देवलोक में जाने का भागीदार हुआ हूँ। अतः तुम इन लोकों को ले लो और विश्राम करो। रामचन्द्र ने कहाः "मैं भी लोक में रहने की इच्छा नहीं रखता हूँ। मुझे तो आपके साथ वन में रहने की इच्छा है। शरभंग ने कहा "तुम ऋषि के पास जाओ वह तुम्हारे रहने के लिए विशेष स्थान बतायेंगे।" यह उनके घर का मार्ग है। लेकिन पल भर रुको कि मैं अपने अस्तित्व को अग्नि में समाप्त कर रहा हूँ। जैसे कि सर्प पुरानी खाल छोड़ देता है। उसके बाद उसने आग जलाई और मन्त्र से होम किया फिर अग्नि में प्रवेश कर गया और अपने बाल, रोए, खाल, हड्डी, माँस और रक्त सबको अग्नि में जला दिया और कुमार अर्थात् बारह वर्ष के लड़के के रूप में प्रकट हुआ और ऊपर चला गया। अग्निहोत्री ऋषि, सुकृतकर्मा और देवताओं के लोक से होता हुआ ब्रह्मलोक में पहुँच गया और ब्रह्मा को उसने अपने पीछे चलते देखा। ब्रह्मा ने उसको देखकर कहा अच्छा किया कि आ गये।

शरभंग ऋषि के भवन का चित्र- उसके होम में बैठने का चित्र, राम, लक्ष्मण और सीता आदि खड़े होने वालों का चित्र, और शरभंग के बारह वर्ष के लड़के के रूप में होम की आग से निकलने का चित्र जो फिर ऊपर चला गया।

دوازده ساله بالا شتافته

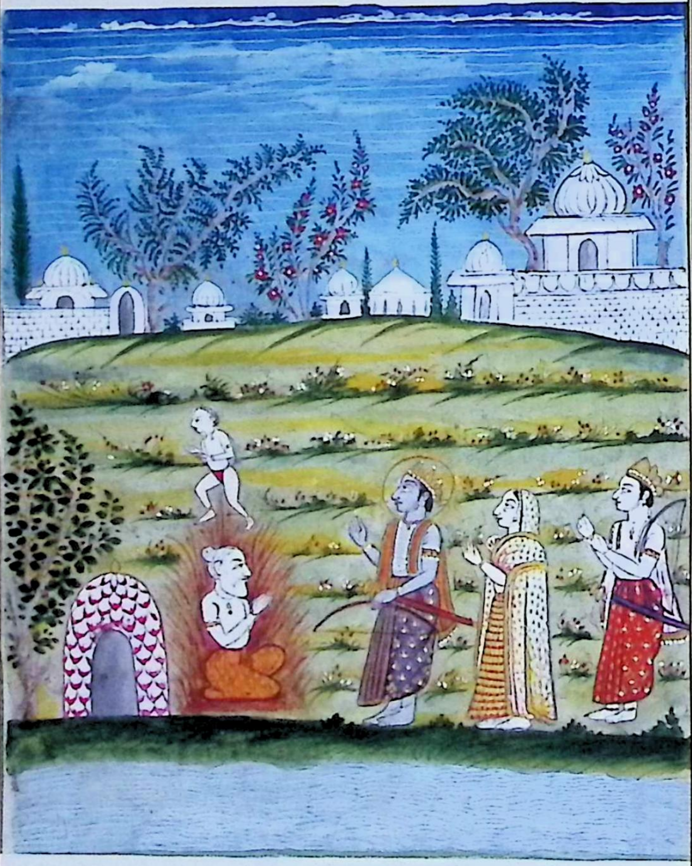

سرکت دیدن رکبه ؛ بعد رفتن شربهنگ رکهه بآسمان نیشران نزدیک رامچندر رسیدند نیکهانسا و بالکهیلا و پرشرمی و پرچکها و دیگر منیها که فقط آب میخوردند و آنانکه فقط باد میخوردند و آنانکه سنگ ریزه میخوردند و آنانکه ده تپ میکنند و آنانکه

بر

सर्ग-६

ऋषियों का देखना

शरभंग ऋषि के आकाश (ब्रह्मलोक) पर चले जाने के बाद मुनीश्वर रामचन्द्र के निकट आये। वैखानस वालखिल्य, सम्प्रक्षाल, मरीचिप और दूसरे मुनि कि जो केवल पानी पीते हैं और जो केवल वायु खाते हैं और जो केवल पत्थर के टुकड़े खाते हैं और जो तपस्या करते हैं और जो वृक्षों के पत्ते खाते हैं।

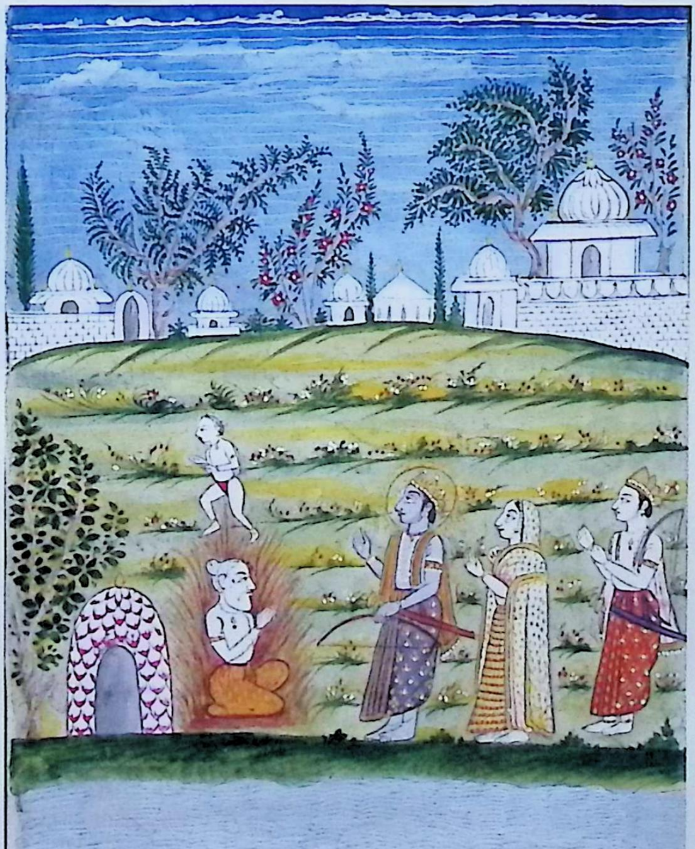

برگ درختان میخورند و دنت اولوکهلی و باشند کانِ وند کارن که مانند آفتاب
و آتش روشن بودند همه آمدند و آنانکه بر هوا میباشند و آنانکه بر زمین خسپند
و آنانکه پارچه قابل غسل دارند و زیاده ندارند و آنانکه بی پارچه میباشند و آنانکه
فقط جپ میکنند و آنانکه از پنج آتش تپ میکنند و آنانکه در چهار ماه تناول نمیکنند
و آنانکه هیچ نمیخورند و آنانکه انگشت پای را بر درخت مستقیم داشته تپ میکنند و آنانکه
دهرم را بکسی نمایند و آنکه بیک انگشت پا اقامت میکنند و آنانکه جانداری را نمی کشند
و آنانکه گیاه میخورند و آنانکه فقط شیر میخورند و آنانکه ثمره بکسی ننموده میخورند و
آنانکه ثمره میخورند و سوای ایشان دیگران بمکان شرهنبک رسیدند نزدیک
راجه اندر آمده همه ها گفتند تو در نسب اچیواکو مهارتهه هستی و در رکبه ها همسر آمده مانند
اندر در دیوتاها از زور و حس در سه لوک مشهور هستی و بخدمت کردن پدر و شهر
و شهریان دلیر هستی بخدمت تو سخنی میگوئیم و بعمل آوردن سزاوری آن راجه گنهگار شود
که ششم حصه هوم نگیرد که موافق شاستر میرسد و محافظت خلایق مانند پسر خود نکند و هر راجه که
خلق را مانند جان و پسران عزیز خود محافظت کند او در سه لوک کیرت یعنی نیکنامی دایمی یابد
و هر که بر برهمنان مول و پهل خورندگان دهرم کند او به برهم لوک رسد بنابران تو مایانرا خداوند
هستی و راچهسان را بکشی حالا این لاشهائی برهمنان را ببین که راچهسان کشته اند عقب دریای

वानप्रस्थ और दण्डकारण्य के निवासी जो अग्नि और सूर्य के समान थे सब आये। जो वायु पर रहते हैं, जो धरती पर सोते हैं, जो धोने योग्य वस्त्र रखते हैं, आवश्यकता से अधिक नहीं रखते हैं जो बिना वस्त्र के रहते हैं, जो केवल जाप करते हैं, जो अग्नि की आँच से तपस्या करते हैं, जो चार-चार महीने तक खाना नहीं खाते हैं, जो कुछ भी नहीं खाते हैं, जो पैर का अंगूठा वृक्षा पर सीधा रखकर पूजा एवं तपस्या करते हैं और जो धर्म, किसी को नहीं दिखाते हैं, जो पाँव की एक ऊँगली पर खड़े रहते हैं, जो किसी जीवधारी को नहीं मारते हैं, जो घास खाते हैं, जो केवल दूध पीते हैं, जो फल किसी को बिना दिखाये खाते हैं, जो फल खाते हैं, उनके अतिरिक्त दूसरे अन्य व्यक्ति भी शरभंग ऋषि के आश्रम पर पहुँचे। रामचन्द्र के निकट आकर सबने कहा ''आप इक्ष्वाकु वंश में महारथी हैं और रक्षक के समान हैं जैसे कि इन्द्र, देवताओं में। शक्ति और बल के कारण आप तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं। पिता, नगर और नागरिकों की सेवा करने में आप आगे हैं। आपकी सेवा में हम एक निवेदन करते हैं आप उसको कार्यान्वित करने के अधिकारी और पात्र हैं। वह राजा दोषी होता है जो होम का छठवाँ भाग जो शास्त्र के अनुसार उसका होता है, कर के रूप में नहीं लेता है। जीवधारियों की रक्षा अपने पुत्र की भाँति नहीं करता है। जो राजा जीवधारियों की, अपनी जान और प्रिय पुत्रों की भाँति रक्षा करता है वह तीनों लोक में सदैव कीर्ति पाता है। जो मूल और फल खाने वाले ब्राह्मणों पर न्याय करता है वह ब्रह्म लोक में पहुँच जाता है। किस आधार पर आप हमारे देवता हैं और राक्षसों को मारते हैं अब ब्राह्मणों के (पवित्रात्मा मुनियों) यह शव देखिये जिन्हें राक्षसों ने मारा है।

منذاکنی و نزدیک پنپا اقامت داشتیم قریب تر چترکوٹ بسیاری را کشته و هیچ از

تپسیان انهیاز نمیکنند لهذا در پناه تو آمده ایم محافظت ما بکن رامچندر دست بسته

گفت مرا و لچهمن را چنین گفتار نسزاوار اید ما در پناه شما که به تپ بزرک اید آمده ایم

و درین دندکارن برائی آوردن مراد شما آمده ایم راچهسان را بکشیم و مُن ها را محافظت میکنیم

چنانچه منیشر را امنی داده رامچندر با آنها بمقام سوتچهن روانه شد درینجا مکان ایشان که تپ میکنند

یکی بانگشت پا از درخت آویخته و دیگری یک پا استاده و یکی مقابل آتش نشسته و رام و سیتا و لچهمن

روبرو ایستاده با دب سخن میگویند

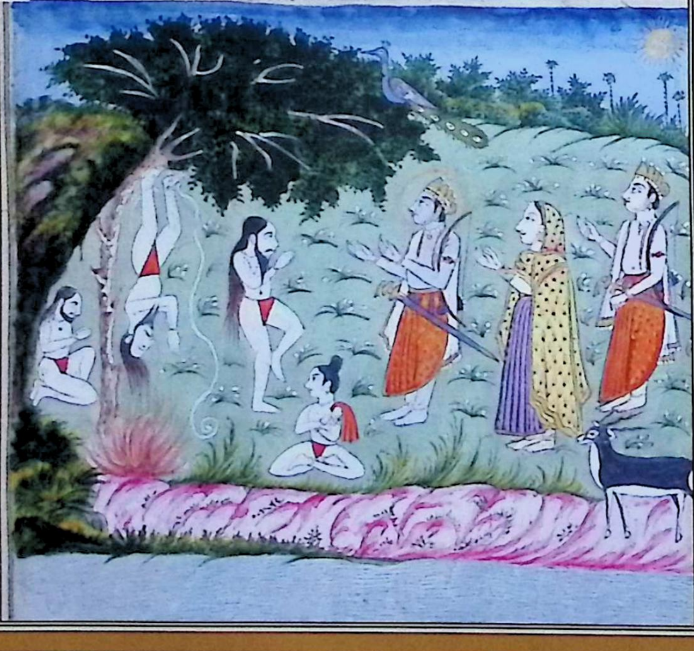

سرک رواں

हम लोग मन्दाकिनी नदी के पीछे और पम्पा सरोवर के निकट रहते थे। चित्रकूट के निकट उन्होंने बहुत लोगों को मारा और किसी तपस्या करने वालों में अन्तर नहीं करते हैं अतः हम आपकी शरण में आये हैं आप हमारी रक्षा कीजिये। रामचन्द्र ने सम्मानपूर्वक कहाः ''मेरे और लक्ष्मण के विषय में ऐसी बातें न कहिये, क्योंकि हम आपकी शरण में आये हैं क्योंकि आप लोगों ने बड़ा संघर्ष किया है। इस दण्डकारण्य में आप लोगों की इच्छा पूर्ण करने के लिये आये हैं। हम राक्षसों को मारेंगे और मुनि की रक्षा करेंगे।'' अतः मुनीश्वरों को सान्त्वना देकर रामचन्द्र उनके साथ सुतीक्ष्ण मुनि के स्थान की ओर चल दिये।

तपस्या करने वालों के स्थान पर जो तपस्या कर रहे हैं एक पैर की उंगलियों से वृक्ष से लटके हुए हैं दूसरे एक पाँव पर खड़े हैं। एक अग्नि के सामने बैठा है, राम, सीता और लक्ष्मण सामने खड़े आदर से बातें कर रहे हैं।

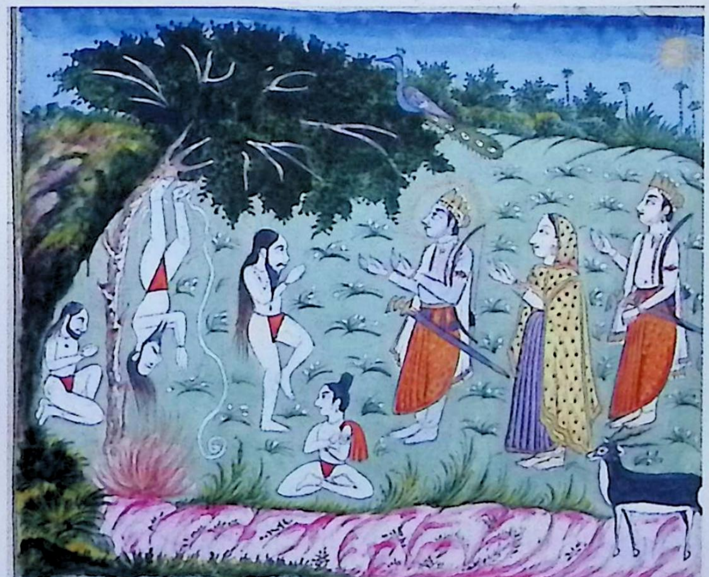

سرگ روان شدن رامچندر رام با لچهمن و سیتا و برهمنان بمقام سوتچهن رکهه روانه شده طی راه و عبور دریاها نموده قریب نیل کر یعنی کوه نیله صحرایی دیدند که انواع اشجار دارد و در انجا آشرم یعنی جای بودن او نظر کردند در انجا منی را دیدند که کالبد گرد آلود و جتا فرو هشته نشسته رامچندر او را با حسن آئین پرستش کرد و گفت منی رامچندرم و برای دیدن شما آمده ام رکهه نظر کشاده سر او بوسید و گفت خوب کردی منی ماجرای آمدن از چترکوت و گذاشتن راج شنیده ام و انتظار تو داشتم چنانکه حضور تو تن را گذاشته بدیولوک میروم و اندر همین جا بود مرا میگفت همه لوکها را تو از بودن یعنی کار صواب گرفتی ای رامچندر اکنون تو دران لوکها منی با عورت و لچهمن راحت بکن رامچندر چنانکه اندر با برهما گوید گفت انچه شما فرمودید این دولت مرا رسید و اتر رکهه و شربهنگ رکهه و گوتم رکهه لوکهای خود میدادند مرا خود مکانی برای بودن درین جنگل می باید دیگر هیچ نی سوتچهن بشیرین زبانی گفت اینک آشرم خوب است ثمره و گلها دارد و رکهه ها میباشند و بهائم گوناگون و درختان همه قلمون هستند اما تصدیع آنست که پشه ها آزار میرسانند و درینجا درنده ها آمده بشب میگردند آنخوف هم هست رامچندر این را شنیده تیر را در کمان کشیده گفت آنها را من میکشتم و برای نگاهداشتن جان از شما منی میکشتم و آنجا که

सर्ग-१०

रामचन्द्र का प्रस्थान करना

राम, लक्ष्मण, सीता और ब्राह्मणों के साथ सुतीक्ष्ण ऋषि के निवास की ओर चले। मार्ग तय करते हुए और नदी पार करते हुए नीलगिरि के निकट अर्थात् नीले पर्वत पर एक वन देखा जहाँ भाँति-भाँति के वृक्ष थे और वहाँ उन्होंने आश्रम अर्थात् उसके रहने का स्थान देखा। वहाँ मुनि को देखा जो मिट्टी से भरे शरीर और जटा बढ़ाए हुए बैठे थे। रामचन्द्र ने उचित रूप में सम्मान देते हुए कहाः "मैं रामचन्द्र हूँ और आपको देखने आया हूँ।" ऋषि ने आँखें खोलकर उसके सर को चुम्बन दिया और कहा "तुमने अच्छा किया मैंने चित्रकूट से आने और राज्य छोड़ने की कथा सुनी है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में था ताकि तुम्हारे सामने शरीर छोड़कर देवलोक में जाऊँ। इन्द्र यहीं थे और मुझसे कह रहे थे कि तुमने अच्छे कार्यों के कारण सारे लोक प्राप्त कर लिये। हे रामचन्द्र ! अब तुम मेरे इन लोकों में अपनी पत्नी और लक्ष्मण के साथ विश्राम करो।" रामचन्द्र ने इस प्रकार जैसे इन्द्र, ब्रह्मा से कहते हैं कहा, जो कुछ आपने कहा यह सम्पत्ति मुझे मिली है और अभि ऋषि शरभंग ऋषि और गौतम ऋषि अपने-अपने लोक मुझे दे रहे थे। मुझे स्वयं कोई स्थान इस वन में रहने के लिये चाहिये दूसरा और कुछ नहीं। सुतीक्ष्ण ने मधुर वाणी से कहा; यह आश्रम अच्छा है, फल फूल वाला, दो ऋषि यहाँ रहते हैं और भाँति-भाँति के पशु और वृक्ष हैं लेकिन चिन्ता इस बात की है कि राक्षस सताते हैं और यहाँ दरिंदे आकर रात्रि में घूमते हैं। उनका भय भी है। रामचन्द्र ने यह बात सुनकर बाण धनुष पर रखते हुए कहा मैं उन सबको मार दूंगा और प्राण की रक्षा के लिये तलवार भी चलाऊँगा, जहाँ आप रहें वहाँ क्या कष्ट हो सकता है?

تو باشی چه تصدیعست درین گفتگو شام شد رامچندر شب همانجا اقامت کرد
و باقسام طعام از خوردنی اهل ریاضت سوتیچن ضیافت رامچندر کرد درینجا صورت
کوه نیله و بر آن انواع اشجار و اثمار و کلبها و طیور و وحوش و آشرم سوتیچن رکهه و او
در انجا بطور رکهان پیر مرد بهبوت بر کالبد مالیده و جٹا فروهشته نشسته و رام و لچهمن
و سیتا پیش استاده نمسکار میکنند و رام پای او می بوسد و او سر رام میبوسد

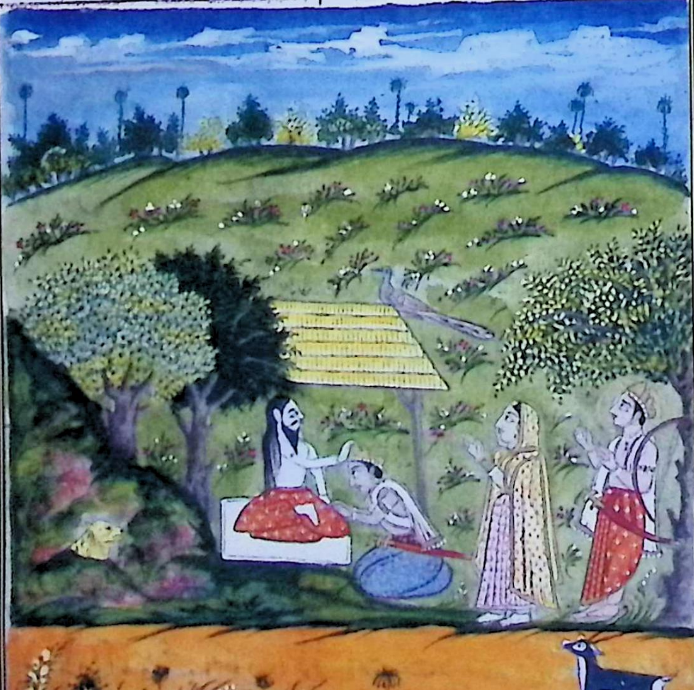

مرکی کوه

इसी वार्ता में शाम हो गयी। रामचन्द्र ने रात में वहीं निवास किया और तपस्या व संघर्ष करने वालों के भोजन के योग्य विभिन्न प्रकार के भोजन से सुतीक्ष्ण ने राम का सत्कार किया।

नीले पर्वत का चित्र जिस पर भाँति-भाँति के वृक्ष, फूल, पक्षी और जंगली पशु हैं और सुतीक्ष्ण ऋषि का आश्रम, वह वहाँ बूढ़े ऋषियों के समान शरीर पर भभूत मले और जटा बढ़ाए बैठे हैं और राम, लक्ष्मण तथा सीता सामने खड़े होकर नमस्कार कर रहे हैं। राम उसके पाँव को चुम्बन दे रहे हैं और वह राम के सर को चूम रहे हैं।

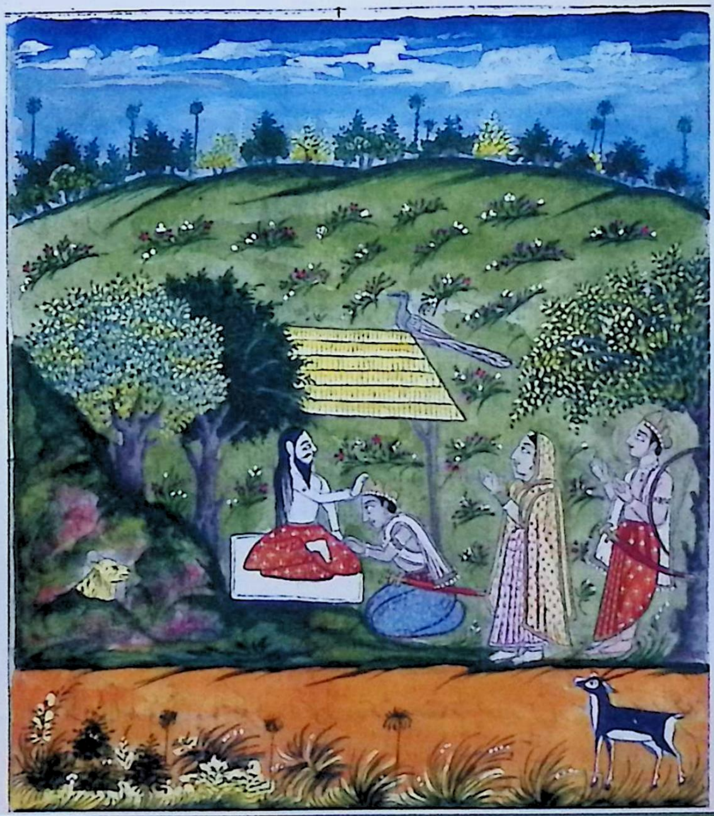

سرگ کوچ رامچندر آن شب با سیتا و لچهمن نزد سونچهن گذرانده پگاه برخاسته بآب سرد غسل نمود و لچهمن را هم بیدار ساخت و کارهای پرستش مقرری کرد و پاک شد بعده رامچندر و لچهمن و سیتا پاسا نمسکار کرده طلوع آفتاب را نظر نموده پیش سونچهن رفته نمسکار کردند و بپای او افتادند و گفتند منها باشند کان دندکارن میروند ما را هم اجازت ده که با بنیان ندیدن جمیع مندلها شرم منها میرویم تا که آفتاب روشن شود ما برسیم سونچهن گفت بخیریت با لچهمن براه نیک خواهی حجت و سیتا مانند سایه همراه خواهد بود و آشرمهای رایضان دندکارن و پهل و مول و پکهپ و بهائم بی آزار و طیوران و دام اشجار صحرا و تالابها که کارندوان گرد آنها اند به بینید و لچهمن هم برود اینها را دیده باز در آشرم خواهید آمد رامچندر و لچهمن قبول کردند و پردچهنا من نمودند بعد از ان هر دو برادر ترکشها با تیرهای اچهی که بکاهی کم نشوند بستند و کمانها گرفتند و سیتا را کهرگ یعنی قسمی از تیغها بدست داد آنرا بستند و بعزم بیرون رفتن بایستادند بعد از ان سیتا خاطرخواه شوهر چنین سخن گفت درینجا

صورت کوه نیله و اشجار و گلها و جانوران و وحوش و طیور و شیر و مکان سونچهن و او بطور سابق نشسته و رام و لچهمن و سیتا پیش ایستاده اند و کمان و ترکش بسته اند و خاموش منتظر گفتار که هستند که چه فرماید

सर्ग-99

रामचन्द्र ने वह रात सीता और लक्ष्मण के साथ सुतीक्ष्ण के पास बिताकर, प्रातः उठकर ठण्डे पानी से स्नान किया और लक्ष्मण को भी जगाया तथा नियमित पूजा पाठ वाले कार्य किये और पवित्र हुए। उसके बाद रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता ने तपस्या करने वालों को नमस्कार किया। और सूर्य उदय देखते हुए सुतीक्ष्ण के पास जाकर उन्हें नमस्कार किया तथा उनके पांव पर, पड़कर कहा ''दण्डकारण्य में रहने वाले मुनि जा रहे हैं, हमको भी आज्ञा दीजिये कि हम उन सारे मण्डलों को देखते हुए मुनि के आश्रम में जाएँ ताकि सूर्य के तेज होते-होते वहाँ पहुँच जाएँ। सुतीक्ष्ण ने कहा- ''कुशलता के साथ लक्ष्मण के साथ सीधे मार्ग पर जाओगे, और सीता छाया की भाँति साथ रहेगी, और दण्डकारण्य के तपस्या करने वालों के आश्रम फल, मूल, पखब, अहानिकारक पशु विभिन्न प्रकार के पक्षी और वृक्ष, वन तथा तालाब जो उसके चारों ओर हैं देखोगे। लक्ष्मण भी जाए इन सबको देखकर पुनः आश्रम में आओगे। रामचन्द्र और लक्ष्मण ने स्वीकार किया। मुनि को दान दिया और इसके पश्चात् दोनों भाईयों ने अपने तरकश में अच्छे बाणों के साथ, जो कभी कम नहीं होते हैं, बाँधा और धनुष लिया तथा सीता को खड्ग अर्थात् एक प्रकार की तलवार दी। उसने उसको बाँध लिया और फिर सब बाहर जाने के विचार से खड़े हुए उसके पश्चात् पति के लिए चाहने वाली सीता ने यह बात कही। सुतीक्ष्ण ऋषि के आश्रम, नीला पर्वत वृक्षों, फूलों और पशुओं, पक्षियों और का चित्र, वह यथावत् बैठे हुए हैं और राम, लक्ष्मण तथा सीता सामने खड़ी हैं। धनुष और बाण बाँध रखा है तथा चुपचाप ऋषि के बात करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह क्या कहते हैं।

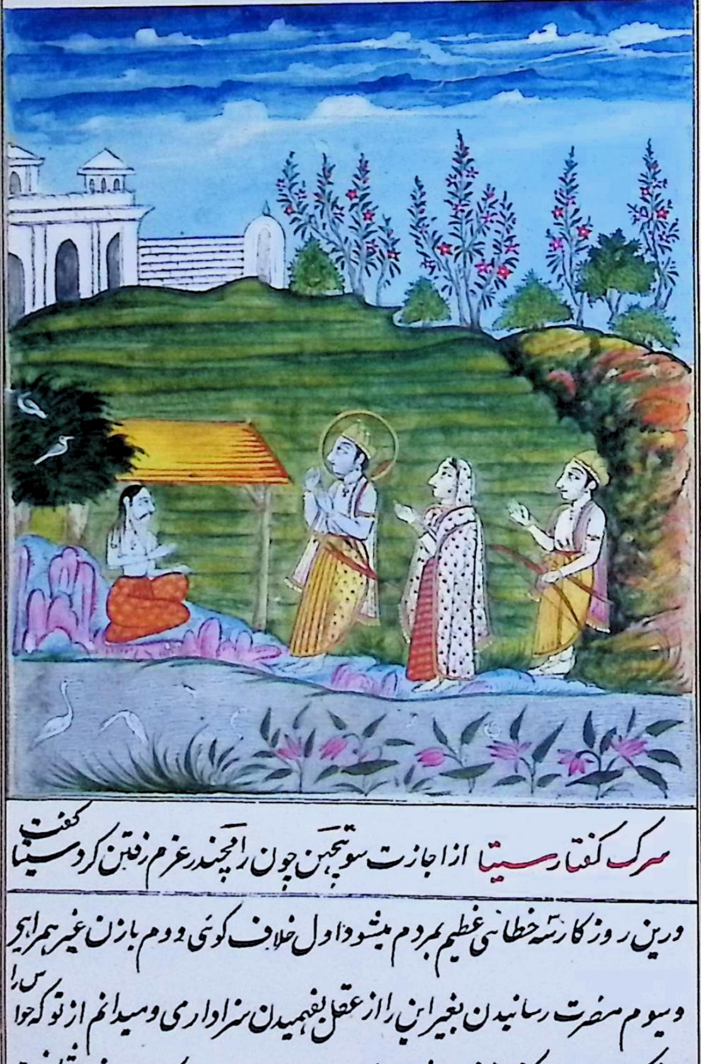

سرک گفتار سیتا از اجازت سوتچهن چون رامچندر عزم رفتن کرد سیتا گفت

درین روزکار سه خطای عظیم بمردم میشود اول خلاف گوئی دوم بازن غیر همراهی
وسیوم مضرت رسانیدن بغیر این سه را از عقل بفهمیدن سزاواری و میدانم از تو که حواس را
مسخر کرده دروغ گفتن نشده ونخواهد شد و با عورت غیر صحبت کردن درنسب شما نیست

सर्ग-१२

सीता की वार्ता

सुतीक्ष्ण की अनुमति से जब रामचन्द्र ने जाने का निर्णय किया तो सीता ने कहा ''इस काल में तीन बड़े पाप हर समय होते रहते हैं प्रथम झूठ बोलना, दूसरा परस्त्री का साथ और तीसरा दूसरों को हानि पहुँचाना। उसको आप बुद्धि के द्वारा समझ सकते हैं। और मैं जानती हूँ कि आपकी ओर से जो अपनी इन्द्रियों को वश में कर चुके हैं झूठ बोलना न कभी हुआ है और न कभी होगा, पराई स्त्री के साथ सहवास करना आपके परिवार में नहीं है।''

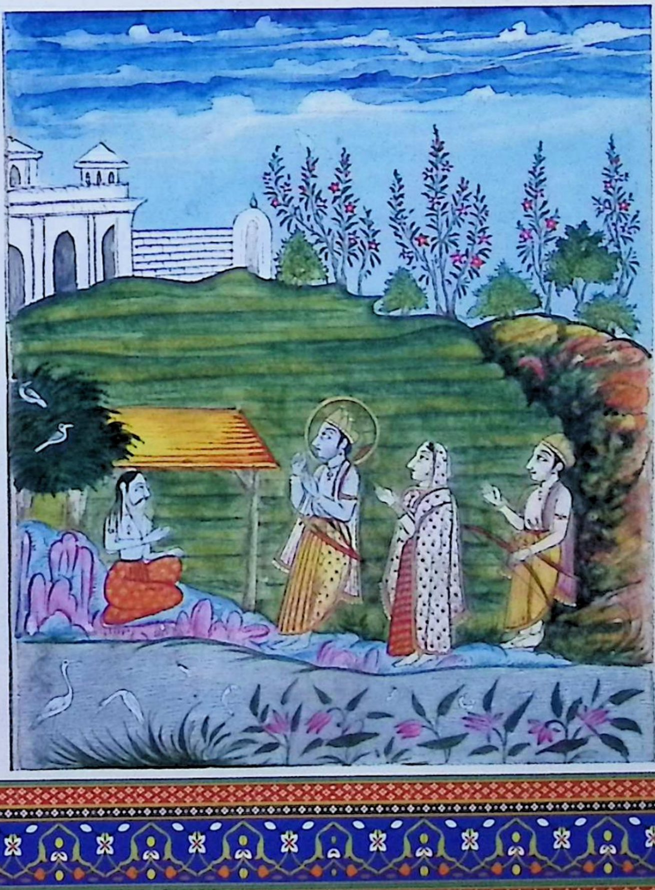

سیوم مضرت رسانیدن بغیر کشتن جانداران باشد ترا که باکسی دشمنی نیست
پیش آمده و ترپنکیا با باشندگان وندکارن کرده برائی نگاهبانی منیشه ان
و کشتن راچسان برائی همین تو پیشتر در وندک و جائی خالی از مردم بودی
حالا تو با برادر کمان و تیر گرفته روان میشوی اینحالت را دیده مرا فکر رو داده
و رفتن مرا نیکو نه نماید برائی اینکه بشنو تو با برادر تیر و کمان داشته در صحرا
میگذری ذیحیات جنگلی را دیده البته خواهی کشت و این کمان چهتریان را که مانند
آتش است برائی سوختن چوب و از داشتن آن تیج و زور غالب میشود آورده اند
قبل ازین تپسوی یعنی زاهدی راست گو و پاک و در صحرائی بود او را کسی کهرگ یعنی شمشیر
تیز داد او آن را یافته هر جا که بجهت مول و ثمرات آوردن رفتی لیا و رفتی چون سلاح
باخود داشته و تپ را گذاشته عقل را بغضب مایل کرد از غضب و غرور بسبب داشتن
سلاح به نرک یعنی بدوزخ رفت و من ترا نصیحت نمیکنم بلکه از محبت یاد میدهانم که یکجا
هلاک راچسان دندکارن تمامی و جمیع چهتریان را در صحرا از کمان کاری غیر از محافظت
غربا نباشد کجا سلاح و کجا صحرا کجا چهتر و کجا ریاضت بدان که این دهرم از ما نیکو نیست
و نادان را عقل نگاهداشتن سلاح شود و وقتی که باز باجودهیا چهتر دهرم خواهی نمود
اگر اشوق سلاح شود گنجایش دارد هرگاه راج گذاشته تو مُنی شده دهرم بکن از دهرم

तीसरा अन्जान को दुख पहुँचाना जो कि जीवधारियों को मारना होता है आपसे, जिसकी किसी से शत्रुता नहीं है घटित हुआ है। दण्डकारण्य के निवासियों ,मुनीश्वरों की रक्षा के लिये जाना और राक्षसों को मारने की प्रतिज्ञा करना, कारण आप पहले वन्दक में लोगों से रिक्त स्थान में थे। अब आप भाई के साथ धनुष बाण लेकर प्रस्थान कर रहे हैं। यह स्थित देखकर मुझे चिन्ता हो गयी है और मुझे जाना अच्छा नहीं अनुभव हो रहा है। इसलिये कि ये आप भाई के धनुष बाण लेकर वन में गुजरेंगे और वन्य जीवधारियों को देखकर अवश्य उसे मारेंगे और क्षत्रियों का यह धनुष जो लकड़ी जलाने के लिए अग्नि के समान है उसको उठाने से शक्ति और बल समाप्त हो जाता है। लोगों ने यह वर्णन किया है। इससे पूर्व एक सच्चा और पवित्र धर्मात्मा किसी वन में, या उसको किसी ने खड़ग अर्थात् तेज तलवार दी, उसको पाकर, वह जहाँ भी कन्द और फल लाने के लिये जाता उसके बिना न जाता। जब उसने अपने साथ हथियार रखकर और तपस्या छोड़कर बुद्धि को क्रोध की ओर आकर्षित कर लिया तो हथियार रखने के कारण उत्पन्न होने वाले क्रोध और घमण्ड के कारण नरक में गया। मैं आपको शिक्षा नहीं दे रही हूँ अपितु प्रेम के कारण याद दिला रही हूँ कि दण्डकारण्य के निर्दोष राक्षसों का वध न करें। समस्त क्षत्रियों का प्रयोजन यही है कि धनुष उठाने से निर्बलों की रक्षा के अतिरिक्त और कुछ न हो। कहॉ हथियार, कहाँ वन, कहाँ छत्र और कहाँ तपस्या ? यह सब विरूद्धहै हमें जानना चाहिए कि यह धर्म हमसे अच्छा नहीं है और मूर्ख की बुद्धि हथियार की रक्षा करने में होती है। जब आप पुनः अयोध्या में क्षत्रिय धर्म करेंगे और आपके अन्दर हथियारों की रुचि होगी, तो वहाँ उसकी उपयोगिता है। जब आप राज्य छोड़कर मुनि बन चुके हैं तो धर्म का आचरण कीजिये

B

دولت شود وراحت شود وسرگ حاصل شود دهرم خلاصه تمام جهان هست خود را
از رنج نیم وراستی خشک کرده واز دهرم رنج را راحت دانسته پیوسته بی غصه
و پاک باش وطریق رفتن سرگ هم ترا معلوم هست از طور عورتانه ترا گفتم والا طاقت آموختن
کراست این را فهمیده آنچه پسند آید بکن سرگ گفتار رام اینقدر گفتار دهرم از سیتا
شنید که بطریق بندگی عرض کرد رامچندر شنید گفت تو از محبت سخن شایسته گفتی وچرا نباشد
که نسل راجه جنک دهرم دان هست تو چنین گفتی ومن ترا چه جواب گویم چهتری کمان داشته
باشد وشور واضطراب شود وشنود وآن اینست که منها ساکنان دندکارن
از خود در پناه من آمدند وگفتند پهل ومول میخوریم ومیگذرانیم لیکن بسبب راچهسان
خواب وآرام ما رفت که بخون وگوشت کسان خو کرده اند ومنها را میخورند بنابران
در ملاذ من آمده فریاد کردند که تصدیع میکشیم من در مجلس گفتم که شما مهربانی فرمودید
بگویید حکم همگنان متفق شده گفتند راچهسانان دندکارن که کام روپی اند یعنی بهر صورت
که خود را مینمایند مایان را کشته وخراب کردند تو نگاهبانی ما بکن هنگام هوم وجم هنگا
پرب آن خونخواران گرفته میبرند ما بی پناهان را پناه توی اگرچه ما هم میتوانیم که شاپ
از روی تپ دهیم اما تپ ما که از دیر نموده ایم شکسته شود بنابران شاپ نمیدهیم
باوجودی که میخورند وعارج ومانع میشوند تو باتفاق برادر محافظت ما کن که خداوند مایی

धर्म से सम्पत्ति आती है, शान्ति मिलती है, और स्वर्ग की प्राप्ति होती है। धर्म समस्त संसार का सार है आपने स्वयं को नियम से दुख और सच्चाई से विरत कर लिया है। धर्म से दुख को आराम समझते हुए सदैव बिना क्रोध के और पवित्र रहिये तथा स्वर्ग में जाने का मार्ग भी आपको ज्ञात है। मैंने स्त्रियों की भाँति आपसे बात की अन्यथा शिक्षा देंने की शक्ति किसको है? इसको समझकर जो अच्छा लगे उसको कीजिये।

सर्ग–१३

राम की वार्ता

सीता से इस स्तर के धर्म की वार्ता, जो उन्होंने श्रद्धापूर्वक निवेदन किया, सुनकर रामचन्द्र ने कहा "तुमने प्रेम के कारण बहुत अच्छी बात कही, और भला क्यों न हो कि राजा जनक का परिवार धर्म जानने वाला है। तुमने ऐसा कहा और मैं तुम्हें क्या उत्तर दूँ। क्षत्रिय मान क्या जायेगा और चारों ओर कोलाहल उत्पन्न होगा। तुमने सुना होगा कि दण्डकारण्य में रहने वाले मुनि स्वयं मेरी शरण में आये थे और कहा था कि हम कंद और फल खाते हैं तथा जीवनयापन करते हैं परन्तु राक्षसों के चलते हमारा सोना और आराम सब छीन चुका है। उन्होंने मनुष्यों के मांस और रक्त की आदत डाल ली है। मुनियों को खा जाते हैं। इस लिए उन्होंने मेरी शरण में आकर प्रार्थना की है कि हम कष्ट दूर करें। मैंने उनके समूह में कहा है आप लोगों ने कृपा की। कहिये मैं क्या करूँ ?सबने एक स्वर में कहा कि दण्डकारण्य के राक्षसों ने, जो प्रत्येक रूप धारण कर लेते, हम सबका वध किया है और नष्ट किया है, आप उनसे हमारी रक्षा कीजिये। होम के समय और पर्व के समय वह खूंखार हमें पकड़ ले जाते हैं। हम शरण विहीन लोगों की शरण आप ही हैं। यद्यपि हम भी तपस्या के बल से उन्हें शाप दे सकते हैं। परन्तु हमारी तपस्या जो हमने बहुत समय से की है, टूट जाती है। इसलिये हम शाप नहीं देते हैं। यद्यपि वह हमें खाते हैं और हमारे कार्यों में बाधा पहुँचाते हैं। आप अपने भाई के साथ मिलकर हमारी रक्षा कीजिये क्योंकि आप हमारे देवता हैं।

من اقرار کرده ام حالا اگر تادیب و تنبیه را چهان بکنم از اعتراف خود برگشته باشم
و دروغ گفته باشم از راستی برگردم و از زندگی بگذرم و ترا ترک کنم و لچهمن را بگذارم
به تخصیص با برهمنان مرا محافظت رکهیشران باید کرد و اگر نه هم گفته باشم چه جای
پرتنگیا کرده باشم و آنچه تو از محبت گفتی بسیار پسندیدم و بدنبردم رامچندر این بگفت
عبد

با لچهمن بصحرای اتپسویان رفت درینجا صورت کوهی که از و آب بر می آید و صورت
آهوان و گاو میش جنگلی که آب مینوشد و صورت رام اول بعد ان سیتا بعد ان لچهمن میروه

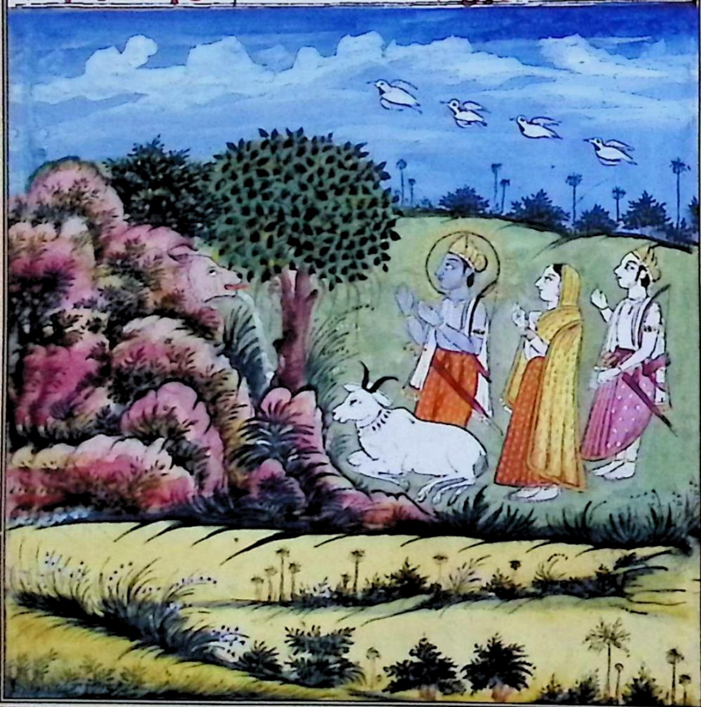

मैंने उनकी बात मान ली है। अब यदि मैं राक्षसों का दमन न करूं तो अपने कथन और प्रण से विमुख होता हूँ और जैसे मैंने झूठ बोला, मैं सत्य मार्ग से हट जाऊँगा, मैं प्राण त्याग सकता हूं। मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, और लक्ष्मण को भी छोड़ दूंगा अपने जीवन में प्रतिज्ञा भंग नही करूँगा। इसलिए अवश्य मुझे ब्राह्मणों के साथ ही मिलकर ऋषियों की रक्षा करनी चाहिये। प्रतिज्ञा पूर्ण यदि न करूं तो मुझसे ही कहा जायेगा, कि मैंने किस कारण प्रतिज्ञा की थी। जो कुछ तुमने प्रेम भाव में कहा मैंने उसे बहुत पसंद किया और बुरा नहीं माना। रामचन्द्र यह कहते हुए लक्ष्मण के साथ जंगल में चले गये।

उस पहाड़ का चित्र जिससे पानी निकलता है और हिरनों तथा जंगली भैसों की तसवीर जो पानी पी रहे हैं। राम का चित्र जो आगे-आगे हैं, उनके पीछे सीता और उनके पीछे लक्ष्मण जा रहे हैं।

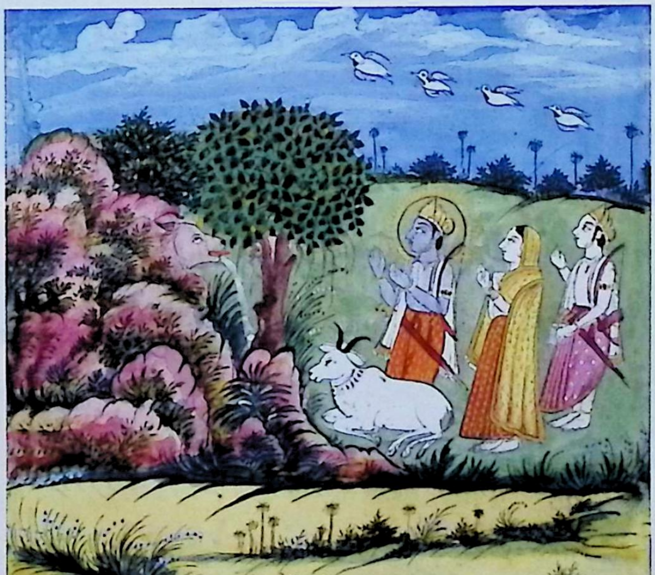

سیرک دیدن کوه ها پیشتر رامچندر روان شد و سیتا در میان ستن
و لچهمن کمان گرفته در پس و انواع جبال و مکان بر آمدن آب و دریاها را نظاره کنان
روان شدند و تالاب و چکرواک و سارسی پر از آب و آهوان مست و گاومیش جنگلی
و گراز و دیگر بهائم را تماشا کردند چون راه دو روز نوشتند آخر روز تراک یعنی تالاب دید
بطول چهار کروه پر از گل نیلوفر و از فیالان مست و هنس و چکرواک و دیگر جانوران
آبی زیب آور و خوب و صاف اما آواز سرود و ساز نواختن شنیده میشد اما هیچکس
بنظر نمی آید رامچندر و لچهمن این عجیبه را دیده از منی دهرماتما پرسیدند که این عجیبه چیست
بیان کنید منی احوال آن بگفتار در آورد و این پنج اپسرا نام زراک هست از زور ریاضت
منی مندکرن نام ساخته است و آنچنانست که او ده سال بر سنگ نشسته و باد را
خوراک کرده تپ نمود آتش وغیره دیوتا را ازین اضطراب پیدا شد با یکدیگر جمع آمده
مصلحت کردند که این میخواهد که کسی را از مایان از مقام خود دور کند لهذا تپ این را
باید شکست بنابران پنج اپسرا را امر کردند که روید آنها پیرایه ها پوشیده در آنجا رسیده
و سرود کردند تا میل کند القصه مائل کردند منی اپسرا را دیده برای مقصود دیوتاها
حاصل شود و مغلوب شهوت شد تپ او را شکسته آن پنج اپسران عورات او شدند این
نراک یعنی تالاب پیدا کرد و سیان این مکان بودن ساخت آنجا پنج اپسرا با رام ملیا شنیدند

دیامن

सर्ग-९४

कूहु को देखना

आगे रामचन्द्र चले। बीच में सीता और फिर लक्ष्मण धनुष लिये हुए विभिन्न प्रकार के पर्वत, पानी निकलने का स्थान और नदियों का दृश्यावलोकन करते हुए प्रस्थान किया। तालाब और गड़हे पानी से भरे हुए मस्त मृग, जंगली भैसे और अन्य पशु देखा। जब कुछ दूर तक मार्ग तय कर लिया तो अन्तिम दिन एक तालाब देखा जो चार कोस लम्बा था और निलोफर के फूल से भरा हुआ था। वहाँ मस्त हाथी, हंस चक्रवाक और दूसरे जलचर थे तथा वह अत्यन्त स्वच्छ था। गाने बजाने की आवाज सुनाई दे रही है। परन्तु कोई दिखाई नहीं दे रहा था। रामचन्द्र और लक्ष्मण ने यह आश्चर्यजनक बात देखकर धर्मात्मा मुनि से पूछा कि यह अजूबा क्या है, बताइये। मुनि ने इसको इस प्रकार वर्णन किया ''यह 'पंचाप्सर' नामक नराक है (तालाब है) जिसे तपस्या के बल से माण्डकर्णि नामक मुनि ने बनाया है। वह मुनि जलाशय में रहकर दस हज़ार वर्ष तक पत्थर पर बैठा रहा और वायु का भोजन करके तप किया है। अग्नि आदि देवताओं को इससे व्याकुलता हुई और एक दूसरे के साथ एकत्र होकर सबने परामर्श किया कि यह चाहता है कि हम में से किसी को अपने स्थान से हटा दे। अतः इसकी तपस्या भंग करनी चाहिए। इस लिए पाँच अप्सराओं को उन्होंने आदेश दिया कि जाओ उनकी तपस्या भंग करो । वे सब आभूषण पहनकर यहाँ पहुँचीं और गाना गाया ताकि उसका ध्यान भंग हो। अन्ततः उन्होंने उसको आकर्षित कर लिया। मुनि, अप्सराओं को देखकर ताकि देवताओं का उद्देश्य पूर्ण हो, कामवासना से ग्रसित हो गये। उनकी तपस्या तोड़ते हुए वह पाँच अप्सरायें उसकी पत्नी बन गयीं। उसने यह कुण्ड बनवाया और उसके मध्य में रहने की यह जगह बनवाई।

وبامن عشرت میکنند وبازی مینمایند هنگام عیش و بازی آنها این آواز برمی آید
این لطیفه را شنیده رامچندر و لچهمن آب آنرا گرفتند درین اثنا اشرم مندل دیدند
که کشش یعنی گیاه و چیر نهاده و اقسام درختان درانجا اند رام با لچهمن و سیتا درانجا
داخل شدند و بامن ها گفتار و ست کار کردند درینجا صورت تالاب مربع و دران بسیار بلود
و فیل و گراز جنگلی ازان آب میخورند و هنس و چکرواک و طاوس نشسته و مکان بنیشه واده درو
هوترا شده نشسته با رام سخن میگوید و لچهمن و سیتا عقب رام استاده

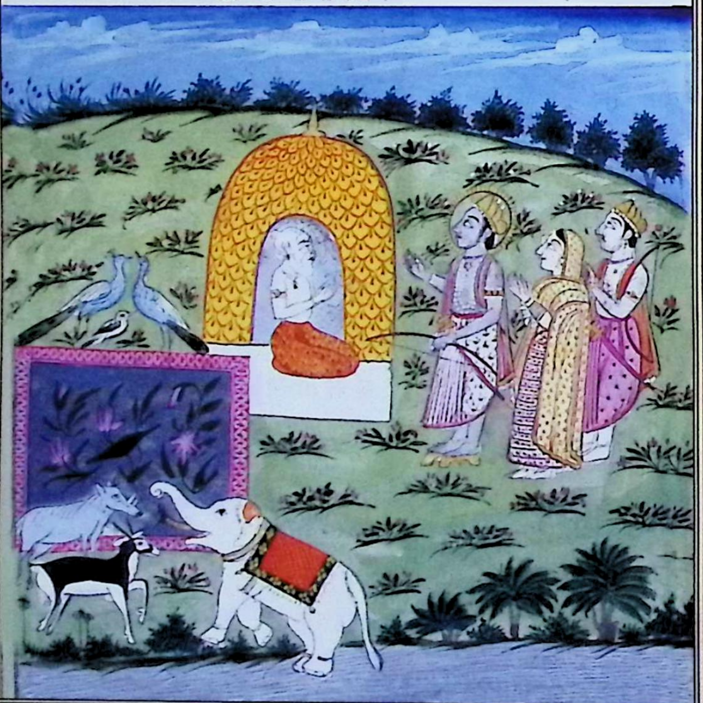

वहाँ मुनि के साथ भोग-विलास और खेलती हैं। उनके खेलने और भोग-विलास के समय यह ध्वनि आती है। यह सुनकर रामचन्द्र और लक्ष्मण ने इस तालाब का पानी लिया। इसी मध्य उन्होंने मण्डल का आश्रम देखा कि घास और चीर रखे हुए हैं और विभिन्न प्रकार के वृक्ष वहाँ हैं। राम, लक्ष्मण और सीता ने वहां प्रवेश किया और मुनियों के साथ वार्ता और उनका सत्कार किया।

चौकोर तालाब का चित्र जिसमें अगणित निलोफर, हाथी और सारस जल पी रहे हैं। हंस चक्रवाक और मोर बैठे हुए हैं और मुनीश्वर का स्थान, जो बाल कटवाए बैठे है तथा राम से बातें कर रहे हैं और लक्ष्मण तथा सीता राम के पीछे खड़े हैं।

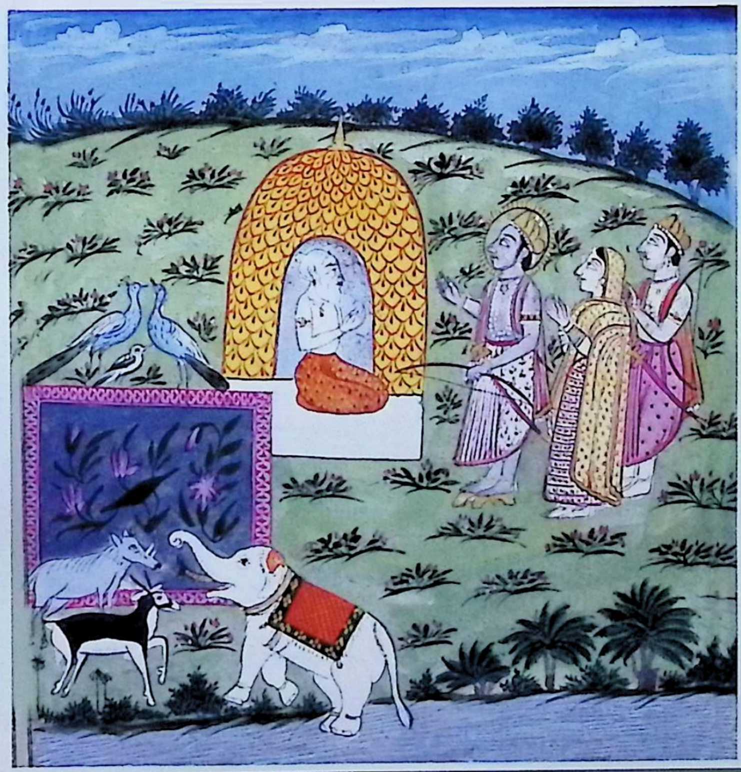

سرگ احوال رامچند در آن آشرم قدری آرام نموده در مکان دیگر ریاضت کشان رفت در انجا هم چندی اقامت فرمود میان آن رکهه ها در جایی ماهی و در جایی سالی و در جایی چهار ماه و شش ماه و پنج ماه و هشت ماه باسایش اقامت نموده بدین آئین رامچندر را در انجا ده و نیم سال بگذشت بعد ده سال و شش ماه بار دیگر بمقام سوتیچهن رکهه آمد انجا هم چندی اقامت کرد وقتی آن مُن را از نیم پرستش کرده رامچندر گفت ای سوتیچهن بهگوان درین جنگل اگست مُنِ راست کو میباشد من از یکان بودن او را درین نزدیکی شنیده ام و من آن مکان را نمیدانم انجا که رکهه میباشد از مهربانی تو با سیتا و لچهمن رفتن آنجا آرزو دارم واین تمنا دلخواه منست که آن مُن را کی خدمت خواهیم کرد اینقدر گفتار رامچندر را شنیده سوتیچهن گفت من هم میخواستم که شما یان پیش اگست بروید دیدم که الحال تو خود درخواست کردی اینک میگویم جانی که اگست مهامن میباشد ازینجا یک جوجن یعنی چهار کروه ست همراهی مُن ها بر دو سمت دکهن انجا آشرم برادرِ اگست ست و استهلی و جنگل بلیلی است بسیار ثمرات اند وطیور آواز میکنند و نیلوفر بسیار ست و هنس و کارندواک و چکرواک خوب اند انجا یک شب منزل نموده صبحی بسمت دکهن برو بطرف عقب بن کهند که از انجا قریب چهار کروه آشرم اگست ست اقسام بهایم وطیور انجا اند و سیتا و لچهمن در انجا از ثمرات و مول آرام خواهند یافت

सर्ग-१५

रामचन्द्र उस आश्रम में थोड़ा विश्राम करके दूसरे तपस्या करने वालों के पास गये। वहाँ भी उन ऋषियों के मध्य कुछ समय रहे। कहीं एक महीना कहीं एक वर्ष, कहीं चार महीना, छः महीना, पाँच महीना और आठ महीना तक आराम से रहे। इस प्रकार रामचन्द्र को वहाँ दस वर्ष बीत गये। तीन वर्ष छः महीने के बाद पुनः सुतीक्ष्ण ऋषि के पास आये। वहाँ भी कुछ समय रहे। एक बार उस मुनि की नियम से पूजा करके रामचन्द्र ने कहाः ''हे सुतीक्ष्ण भगवन्! इस वन में सत्य के मार्ग पर चलने वाले अगस्त्य मुनि रहते हैं, मैंने सुना है। उनके रहने का स्थान यहाँ से निकट है लेकिन मैं वह स्थान नहीं जानता हूँ जहाँ ऋषि रहते हैं। आपकी कृपा से मैं वहाँ सीता और लक्ष्मण के साथ जाने की इच्छा रखता हूँ और मेरी यह मनोकामना है कि मैं उस मुनि की सेवा करूँ। रामचन्द्र की यह बात सुनकर सुतीक्ष्ण ने कहा मैं भी चाहता हूँ कि तुम लोग अगस्त्य के पास जाओ। मैंने देखा कि अब तुमने स्वयं विनती की है, मैं भी यही कहता हूँ। वह स्थान जहाँ अगस्त्य मुनि रहते हैं, यहाँ से चार कोस की दूरी पर है। मुनियों के सत्संग में दक्षिण की ओर जाओ। वहाँ अगस्त्य के भाई का आश्रम है। वहॉं अत्यन्त सदाबहार वन है, अगणित फल है, पक्षी चहचहाते हैं, नीलोफर बहुत है और हंस, कारण्डव तथा चक्रवाक बहुत हैं। वहाँ एक रात्रि निवास करके प्रातः दक्षिण की ओर जाना। वन खण्ड के पीछे की ओर वहाँ से चार कोस की दूरी पर अगस्त्य का आश्रम है। विभिन्न प्रकार के पशु -पक्षी वहाँ हैं और सीता तथा लक्ष्मण वहाँ फलों और मूल से संतुष्ट होंगे

اگر این میخواهی که مُن را به بینم پس همین زمان برو و اینک راه نیک که بسیار پهول
و پهل و اشجار در وست رامچند این را شنیده با برادر خود سوتیچهن را نمسکار کرده
با سیتا و لچهمن برای دیدن اگست روان شد و صحراها و کوه ها گوناگون و تالابها
و دریا ها را تماشا کنان براهی که سوتیچهن نشان داده بود با آرام برفت در اثنای راه
لچهمن گفت اینک هر آینه آشرم یعنی مکان برادر اگست مینماید که درختان آنجا از بار
ثمر و گل سر بر زمین نگذاشته اند و از بیلی ها بخت بوئی خوش شمیده میشود و جا بجا
جوئی ها مینمایند و درپیه ها مانند نیلم بنظر می آیند و در میان صحرا مانند ابر نو دخان
مینماید و برهمنان در تیرتهه ها غسل کرده بنظر می آیند چنانچه سوتیچهن گفته بود البته که مکان
برادر اگست است که برای برآوردن حاجت دیگران مرگ را مسخر کرده خود را زنده داشته
و برادر او که اگست است کارها که کرده بشنو اینجا دو برادر یکی باتالی دوم ایلول
نام بودند و هر دو راچهس و کشنده برهمنان بودند هر برهمن را که بطریق شرادهه
برای طعام میطلبید ایلول برادر دوم را که باتالی باشد کشته پخته طعام میساخت و بخورانیدن
برهمن می پرداخت چون برهمن خورده فارغ میشد ایلول میگفت که باتالی بیرون آی
گفتار برادر را شنیده باتالی مانند میش شور کردی و وجود برهمن را سوراخ کرده برآمدی
بدینگونه هر روز آنخون خواران هزاران برهمنان را میکشتندی وقتی اگست از غصه

यदि तुम मुनि को देखना चाहते हो तो इसी समय प्रस्थान करो यह सीधा रास्ता है जिस पर कन्द व मूल के वृक्ष बहुतायत में मिलते हैं। रामचन्द्र यह सुनकर अपने भाई के साथ सुतीक्ष्ण को नमस्कार करके सीता और लक्ष्मण के साथ अगस्त्य को देखने के लिये चले और विभिन्न प्रकार के वनों, पर्वतों, तालाबों और नदियों का दृश्यावलोकन करते हुए जिस मार्ग का पता सुतीक्ष्ण ने दिया था उस मार्ग पर चलते रहे। मार्ग में उन्होंने लक्ष्मण से कहा, यह निःसन्देह आश्रम अर्थात् अगस्त्य के भाई का स्थान प्रतीत होता है क्योंकि वहाँ के वृक्ष, फलों और फूलों के भार से पृथ्वी को छू रहे हैं और बेला से अच्छी सुगन्ध आ रही है। जगह-जगह नहरें दिखाई दे रही है और चरागाहें, नीलोफर के समान दिखाई दे रही हैं। वन के मध्य बादल के समान धुआँ दिखाई दे रहा है। ब्राह्मण तीर्थ स्थानों पर स्नान करते दिखाई दे रहे हैं जैसा कि सुतीक्षा ने कहा था उसके अनुसार यह निःसंदेह अगस्त्य के भाई का स्थान है। जो दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये मृत्यु को स्वयं जीवित रखे हुए हैं और उसका भाई जो अगस्त्य है उसने जो काम किये हैं, वह सुनो। यहाँ दो भाई थे। एक का नाम वातापि और दूसरे का इल्वल था। दोनों राक्षस, ब्राह्मणों के हत्यारे थे। प्रत्येक ब्राह्मण को श्राद्ध के रूप में भोजन के लिये आमंत्रित करता था। इल्वल दूसरे भाई को जिसका नाम वातापि था मारकर उसे पकाकर भोजन बनाता था और अन्य ब्राह्मणों को खिलाता था। जब ब्राह्मण भोजन कर लेता था तो इल्वल कहता था कि वातापि बाहर आओ। भाई की बात सुनकर वातापि शोर करता हुआ और ब्राह्मणों के पेट को भेदता हुआ बाहर आता। इस प्रकार वह प्रतिदिन हजारों ब्राह्मणों को मार डालते थे। एक बार अगस्त्य क्रोध से

بمکان آهنار رسید ایلول باتالی برادر را بجنب به اکست بخورانید چون کفت که ای
باتالی بیرون آی اکست کفت کجا بیرون رود من هضم کردم و برادر تو بخانه جم رفت
اینحکایت شنیده و برادر را مرده دانسته در تهیه بستن و کرفتن اکست شد بعد ازان
اکست او را از خشم و غصه سوخته خاکستر کرد آن اکست است که از روی شفقت برای همان
اینچنین کار کرد و اینمکان برادر او ست درین اثنا افتاب بغروب رسید و شام شد
رامچندر معه برادر در همانجا سند هیا کرد و بعده باشرم من رفته نمسکار نمود و من نیز اعزاز
و اکرام او بجا آورد و یک شب در انجا بوده مول و پهل خورده کذرانیدند سرک رفتن نزد
اکست چون شب رفت و آفتاب بطلوع در آمد رامچندر نزد برادر اکست رفت کفت
نزدیک تو شب بآرام کذرانیدیم حالا برای دیدن برادر کلان تو میرویم او کفت البته
بروید بعده رام و لچهمن و سیتا روان شدند آن صحرا را دیدند و رخام و آب و کلنهی
و چری و بلو و مدهوک و تندوک را کل کرده نظر نمودند و طیوران اقسام بآواز خوش سرایان
شنیدند و هزاران درخت دیدند و بوزنه کان را تماشا کردند رامچندر لچهمن را که عقب او
میرفت کفت اینک درختان و بهایم و آهوان مینمایند آشرم من دورتر نسبت اکست آن
من است که در ست لوک بصواب کاری مشهور است اینک از دخان هوم صحرا پر است
و از بلکل نالا یعنی پوست درخت مالا هامون زیب آمده است و بهایم انجا بغربت بی غصه اند

ابن اکت

उनके स्थान पर पहुँचा। इल्वल ने वातापि भाई को पकाकर अगस्त को खिलाया जब उसने कहा कि हे वातापि बाहर आओ तो अगस्त्य ने कहा, बाहर कहाँ आयेगा मैंने उसे पचा लिया और तेरा भाई मृत्युलोक चला गया। उसने यह सुनकर और भाई को मरा हुआ जानकर अगस्त्य को बाँधने और कैद करने का निश्चय किया उसके बाद अगस्त्य ने उसको क्रोध से जलाकर भस्म कर दिया। यह वह अगस्त्य है जिसने ब्राह्मणों के प्रति प्रेमभाव के लिये यह काम किया और यह उसके भाई का स्थान है। इसी मध्य सूर्य अस्त हो गया और शाम हो गयी। रामचन्द्र ने भाई के साथ रात वहीं बिताई। इसके बाद मुनि के आश्रम में जाकर नमस्कार किया और मुनि ने भी उनका सम्मान किया तथा एक रात वहाँ रहकर मूल और फल खाकर बिताया।

सर्ग–१६

अगस्त्य के पास जाना

जब रात समाप्त हुई और सूर्य उदय हुआ तो रामचन्द्र ने अगस्त्य के भाई के पास जाकर कहा कि “आपके पास हमने रात्रि भली प्रकार व्यतीत की, अब हम आपके बड़े भाई को देखने के लिये जा रहे हैं। उसने कहा अवश्य जाओ इसके पश्चात् राम, लक्ष्मण और सीता ने प्रस्थान किया। उस वन को देखा और संगमरमर, पानी, कलची, चरी, बलू, मधूक और तन्दरूक सब देखा। कई प्रकार के पक्षियों की मीठी और सुरीली वाणी सुनी। हजारों वृक्ष देखे और वानरों का तमाशा देखा। रामचन्द्र ने लक्ष्मण से जो उनके पीछे चल रहे थे कहा यह वृक्ष, पशु और हिरन दिखाई दे रहे हैं। अब मुनि का आश्रम अधिक दूर नहीं है। अगस्त्य वह मुनि है जो तीनों लोक में भला कार्य करने के लिए प्रसिद्ध है। देखो होम के धुएँ से वन भरा हुआ है और माला वृक्षों का छाल से वन का सौन्दर्य बढ़ रहा है। उसके प्रभुत्व के कारण

این اگست مرگ را برائی راحت دیگران مسخر کرده زنده مانده و تمام طرف دکن را زیب داده از دبدبهٔ او راچهسان در بیطرف دچهن نزدیک آشرم او گناه نمی کنند از هنگامی که اگست درینجا آمده راچهسان دشمنی را گذاشته اند و نام این اگست در سمت دکهن مشهور شده است و بندها حل کوه که از غصه بلند شده بود آوبیش یعنی حکم این اگست را بجا آورده باز بلند نمیشود اینک آن دراز عمر را آشرم است این را همیشه نیکان خدمت میکنند بعد از رسیدن مارا هم امر نیک خواهد کرد ما خدمت او خواهیم نمود و باقی ایام که ازین باس یعنی بودن صحرا مانده است درانجا خواهیم گذراند اینجا دیوتا و گندهرپ و سده و رکهه اگست را خدمت میکنند و اینجا دروغ گو و غداب کاره و دغاباز و بسیار طامع یا زناکار هرگز زنده نمانند اینطریق این مقام است اینجا چهه و بشاج و ناگ یعنی مار و طیور بغربت و کمخواری بسر میبرند و از اینجا سدها برهمان شکل آفتاب سوار شده وجود گذاشته بر آسمان رفتند و چهه شدن و دیوتا شدن و راج یافتن از برای این خواهش دارند ای لچهمن تو اول برو در وانهٔ او برو و خبر من بگو که رام با سیتا آمده است اینچنین اطلاع داده من درآید

خواهم شد در اینجا صورت مکان رکهه اگست و او در و نشسته و بیرون دروازه خادم و صورت رام دست بسته پیش رکهه آمده و لچهمن باکمان و سیتا عقب آن

इस दक्षिण की ओर राक्षस उसके आश्रम के निकट कोई पाप नहीं करते। जिस समय से अगस्त्य यहाँ आए हैं राक्षसों ने शत्रुता छोड़ दी है और अगस्त्य का नाम पूरे दक्षिण में प्रसिद्ध हो चुका है। विंध्याचल पर्वत जो क्रोध के कारण ऊँचा हो गया था। अब इस अगस्त के आदेश का पालन करते हुए पुनः ऊँचा नहीं होता है। यह रहा उस दीर्घायु का आश्रम। उसकी सज्जन लोग सदैव सेवा करते हैं। हमारे पहुँचने के पश्चात् वह हमको भी सत्य मार्ग बतायेगें। हम उसकी सेवा करेंगे और शेष दिन जो इस वनवास अर्थात् वन में रहने के शेष बचे हैं वहीं व्यतीत करेंगे। यहाँ देवता, गंधर्व, सिद्ध और ऋषि अगस्त्य की सेवा करते हैं और यहाँ झूठ बोलने वाले, पापी, धोखेबाज़, बहुत अधिक लालची, बलात्कारी कदापि जीवित नहीं रहते हैं। यह उस मुनि का विधान है यहाँ सांप और पक्षी मिल जुलकर प्रेम से रहते हैं। यहाँ से सिद्ध ब्राह्मण सूर्य की भाँति चढ़कर और अपना शरीर छोड़कर आकाश पर गये और सर्प होने एवं देवता होने और राज्य पाने की यहाँ से इच्छा रखते हैं। हे लक्ष्मण ! पहले तुम उसके द्वार पर जाकर सूचना दो कि राम सीता के साथ आये हुए हैं। यह सूचना देकर मैं प्रविष्ट हूँगा।

अगस्त्य ऋषि के आश्रम का चित्र, इसमें बैठे हुए हैं और द्वार के बाहर सेवक है तथा राम का चित्र जो हाथ जोड़े ऋषि के सामने आये हैं। एवं धनुष लिये हुए लक्ष्मण और सीता उनके पीछे हैं।

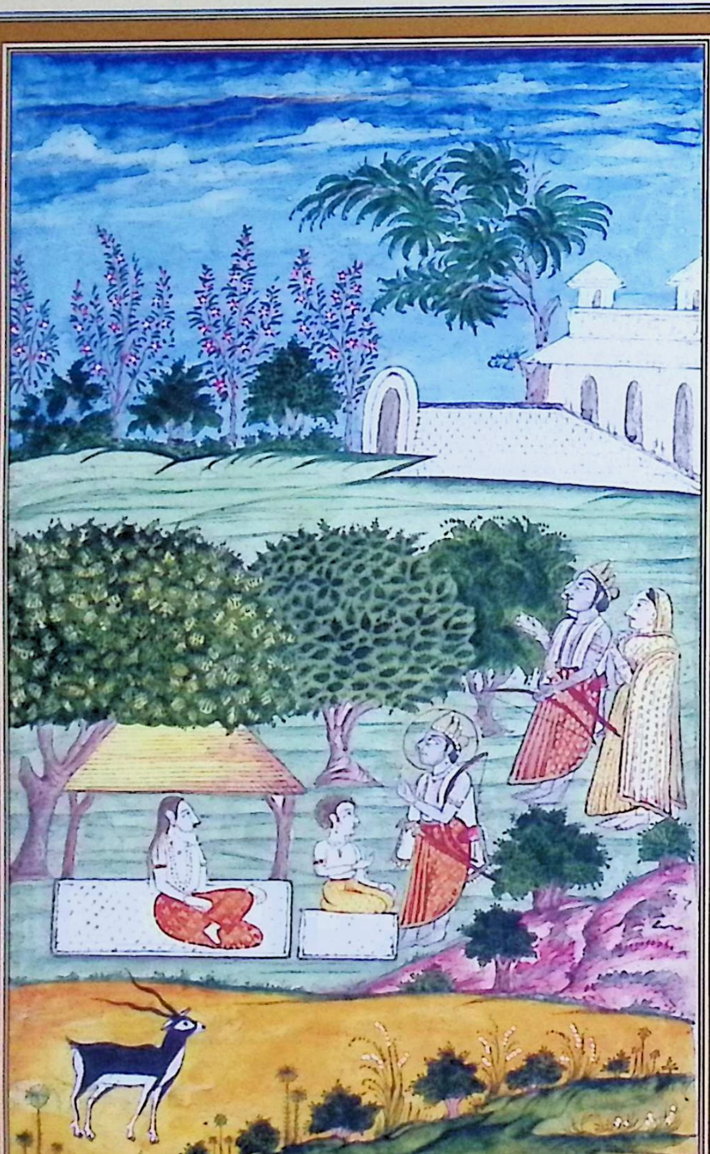

مرکطاقات اکست

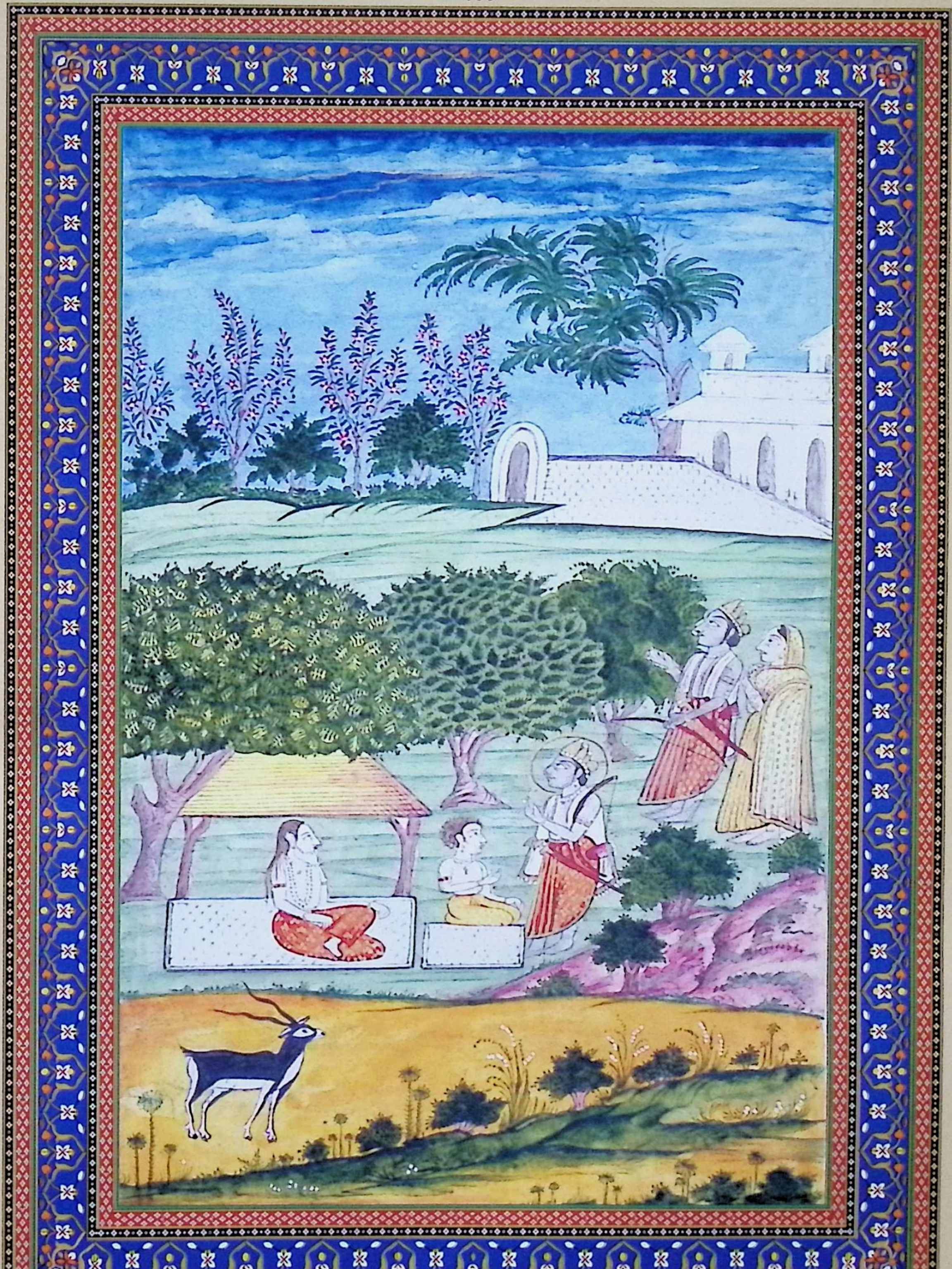

سرگ ملاقات اگست بلچهمن بموجب فرموده بآشرم اگست رفته باسکهه
یعنی باشاگرد او ملاقی شد و گفت پسر کلان راجه دشرتهه رامچندر با سیتا اهلیهٔ
خود برای دیدن من آمده است و من لچهمن نام برادر خورد اویم مارا آرزوی
دیدن من است او گفته لچهمن را شنیده در مکان آتشکده او رفته دست بسته
گفت پسر راجه دشرتهه رامچندر نام با برادر و اهلیه خود برای دیدن شما آمده است
هرچه باید کرد امر فرمائید اگست منی گفت من هم آمدن او را شنیده در دل
آرزوی او میداشتم تو اعزاز و اکرام بجا آورده در آشرم داخل کن چرا داخل
نکردید این بگفت و شاگرد با اضطراب بیرون آمده بلچهمن گفت کجاست آن رام که من برای
دیدن او خود مشتاق است سکهه همراه لچهمن نزدیک رامچندر آمد و او را و سیتا را
ملاقات کرد و بموجب فرموده اگست با عزاز و اکرام اندر آورد رامچندر با سیتا
و لچهمن اندرون آشرم آمده آن مکان با مجمع آهوان ملاحظه کرد و آنجا مکان
نشستن برهما دید و مکان مهادیو دید و مکان اندر و مکان دیوسوت یعنی آفتاب
و مکان سوم یعنی ماه و مکان بهگ و مکان کوبیر و مکان دهاتا و مکان بدهاتا
و مکان باد و مکان کارتک و مکان دهرم چون رامچندر نزدیک رسید اگست
باسکهان یعنی شاگردان خود پیشوا از مکان خود بیرون آمد رامچندر او را دیده بلچهمن گفت

सर्ग-१७

अगस्त्य से भेंट

लक्ष्मण ने आज्ञानुसार अगस्त्य के आश्रम में जाकर उनके शिष्य से भेंट की और कहाः ''राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र अपनी पत्नी सीता के साथ मुनि के दर्शन के लिये आये हैं और मैं लक्ष्मण उनका छोटा भाई हूँ। हमें मुनि के दर्शन करने की इच्छा है।'' उसने लक्ष्मण की बात सुनकर उनके अग्नि पूजा गृह में जाकर हाथ जोड़कर निवेदन किया कि राजा दशरथ के रामचन्द्र नामक पुत्र अपने भाई और पत्नी के साथ दर्शन करने आये हैं। आपकी जैसी इच्छा हो आदेश करें। अगस्त्य मुनि ने कहा- ''मैं भी उनके आगमन का समाचार सुनकर उनसे मिलने की इच्छा रखता था। तुम उनका आदर सत्कार करते हुए उन्हें आश्रम में लाओ। तुम अब तक क्यों नहीं लाए? अगस्त्य मुनि ने कहा और शिष्य ने घबराहट में बाहर आकर लक्ष्मण से कहा- कहाँ हैं वह राम ?जिनके दर्शन के लिए मुनि भी उत्सुक है। ऋषि लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र के पास आया और उनसे तथा सीता से भेंट की और अगस्त्य के आदेशानुसार उन्हें आदर व सम्मान के साथ अन्दर लाया। रामचन्द्र ने सीता और लक्ष्मण के साथ आश्रम के अन्दर आकर हिरनों के समूह वाला वह भवन देखा और वहाँ ब्रह्मा के बैठने का वह स्थान देखा। महादेव का स्थान देखा और इसी प्रकार इन्द्र का स्थान देवसुत अर्थात् सूर्य, सोम अर्थात् चन्द्रमा, भृगु , और कुबेर, धाता और विधाता, वायु व कार्तिकेय का घर और धर्मराज का घर सब देखा। रामचन्द्र जब निकट पहुँचे तो अगस्त्य अपने शिष्यों के साथ अगुवाई के लिये अपने भवन से बाहर निकल आये। रामचन्द्र ने उसको देखकर लक्ष्मण से कहा-

اینک اگست مشهور جهان از شکوه و تپسویان همراهان دانسته میشود اینقدر
بلچهمن گفت بعد از ان اگست را نمسکار کرد و دست بسته استاده شد چون نزدیک
رسید رامچندر و سیتا و لچهمن قدم او بوسیدند و رکهه آسن و آب داد و خیریت
پرسید و گفت بنشین و رام در جواب عافیت گفت بعد از ان مُن در آتش گاه
رفت و هوم کرد بعد از ان بطریق بان پرستهان آنها را طعام داد و پرستش نمود
برام گفت که گفته آنکس را در جهان هیچ نفعی نیست و گو با گوشت خود را میخورد
هر که مسافر آمده را بقدر وسعت خود طعام ندهد و پرستش نکند بجهت آنکه
آن مسافر دان و دهرم این را گرفته میبرد ای رام تو راجه تمام لوک هستی
و دهرماتما و برت کننده لهذا قابل پرستش و اعزاز هستی این بگفت
و از پهل جنگلی و مالا و گل وغیره رام را پرستش کرد بعد از ان بار دیگر گفت این کمان
سخت از طلا مغرق هست و از بشن هست که بشوکرمان ساخته هست و تیرها
مانند آفتاب که برهما داده است و این ترکش که تیر او هرگز کم نشود اندر
داده هست اینهمه را بگیر و ازین کمان بشن در جنگ اسرهای کلان را کشته دولتها
آنها بدیوتاها بخشیده هست و این کهرگ یعنی شمشیر که بسیار مغرز هست برای
ظفر خود بگیر و این تنوتران که قسمی از جوشن هست و مانند آفتاب و آتش نمودار ست

यह है अगस्त्य, समस्त लोक में प्रसिद्ध, अपने बड़प्पन प्रभुत्व और साथियों की पूजा व तपस्या से जाने जाते हैं। लक्ष्मण से इतना कहने के पश्चात् उन्होंने अगस्त को नमस्कार किया और हाथ जोड़कर खड़े हो गये। जब वह निकट पहुँचे तो उसके चरण चूमे और ऋषि ने आसन व जल प्रस्तुत किया तथा कुशल क्षेम पूछी और बैठने को कहाः राम ने उत्तर में, कुशल क्षेम बताई उसके पश्चात् मुनि अग्नि गृह में गये और होम किया। उसके पश्चात् वानप्रस्थ धर्म के रूप में पूजन कर उनको भोजन दिया और नम्रता से राम से कहा कि ''उस व्यक्ति की बात का संसार में कोई लाभ नहीं होता है और जैसे वह अपना ही माँस खाता है जो आए हुए पथिक को अपनी सामर्थ्य के अनुसार भोजन न दे और सेवा न करे। इसलिये कि वह पथिक उसका दान व धर्म लेकर जाता है। हे राम ! तुम सारे लोकों के राजा हो और धर्मात्मा और व्रत रखने वाले हो अतः पूजा और सम्मान के योग्य हो यह कहते हुए जंगली फल-फूल, मूल आदि से राम की सेवा की। उसके पश्चात् मुनि ने पुनः कहा ''यह ठोस कमान शुद्ध सोने की है और विष्णु की है जिसे विश्वकर्मा ने बनाया। यह बाण सूर्य की भाँति है जो ब्रह्मा ने दिये हैं और यह तरकश जिसके बाण कदापि कम नहीं होते हैं इन्द्र ने दिया है। यह सब ले लो। इस बाण से विष्णु ने युद्ध में बड़े-बड़े असुरों का वध किया है और उनकी सम्पत्ति देवताओं को दान कर दी है। यह खड्ग अर्थात् तलवार जो बहुत श्रेष्ठ हैं अपनी सफलता के लिये ले लो। और यह तनोतारन जो कवच का एक प्रकार है, सूर्य और अग्नि के समान प्रज्वलित और प्रकट है

وبهلوان داده است بگیر وهرگاه در کار باشد و سواری را یاد نمایی رتبه اندر نامی
سارتهی خواهد آورد اینقدر گفته آنهمه را برامچندر داده باز بخوشوقتی تمام گفت
سرگ گفتار اگست ای رام بر تو بسیار مهربان هستم نزدیک من با سیتا اقامت
کن و ترا تصدیعه نخواهد شد و سیتا را ولچهمن را هم غم نخواهد شد این سیتا که پیوسته
در آرام مانده و از محبت تو در اینجا رسیده کاری بکن که این بآرام باشد و این
کار کلان نموده که ترا تنها در صحرا نگذاشته و خوی عورات که در طینت ایشان
مخمر است اینست که هرگاه شوهر نزدیک باشد عزیز دارند و چون دور شود بگذارند
و دوستی و معاشرت دیرینه چون شمشیر و آتش و باد بیکدم ترک کند و مانند زهر هلاهل
بکشد لیکن عورت تو ازین چیزها بری است چنانچه ارندهتی و آنجا زیب خواهد یافت
جائی که تو با سیتا و لچهمن خواهی ماند تورا آجه دشرتبه را رهاندی و او بسرگ رسید
و اینمکان از شاپ بهارکور که ویران شده بود من باز آباد کرده ام رامچندر
پرسید که کیفیت شاپ بهارکو و حقیقت آبادی چگونه بود اگست گفت چون
بهارکو دند گذاشت از شاپ او این ملک بی آدمی گشت و درختان خشک شدند
و مکانات آب مانند تالاب و غیره خشک شدند و بهایم و طیور هم نماندند و ملک خوفناک شد
تا یک هزار کروه سمت دکن چنین حالت رو داد و باران هم بی موسم می بارید

और भगवान ने दिया है, ले लो। और जब किसी वाहन की आवश्यकता होगी तो रथ सारथी सहित लायेगी। यह कहते हुए अगस्त्य ने वह सारी वस्तुएँ (सभी श्रेष्ठ आयुध) रामचन्द्र को दे दिए। फिर पूरी प्रसन्नता से कहा।

सर्ग-१८

अगस्त्य की वार्ता

हे राम ! ''मैं तुम पर बहुत दयालु हूँ मेरे पास सीता सहित निवास करो और तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। सीता और लक्ष्मण को भी कोई भय नहीं होगा। जो सीता सदैव सुख सुविधा में रही हो और तुम्हारे प्रेम के कारण यहाँ तक पहुँची है। ऐसा कार्य करो कि यह सुविधा से रहे। उसने यह बड़ा कार्य किया है कि तुमको वन में अकेला नहीं छोड़ा है। स्त्रियों की यह प्रकृति होती है कि जब पति निकट होता है तो उसे प्रिय रखती है और जब दूर होता है तो छोड़ देती है। पुरानी मित्रता व सन्सर्ग को तलवार, अग्नि और हवा की भाँति मार डालती है। परन्तु तुम्हारी स्त्री इन बातों से परे है जैसे कि अरुन्धती। वह स्थान महत्वपूर्ण हो जायेगा जहाँ तुम सीता व लक्ष्मण के साथ रहोगे। तुमने राजा दशरथ को मुक्ति दिलायी और वह स्वर्ग में पहुँच गये और यह स्थान भार्गव ऋषि के शाप से निर्जन हो चुका था। मैंने उसे पुनः बसाया। रामचन्द्र ने पूछा कि भार्गव के शाप की वास्तविकता और जनसंख्या की वास्तविकता क्या थी ?अगस्त्य ने कहाः जब भार्गव ने यह द्वन्द्वछोड़ा तो उसके शाप से यह देश मनुष्यों से रहित हो गया। वृक्ष सूख गये और जल के स्थान तालाब आदि भी सूख गये, बहायम और पशु - पक्षी भी नहीं रहे और देश भयानक हो गया। दक्षिण की ओर एक हजार कोस तक यही स्थिति रही और वर्षा बिना मौसम के होती थी।

وباد بهم بی مرادی وزید از زمین تا آسمان از بخار دود آلوده بود تا هزار سال
بدینگونه بود وکند هرپ دشمن دیو بود تا هیچکس درینجا نماند ناگاه از تقدیر ایزدی
بعد از عناد بسیر و بندها جل ونگاهداشتن بندها جل من از کوه هماچل برخاسته
درینجا آمدم وبارا از اطلبدا اشتم تا مدتی بار بد دوتان یعنی ایلچیان جم و مرت
یعنی مرگ را از فوت خود تا بسیار سال ازینجا بدر کردم درختان نشاندم ودریاها جاری
شدند وتالاب ونیلوفرها وسرو رسید شد وباد سرد راحت افزا وزیدن گرفت ودر اندک مدت
آباد شد واز رکبه ها معمور گشت حالا که تو درین کوت آمده ورچیسان شوخی میکنند توانایی بزا
بکش ورکبه ها را این ساز کو یا برای محافظت مایان آمده است ها بکن درینجا صورت مکار کپه ورب
دو دو شاگردان دو درختان وا کست شمشیر و تیر و کمان برام میدهد و صورت سیتا پس رام و لچهمن ایستاده آن

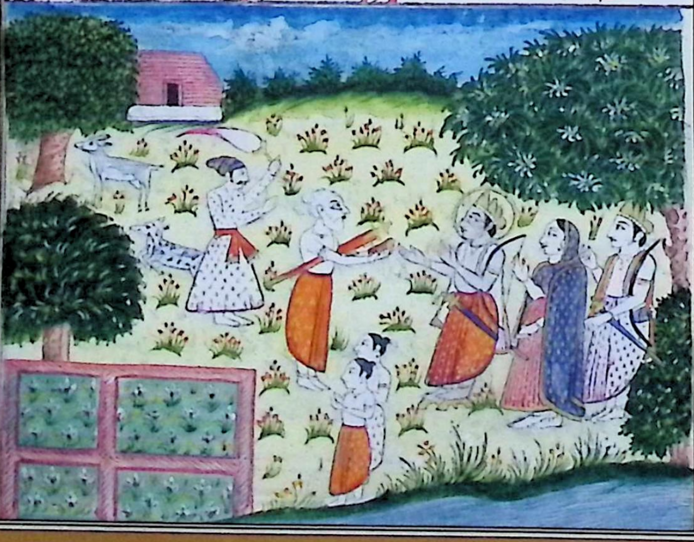

और वायु भी बिना उद्देश्य के चलती थी। पृथ्वी से आकाश तक प्रदूषण के कारण धुआँ-धुआँ था। एक हजार वर्ष तक इसी प्रकार रहा और गंधर्व, मुनि और देवता कोई यहाँ नहीं रहे। अचानक ईश्वर की कृपा से समीर व विंध्याचल की शत्रुता और विंध्याचल की रक्षा के बाद मैं हिमाचल पर्वत से चलकर यहाँ आया और फिर उनको बुलाया एक लम्बे समय तक मृत्यु के दूत अर्थात् मृत्यु को अपने से दूर किया यहाँ तक कि बहुत वर्षों तक मैं यहाँ घूमा फिरा, फिर वृक्ष लगाये और नदियाँ बहीं तथा तालाब और नीलोफर एवं सरोवर उत्पन्न हुआ और सुखदायी वायु चलनी आरंभ हुई। अल्पकाल में यह देश आबाद हो गया और ऋषि से भर गया। अब जबकि तुम चित्रकूट में आये हो और राक्षस उद्दंडता कर रहे हैं तुम वध करो और ऋषियों को संतुष्ट तथा सुरक्षित करो । जैसे कि तुम हम लोगों की रक्षा के लिये आये हो हमारी रक्षा करो।

ऋषि के भवन का चित्र, ऋषि और दो तीन शिष्यों और वृक्षों का चित्र। अगस्त्य तलवार धनुष बाण राम को दे रहे हैं और सीता का चित्र जो राम के पीछे है तथा उनके पीछे लक्ष्मण हैं।

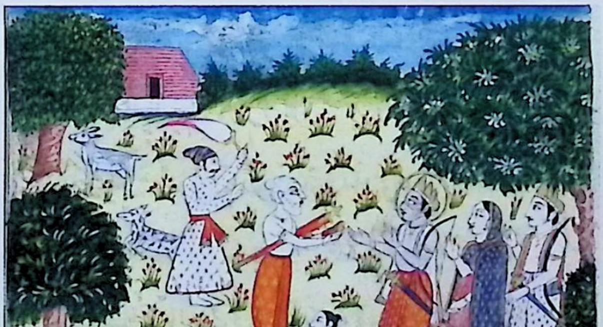

سرک **کفت** ر رام چون اگست اینقدر بیان کرد رام کفت حقیقت این ملک
عجائب بیان کردی و من بختیارم که خوبی من و برادر من و اهلیه من ظاهر ساختی
حالا مرا کدام جائه که در انجا آب و درختان بسیار باشد میفرمائی که در انجا اقامت کرم
اگست این را شنیده تا دو گهری تامل ورزیده بعد ازان کفت که ازینجا بمفاصله
دو کروه پنج بٹی نام جائی هست که درانجا بسیار مول و ثمر دار اشجار هستند آنجا
آشرم کرده با لچهمن و سیتا اقامت کن و امر پدر بجا آر و ماجرا ترا از فوت تپ
و اخلاص و شرتهه معلوم کرده ام و محبت ترا که در دل هست از زور تپ دانسته ام
خواه با من اقامت کن و گرنه در مکانی که نشان داده ام آنجا برو آن مقام خوب است
و دور هم نیست و نزدیک او دریائی گوداوری هست مول و پهل و اشجار بسیارند
و گوشه ایست آنجا باش و ترا عورت همراه هست و قدرت محافظت هم هست
آنجا بوده ریاضت کشان را پرورش خواهی کرد اینک مدهوکش را دیده
بسمت شمال بکروده یعنی درخت برو آنجا نزدیک از کوه پنج بٹی هست چون
اگست اینقدر کفت رام و لچهمن قدم او را نمشکار کرده همراه سیتا
بسمت پنج بٹی روانه شدند هر دو پسران دشرتهه کمانها در دست گرفته
و ترکش بسته در مصاف مردانه حسب فرموده من به پنج بٹی میرفتند

सर्ग–१६

राम की वार्ता

जब अगस्त्य ने यहाँ तक वर्णन किया तो राम ने कहा; ''आपने इस आश्चर्यजनक देश का वर्णन किया और मैं भाग्यशाली हूँ कि आपने मेरा, मेरे भाई और मेरी पत्नी का गुणगान किया। अब आप मुझे कहाँ निवास करने की सलाह देते हैं। क्या वह स्थान जहाँ कि जल, वृक्ष अधिक हों, कहते हैं। अगस्त्य ने यह सुनकर दो क्षण विचार किया और उसके पश्चात् कहा ''यहाँ से दो कोस की दूरी पर पंचवटी नामक एक स्थान है जहाँ मूल फल और वृक्ष बहुत हैं। वहाँ आश्रम बनाकर लक्ष्मण और सीता के साथ निवास करो और पिता के आदेश का पालन करो। मैंने तुम्हारा वृत्तान्त और दशरथ का समाचार तपस्या के बल से ज्ञात कर लिया है। तुम्हारा प्रेम जो हृदय में है तपस्या के बल से मैंने जान लिया है। चाहे हमारे साथ निवास करो। अन्यथा जो स्थान मैंने बताया है वहाँ चले जाओ। वह स्थान अति उत्तम है और दूर भी नहीं है। उसके निकट गोदावरी नदी है। मूल, फल और वृक्ष बहुत हैं तथा रक्षा की शक्ति भी है। वहाँ रहकर तुम तपस्या करने वालों का मार्ग निर्देशन एवं प्रशिक्षण दोगे। यह मधु के छत्ते को देखते हुए वृक्ष के उत्तर की ओर जाओ वहाँ से पर्वत के निकट पंचवटी है। जब अगस्त्य ने यह कहा तो रामचन्द्र और लक्ष्मण उनके चरणों को नमस्कार करते हुए पंचवटी की ओर प्रस्थान किया। दशरथ के दोनों पुत्र हाथों में धनुष लिये हुए और तरकश बाँधे हुए वीरतापूर्वक मुनि के आदेशानुसार पंचवटी की ओर चले जा रहे थे।

درانجا مکان اکست رکهه بدستور سابق واکست درمیان مکان نشسته
ورام ولچهمن سیتا نمشکار کرده از رکهه اکست مرخص میشوند

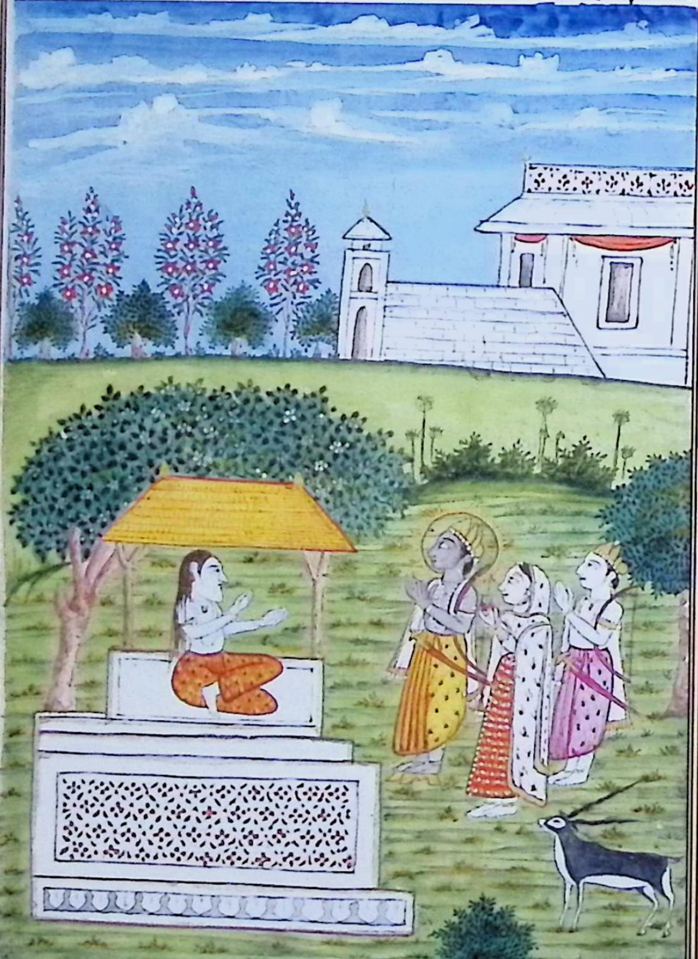

سرکیدن خنو

अगस्त्य ऋषि का मकान पूर्व की भाँति, अगस्त्य घर के मध्य में बैठे हुए हैं और राम, लक्ष्मण सीता नमस्कार करके अगस्त्य ऋषि से विदा हो रहे हैं।

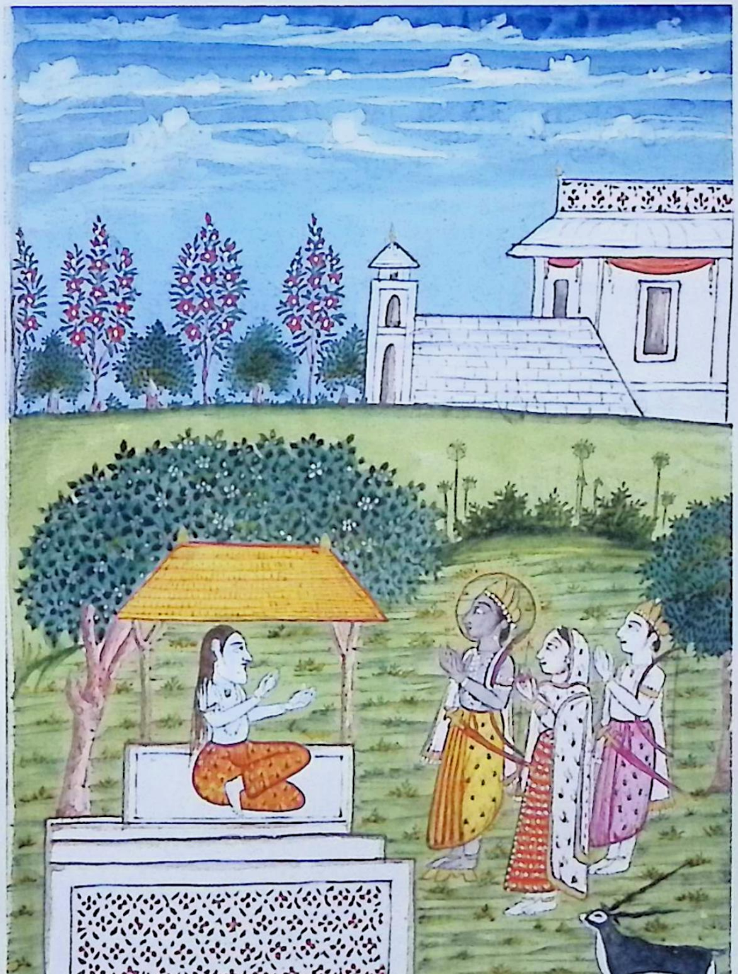

سرگ دیدن جتایو هنگام رفتن پنج بتی در راه جتایو نام گده یعنی قسمی از
غلیواز که مشهور بود با رام و لچهمن ملاقی شد ایشان او را چهس فهمیده
پیش دویدند و گفتند تو کیستی قدری باش او بشیرین زبانی گفت ای فرزند
مرا بجای پدر خود دانید رامچندر این را شنیده معه لچهمن اکرام و پرستش او نمود
از و خیر و عافیت پرسیدند جواب آن شنیدند بعده رام گفت آفرینش و
مولود و نسل خود بیان کن جتایو گفت اول آنها که پرجاپت ها گشتند
حقیقت ایشان را از ابتدا بیان میکنم بشنو اول کردمه بعده بکرانت و شیکب
راجه اژدرها و استهانو و مریچ و اتر و کرت وست شروا و پلست و پرچیتا
و پله و دچهه و دیوسوان و ارشت نیمی و کشپ از همه آخرست و دچهه پرجاپت
را شصت دختر سر آمد شدند از انجمله ده دهرم را داد و سیزده دختر بکشپ
داد و بیست و هفت بماه یعنی چندر داد و دیگران رکهه ها و غیره را از ان ده دختر
که به دهرم داده بود از اچیت نام دوازده سادهیا دیوتا پیدا شدند
که در دیوتاها بزرگ اند و از دهرم کنیا هشت بسو که در ست لوک مشهور اند بدنیکو
نام استهاو جنگم یعنی آنها که مستقیم اند و آنها که از جا میجنبد بوجود آمدند چنانچه
بشنو و از بشوا نام دختر کرت و غیره ده بشو دیوا پیدا شدند و از مرتا نام دختر

सर्ग-२०

जटायु का देखना

पंचवटी जाने के समय मार्ग में जटायु नामक गिद्ध, जो प्रसिद्ध है, राम और लक्ष्मण से मिला। यह लोग उसे राक्षस समझकर दौड़कर उसके पास गये और पूछा तुम कौन हो ?तनिक रुको, उसने मधुर वाणी से कहा ऐ पुत्र ! ''मुझे अपने पिता के स्थान पर समझो। रामचन्द्र ने यह सुनकर लक्ष्मण के साथ उसका सम्मान किया और प्रणाम किया। उससे कुशल क्षेम पूछा और उसका उत्तर सुना। उसके पश्चात् राम ने कहा ''आप अपने जन्म और कुल का वर्णन कीजिये। जटायु ने कहा उनमें सबसे पहले प्रजापति हुए। मैं उनकी वास्तविकता आरंभ से बताता हूँ। सुनो, सबसे पहले 'कर्दम' उसके बाद 'विकृत' उसके बाद शेष संश्रय, अजदहों का राजा था स्थाणु, मरीचि, अत्रि, क्रतु, पुलस्त्य, प्रचेता, पुलह, दक्ष, विवस्वान, अरिष्टनेमि और सबसे अन्त में कश्यप है। दक्ष प्रजापति के साठ पुत्रियाँ प्रसिद्ध हुईं उनमें से उसने दस धर्म को दीं और तेरह कश्यप को दीं और सत्ताईस चन्द्रमा को और अन्य दूसरे ऋषि आदि को। इन दस पुत्रियों में जो उसने धर्म को दी थी अचीता नामी पुत्री से बारह साध्य देवता पैदा हुए जो देवताओं में वरिष्ठ हैं। और धर्म से कन्या हस्तबसु जो कि तीनों लोक में प्रसिद्ध है। इस प्रकार समस्त अस्थावर जंगम अर्थात् जो कि सत्य मार्ग है और जो चलायमान है अस्तित्व में आये जैसे कि वसु और करत की विश्वानामी पुत्री आद से दस वशुदेवा उत्पन्न हुए और मरता नामक पुत्री से मखत उत्पन्न हुए।

مروت پیدا شدند و از بهانو بهانون ابوجود رسیدند و از لنبا نام دختر کهوکهنه‌ها
شدند و از سنکلپا نام سنامکا شدند و از مهوتا نام دختر نسی مهورت
که در لوک مشهور است پیدا شدند و از جاما دختر سه پنه شدند و همه یکی زمین
یعنی اشیاء زمین از ارندهتی پیدا شدند و آن دختران بیست و هفت که سوم
یعنی ماه داده بود همه نچهتر بست و هفت شدند و آن دختران سیزده که کشب گرفته بود
نامهای آنها بشنو اول ادت دوم دت سیوم دنو چهارم کهشا پنجم انایو ششم
منی هفتم سهدرا هشتم کرودهانشا نهم ارا دهم سربهی یازدهم بنتا دوازدهم کدرا سیزدهم
کالکا و آنها همه را کشب گفت شما همه را پسران شوند مظفر هر سه لوک چنانچه
از ادت دیوتاها ادتا بوجود آمدند و از دت دنت تولد شدند که اول راج این زمین
آنها کردند و از دنو پرچیتا و غیره بسیار پسران شدند و از کهشا رودرسنده چهچه فراچهس
پیدا شدند زشت طلعت و خوف دهنده همگنان و خورنده گوشت و پیه
و خون و رونده شب‌ها و پسران و نبیره‌های ایشان بسیار و بیشمار و از انایو بل
و برت و غیره پیدا شدند و کلان شبیه و مخوف که هر سه لوک را ترس می‌افزایت
و از منی بسیار گندهرب و اپسرا پیدا شدند و دیگر اپسران بزرگ که در جگت دیوتا
آنها را نمسکار میکنند و از سهدرا گندهربانی که سرود میکنند بوجود آمدند و از کرودهانشا

بوزنه ها

और भानु से भानुवान अस्तित्व में आये और लन्बा नामी पुत्री से खोखा हुए और संकल्पा नामी से सनासका हुए और महूरता नामी पुत्री से तीस महूरत उत्पन्न हुए जो लोक में प्रसिद्ध है और जामा नामी पुत्री से तीन पन्ना हुए और पृथ्वी की समस्त वस्तुएँ अरुनूधती से उत्पन्न हुईं और इन सत्ताईस पुत्रियों से जो उसने सोम अर्थात् चन्द्रमा को दी थी समस्त सत्ताईस नक्षत्र हुए। और वह तेरह पुत्रियां जो कश्यप ने ली थीं उनके नाम सुनो। प्रथम अदित, दूसरा दित्ति, तीसरा दनु, चौथा कच्छ, पांचवा अनायु, छठा मति सातवां भद्रा आठवां क्रुधनिश, नवां अरा दसवाँ सुरभि, ग्यारहवाँ बन्ता, बारहवीं कत्रा तेरहवीं कालका। उन सबसे कश्यप ने कहा कि तुम सबके पुत्र होंगे जो तीनों लोक में सफल होंगे। अतः उदत से देवता अवतार उत्पन्न हुए और दत से दन्त उत्पन्न हुए कि सबसे पहले इस धरती पर उन्होंने ही राज्य किया और देवप्रचीता आदि से बहुत लड़के हुए और कहशार दरसिंध से जछ और राक्षस उत्पन्न हुए कुरूप, सबको डराने वाले और मांस व रक्त खाने वाले और रातों को चलने वाले और उनके पुत्र और पौत्र अधिकांश हुए और अनायु से बल और बरत आदि उत्पन्न हुए बड़े शरीर वाले और भयानक जो तीनों लोक में भय और डर बढ़ाते हैं और मती से बहुत से कन्दर्प और अप्सरायें उत्पन्न हुईं और दूसरी बड़ी अप्सरायें कि जग में देवता उनको नमस्कार करते हैं और भद्रा से गन्धर्व यानी जो गीत गाते हैं, अस्तित्व में आए।

بوزنه ها و آنها که دندان دراز دارند بسیار صدهزاران تولد شدند
و نیز از گروه نشایا زده دختر متولد شدند مرکی و مرکمندا و هری و بهدرا
و متنکا و بهوتا و کپشا و نسترا و شوتنا و سرما و سرشا از اینها بسیار آفرینش بوقوع
آمد از مرکی آهوان و چکاره ها و خرگوش ها و کوهی و غیره پیدا شدند و از مرکمندا
سمرا و مرا و خوکان و کاومیشان و خران و شتران و آنها که دهن آنها مانند
کاو است و از هری میمونان یعنی هرمان و آنها که دم آنها مانند کاو است یعنی
گولانگول و خرس ها و شیران و بباگهران که قسمی از شیر باشد و شغالان و دد و ببنی
و نکل و ماران و موشان و گربه ها و در دورا از بهدرا ایروان نام فیل سفید که سینه کلان
دارد بوجود آمد که سواری اندر است و از متنکا که با تنگی مشهور است جمیع فیلان
متولد شدند و از بهوتا بهوتان که عقب روها دیواند پیدا شدند بسیار انواع
صورت خورد و بزرگ و آنها که شکم شان مانند کاو است و آنها که بسیار دست دارند
و بسیار پایی دارند و بسیار بینی دارند و بسیار دهن و بسیار چشم دارند
و گوناگون لباس میکنند همه غضبناک و خواهان جنگ اند و از کپشا پشاچ پیدا شدند
که پس خورده کسان میخورند و از ودنسترا از شتر و بیاد و ابکبی و کبده که قسمی از غزن
باشد و از شوتا دگج که بر اطراف چهار اند و دیگرا فیال پیدا شدند و بامن و غیره ده

और कधशं से बानर और जो लम्बे तेज दांतों वाले पशु हैं। लाखों की संख्या में उत्पन्न हुए तथा क्रोधवशा से ग्यारह लड़कियाँ उत्पन्न हुईं। मिर्गी, मृगमन्दा, हरी, भद्रा, मदा, हस्तकां बहुनाकिशा, नस्त्रा, शुगन्ता, सरमा और सरशान। उनसे बहुत अधिक उत्पत्ति हुई। मिर्गी से हिरन, चकोर खरगोश और कौए आदि उत्पन्न हुए, मरकन्डा से समरा और मरा, सूअर, भैंस, गधे तथा ऊँट और वह पशु उत्पन्न हुए जिनका शरीर गाय के समान होता है। हरी से मैमूनान अर्थात् हरमान और आथा की जिनकी पूँछ गाय के समान होती है अर्थात् कोलानकोल, खरस और बाघ और व्याख्रान जो बाघ का एक प्रकार होता है और गीदड़ दो बीनी, नकल, सर्प, चूहे और बिल्ली आदि उत्पन्न हुए। भद्रा से एरावत नामक सफेद हाथी जो चौड़े सीने वाला होता है अस्तित्व में आया जो इन्द्र का वाहन है। मातंगी से जो मातंग के नाम से प्रसिद्ध है समस्त हाथी उत्पन्न हुए और बहुता से बहुतान जोरो महादेव के पश्चात उत्पन्न हुए। उनकी छोटी एवं बड़ी बहुत छवियाँ हैं और जिनके पेट गाय के समान हैं और जिनके असंख्य हाथ पैर हैं बहुत सी नाक हैं और जो बहुत से मुँह और आँखें रखते हैं और विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहनते हैं। सब भयानक और युद्ध चाहने वाले हैं। कीशा से पिशाच उत्पन्न हुए जो लोगों का जूठा खाते हैं और दो नशत्रा से नशतर और बबाद और अनगही और कदह जो कि कौए की एक प्रकार है और श्वेता से दकज जो चारों ओर व्यापक है और अन्य हाथी उत्पन्न हुए और मनु आदि के साथ

سرغیل پیدا شدند و پسران و نبایران کرورها پدها دارند و دو هر ما تما و قوت مند

وار دیوتا زورآورند و کام روپ یعنی هر صورت که خواهند نمایند و بسیار کلان

بشبیه چنانکه پیری و ناتوانی و آزار با آنها هرگز نشود و آنها ده هزار کل یعنی

ذات مشهورند و سرما را دو پسر پیدا شدند که عقب رو چم اند و فرزندان و نبایران

آنها را تعداد نیست و از سرشا ماران پیدا شدند که زهر دارند و خونخوار و طیش کار اند

و از نهم عورت کشب که آرا نام داشت سه دختر پیدا شدند از آنها خورد گاه

مثل گیاه پیدا شد و هم از آرا که عورت کشب است درختان بسیار باردار

پیدا شدند و از سربهی عورت دهم کشب رودها پیدا شدند و همه گاوان پیدا شدند

و حوش و آچر و کاو و نبوستر و مکتن و منندا و پتاکی و پنکا و اچیتا و ادبهونا و استین

و گیرت باسن اینجا همه پیدا شدند و هم از سربهی دو دختر پیدا شدند روهنی و گندهرنی و از روهنی

گاو پیدا شدند و از گندهرنی اسپان و از منبا عورت یازدهم کشب دو پسر رشید شدند

ارن و گرر ارن پیش نشین یعنی سارتهی و دوست آفتاب است و گرر راجه جمیع طیور است

و از کدرو عورت ده و از دهم کشب اژدرها پیدا شدند مثل ششیش و باسک و تچهک

و کرکوت و مهاپدم و غیر هم بسیار اند و از تامرا نامی پنج دختر پیدا شدند کرونچی و بهاسی

و شینی و دهرتراشتراری و شوکی از کرونچی کرونچ ها و سارسها و بوتیمارها و طیوران آبی و غیر هم پیدا شدند

وازبنا

दस शीर्ष वाले हाथी उत्पन्न हुए और पुत्र हुए। इस आधार पर उनके करोड़ों हाथ हैं और धर्मात्मा और शक्तिशाली हैं और देवता से अधिक बलवान हैं। कामरूप अर्थात् जो रूप चाहते हैं परिवर्तित कर लेते हैं। शरीर बहुत बड़ा है, ऐसा कि बुढ़ापा अस्वस्थता और कोई अन्य कष्ट उनको नहीं पहुँचता तथा वह दस हजार जातियाँ प्रसिद्ध हैं। और सरमा के दो पुत्र उत्पन्न हुए जो रोजम के पश्चात है और इनके पुत्र और इस आधार पर इनकी संख्या नहीं है। सरशा से मारान अर्थात् सर्प उत्पन्न हुए जो विष रखते हैं और भयानक और क्रोधी हैं। कश्यप की नवीं स्त्री से जिसका नाम आरा था तीन पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। उनसे छोटी-छोटी घास के समान उत्पन्न हुई और आरा से ही जो कश्यप की पत्नी है बहुत से फलदार वृक्ष उत्पन्न हुए। कश्यप की दसवीं पत्नी सुरभि से रुद्र पैदा हुए और समस्त गाय उत्पन्न हुईं तथा जंगली पशु अचर गाए बशूत्र, मकतन, मुडां, पतागी, पगां, अचीता, अदबहूना, आसीन, कीर्ति, बासन यह सब पैदा हुए और सुरभि से दो पुत्रियाँ भी उत्पन्न हुईं रोहिणी और गन्धर्वी। रोहिणी से गाए उत्पन्न हुई और गन्धर्वी से घोड़े और कश्यप की ग्यारहवीं पत्नी बन्ता से दो सज्जन पुत्र उत्पन्न हुए, अरुण और गरुड़। अढम आगे बैठने वाला अर्थात् सारथी और सूर्य का मित्र है और करर समस्त पक्षियों का राजा है और कश्यप की बारहवीं पत्नी कद्रू से अजगर उत्पन्न हुए। शेष, वासुकि तक्षक, करकोटक और महापद्म आदि बहुत हैं और ताम्रा नामी से पांच पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं क्रौञ्ची, भासी, श्येनी, धृतराष्ट्री, शुकी। क्रौञ्ची से सारस और मुर्गाबी और जलचर पक्षी आदि उत्पन्न हुए।

وازبهاسی بهاس ها وطاوس ها وزاغ ها وخروس ها وبوم ها وکبوتر ها ودراج ها ولو
پیدا شدند وازسیینی شین یعنی غلیواز وکده که قسمی ازغلیواز باشد وازدهرت
راستری هنس ها وکلهنس وچکرواک ها ودیگران طیوران آبی پیدا شدند
وازشوکی شوک ها یعنی طوطی ها پیدا شدند که هنرورند وخوب اند وازکالکا عورت
سیز وهم کشب کالکی کن پیدا شدند ترس دهنده همه لوک ودشمنان دیوتا
القصه بدین آیین ازدختران دچه آفرینش بظهور آمد وازراجه منو منش یعنی انسان
پیدا شدند وازسر برهمن ها وازبازوان چهتریان وازکمر بیشان وازپای شودران
پیدا گشتند ودو پسر بنتا که قبل ازین گفتم ارن وگرر بهت ازارن من وسنپاتی
برادر کلان من پیدا شدند وجٹایو نام منست پدرم ارن ومادرم سینی است
وهنگام رفتن تو ولچهمن درمحافظت سیتا مدد ومعاون تو خواهم بود با پدر تو
که دشرتهه بود مرا آشنائی بسیار بود رامچندر با او ملاقی شد وگفت من هم
ترا بجائی پدر میدانم بعد ازان رامچندر با سیتا ولچهمن وآن جٹایو جانور
قوتمند به پنچ بتی روان شدند بنوعیکه برائی کشتن دشمنان ترلوچن یعنی

مهادیو رود دراینجا صورت جنگل ودرختان وجانوران وحوش وطیور وزیر درختی
جٹایو نام کده قوی هیکل وکلان صورت ورام وسیتا ولچهمن با لباس تپ باد ادا ایستاده سخن میکنند

तथा खरगोश मोर, कौए, उल्लू एवं कबूतर और राज आदि उत्पन्न हुए। और श्येनों से गिद्ध, बाज आदि उत्पन्न हुए और धृतराष्ट्री से हंस, कलहंस, चक्रवाक और दूसरे जलचर पक्षी उत्पन्न हुए और शुकी से तोते उत्पन्न हुए जो कलाकार और उत्तम है। कश्यप की तेरहवीं पत्नी कालका से कालकी कन पैदा हुए। सारे लोक को भयभीत करने वाले और देवता के शत्रु हैं। संक्षिप्त यह है इस प्रकार पुत्रियों से उत्पत्ति हुई और राजा मनु से मनुष्य पैदा हुए तथा उनके सर से ब्राह्मण और हाथों से क्षत्रिय, कमर से वैश्य और पाँव से शूद्र उत्पन्न हुए और विनिता के दो पुत्र जिनके विषय में मैंने पहले कहा है, अरुण और गरुड़। अरुण से मैं और मेरे बड़े भाई सम्पाति उत्पन्न हुए, जटायु मेरा नाम है मेरे पिता अरुण और मेरी माता श्येनी है, और सीता की रक्षा के लिये तुम्हारे और लक्ष्मण के जाने के समय मैं तुम्हारा सहयोगी और सहायक हूंगा। तुम्हारे पिता दशरथ के साथ मेरी अच्छी मित्रता थी। रामचन्द्र ने उससे भेंट की और कहा ''मैं भी आपको पिता के स्थान पर समझता हूँ। उसके पश्चात् रामचन्द्र सीता लक्ष्मण और इस बलवान व जीवधारी जटायु के साथ पंचवटी के लिए विदा हुए जैसे कि शत्रुओं का वध करने के लिए त्रिलोचन अर्थात् महादेव जाते हैं।

वन, वृक्ष, पशु और पक्षियों का चित्र, एक वृक्ष के नीचे दैत्याकार और बड़ा गिद्ध जटायु बैठा है और राम, लक्ष्मण और सीता का चित्र जो पूर्व के वस्त्र में खड़े-खड़े उससे बाते कर रहे हैं।

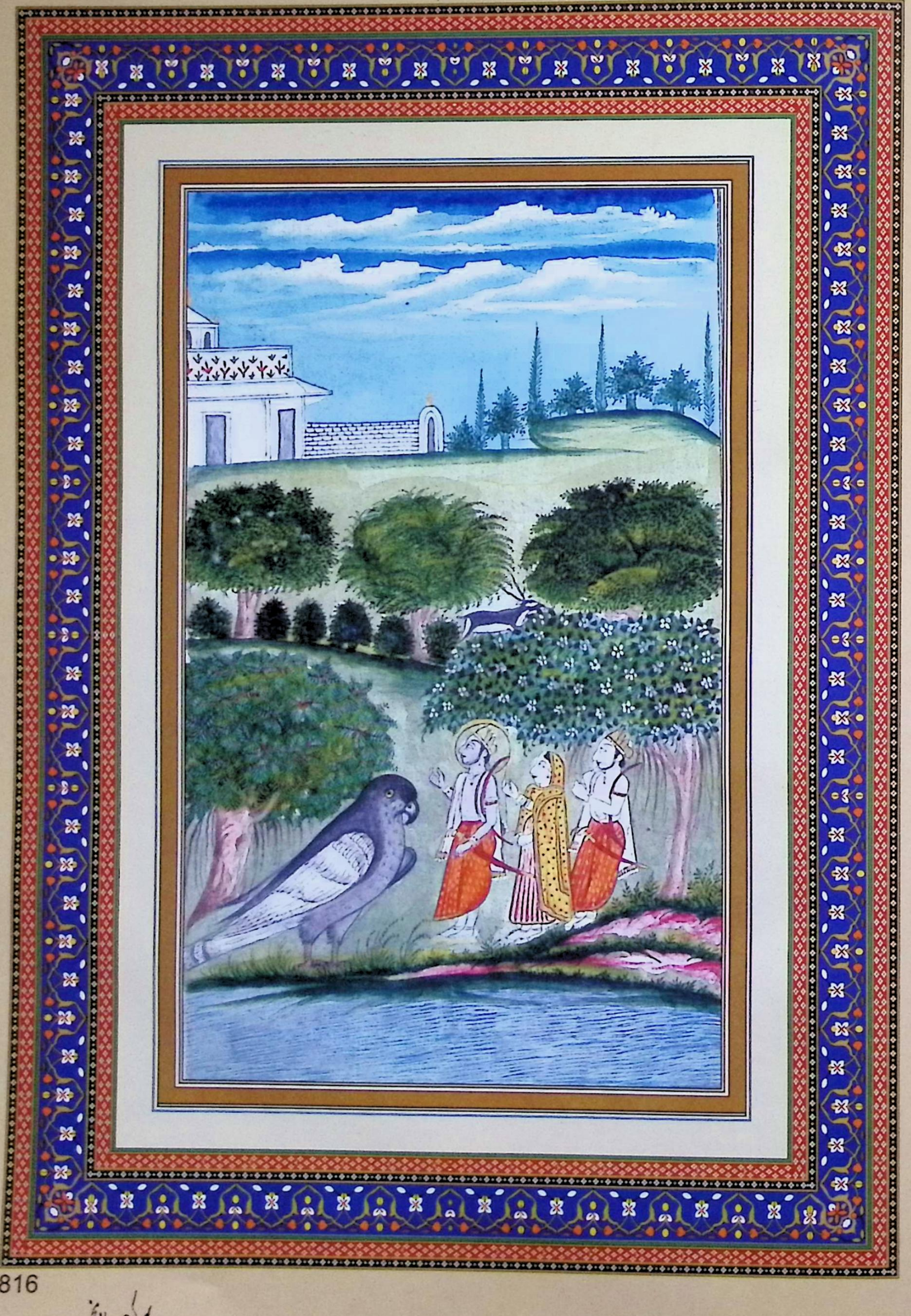

سرکوبین بخ

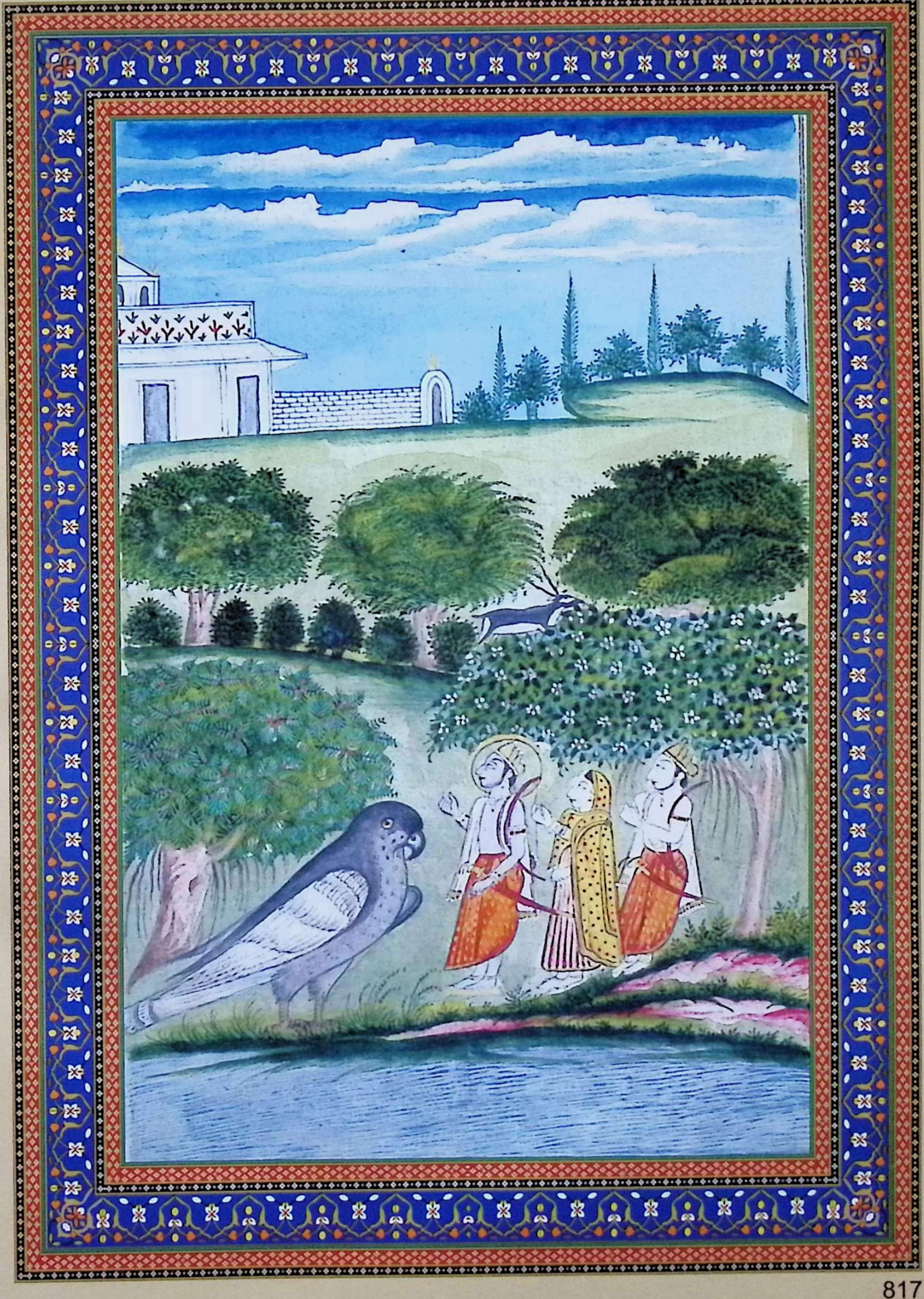

3A

سرگذشت دیدن پنج بتی چون نزدیک پنج بتی رسیدند رامچندر بلچهمن گفت مکانی که اگست نشان داده بود رسیدیم و پنج بتی همین است که درختان شگفته دارد همه جا نظر کرده در مکان نیک آشرم کن جائی که سیتا و تو و من با آسودگی باشیم به بن وآب نزدیک باشد و صحرا خوش آینده باشد و کمان ها با چله بمانند چون رام چنین گفت لچهمن گفت من خادم هستم تو صد هزار سال زنده باش و خود مکان خاطر خواه دیده مرا امر کن رام ازین سخن خوشوقت شده خود مکانی نیک برای آشرم تجویز کرد و دست لچهمن را بدست خود گرفته گفت اینک مکان برابر و نیک و با درختان شگفته خوب است اینجا آشرم بکن و اینجا نزدیکتر نیلوفرها با هنس هاست چنانچه اگست گفته بود اینک دریای گوداوری است که طایران هنس و کارنداو چکرواک زیب آور است و آهوان نزدیک آمد و بوزنه ها اند و اشجار انب و اشواک و چنک و کیتکی هزاران شگفته اند و درختان صندل و سنبدل و شال و تمال و مولسری و دهو و اشوکرن و کهدر و کنشوک و پاتل هستند اینجا اقامت خواهیم نمود چون رام چنین گفت لچهمن بسرعت آشرم موجود ساخت و پرن شالا خوب و کلان بپرداخت بعد ازان بر دریای گوداوری رفت و غسل کرد و آب گرفته بزودی آمد آنجا گلها را بطریق بل داد و شانت نمود بعد ازان آن مکان برامچندر بنمود رام با سیتا رفته آن مکان را دیده خوشوقت شد

सर्ग- २१

पंचवटी का देखना

जब राम पंचवटी के निकट पहुँचे तो लक्ष्मण से कहा ''जिस स्थान का पता अगस्त्य ने बताया था हम वहाँ पहुँच गये, पंचवटी यही है। सब जगह देखकर अच्छी जगह आश्रम बनाओ जहाँ सीता, तुम और मैं सुख से रह सकें। देखो पानी निकट हो, और धनुष चिल्ले पर चढ़ी रहे।'' राम के यह कहने पर लक्ष्मण ने कहा मैं दास हूँ। आप हजार वर्ष जीवित रहे, आप स्वयं अच्छी जगह देखकर मुझे आदेश दीजिये। राम ने इस बात से प्रसन्न होकर स्वयं एक अच्छा स्थान आश्रम के लिये नियुक्त किया और लक्ष्मण का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा ''यह स्थान समतल, अच्छा और हरे भरे वृक्षों वाला है। यहाँ आश्रम बनाओ और यहाँ से निकट नीलोफर और हंस है जैसा कि अगस्त्य ने कहा था। यह रही गोदावरी नदी जिसमें हंस, चक्रवाक और दूसरे पक्षी हैं। मृग भी निकट है बन्दर भी हैं और आम, अशोक और चम्पा और केतकी के हजारों वृक्ष उगे हैं और चन्दन, सनेदल, शाल, तमाल, मौलसिरी, धव, अश्वकर्ण कहदर, कनशोक और पाटल के वृक्ष भी हैं। हम यहीं निवास करेंगे। राम के यह कहते ही लक्ष्मण ने शीघ्रता से आश्रम बनाकर तैयार कर दिया। पर्णशाला अति उत्तम और बड़ी बनायी, इसके पश्चात् नदी पर जाकर स्नान करके, पानी लेकर शीघ्रता से आये। वहाँ फूलों को बल दिया और शान्त किया। इसके पश्चात रामचन्द्र को वह स्थान दिखाया। राम सीता के साथ जाकर उस स्थान को देखकर प्रसन्न हुए

از دست کرد لچهمن دور کرده از دوستی و اخلاص تمام کفت تو این کار کلان را
بزودی کردی بر تو بسیار مهربانم از سبب تو من آرام یافتم ای پسر تو بجای
پدر هستی اینقدر کفت و در انمکان باسودکی استقامت کرفت و با سیتا
و لچهمن در آنجا مدت مدید ماند بدین آئین او را دوازده سال و نیم سال بکذشت
و برفاهیت و آسایش کذران کشت ناکاه ایام سرما و برودت رسید و هنگام
هیمنت آمد وقتی شب کذشته بود و پکاه تر رام برای غسل بر دریای کوداوری
رفت و کلس یعنی سبوی برنجی بامسی در دست کرفت و سیتا همراه روان شد
و لچهمن عقب کشت یکایک برام کفت اینوقت آن رسید که تمام عالم آرایش
یابد و همه لوک از شبنم پر است و تمام زمین از کیاه ها برکشته و خوردنی ها از آب
چنان شده که طعام از آتش پخته شود و درین ایام راجه ها برای ظفر های خود کشت
میکنند و مکان اکست با وجود آفتاب مانند عورت بی تلک بنظر نمی آید و ریک
دور تر از آفتاب کوه سرمایخ از برف هم پر است و این ایام که صبحی باعث
تصدیع و دویاس باعث آرام اند شتاب میکذرند و از سبب شبنم و باد سرد
جنکل در روز تاریک مینماید و در شب پورن ماسی قمر را بسکه برف آلوده کرده
چهار دهم
مانند آئینه زنک آلوده بنظر نمی آید و قمر بسبب برف مانند سیتا بسبب ریاضت

لاغر شده مینماید

उन्होंने लक्ष्मण के हाथ से धूल झाड़ते हुए पूरे प्रेम और वात्सल्य से कहा तुमने इतना बड़ा कार्य शीघ्रता से कर दिया। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हारे कारण मुझे सुख मिला हे लक्ष्मण ! तुम पिता के स्थान पर हो यह कहते हुए उस मकान में सुख से निवास किया। और सीता लक्ष्मण के साथ एक लम्बे समय तक वहाँ रहे। इसी प्रकार उनका सारा वर्ष व्यतीत हो गया। यह समय बहुत आराम और सुख से व्यतीत हुआ। फिर अचानक ठंडक व शीत ऋतु के दिन आ गये। जब बसन्त आया तो रात्रि का एक पहर व्यतीत हो चुका था। प्रातः राम स्नान के लिये गोदावरी नदी पर गये और कलश अर्थात् ब्रन्जी घड़ा हाथ में लिया और सीता भी साथ में चलीं और लक्ष्मण पीछे हो गये। यकायक उन्होंने राम से कहा यह समय आ पहुँचा है कि समस्त संसार साज व सज्जा से सुसज्जित है समस्त लोक ओस से भरा है, समस्त धरती घास से भरी हुई है, और खाने की वस्तुएँ पानी से ऐसी हो गयी हैं जैसे अग्नि से पकाई जाती है इन दिनों राजा अपनी विजय श्री के लिए भ्रमण करते हैं और अगस्त्य के घर सूर्य निकल आने के बाद भी बे तिलक स्त्री की भांति लग रहा है। और सूर्य से अति दूर यह ठण्डे पर्वत बर्फ से भरे हैं, यह दिन जिनकी प्रभात कष्टदायक है और रात्रि सुख देने वाली है शीघ्रता से व्यतीत हो रहे हैं और ओस और ठण्डी वायु के कारण वन दिन में भी अंधेरा दिखाई देता है। और चौदहवीं रात्रि में पूर्ण चन्द्रमा भी शीशे की भांति ज़ंग लगा हुआ दिखता है और चन्द्रमा बर्फ के कारण धुंधला दिखाई दे रहा है जैसे कि सीता तपस्या के कारण।

ملوث مینماید و این باد که از طرف مغرب وزید برودت را مضاعف کرده
و از سبب باد دخان آلوده کرونج و سارس که آواز میکنند خوش مینمایند و درختان
خرما که بر تارک ایشان گل شگفته یا درخت شال که مانند طلاست نیکو مینماید
و از افق برآمده از شبنم آلوده آفتاب مانند ماه مینماید و گیاه نو برآمده و بر رو
شبنم افتاده با گلهای جنگلی چون فرش مرصع بنظر می آید در چنین وقت بهرت
که بهگت پرستنده تست ریاضت میکند و کام یعنی شهوه و راج و عیشها
و حظها را گذاشته کم خورنده گشته در برودت بر زمین میخسپد و البته در چنین
وقت با مردم بر دریای سرجو برای غسل رفته باشد و او نازک تن است آخر شب
در سرما چگونه غسل بر سرجو خواهد نمود و بهرت از تپ سرگ را گرفت و بهرت
بدنامی جهانیان از نیکوئی دور کرد اما کسی را که شوهر مانند دشرته باشد و پسر مانند
بهرت بود آن کیکئی آنچنان چسان شد و بهرت آنچنان زائیده گویا آفتاب
نسب اهوا کوست چون لچهمن چنین گفت رامچندر نکوهش کیکئی را ازداشت
نکرده گفت والده میانه مرا که کیکئی باشد بد نگو نه او را بد مگو او چه کرد در عقل
و خواهش بودن صحرا مقرر بود و از روی سن بود از اخلاص بهرت نوع دیگر
میگفتم در همین گفتار بر دریای گوداوری رسیدند رام غسل کرد و سیتا و لچهمن

और यह हवा जो पश्चिम की ओर से चल रही है उसने सर्दी बढ़ा दी है और धुआँ मिश्रित हवा क्रौञ्च से और सारस जो आवाज कर रहे हैं, अच्छे लग रहे हैं खजूर के वृक्ष जिन पर फूल खिले हुए हैं, शाल वृक्ष जो तला के समान हैं अच्छे लग रहे हैं, आकाश से निकलकर और शबनम से भीगकर सूर्य चन्द्रमा के समान प्रतीत हो रहा है। घास उगी हुई है जिस पर शबनम पड़ी हुई है। यह जंगली फूलों के साथ मिलकर सुसज्जित फर्श के समान दिख रहा है। ऐसे समय में भरत जो आपके भक्त हैं तपस्या कर रहे हैं और इच्छायें, राज्य और सुख सुविधायें सब छोड़कर कम खाने वाले हो गये हैं और सर्दी में धरती पर सोते हैं। निःसन्देह इस समय वह लोगों के साथ सरयू नदी पर स्नान के लिए गये होंगे। वह कोमल शरीर वाले हैं जाड़े की अन्तिम रात्रि में वह सरयू नदी के किनारे स्नान करेंगे और भरत ने तपस्या के द्वारा स्वर्ग पा लिया और अपने पुण्य से संसार वालों की निन्दा दूर कर दी है लेकिन आश्चर्य है कि जिसके पति दशरथ जैसे हों और जिसका पुत्र भरत जैसा हो वह कैकेयी ऐसी कैसे निकल गयी ?और भरत ऐसा उत्पन्न हुआ वह इक्ष्वाकु के परिवार का सूरज है। लक्ष्मण ने जब यह बात कही तो रामचन्द्र ने कैकेयी की निन्दा व बुराई सहन न करते हुए कहा ''मेरी मझली माँ कैकेयी को इस प्रकार बुरा मत कहो। उसने क्या किया है ?भाग्य में वन में रहना नियत था और मेरे कारण से था।''

भरत के सद्भाव के कारण मैं कुछ और कह रहा था। यही बातें करते हुए वह लोग गोदावरी नदी पर पहुँचे। राम ने स्नान किया और सीता तथा लक्ष्मण ने भी स्नान करके

نیز و پتران و دیوتا خود را ترپن نمودند و آفتاب را و دیوتاها را نمسکار کردند و بعد
غسل رامچندر با سیتا و لچهمن چنان زیب آورشد چنانچه مهادیو با پاربتی و بشن
با لچهمی درینجا صورت دریای گوداوری و درختان و آفتاب بر آسمان تابان
و رام و لچهمن نغوله بسته در میان آب دریا برای غسل رفتند و باقتاب میبینند
و سیتا دست بسته بر کناره استاده

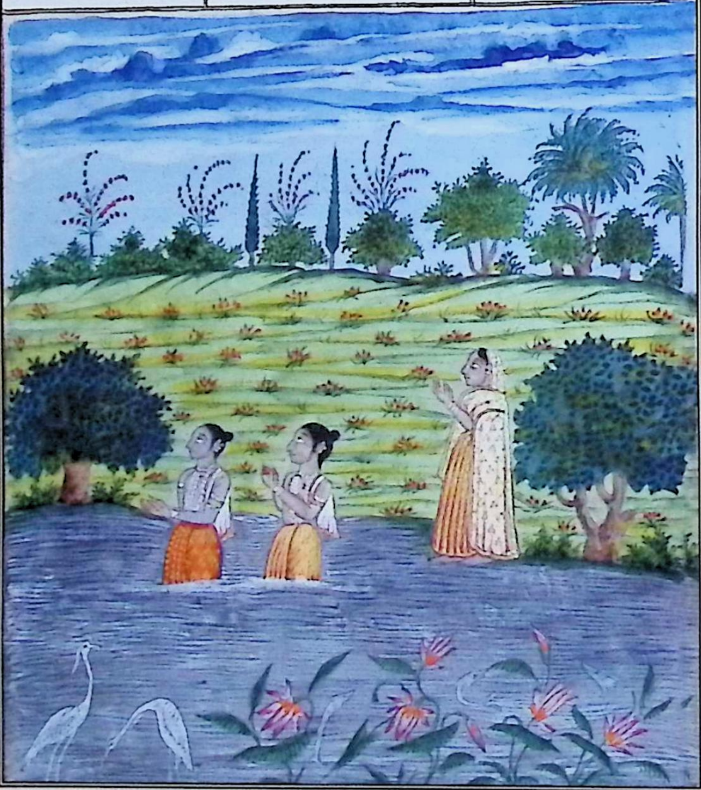

देवता का दर्शन किया। सूर्य देवता को नमस्कार किया और स्नान के बाद रामचन्द्र, सीता तथा लक्ष्मण के साथ ऐसे सजने लगे जैसे कि महादेव पार्वती के साथ, विष्णु लक्ष्मी के साथ।

चित्र में गोदावरी नदी, वृक्ष, आकाश पर सूर्य के समान प्रकाशित दिख रहा है और राम लक्ष्मण (नगूला) धोती बाँधकर नदी के पानी में स्नान करने के लिए गये और सूर्य को पानी दे रहे हैं तथा सीता हाथ जोड़े किनारे खड़ी हैं।

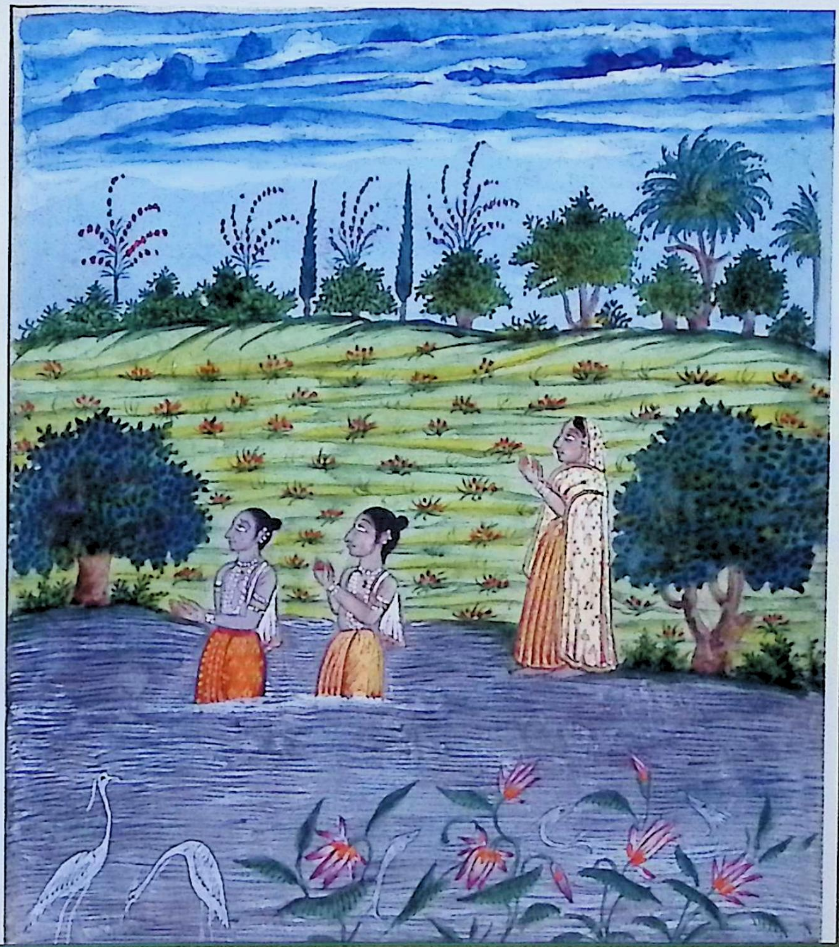

سرگ آمدن سورپ نکها بعد از آن غسل کرده رامچندر با سیتا و لچهمن از کنار

گوداوری بمکان آشرم خود آمد در پرن شالا خود نشسته با سیتا چنان زیبا بود
که چندرمان با روهنی سندهیا صبح نمود بعد از آن در انواع انواع گفتار بود
که ناگاه در آنجا سورپ نکها نام راچهسی همشیره راون راچهس که ده سر داشت در رسید
و رامچندر را مانند دیوتا بصورت خوب دید که مثل شیر کتف و دراز دست و چشم مانند
نیلوفر است شهوت ناک گشت و با رام گفت ای دارنده جٹا و تیر و کمان تو
با عورت در مکان راچهسان چگونه آمده چون رام این کلام شنید از صاف دلی
و غربت تمام ماجرا بیان کرد که من رامچندر پسر راجه دشرته ام و این لچهمن برادر من و این
سیتا اهلیه من است از امر پدر و مادر بمحافظت دهرم برائی بودن صحرا آمده ایم
حالا شنیدن حقیقت تو آرزو داریم که تو کیستی و در اینجا چرا آمدی راچهسی مغلوب شهوت شده
گفت ای رامچندر گفتار من باتفاق برادر خود بشنو من سورپ نکهی نام راچهسی ام
و کام روپنی ای بهر صورت که خواهم خود را نمایم و من تنها در صحرا میگردم و راون نام
که مشهور هر سه لوک است برادر من است و بهبهیکن نام هم برادر است اما دهرماتما
طریقه راچهسان ندارد و کنبهکرن نام برادر است که بسیار خواب میکند و مبارزان
جنگ دو برادر دیگر اند کهر نام و دوکهن نام و من بر تو فریفته شده ام شوهر من شو

सर्ग-२२

सूपनखा का आगमन

उसके बाद स्नान करके रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण के साथ गोदावरी के किनारे अपने आश्रम पर आये और अपनी पर्णशाला में सीता के साथ बैठे। दोनों ऐसे लग रहे थे जैसे कि चन्द्रमा रोहिणी के साथ लगता है। उसके बाद विभिन्न प्रकार की बातों में व्यस्त थे कि अचानक वहाँ दस सरों वाले रावण राक्षस की बहन सूपनखा नामी राक्षसी आ पहुँची और रामचन्द्र को देवता के समान सुन्दर देखकर, कि उनका कंधा शेर जैसा, हाथ लम्बा और बड़ा और आँखें निलोफर जैसी हैं, कामवासना से लिप्त हो गयी और उसने राम से कहा; हे जटा और धनुष बाण रखने वाले ! तुम स्त्री के साथ राक्षसों के इस स्थान पर क्यों आये हो ?जब राम ने यह बात सुनी तो उन्होंने पवित्र मन और सम्मान से सारी बात बताई कि मैं राजा दशरथ का पुत्र रामचन्द्र हूँ और यह लक्ष्मण मेरा भाई है तथा यह सीता मेरी पत्नी है। हम लोग माता-पिता के आदेश से धर्म की रक्षा के लिये वन में रहने के लिये आये हैं अब हम तुम्हारी वास्तविकता जानने की इच्छा रखते हैं कि तुम कौन हो और यहाँ क्यों आयी हो ?कामवासना में लीन राक्षसी ने कहा; हे रामचन्द्र ! तुम मेरी बात अपने भाई के साथ मिलकर सुनो। मैं सूपनखा नामक राक्षसी हूँ और मैं जिस रूप में चाहूँ प्रकट हो सकती हूँ तथा मैं वन में अकेली घूमती हूँ। रावण जो तीनों लोक में प्रसिद्ध है, वह मेरा भाई है, एक विभीषण नाम का मेरा भाई है, लेकिन वह धर्मात्मा है, राक्षसों की तरह जीवन नहीं बिताता है, कुंभकर्ण नाम का भी एक भाई है जो बहुत सोता है और युद्ध में शत्रु को ललकारने वाले दो भाई दूसरे हैं- एक का नाम खर है, तथा दूसरे का नाम दूषण है। मैं तुमसे प्रेम करने लगी हूँ तुम मेरे पति बन जाओ।

ترا با سیتا چکار است بد صورت و بد طور لایق تو نیست من بخوبی سزاوار توام
حسن مرا نظر کن و این عورت نالایق بد صورت را میخورم و این برادر ترا هم میخورم
بعد از آن تو با من بوده در کوه ها و صحراها، دندکارن تماشا کنان تفرج کن
چون اینقدر گفت رامچندر تبسم نموده برای تضحیک سیتا و لچهمن بسورپنکهی
گفت مرا خود اهلیه هست و این مرا بسیار عزیز است و مثل ترا سوکن باعث
تصدیع کمال است و این برادر خورد من هنرمند است و دلخواه طلعت دارد و بی
اهلیه است و لچهمن نام است این شوهر لایق تست و این را قبول کن و خالی سوکن
چنانچه برکوه سمیر شعاع آفتاب روشن شود تو هم باش راچهسی مغلوب شهوت
این را شنیده رام و سیتا را گذاشته نزدیک لچهمن رفت و گفت من
با این حسن و خوبی که دارم اهلیه تو میشوم با من بآسایش در دندکارن گذران کن
لچهمن گفت من غلام یعنی داس تو داسی یعنی کنیز چسان خواهی شد و دیگر آنکه تو صورت
مانند طلا داری و اول برادر بزرگ مرا درخواست کردی پس مخدومه من شدی و برادرم
بسبب عورت را گذاشته درخواست تو خواهد نمود اینچنین خوب صورت و خوش
مژه و خوش چشم را که میگذارد چون لچهمن این سخن بگفت سورپنکها این تضحیک
و تمسخر را فهمیده در پرن شالا، رامچندر اندر آمد و به سیتا رو کرده برامچندر گفت

این بد

तुम्हें सीता से क्या काम है?वह कुरूप और बुरे आचरण वाली तुम्हारे योग्य नहीं है, मैं तुम्हारे योग्य हूँ, मेरा सौन्दर्य देखो। मैं तुम्हारी इस कुरूप और अयोग्य पत्नी को खा जाती हूँ और तुम्हारे इस भाई को भी खा जाती हूँ। इसके बाद तुम मेरे साथ रहते हुए दण्डकारण्य के पर्वतों और वनों में भ्रमण करना और मनोरंजन करना। जब उसने यह कहा तो रामचन्द्र ने मुस्कुराते हुए सीता और लक्ष्मण को हँसाने के लिए सूपनखा से कहाः ''मेरी स्वयं की एक पत्नी है और वह मुझे अत्यन्त प्रिय है और तुम जैसी सौतन उसके लिये कष्ट और दुख का कारण है। मेरा यह छोटा भाई बहुत योग्य और गुणी है, लोकप्रिय रंग-रूप रखता है बिना पत्नी के है, इसका लक्ष्मण नाम है यह तुम्हारा पति बनने योग्य है, इसको स्वीकार कर लो। और बिना सौतन के जैसे सूर्य की किरणें समीर पर्वत पर प्रकाशमान होती है तू भी रह। कामवासना से लिप्त होकर वह राक्षसी यह सुनकर राम और सीता को छोड़कर लक्ष्मण के पास गयी और कहा ''मैं इस रंग रूप के साथ जो मैं सौन्दर्य रखती हूँ तुम्हारी पत्नी होती हूँ। मेरे साथ दण्डकारण्य में सुख से रहो।'' लक्ष्मण ने कहा, मैं तो स्वयंसेवक अर्थात् दास हूँ तुम दासी कैसे बनोगी ?और दूसरी बात यह है कि तुम रंग रूप सोने जैसा रखती हो और पहले तुमने मेरे बड़े भाई से इसकी विनती की थी। बस तुम उन्हीं की हो गयीं और मेरा भाई शीघ्र ही अपनी पत्नी को छोड़कर तुमको अपनायेगा। ऐसी सुन्दर, अच्छी पलकों और सुन्दर आँखों वाली स्त्री को भला कौन छोड़ेगा?जब लक्ष्मण ने यह बात कही तो सूपनखा इस अपमान को समझकर रामचन्द्र की पर्णशाला में आयी और सीता की ओर मुँह करके रामचन्द्र से कहाः

این بدصورت و نالایق را دلنهاد خود کرده و مرا بخاطر نمی آری حالا این را میخورم
و با تو بعیش بسر میبرم این بگفت و از غضب سیتا دوید چنانچه او لک بر روی بینی و دست او
رامچند را از غصه او را گرفته به لچهمن گفت با این غضبناک تضحک چیست سیتا از
چسان سلامت ماند این را و رکن لچهمن از غصه کهرگ یعنی شمشیر کشیده هر دو کوش
و بینی او را ببرید هنگام بریدن اذن و بینی شور بسیار کرد و بسرعت بگریخت زخمی
و خون آلود خود را از راه آسمان نزدیک کهر برادر خود افکند بمثالی که از فلک زحل افتد

درینجا صورت صحرا و درختان و بوزنه کان و آهو و رام و سیتا در پرن سالای نشسته
و لچهمن به بریدن کوش و بینی سوربنکها شمشیر کشیده در پیوسته و شکل ها را دیگر

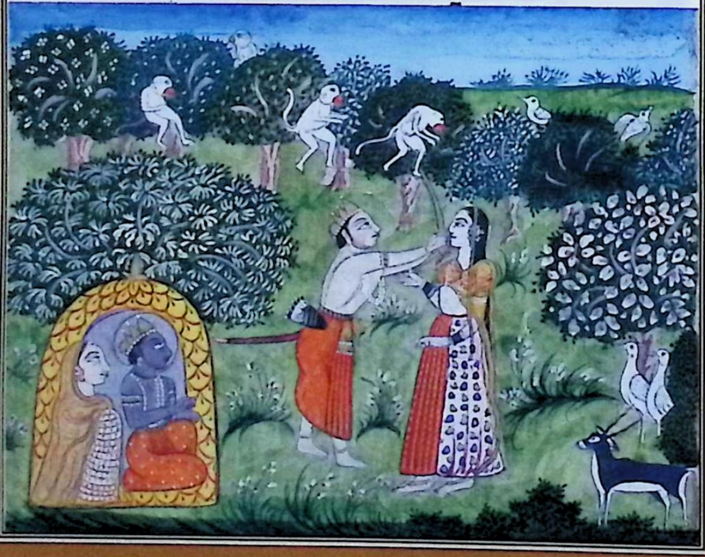

तुमने इस कुरूप और अयोग्य को अपने हृदय में स्थान दे रखा है और मुझे कुछ मान ही नहीं रहे हो। अब मैं इसे खा जाऊँगी और तुम्हारे साथ सुख से रहूँगी। यह कहते हुए वह सीता की ओर क्रोध से दौड़ी जैसे कि उल्का रोहिणी की ओर दौड़ी थी। रामचन्द्र ने उसको क्रोध से पकड़कर लक्ष्मण से कहा ''उससे सीता कैसे सुरक्षित रहे, उसको दूर भगाओ।'' लक्ष्मण ने क्रोध से कहरक अर्थात् तलवार खींचते हुए उसके दोनों कान और नाक काट ली। उसने कान, नाक कटने के समय बहुत शोर मचाया और शीघ्र भाग खड़ी हुई। घायल और रक्तरंजित अपने को उसने आकाश के मार्ग से अपने भाई खर के पास डाल दिया जैसे कि आकाश से नक्षत्र गिरता है।

वृक्षों, वन, बन्दरों और मृगों का चित्र। राम और सीता पर्णशाला में बैठे हुए हैं और लक्ष्मण तलवार से सूपनखा के कान, नाक काट रहे है तथा दूसरे पक्षियों का चित्र।

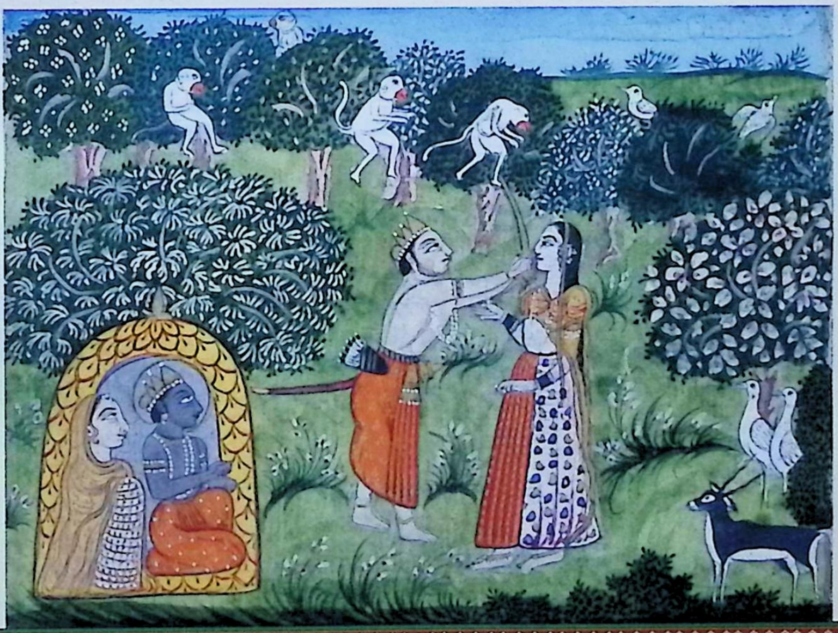

سرک **آمدن راچهسان:** کهر همشیره خود را خون آلوده افتان دیده پرسید که ای زورمند
و قوتمند وای کام کا یعنی هر جا که خواهی میروی وای کامروپ یعنی بهر شکل که خواهی خود را
مینمائی بدینحالت ترا که رسانیده از دیوتا و گندهربان و بهوت ها و رکهه ها که این صورت
بشکست در لوک آنچنان نمی بینم که با من دشمنی تواند کرد بغیر آندر که هزار چشم دارد و کسی که
ترا چنان حالت نموده او را این تیرها بکشم چنانکه رسن ها در دریای شیر سوده شود و حالا
زمین خون کدام کس خواهد نوشید و گوشت کدام را جانوران خواهند خورد دیوتا و گندهرب
و پشاچ و راچهس از غصه من او را محافظت نتوانند نمود سورپنکهی بطلبش تمام گفت
دو کس نوجوان نازک تن قوت مند اند که چشم چون نیلوفر و چیر کرشن انبر دارند و مانند
راجه کندهرب بصورت اند و نمیگویم که دیوتا اند یا انسان خوش شکل اند و جمیع برابر
پوشیده میان آنها عورتی دیده ام یکی از آن ها اینحالم نموده است چنانکه کسی
بی والیان را بکند آرزو دارم که سر آنها در جنگ بشکنی و این امید کمال نیست که
در حضور لشکریان خون آنها بخورم کهر این را شنیده چهارده راچهس قوتمند را
حکم کرد و ان دارنده چیر و کرشن اجن انبر با عورت در وند کارن داخل شده اند
آنها را کشته زود بیائید که همشیره من خون آنها خواهد نوشید این مقصود همشیره مرا
زود برآرید آن راچهسان بموجب حکم او شول ها در دست گرفته با سورپنکهی از انجا

सर्ग–२३

राक्षसों का आगमन

खर ने अपनी बहन को रक्तरंजित गिरा हुआ देखकर पूछा "ऐ बलशाली और ऐ बहिन कि जहाँ चाहती है चली जाती है और ऐ बहिन कि जो रूप चाहती है बना लेती है, तेरी यह दशा किसने की?देवताओं, गन्धर्वों, भूतों और राक्षसों में से किसने यह साहस किया। मैं संसार में ऐसा कुछ नहीं करता कि मेरे साथ कोई शत्रुता कर सके। केवल इन्द्र के जो हज़ार नेत्र रखते हैं और जिसने तेरी यह दशा की है, मैं उसे तीर मारकर ऐसे समाप्त कर दूँगा जैसे कि रस्सियाँ मीठे पानी के समुन्द्र में घुसाई जाती है। अब धरती किसका रक्त पियेगी?और किसका माँस पशु खायेंगे! देवता, गन्धर्व, पिशाच और राक्षस मेरे क्रोध से उसको नहीं बचा सकेंगे।" सूपनखा ने बड़े क्रोध से कहा दो नवयुवक कोमल शरीर वाले, लेकिन शक्तिशाली हैं जिनके नेत्र निलोफर जैसे, और कृष्ण के समान हैं तथा रंग रूप में राजा गन्धर्व जैसे हैं और मैं नहीं बता सकती कि वह देवता है या सुन्दर मनुष्य हैं। वह सारे हीरे जवाहरात पहने हुए हैं। मैंने उनके मध्य एक स्त्री देखी है उनमें से एक ने मेरी यह दशा की है, जैसे कि कोई असहाय की दशा करता है। मैं चाहती हूँ कि आप उनका सर युद्ध में तोड़ डालें। मुझे इसकी पूरी आशा है कि मैं सेनानियों के सामने उनका रक्त पिऊँ। खर ने यह सुनकर चौदह शक्तिशाली राक्षसों को आदेश दिया कि शस्त्र रखने वाले दो मनुष्य स्त्री के साथ दण्डकारण्य में प्रविष्ट हुए हैं उनको मारकर शीघ्र लाओ क्योंकि मेरी बहन उनका रक्त पियेगी। मेरी बहन की यह इच्छा शीघ्र पूरी करो। वह राक्षस आदेशानुसार हाथों में त्रिशूल लिये हुए सूपनखा के साथ वहाँ गये

که رام بود رفتند آن راچهسان شکوه و شوکت آنها دیده یکایک
نتوانستند گشت چون فیل آتش صحرا ادینجا صورت مکان گهر
برادر سورپنکها و صورت او گوش و بینی بریده دست دراز کرده از کهر سخن میگوید

وصورت دیگر راچهسان

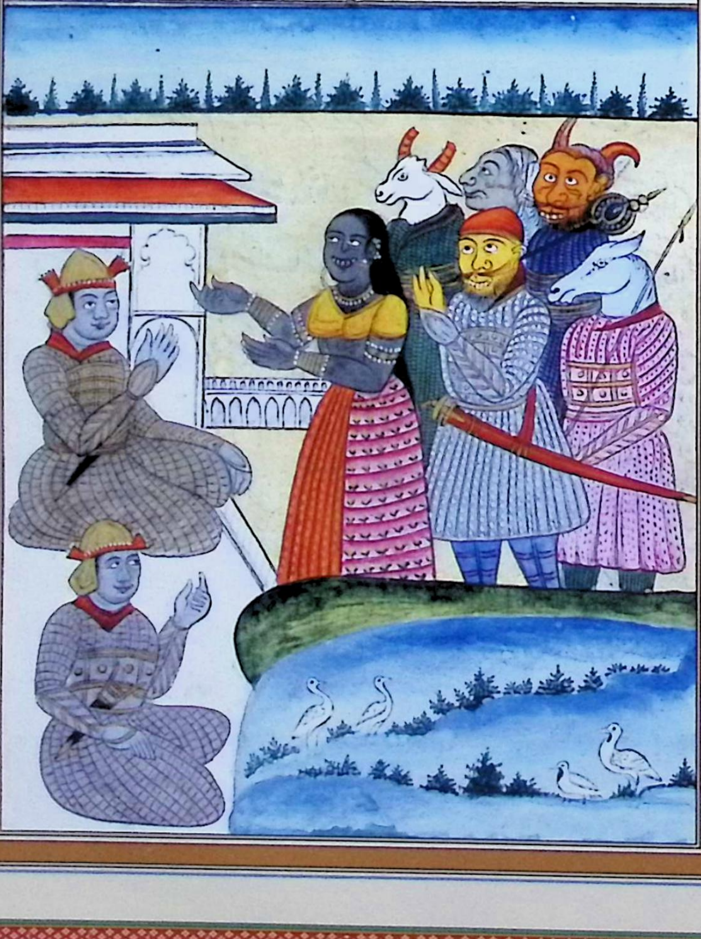

जहाँ राम थे। वह राक्षस उनके वैभव प्रभुत्व और शक्ति को देखकर अचानक उनकी हत्या नहीं कर सके जैसे हाथी वन की आग नहीं बुझा सकते।

सूपनखा के भाई खर के भवन का चित्र और उसका चित्र जो कान, नाक कटी हुई हाथ फैलाकर खर से बात कर रही है तथा दूसरे राक्षसों का चित्र।

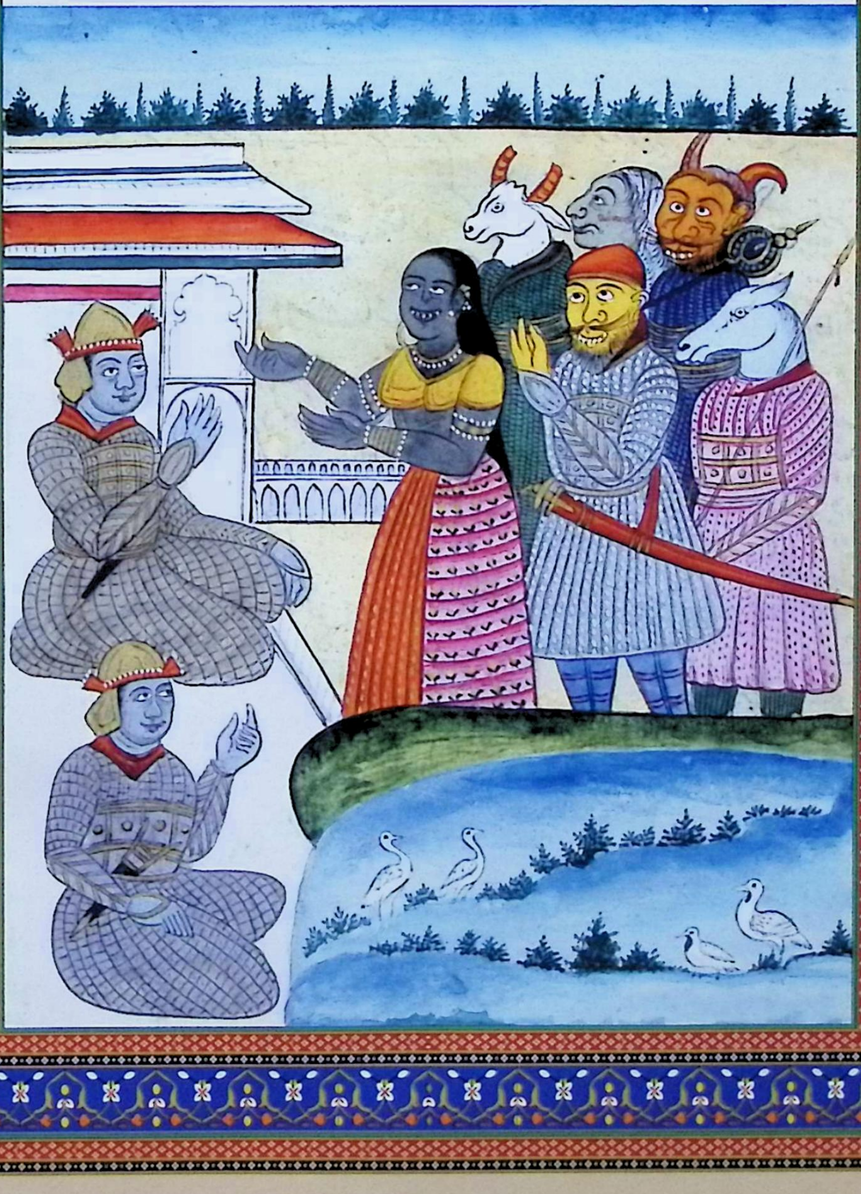

سرکهنک سورپ نکها راچهسی بی شرم رام رسیده راچهسان را نشان داد
اینک لچهمن و اینک سیتا آنها دیدند که رام در برن شمال الطرف راسب سیتا
نشسته است و رام آنها را دیده بلچهمن گفت مهوری تی نزدیک سیتا باش
تا من اینها را بکشم اینقدر گفتار رام را شنیده لچهمن برخاسته نزدیک سیتا
اقامت کرد و رامچندر کمان منقش طلائی را زه نموده براچهسان گفت ما هر دو پسر
راجه دشرته ایم رام و لچهمن نام داریم و با سیتا درین دندکارن بوده پهل
و مول خورده مانند ریاضت کشان میگذرانیم شما بر ما دویدید و بسبب تصدیع
شمایان که بر کهه ها رسانیده اید از امر کهه ها در اینجا رسیدیم همین جا استاده
باشید شما را زنده نمیگذاریم و اگر خواهش زندگی دارید بگریزید گفت او را شنیده
هر چهارده راچهس از غصه گفتند این را بگیرید بگیرید که کهر والی مایان را در غصه آورده
از دست مایان حالا نخواهی رها شد ترا یکی راچه طاقت است که روبروی مایان بسیار افتد
اقامت کنی چه جای جنگ اینک پرکهه که سلاحی میباشد تیر نیم کمان از دست می
و بیجان میشوی اینقدر گفتند و سلاحها گرفته بر رام دویدند و اسلحه برو رها
کردند رام اسلحه آنها را از چهارده تیر بشکست و بار دیگر چهارده تیر دیگر در کمان
آورد بنوعیکه اندر بجر را بزند بآنها زد چنانچه جگر راچهسان را سوراخ کرده هلاک نمود

सर्ग-२४

सूपनखा राक्षसी ने राम के आश्रम में पहुँचकर राक्षसों को पता बताया कि यह लक्ष्मण है और यह सीता हैं। उन्होंने देखा कि राम पर्णशाला में सीता की दायीं ओर बैठे हुए हैं। राम ने उनको देखकर लक्ष्मण से कहा थोड़ी देर तुम सीता के पास रहो ताकि मैं उनकी हत्या कर डालूँ। राम की यह बात सुनकर लक्ष्मण उठकर सीता के पास चले गये और रामचन्द्र ने स्वर्ण मण्डित धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर राक्षसों से कहा, हम दोनों राजा दशरथ के पुत्र हैं। राम और लक्ष्मण हमारा नाम है तथा सीता के साथ इस दण्डकारण्य में, फल-मूल खाकर तपस्या करने वालों की भाँति जीवन निर्वाह कर रहे हैं। तुम हम पर दौड़े और तुम्हारी यातनाओं के कारण से जो तुमने ऋषियों के साथ की है ऋषियों के आदेश से हम यहाँ आये हैं। यहीं खड़े रहो हम तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे और अगर जीवन की इच्छा रखते हो तो भाग जाओ। उनकी बात सुनकर चौदह राक्षसों ने क्रोध से कहा इसको पकड़ लो, पकड़ लो कि इसने हमारे मालिक खर को क्रोधित किया है। अब यह हमारे हाथ से नहीं बचेगा। तुझ अकेले में क्या शक्ति है कि हम इतने अधिक लोगों के साथ रहो या युद्ध करो। यह परिध है जो एक हथियार होता है, हम उससे तुझे मारेंगे। धनुष हाथ से गिरेगा और तू निर्जीव हो जायेगा। यह कहकर वह हथियार लेकर राम पर दौड़े और उन पर हथियार उठा लिये। राम ने उनका हथियार चौदह तीरों से तोड़ डाला और पुनः वह चौदह बाण धनुष में वापस ले आये, जैसे कि इन्द्र बज्र को मारते हैं, उनको मारा। अतः उन्होंने राक्षसों का हृदय छलनी करके उन सबको मार डाला

و تیرها بر آسمان مانند مشعلها روشن گشتند و راچهسان که جگر آنها شگافته شد مانند درختان از بیخ برکنده افتادند و خون آلوده بر زمین مردند و مانند اشجار تال که از آتش سوزند سورپ نکها آنها را افتاده دیده شور بلند کرده بار دیگر نزد کهر برادر خود و دوکهن برادر خود رفت و گریه کنان با اضطراب تمام از راه آسمان در آنجا رسید

در اینجا صورت هر چهارده راچهس سلح ترشول و تیغ و گرز همه ها بر رام حمله آورده و صورت رام کمان کشیده همه را به تیر شکسته و سیتا در خانه نزد لچهمن نشسته

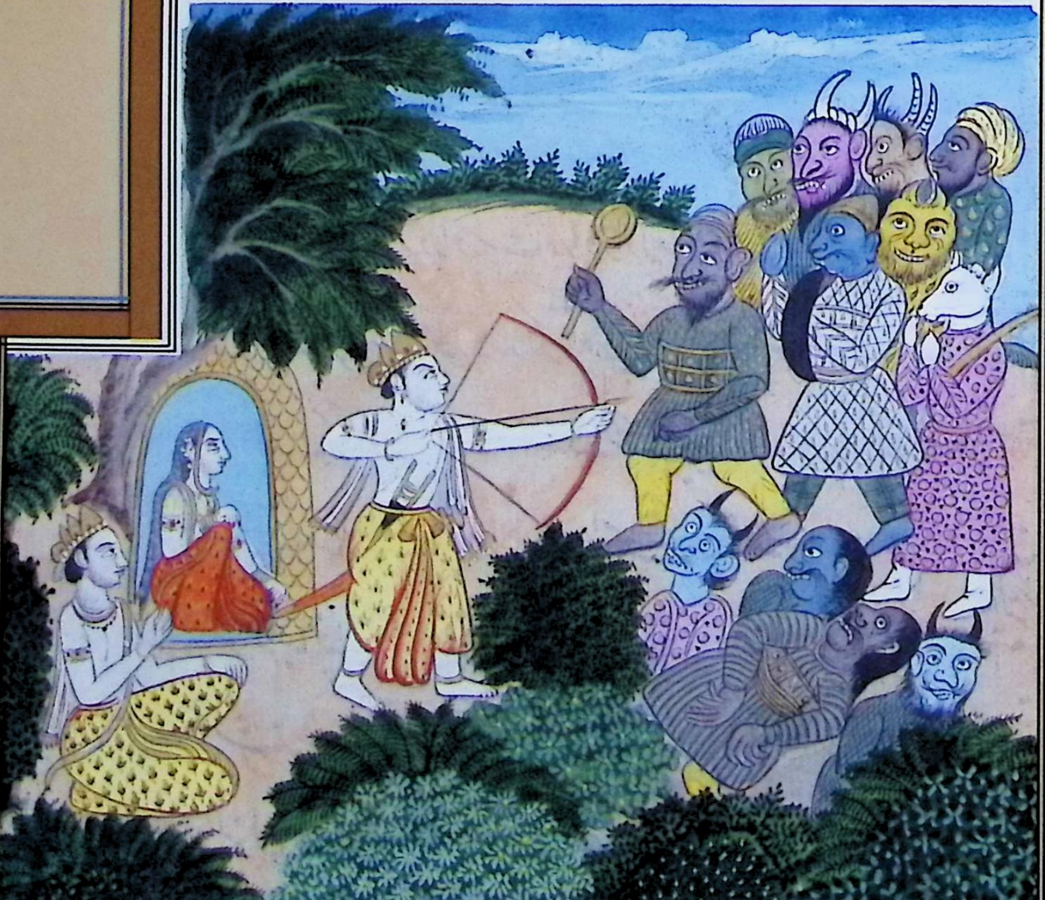

और बाण आकाश पर जाकर मशालों के समान प्रकाशित हुए तथा वह राक्षस जिनके हृदय छलनी हो गये थे जड़ से उखड़े हुए वृक्षों के समान गिर पड़े और रक्त रंजित होकर धरती पर मर गये, ताल के वृक्षों के समान जिन्हें अग्नि से जलाते हैं। सूपनखा उनको गिरा हुआ देखकर शोर मचाती और चीखती चिल्लाती हुई पुनः अपने भाई खर तथा दूसरे भाई दूषण के पास रोती हुई व्याकुलता से आकाश के मार्ग से पहुँची।

चौदह राक्षसों का चित्र जो त्रिशूल, तलवार से सुसज्जित हैं और सबने राम पर आक्रमण किया है। राम का चित्र जिन्होंने धनुष उठाकर सबको बाणों से मारा और सीता घर में लक्ष्मण के पास बैठी हैं।

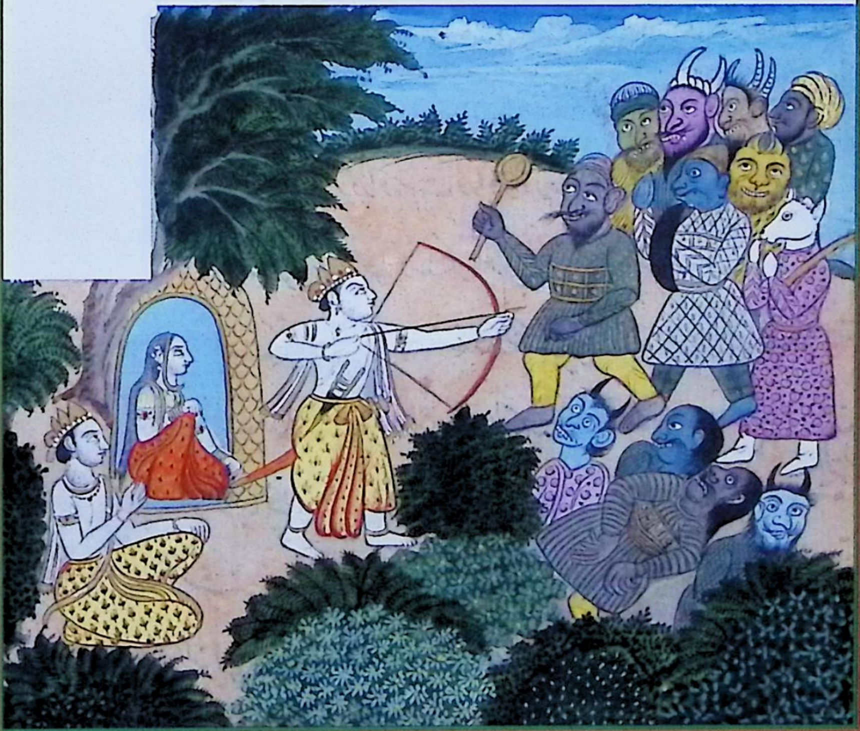

سر کفت ار راچهسی سورپنکهی را اشک ریزان بار دیگر دیده کهر از غصه کفت
که برای خاطر تو راچهسان خونخوار فرستادم حالا چرا کریه میکنی و کفته ترا هرکز رد
نمیکنم اکر جان من هم برود اکنون بار دیگر چرا آمدی و مانند مسکینان زاری میکنی
برخیز و این غم را بگذار سورپنکهی کفت چون که من بینی و کوش بریده را دیده مهربانی
نموده چهارده راچهس شوان و تیشرا برای کشتن رام و لچهمن فرستادی
رام از تیرها کار آنها تمام ساخته بر زمین انداخت من ترسناک شده در پناه تو آمده ام
اکر ترا بر من شفقت و بر راچهسان محبت است رام را که خار راچهسان در دندکارن است آن
بکش و الا من زندکی را بحضور تو میکذارم و اکر تو از عهده رامچندر برنیائی درینجا چه طور
باشی که او بسیار زور آور است و برادر او که مرا بدین خجالت رسانیده آنهم بسیار قوتمند است
میدانم که از تو مقابله او نخواهد شد اکر رام و لچهمن را بکشی سپاه کری و دلاوری تو در
از ینجهت که آنان پیاده هستند و تو لشکر با فیل و اسپ و غیره داری چون کهر کفته
سورپنکها شنید میان راچهسان برخاسته کفت غصه بسیار دارم نکاهداشتن
نتوانم چنانچه امواج سمندر رام را پهلوان نمیشمارم که انسان و کم عمر است اکنون
کشته میشود ای سورپنکهی تو کریه مکن حالا رام و برادر او را بخانه جم و مرگ میفرستم
اکنون خون رام خواهی نوشید سورپنکهی کفتار کهر را حسب دلخواه خود شنیده خوش وقت

شد بعد از آن

सर्ग-२५

राक्षसी की वार्ता

सूपनखा को पुनः आँसू बहाते हुए देखकर खर ने क्रोध से कहा कि तेरे लिये मैंने भयानक राक्षस भेजे अब क्यों रो रही है?और मैं तेरी बात कभी नहीं टालूँगा, यद्यपि मेरे प्राण भी चले जायें। अब तू पुनः क्यों आयी है और असहाय के समान रो रही है ?उठ और यह दुख छोड़। सूपनखा ने कहा चूँकि आपने मेरे कान और नाक कटे देखकर कृपा करते हुए चौदह राक्षस त्रिशूल और तलवार के साथ राम और लक्ष्मण को मारने के लिये भेजे थे। राम ने तीरों से उनको मार करके धरती पर डाल दिया। मैं भयभीत होकर आपकी शरण में आयी हूँ। अगर आपको मुझसे प्रेम है और राक्षसों से प्रेम है तो राम को जो दण्डकारण्य में राक्षसों का कांटा है, मार डालिये। अन्यथा मैं आपके सामने जीवन त्यागती हूँ। यदि आप राम से पद में ऊँचे नहीं हो सकते और जीत नहीं सकते तो यहाँ कैसे रहेंगे क्योंकि वह बलवान है। उसका भाई जिसने मेरी यह दशा की है वह भी बहुत शक्तिशाली है। मैं जानती हूँ कि आपसे उसका मुकाबला नहीं होगा। यदि आप राम लक्ष्मण को नहीं मारते हैं तो आपका सैन्य कौशल और सब वीरता झूठ है क्योंकि वह लोग पैदल हैं और आप हाथी घोड़े आदि वाली सेना रखते हैं। जब खर ने सूपनखा की बात सुनी तो उसने राक्षसों से सत्यता से कहा कि मैं बहुत क्रोध रखता हूँ, रोक नहीं सकता जैसे कि समुन्द्र की लहरें। राम को मैं वीर नहीं मानता हूँ। क्योंकि वह मनुष्य और अल्प आयु है, अभी वह मारा जाता है। ऐ सूपनखा ! तू मत रो, अभी मैं राम और उसके भाई को मृत्युलोक भेजता हूँ। अभी तू राम का खून पियेगी। सूपनखा अपनी इच्छानुसार खर की बात सुनकर प्रसन्न हो गयी।

شد بعد از آن کهربد و کهن برادر خود که سنباپت یعنی سردار فوج بود گفت چهارده هزار راچهسان که خاطر خواه من اند و خوفنا و غصه دار اند و رنگ آنها مانند ابر نیله و صورت مانند کوه کحل و پیوسته بگوشت بازی میکنند و کامروپی اند و مانند شیر قوت دارند و مهابت میدانند و در هر کار قابلیت دارند بسرعت روان کن و رتهه مرا و کمان و تیرها و شکت یعنی برچهی و کهرک یعنی شمشیر بیار بدو جوابش دارم که اول لشکر من برای کشتن رام بر آید چون اینقدر بگفت رتهه طلائی او که بصد اسپ میرفت دوکهن حاضر نمود و برج آن که مانند قله کوه سمیر بود و نقشهای طلائی میداشت و به بیدورنه جواهر مرصع بود و ماهی و کوه و مهر و ماه و اخترها در و مرتسم بود و کنکنی یعنی زنگوله و دهوجا یعنی نشان و سلاحها داشت کهر سوار گردید و دیگر راچهسان مخوف را نشاندند و کهن با اقربای خود روان شد بعد از آن لشکر راچهسان با اسلحه ها و دهوجا ها مانند سمدر روان شد چهارده هزار راچهس که بقوت دلنهار و کهر بودند بر آمدند و مدگر و آیس و شول و تبر و کهرک و چکر همه با خود گرفتند و بهندیپال و کمانها و گدا و موشل هم گرفتند چون کهر رتهه را روان کرد از آواز اطراف و اکناف یعنی دشا و بدشا پر شد و بانگ کلان کهر برای کشتن دشمنان روانه شد و رتهه را براند مانند ابری که ژاله میبارد

درینجا صورت رتهه صد اسپ و کهر مع راچهسان

उसके बाद खर ने अपने दूषण से, जो सेनापति था कहा "वह चौदह हजार राक्षस जो मेरे आज्ञाकारी और भयानक एवं क्रोध वाले हैं जिनका रंग नीले बादल जैसा है और रूप कहल पर्वत, जैसा, जो सदा माँस से खेलते हैं और रूप बदलने की शक्ति रखते हैं, शेर के समान शक्ति रखते हैं, और महाअस्त्र जानते हैं तथा प्रत्येक कार्य करने की योग्यता रखते हैं शीघ्रता से उन्हें भेजो। और मेरा रथ, धनुष, बाण, बरछी और तलवार लाओ। मैं चाहता हूँ कि पहले मेरी सेना राम को मारने के लिये निकले। उसने जब यह कहा तो उसका सोने का रथ जिसमें सौ घोड़े चलते थे, दूषण ने उपस्थित किया उसका गुम्बद सुमेर पर्वत की चोटी की भाँति था उस पर सुनहरी कला की हुई थी। रत्न से सुसज्जित थी मछली, पर्वत, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्रों के चित्र बने हुए थे उस पर प्रतीक और झण्डा लगा था। उस पर खर सवार हुआ और दूसरे भयंकर राक्षसों को बैठाया तथा दूषण अपने सम्बन्धियों के साथ चला उसके बाद राक्षसों की सेना हथियार और झण्डे के साथ समुन्द्र के समान चला। चौदह हजार राक्षस जो शक्ति में खर के समान थे प्रकट हुए और अपने साथ उन्होंने त्रिशूल, तबर, कहरक और चक्र एवं दूसरे हथियार भी लिये तथा हिन्द पाल, धनुष गदा और मूसल भी लिये। जब खर ने रथ को चलाया तो उसकी ध्वनि चारों ओर गूँज उठी और खर एक बड़ी सेना के साथ शत्रुओं को मारने के लिये चला एवं रथ को ऐसे चलाया जैसे बादल ओले बरसाता है।

سوار گشته و چهارده هزار راجپس سلحدار خونخوار همراه گرفته و عبوت

صحرا و درختان و خزآن

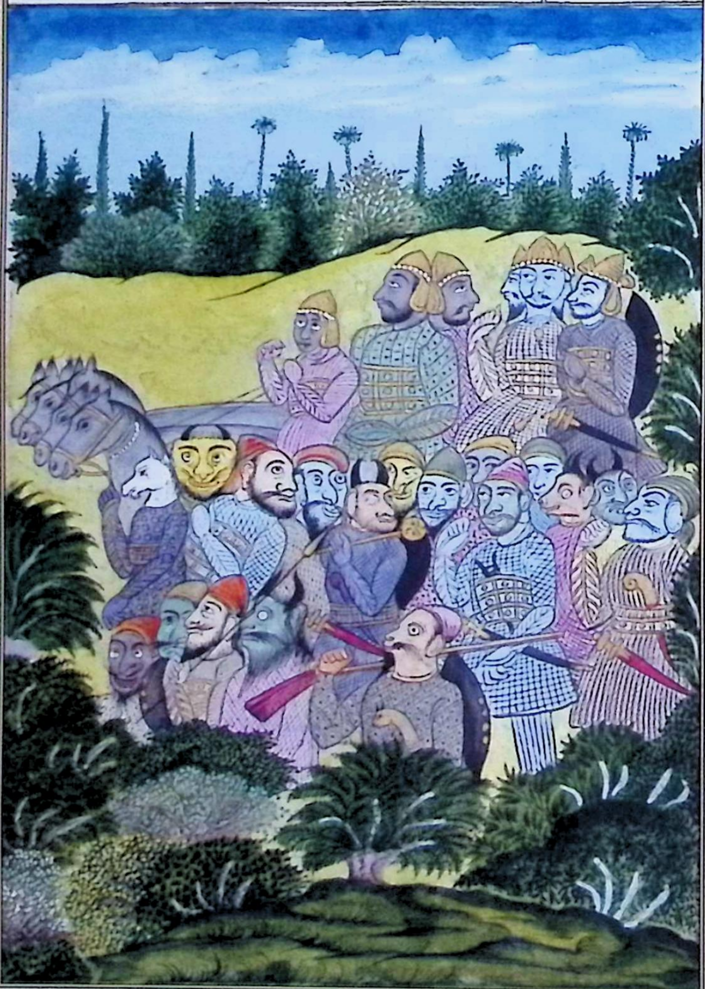

सौ घोड़ों वाले रथ का चित्र जिस पर खर हथियारों से सुसज्जित राक्षसों के साथ सवार है और चौदह हजार भयंकर हथियारों सहित राक्षसों को साथ लिये हुए हैं। वन, वृक्षों और अन्य वस्तुओं का चित्र।

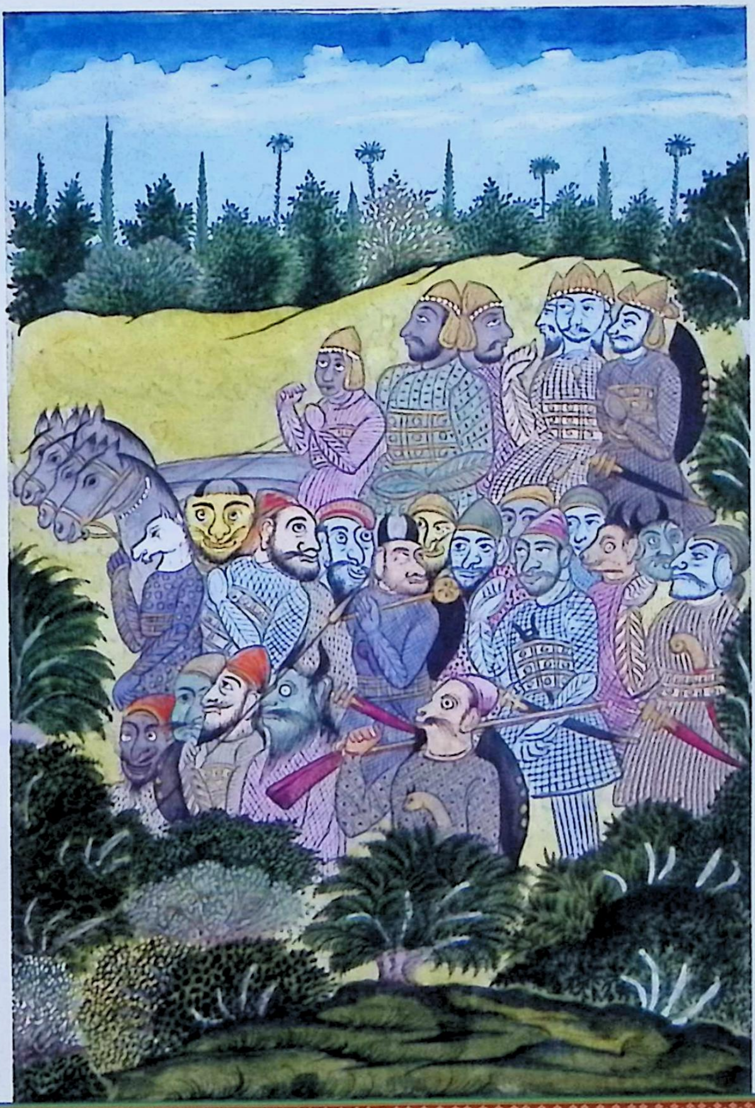

ذکر بیان شگون هنگام رفتن او شگون زبون شدند ابرها خون باریدند

و در شاهراه مسطح اسپ او برافتاد و بر دهوجا او که ڈنڈی طلا داشت زغن بنشست و آفتاب
بهاله گرفته نمودار شد و آواز خران بگوش رسید و بهایم گوشت گوناگون آواز ها کردند
و از اطراف آواز ترسناک آمد و ابرهای پرخون مخوف بر آسمان نمودار گشتند و ظلمات
بسیار شد که اطراف و گوشه هیچ نمودار نمیشد و در آن وقت آفتاب زخم دار بنظر در آمد
و روبرو کهر جانوران آواز خر نمودند و آفتاب همه کبندها یعنی کسان بی سران نمودار شد
و کلف بی هنگام پدید آمد و باد سرد هم نمی وزید و بی هنگام شب انجم مانند کرم شب تاب
افتادن گرفتند و یکایک بر زمین آتش روشن شد و شغالان جنگ آغاز کردند و تالاب
خشک شدند نیلوفر و ماهی غایب گشت و بار و گل از درختان دور شدند و بغیر باد قطرات
بر هم شدند و چچیک و شارک گردیدن گرفتند و زمین با کوه ها و صحراها بجنبیدن در آمدند
و کهر که در رته نشسته بود بازوی چپ او بلرزید این شگون بدها دانسته کهر از تبسم
با راچهسان گفت این شگون بدها میشوند و مرا هیچ فکر نیست چنانچه قوی را از ضعیف تر
و رام و لچهمن را بی آنکه هلاک کنم بر نمیگردم و همشیره من تا بمقصود باز نگردد و قبل ازین
مرا گاهی در جنگ هزیمت نصیب نشده و پیش شما راست میگویم در پیش غصه من اندر را
که بر اراوت سوار است تاب نیست چه جای انسان راچهسان این را شنیده بسیار خوشوقت شدند

सर्ग-२६

शकुन का वर्णन

उसके जाते समय अपशकुन हो गया था। बादलों से रक्त की वर्षा हुई और सड़क पर उसके घोड़े गिर पड़े और उसके झण्डे पर जो सोने की लकड़ी लगी हुई थी उस पर कौआ बैठ गया। गधों की आवाज कान में पहुँची और माँस खाने वाले पशुओं ने भाँति-भाँति की आवाजें निकालीं। चारों ओर भयानक बादल आकाश में प्रकट हुए और बहुत अंधकार हो गया तथा कोई कोना प्रकाशित नहीं था। उस समय सूर्य दिखायी दिया। खर के सामने पशुओं ने गधे की आवाज़ निकाली। सूर्य गुम्बदों सहित अर्थात् बिना सर के लोगों की भाँति प्रकट हुआ और असमय दुख व धुन्ध प्रकट हुई। ठण्डी हवा भी नहीं चल रही थी अैर बिना रात्रि के अचानक धरती पर आग जलने लगी, गीदड़ आपस में लड़ने लगे। तालाब सूख गये नीलोफर गायब हो गये और फल-फूल वृक्षों से अलग हो गये। पृथ्वी पर्वतों और वनों सहित हिलने लगी और खर का जो रथ में बैठा हुआ था कि बायीं भुजा काँपी। इन अपशकुनों को बुरा समझते हुए खर ने मुस्कुराते हुए राक्षसों से कहाः यह शकुन बुरे होते हैं और मुझे कोई चिन्ता नहीं है, क्योंकि शक्तिशाली को निर्बल से चिन्ता नहीं होती है। मैं राम और लक्ष्मण की बिना हत्या किये, और अपनी बहन का उद्देश्य पूरा किये बिना वापस नहीं जाऊँगा। इससे पहले मुझे कभी युद्ध में पराजय नहीं हुई है। तुम्हारे सामने मैं सच कहता हूँ कि मेरे क्रोध के सामने इन्द्र को भी आने का साहस नहीं है, जिसके अन्दर हजारों सवारों के बराबर शक्ति है, न कि मनुष्य। राक्षस, यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए

و دیوتا و سده و من و چارن برای تماشای جنگ رسیدند و برهمنان دعاگو
آمدند همگنان خواهان فتح پسران دشرته و شکست پسران پلست را که کهر وغیره
بودند شدند ناگاه کهر بسرعت رتهه دوانیده از لشکر برآمد و تمام فوج ملاحظه نمود
بعد از آن راچهسان سردار برآمده پیشتر دویدند آنها این نام میداشتند
دورکامی و پرتهوگریوه و جگت شتر و مهابکهه و دورجی و کرپراجهه
و پورکهه و کال کارموک و میگهمالی و مهاباهو و مهاسس و لوهتان بر
این دوازده راچهس روبروی کهر آمده ایستادند و
مهاکپال و استهولاچهه و پرماتهی و پرسترا این چهار کس
عقب سشن پیشتر لشکر روان شدند از کمانها و پیرایهها
و دهوجها فوج راچهسان چنان مینمود که هنگام طلوع آفتاب
ابر سرخ مینماید یعنی قسمی از شفق باشد آن لشکر خوف افزا
خواهنده جنگ پیش پسران راجه دشرته رسید چنانچه انجم نزدیک آفتاب

درانجا صورت صحرائی دشوار واشجار پرخار
وچهارده هزار راچهسان خونخوار دل آزار
و رام و سیتا قرین یکدیگر و لچهمن بیرون در

और देवता, सिद्ध मुनि तथा चारण युद्ध देखने के लिये पहुँच गये। शुभकामना देने वाले ब्राह्मण आये, सभी दशरथ के पुत्रों की विजय और पुलत्स्य के पुत्रों, जो खर आदि थे, की पराजय के इच्छुक थे। अचानक खर शीघ्रता से रथ दौड़ाता हुआ सेना से निकला और सारी सेना का निरीक्षण किया। उसके बाद राक्षसों के सरदार निकलकर आगे दौड़े। उनके नाम यह थे श्येनकामी, पृथुग्रीव, यज्ञशत्रु, विहंगम, दुर्जय, करवीराक्ष, परूष, कालकार्मुक, हेममाली, महामाली, सर्पास्य तथा रूधिराशन। यह बारह राक्षस खर के सामने आकर खड़े हो गये और महाकपाल, स्थूलाक्ष, प्रमाथ और त्रिशिरा यह चार व्यक्ति पीछे होकर सेना से पहले चले। धनुषों, वस्त्रों और झण्डों के कारण राक्षसों की सेना ऐसी लग रही थी जैसे कि सूर्योदय के समय आकाश लाल दिखाई देता है, अर्थात् जैसे लाली दिखाई देती है। वह, भय बढ़ाने वाली और युद्ध की इच्छुक सेना के साथ राजा दशरथ के पुत्रों के सामने पहुँचा जैसे कि नक्षत्र सूर्य के निकट पहुँचते हैं।

कष्टदायी वन, काँटों वाले वृक्ष, चौदह हजार, भयंकर राक्षस और एक दूसरे के निकट राम और सीता का चित्र। तथा लक्ष्मण का चित्र जो द्वार के बाहर है।

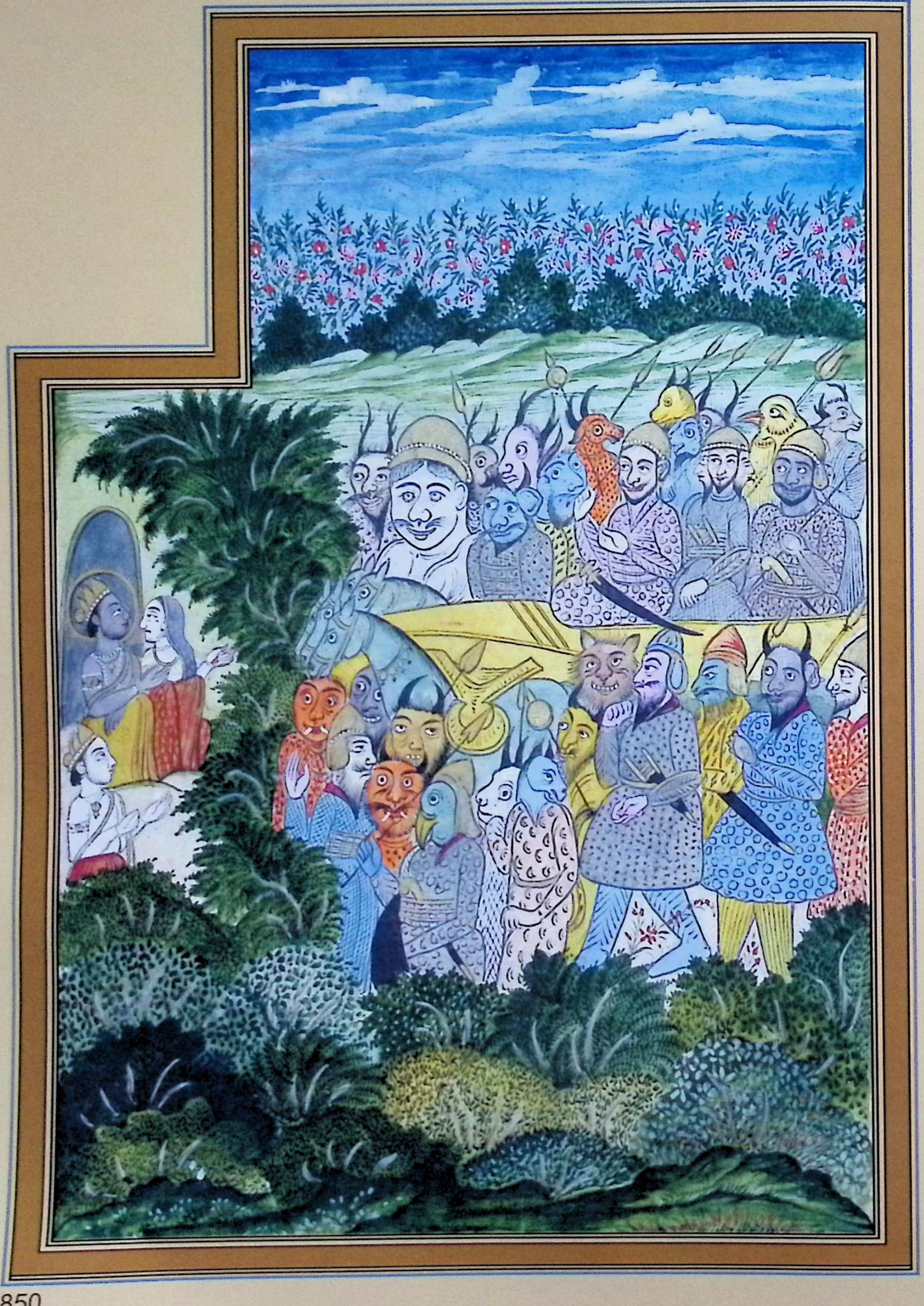

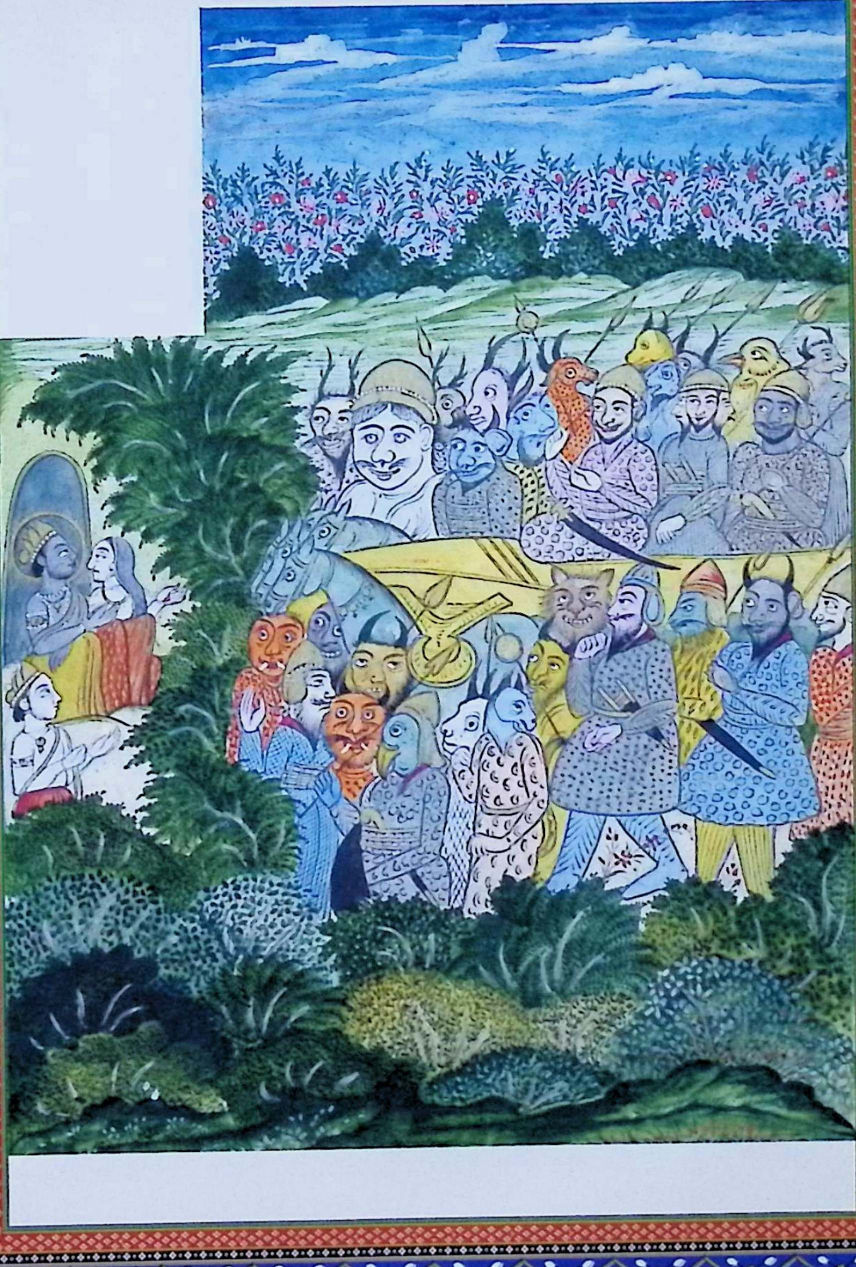

کهر جنگ چون با آشرم رام رسید رامچند رشگون هائی مفسده دیده

لچهمن گفت به بین فساد هلاک کننده بسیار جانوران روداده اینک از آسمان
ابر خون میبارند و اینک راچهسان برائی جنگ من با کمانهائی زرین می آیند
جانوران چنان آواز میکنند که شک در زندگی ماست معرکه خوب خواهد شد درین شبهه نیست
و از جستن بازوئی من چنان معلوم میشود که فتح ماست و شکست اعدا و روئی تو نیکو
و خوب مانند روئی مظفران و روئی اعدا مانند روئی منهزمان تو تیر و کمان را در دست کرده
و سیتا را گرفته در غار کوه که گرداگرد او اشجار اند داخل شو آرزو دارم که گفت مرا رد نکنی
و ترا سوگند منست که زود برو لچهمن تیر و کمان گرفته با سیتا در غار رفت بعد رفتن او
رام کوچ یعنی جوشن پوشیده آنچنان معلوم میشد که آفتاب طلوع نماید چون تیر زه آورده
مقابل ایستاد از آواز کشاکش اطراف را شغبناک کرد و ترکش با تیرهائی درخشان
که مانند دواهائی کوه هنگام غروب آفتاب تابان بود همراه گرفت و شکوه آواز آن
دو چند پدیدار گشت چنانچه در پرب سمدر را او دیوتا و گندهرپ وغیره در دل طپیدند
که رام تنهاست و راچهسان هزاران چگونه جنگ خواهد شد این بشن برای خاطر و محبت ما
بر زمین فرود آمده خود را بتن انسان در آورده بنابران دل ما مضطرب میشود آنها
در همین فکر بودند که لشکر راچهسان شورکنان با اقسام لباس و اسلحه با آشرم رام دویدند

وجاهان

सर्ग-२७

युद्ध

जब वह राम के आश्रम पहुँचे तो रामचन्द्र ने अपशकुन देखकर लक्ष्मण से कहाः देखो अधिकांश पशुओं की हत्या करने वालों का बुरा समय आया है। इधर आकाश से रक्त की वर्षा हो रही है और उधर राक्षस मुझसे लड़ने के लिये धनुष के साथ आ रहे हैं। पशु ऐसे आवाज निकाल रहे हैं कि हमारे जीवन में संदेह है और इसमें कोई संशय नहीं कि युद्ध होगा। मेरे बाहु के फड़कने से मुझे ऐसा आभास होता है कि विजय हमारी होगी और शत्रुओं की पराजय। तुम्हारा मुख विजयी लोगों की भाँति है और शत्रुओं का मुख पराजित होने वालो जैसा है। तुम हाथ में धनुष बाण लेकर और सीता को साथ लेकर इस गुफा में जिसके चारों ओर वृक्ष हैं प्रविष्ट हो जाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बात स्वीकार करो और तुम्हें मेरी सौगन्ध है कि शीघ्र जाओ। लक्ष्मण धनुष बाण लेकर सीता के साथ गुफा में चले गये। उनके जाने के बाद राम ने कवच पहना। उसमें वह ऐसे लग रहे थे जैसे सूर्य उदय हो रहा है। जब वह बाण चिल्ले पर चढ़ाकर सामने खड़े हुए तो चारों ओर कोलाहल उत्पन्न कर दिया और बाण के साथ जो सूर्य अस्त के समय पहाड़ की चोटियों के समान चमकदार थे, उन्होंने तरकश साथ लिये और उनकी आवाज का कौतूहल और बढ़ गया जैसा कि पूरब में समुन्द्र। देवता और गन्धर्व आदि हृदय में व्याकुल हो रहे थे कि राम अकेले हैं और राक्षस हजारों। युद्ध कैसे होगा। यह विष्णु हमारे प्रेम में धरती पर उतर आये हैं और अपने को मानव शरीर में प्रविष्ट कर लिया है। इस पर हमारा हृदय व्याकुल एवं चिन्तित है। वह सब इसी चिन्ता में थे कि राक्षसों की सेना कोलाहल करती हुई विभिन्न प्रकार के वस्त्र और हथियारों से सुसज्जित होकर राम के आश्रम की ओर दौड़ें।

وحمله کنان بطلیش آشرم رامچندر را محاصره کردند رامچندر آنها را پراکنده طور دیده کهر را
در لمحه برگردانید و سرداران راچهسان را هم منحرف ساخت بعد ازان آنها جمع شده
سپرها و اسلحه دیگر را گرفته شور کنان دویدند و دهن ها کشاده کمانها کشیده
بشور و شغب تمام بر رامچندر رسیدند از ان آوازها تمام صحرا بشورش آمد و ازان غریو
تپسویان و باشندگان صحرا گریختند و بر پس پشت ندیدند آفتاب تاریک شد
و باد بسمت روی راچهسان وزید رام واقف جنگ نظر کرده لشکر کهر را بهر سو خواهان
حرب دیده تیرها از ترکش بر آورده در کمان زده برای کشتن راچهسان پرتاب داد
و رام از غضب مانند آتش نمودار شد با چنانچه بنا کی مهادیو بهنگام کشتن راجه دچهه
در نمایش بود و او را با قامت تمام ایستاده دیده کهر بدوکهن گفت اینجا کنار دریا
ایستادن چیست شتاب با لشکر بیشتر رو دوکهن بر رتهه سوار شده از لشکر
بر آمده نظر کرده دید که رام اسلحه و تیرها مانند آتش بر گرفته ایستاده است بعد ازان
دوکهن رتهه برگردانیده نزدیک کهر آمده گفت اینک رامچندر رو بروست از خوف او
لشکر ما از جا نمی جنبد و ترا کسی نمیگوید که این رام است ازین یک کس لشکر ما وحشت
میخورد کهر چون این سخن بشنید بر رام دوید او را دیده لشکر او پیشرو شد
نزدیک آشرم رسید بسارتهی گفت که رتهه را رو بروی رام بیار سارتهی رتهه را

और आक्रमण करते हुए क्रोध में रामचन्द्र के आश्रम का घेराव कर लिया। रामचन्द्र ने उन्हें अव्यवस्थित देखकर खर को एक क्षण में फेर दिया और राक्षसों के सरदार को भी फेर दिया। उसके बाद वह सब एकत्र होकर दूसरे हथियार लेकर शोर करते हुए दौड़े और मुँह खोले और धनुष चढ़ाये पूरे हल्ले-गुल्ले के साथ रामचन्द्र तक पहुँच गये। इस आवाज से पूरा वन गूँज उठा। इस चीख पुकार से डरकर तपस्या करने वाले और वन के निवासी भाग गये और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। सूर्य अस्त हो गया और राक्षसों के मुख की ओर हवा चली। युद्ध के जानकार और युद्ध में निपुण राम ने खर की सेना को युद्ध की इच्छुक देखकर बाण तरकश से निकालकर धनुष में चढ़ाकर राक्षसों को मारने के लिये छोड़ा और राम क्रोध के कारण अग्नि की भाँति लग रहे थे या कि जैसे पिनाकी महादेव राजा दक्ष की हत्या करने के समय लगते थे। उनको सामने खड़ा देखकर खर ने दूषण से कहा कि यहाँ नदी के किनारे खड़ा होना क्या है ?शीघ्र सेना के साथ आगे जाओ। दूषण ने रथ पर सवार होकर सेना से बाहर निकलकर दृष्टि डाली। उसने देखा कि राम हथियार और अग्नि की भाँति तीर लेकर खड़े हैं, उसके बाद दूषण ने रथ फेरकर खर के निकट आकर कहा कि यह रामचन्द्र सामने हैं उनके भय से हमारी सेना अपने स्थान पर खड़ी है और आपसे कोई नहीं कह रहा है कि यह राम हैं इस एक व्यक्ति से हमारी सेना भयभीत हो रही है। खर यह बात सुनते ही राम पर दौड़ा। उसको देखकर उसकी सेना आगे बढ़ी और आश्रम के निकट पहुँचकर सारथी से कहा कि राम के निकट रथ लाओ।

نزدیک رام برد بعد ازان همه راچهسان از غصه گوناگون اسلحه بر رام رها کردند
مدگر و اپس و شول و پراس و کهرک و پرسوده همه بر رامچند زدند چنانکه بر رام مانند
مینغ اسلحه باریدند و تیرها بر و مانند قطرات باران بر کوه رام همه را برداشت نمود چنانکه
سیل ندی ها را دریائی شور و از زخمهائی آن تمام وجود چنان مینمود که آفتاب هنگام شام
از شفق دیوتا و کند هرپ بر تنهائی رام میطپیدند القصه رام کمان را زه نموده انواع
انواع صدها و هزاران تیر روان کرد و کمند مرگ که کال پاش گویند بسرعت بزد آن تیرها
که رام بطور بازیچه روان نموده بود مردم لشکر را هلاک کرد و کالبدهای راچهسان سوراخ
کرده بسمت آسمان نورانی شده رفتند و بیشمار راچهسان را بقتل رسانیدند و دهوجا
و سپرها و کجها یعنی جوشن ها سوراخ سوراخ نموده و راچهسان از تیرها زخمی شده شورها کردند
و آن فوج از تیرهای رام امان نمی یافت چنانکه جنگل خشک از آتش راچهسان
باز شول و برچهی و پرکهه و پراس و کهرک و تیرها بر رامچند را انداختند و رامچند
آن بارش اسلحه را هیچ بخاطر نیاورده همه را بر وجود برداشت کرد اما اندکی ضعف باو
روداد و آن راچهسان از تیرهائی او مضطرب گشته سلاح ها را گذاشته باطراف

گریختند و رام را در جنگ زورآور دیدند درینجا صورت جنگل و درختان
و لشکر راچهسان و راچهسی قد کلان شول و سپر در هر دو دست گرفته بمقابله رام

सारथी रथ को राम के निकट ले गया। उसके बाद सारे राक्षसों ने क्रोध से राम पर विभिन्न अस्त्र छोड़े। मृद्गर, शूल, त्रिशूल, प्रास, तलवार और फरसा सब रामचन्द्र पर मारे तथा रामचन्द्र पर अस्त्र और तीर बरसाए जैसे कि वर्षा की बूंदे गिरती हैं। राम ने सबको सहन किया जैसे कि नदियों की बाढ़ का शोर नदी सहन कर लेती है। उनके घाव से उनका सम्पूर्ण शरीर ऐसे लग रहा था जैसे कि संध्या के समय लाली के कारण सूर्य लगता है। देवता और गन्धर्व राम के अकेले होने पर व्याकुल हो रहे थे। राम ने धनुष चिल्ले पर चढ़ाकर विभिन्न प्रकार के सैकड़ों और हजारों तीर छोड़े और मृत की कमन्द जिसे कालपाश कहते हैं शीघ्रता से फेंका। उन बाणों ने जिन्हें राम ने खेलस्वरूप भेजा था शत्रु सेना के लोगों को मार डाला और राक्षसों के शरीर में छेद करते हुए चमकदार होकर आकाश की ओर चले गये। इस प्रकार अधिकांश राक्षसों को मार डाला और झण्डा, पताका, ढाल और कवच में छेद कर दिया। राक्षस तीरों से घायल होकर शोर मचाते थे और उस सेना का राम के बाणों से बचाव नहीं हो रहा था जैसे कि सूखे वन का अग्नि से बचाव नहीं होता है। राक्षसों ने फिर त्रिशूल, बर्छी, परिघ, फावड़े और तलवार तथा तीर रामचन्द्र पर फेंके और रामचन्द्र ने अस्त्रों की इस वर्षा पर ध्यान न देते हुए सबको अपने पर सहन किया। यहाँ तक कि दुर्बलता का आभास हुआ और वह राक्षस उनके बाणों से परेशान होकर हथियार छोड़कर अलग-अलग दिशाओं में भाग खड़े हुए और उन्होंने राम को इस युद्ध में बलवान पाया।

वनों, वृक्षों, राक्षसों की सेना और वाल राक्षसी का चित्र जो त्रिशूल और सपर दोनों हाथ में लेकर

درآمده و رام تیر بکمان آورده و کمان را کشیده سد راه گردیده و آنطرف کهر
بر رتهه سوار تیر بکمان آورده سرگرم کارزار و خدمتگار چتر بر سر گرفته

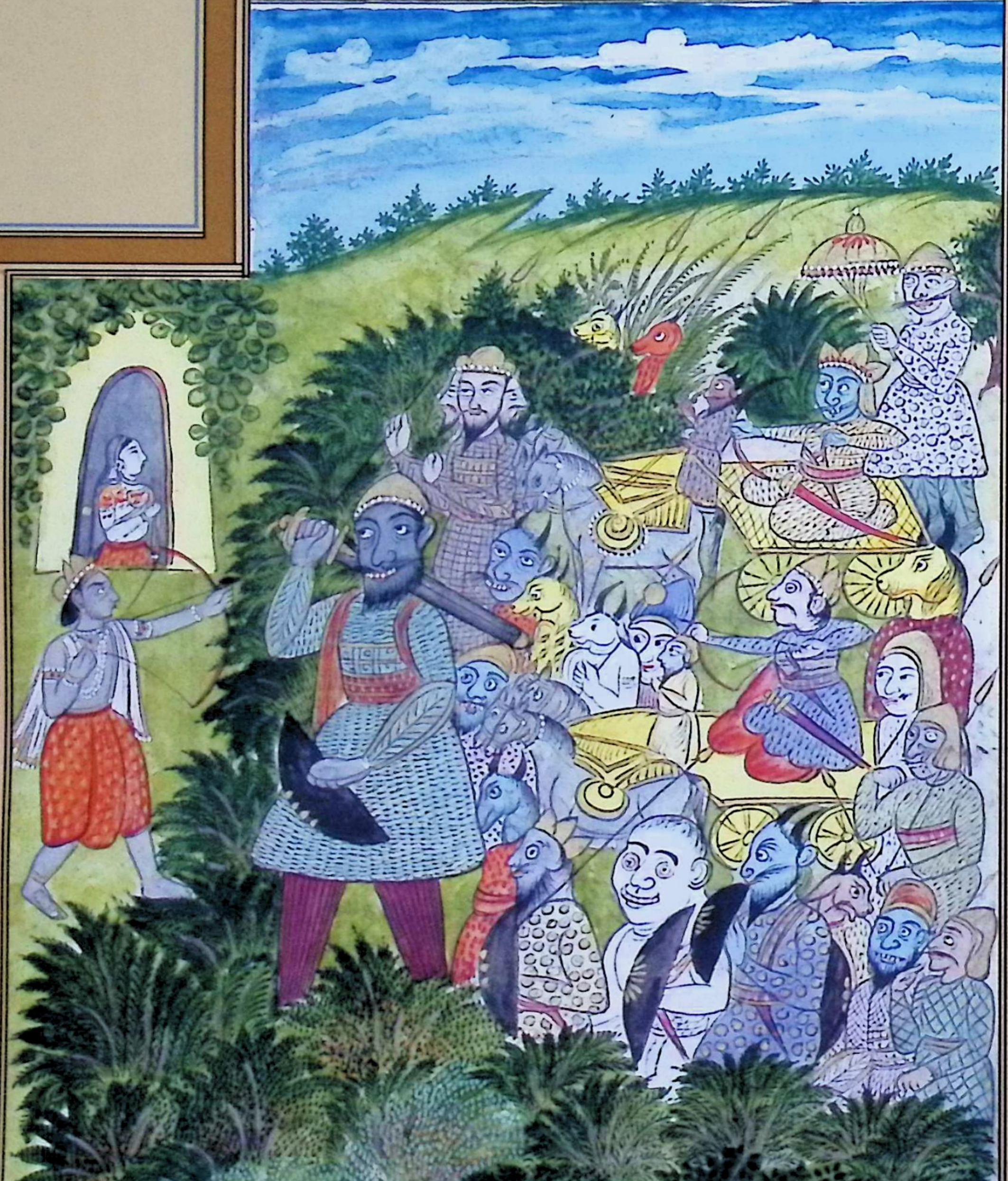

राम के मुकाबले पर आयी है और राम धनुष पर बाण रखकर तथा धनुष खींचकर मार्ग में खड़े हैं और उधर खर रथ पर सवार धनुष बाण लिये हुए।

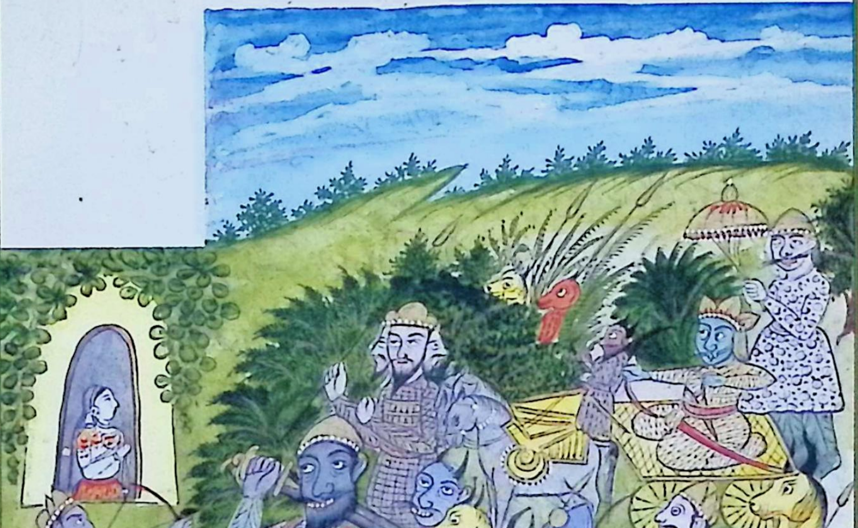

سرگ جنگ دولهن دوکهن آنهمه متفرقان را تسلی نموده وجمع کرده از غصه

بر رامچندر دوید آنها از پناه دادن دوکهن ایمن گشته شال و مان و سنگ را اسلاح کرده بر رام رسیدند بعده میان رام و راچهسان جنگ کلان واقع شد رام آن بارش احجار و اشجار را مانند کوه مستقیم بوده بر خود برداشت نمود بعد ازان رام بغضب آمده کشتن آنها را در دل مشخص کرد و تیرها بر دوکهن و تمام راچهسان رها کرده همه را منحرف گردانید و دوکهن را روگردان کرد و تیرها بر دوکهن و تمام لشکر بارید دوکهن فوج را گریزان دانسته بر رتهه ایستاده بر رام بارش تیرها کرد رام ازان تیرها زخمی گشته غضبناک کمان را کشیده روبروی دوکهن شده تیرها مانند بجر اندر بر و زد و دوکهن هم صدها و هزاران تیر بر رام پرتاب داد بعد ازان رام چند تیر از ترکش برآورده یکبارگی رها کرد و از یک تیر دهوجای دوکهن و از چهار تیر چهار اسپ و از سه تیر سه نین و از دو تیر رتهه و سارتهی را بکشت و تیرهای دیگر از ترکش برآورده پرتاب داده اسلحه او را تمام بشکست بعد کشتن اسپان و شکستن رتهه وغیره آن راچهس بر زمین ایستاد و کدا بر رامچندر رها کرد رام آن را آینده دیده از تیرها در اثنا راه بشکست و هشت تیر بر دوکهن زد او در غصه شده پرکهه بکف گرفته مانند جم خوف دهنده بر رام دوید رام آن را دیده بدو تیر هر دو دست او را از بازو بشکست و تبسم نمود بعد ازان زه کمان

کشید

सर्ग-२८

दूषण का युद्ध

दूषण उन समस्त लोगों को सान्त्वना देते हुए और उनको एकत्र करके क्रोध से रामचन्द्र पर दौड़ा। वह सब दूषण के शरण देने से सुरक्षित हो गये और ढाल, धनुष, पत्थर और हथियार लेकर राम के पास पहुँच गये। उसके बाद राम और राक्षसों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। राम ने पत्थरों और वृक्षों की वर्षा का पर्वत के समान, दृढ़ रहकर स्वयं सहन किया। उसके बाद राम ने क्रोध में आकर उन लोगों की हत्या करने का निश्चय कर लिया। दूषण और सारे राक्षसों पर तीर मारकर सबका मुँह फेर दिया और दूषण को पीछे हटने पर विवश कर दिया, दूषण और सारी सेना पर बाणों की वर्षा की। दूषण ने सेना को भागता हुआ जानकर रथ पर चढ़कर राम पर बाणों की वर्षा की। राम ने भी बाणों की वर्षा की। राम ने उन बाणों से घायल होकर क्रोधित होकर धनुष खींचते हुए दूषण के सामने होकर उस पर इस प्रकार बाण मारे जैसे इन्द्र बज्र पर। और दूषण ने भी सैकड़ों और हज़ारों बाण राम पर छोड़े। उसके बाद राम ने तरकश से तीर निकालकर अचानक छोड़े और एक तीर से दूषण का झण्डा गिराया। चार तीरों से चार घोड़े मारे। तीन तीरों से तीन नेत्र फोड़े और दो तीर से रथ और सारथी को मार डाला। तरकश से दूसरे तीर निकालकर उसकी पूरी सेना के अस्त्र शस्त्र बिखेर दिये। घोड़ों के मारे जाने और रथ आदि के टूट जाने के बाद वह राक्षस भूमि पर गिर पड़ा एवं उसने रामचन्द्र पर गदा मारा। राम ने उसको आता देखकर बीच ही में से उसे तीर से तोड़ डाला और आठ तीर दूषण पर मारे। वह क्रोध से हाथ में तलवार लेकर भयंकर मृत्यु के समान राम पर दौड़ा। राम ने उसको देखकर दो तीरों से उसके दोनों हाथ तोड़ दिये और मुस्कुराए।

کشید بزوری که از شور او راچهسان را خوف افزود و تمام اطراف و گوشه‌ها در نفیر آمد
و پرکهه دو کهن بر زمین افتاد بعد از آن رام بیک تیر سر او بر زمین انداخت
دست شکسته مانند دهوجا. اندر دو کهن افتاد جمیع ذیحیات او را بنخالت دید
بر رام آفرین و مرحبا گفتند درین اثنا سه راچهس که دهماکپال و استهولاچهه و پرماتهی
پرسوده نام داشتند یکایک بر رام دویدند دهماکپال شعل برداشت و استهولاچهه
نیش و پرماتهی پرسوده رام اینها را دید سه تیر بکمان آورده چنانکه کسی نیزه بازی
همانان کند بیک تیر دهماکپال را سر شکست و بعد از آن تیرهای بسیار گرفته
پرماتهی را بسود و به تیرهای چند استهولاچهه را چشمان او کور کرد چنانچه او کور شده
مثل درخت بی بنیاد برافتاد پس از آن از تیرهای آتشین باقی لشکریان راچهس را
بکشت از صدها تیر صدها را بکشت و از هزاران تیر هزاران را سر شکستانیدن
بخون آلوده و موها پراگنده بر زمین افتادند و روی زمین بنوعی که ببیدی
از آتش از خاشاک روشن میشود نمودار آمد در لمحه در لشکر تالاب گوشت و خون
روان شد و راچهسان مانند کوه‌ها افتادند و تمام روی زمین خالی از شور و شغب گشت
همه چهارده هزار راچهس را تنها رام بقتل رسانید از آنجمله کهر و ترشرا باقی ماندند و چندی
راچهس دیگر بعد از آن کهر آن لشکر را از دست رامچندر کشته دیده خود بمقابله آمد

उसके बाद धनुष इतनी जोर से चिल्ले पर खींचा कि उसके शोर से राक्षसों के भय में वृद्धि हो गयी और चारों दिशाएँ कोलाहल से भर गयीं। तथा दूषण की तलवार धरती पर गिर पड़ी। इसके बाद राम ने एक ही बाण से उसका सर धरती पर गिरा दिया और टूटे हुए हाथ के साथ इन्द्र के झण्डे के समान दूषण गिर पड़ा। समस्त जीवधारियों ने उसको इस दशा में देखकर राम को आशीर्वाद और शुभकामनाएँ दीं। इसी बीच तीन राक्षस जिनके नाम महाकपाल, स्थूलाक्ष और प्रमाथी थे यकायक राम पर दौड़ पड़े। महाकपाल ने त्रिशूल उठा रखा था। स्थूलाक्ष ने पट्टिश और प्रमाथी ने फरसा। राम ने इनको देखकर तीन बाण धनुष पर चढ़ाये और जिस प्रकार कोई अतिथियों का सत्कार करता है एक तीर से महाकपाल का सर तोड़ दिया उसके बाद बहुत से बाण लेकर प्रमाथी को छेद डाला और कुछ बाण के द्वारा स्थूलाक्ष की आँखें अंधी कर दीं। अतः वह अंधा होकर बिना जड़ के वृक्ष की भाँति गिर पड़ा। उसके बाद अग्नि बाणों से राक्षस के शेष सेनानियों को मार डाला। वे सब रक्तरंजित होकर धरती पर गिर पड़े और मुख धरती पर ऐसे पड़ा जैसे कि घासफूस की अग्नि से राख निकलती है। एक क्षण में समस्त राक्षस सेना मांस रक्त के तालाब में बहने लगा और पर्वतों के समान काया वाले राक्षस धरती पर ढेर हो गये तथा समस्त धरती का कोलाहल शान्त हो गया। समस्त चौदह हजार राक्षसों को राम ने अकेले मौत के घाट उतार दिया। उनमें से खर और त्रिशरा शेष रह गये और कुछ दूसरे राक्षस भी। उसके बाद खर, अपनी सेना को रामचन्द्र के हाथों मारा जाता देखकर स्वयं मुकाबले के लिये आया।

سرگ جنگ کهر از کشتن دوکهن و ترشرا و دیگر راچهسان از رامچند ترسناک شد

که اینقدر لشکر راچهسان را تنها رام که پیاده بود تمام ساخت چار ناچار روبروی رامچند
رسید مانند تموج راچهس که برآندر آید و کمان کلان کشیده تیرها بر رام زد و بسیار علم
استر خود را بنمود و اقسام را ها از تیرها نمود و اطراف و گوشه ها پر کرد و رام نیز کمانرا
کشیده تیرهای مانند آتش را پرتاب داده آنها را رفع کرد از تیرهای هر دو آسمان پوشیده
گشت و هوا از رفتن ماند و از دام باقی تیرها آفتاب بنظر نمی آمد کهر تیرهای نوک دار
بر رام زد چنانکه کسی فیل را کچک زند و راچهس بر رته نشسته کمان از دست گرفته مانند جم
که پاش در دست گیرد مینمود ناگاه از غضب بر رام دوید مانند پروانه که بر شمع رود و از تیرها
کمان رام از قبضه معه تیر آن بشکست و هنر تیراندازی خود وا نمود و هفت تیر دیگر بخشم
بر رام زد که کهرکوچ یعنی جوشن رام بر زمین افتاد و او مانند آتش از دور شدن دود
روشن گشت رامچندر کمان کلان که جهار کهه اکست داده بود بر داشته تیرها
در آورد و دهوجا کهر را بشکست بعد شکستن دهوجای طلائی آفتاب بموجب گفته دیوتا
بغروب رسید بعد از آن رام کهر را چهار تیر زد و آن در جگر او رسید مانند فیل در غصه شده
و رام از بسیار تیرها خون آلوده گشت بعده رام کمان کشیده شش تیر رو بزد از انجمله
یک بر سر او رسید و دو در هردو بازو و سه در تن او پس سیزده تیر مانند آتش

براو بارید

सर्ग-२६

खर का युद्ध

खर ने दूषण, त्रिशरा और दूसरे राक्षसों के मारे जाने से रामचन्द्र से भयभीत हो गया कि इतनी बड़ी राक्षसों की सेना को अकेले राम ने जो पैदल थे, ठिकाने लगा दिया। वह न चाहते हुए भी रामचन्द्र के सामने पहुँचा, नमूज राक्षस के समान, जो इन्द्र पर आता है और उसने बड़े से धनुष खींचकर राम पर तीर चलाए और अपने अस्त्र योग्यता का ज्ञान प्रकट किया। और तीरों से विभिन्न लकीरें बनाई और सारी दिशाओं और कोनों को भर दिया। राम ने भी धनुष खींचकर अग्नि के समान तीरों को चमकाया और उनको ऊँचा किया। दोनों के तीरों से आकाश छुप गया। हवा चलनी बन्द हो गयी और शेष तीरों के जाल से सूर्य दिखायी नहीं दे रहा था। खर ने राम पर नोकीले तीर छोड़े जैसे कि कोई हाथी को अंकुश मारता है और वह राक्षस रथ पर सवार तथा हाथ में पाश लेता है। अचानक वह क्रोध से राम पर दौड़ पड़ा जैसे कि परवाना शमा पर दौड़ता है और अपने तीरों से राम के धनुष को तीर सहित कब्जे पर तोड़ दिया। अपनी तीरअन्दाज़ी का गुण दिखाया और दूसरे सात तीर क्रोध से राम पर ऐसे मारे कि राम का कवच धरती पर गिर पड़ा और वह धुएँ के दूर होने से अग्नि के समान चमक उठे। रामचन्द्र ने वह बड़ा धनुष जो उन्हें महर्षि अगस्त्य ने दिया था उठाकर उस पर बाण लगाये और खर का झण्डा फाड़ डाला। सोने के झण्डे के फटने के बाद देवताओं के कथनानुसार सूर्य अस्त हो गया। उसके बाद राम ने खर को चार तीर मारे वह उसके हृदय में लगा और वह हाथी के समान क्रोधित हुआ तथा राम भी बहुत से तीरों के लगने के कारण रक्तरंजित हो गये। फिर राम ने धनुष खींचकर उस पर छः बाण मारे उनमें से एक उसके सर पर लगा और दो दोनों भुजाओं में और तीन उसके शरीर में। फिर तेरह तीर अग्नि के समान उस पर चलाए।

بر و پرتاب داد ازانجمله از چهار تیر چهار اسپ رتهه او هلاک شدند و از شش تیر سر سارتهی بشکست و از سه تیر سه بین یعنی بانس های رتهه شکسته شد و دو تیر دیگر چتر او و از دوازده تیر دیگر بطریق تبسم کمان با تیر های او را بشکست و از سیزده تیر دیگر کهر را زخمی کرد وقتیکه رتهه و اسپان و سارتهی همه از کار رفتند و مرد کهر گدا را در کف گرفته بر زمین بستاد و مهرکهه و دیوتا که بر بمان ها سوار آمده بودند آن کار رام را دیده دست بسته پرستش ها و آفرین کردند

درینجا صورت کهر بر رتهه سوار و کمان کشیده سرگرم کارزار و چند راچهس خونخوار و رام کمان بکف مقابل کهر آمده و چند راچهس بخاک و خون انداخته

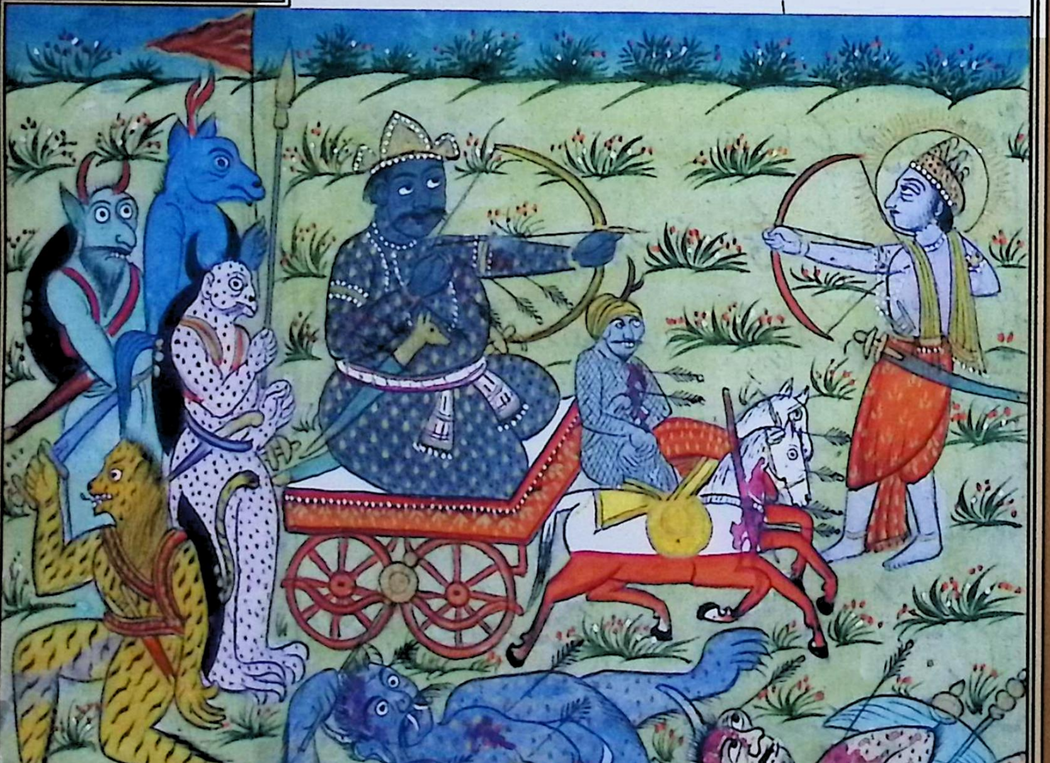

उनमें चार तीरों से उसके रथ के चार घोड़े मरे। छठे तीर से रथवान का सर तोड़ा और तीन तीरों से रथ के तीन बांस (त्रिवेणु) टूट गये तथा दूसरा तीर उसकी आँखों में मारा और दूसरे बारहवें तीर से मुस्कुराते हुए उसका धनुष बाण सहित तोड़ दिया। दूसरे तेरहवें तीर से खर को घायल किया। जब रथ, घोड़े और रथवान सब काम आ गये और मर गये तो गदा हाथ में लेकर भूमि पर खर राक्षस खड़ा हो गया। उस अवसर पर महर्षि और देवताओं ने जो विमान पर सवार होकर आये थे। राम का वह कार्य देखकर हाथ जोड़कर उनकी पूजा की और आशीर्वाद दिया।

खर का चित्र जो रथ पर सवार है और धनुष खींचे हुए है। कुछ भयंकर राक्षसों का चित्र। राम धनुष हाथ में लिये खर के मुकाबले पर हैं और कुछ राक्षसों को रक्त व धूल में मिला दिया है।

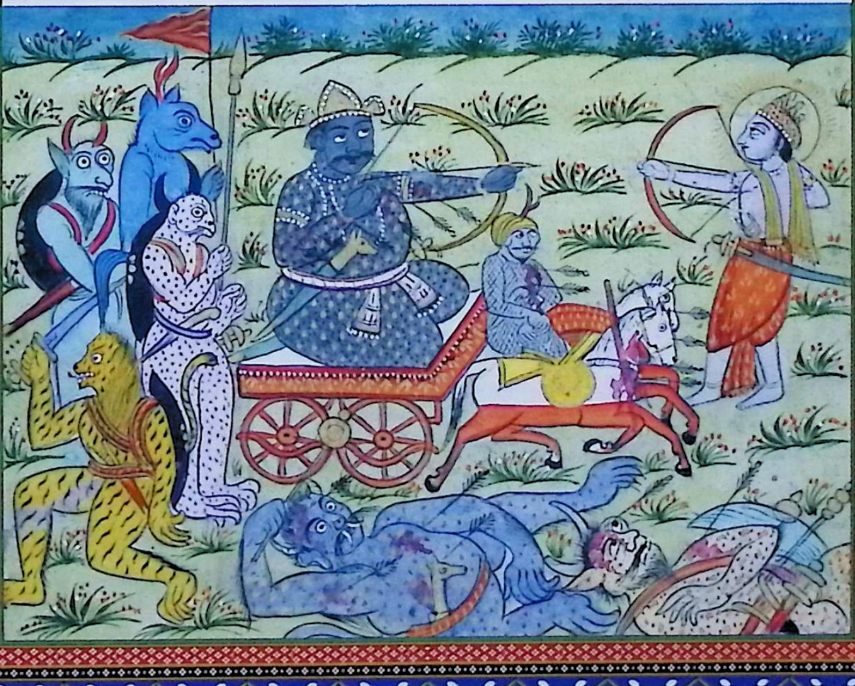

سرک کشتن کهر رامچند کهر را که رتهه شکسته و گدا گرفته ایستاده بود چنان گفت تو که با ال تبار
واسپان ورتهه و لشکر کلان آمدی بدکردی کسیکه تصدیع جانداران دهد او بی شبهه
گناهکارست و در هر سه لوک قابل سرداری نباشد و هر که کار خلافِ طریق جهانیان
بعمل آرد گویا که تمام مردم را کشته باشد چنانچه مار بکشد و عذاب کار نمیداند که انجام
چه بیند تو که تاپسان یعنی ریاضت کشانِ دندکارن کشتی و از مدت مدید این گناه
که نکوهیده ترین گناهان است مینمودی و مانند درختی که بوسیده و کهنه دار باشد بودی
والبته گناه کننده را ثمره آن می باید هر گاه که وقت آید و گناه کنند بسیار نمیرید
مانند کسیکه طعام زهرآلوده خورده باشد و تو گناه کردی و دشمنی جهانیان با وجود چومن
راجه ورزیدی حالا تیرهای من در جگرت میروند چنانچه در بل میک یعنی در سوراخ مار در رود
بیستر کهان را که خورده حالا بر بمان سوار شده برای کشته دیدن تو آمده اند حالا مانند
ثمره تال سر ترا میشکنم تو در دندکارن بسیار تفرج تماشا کرده ثمره آن بهین رام این
قدر گفته از غصه چشم سرخ کرده بعده کهر بخنده از رام گفت تو را چنان کم زور را گشتی
ای پسر دسرتهه بزرگان و قوت مند که میشوند هنرهای خود نمیگویند و نادانان
و سفله اظهار بزرگی میکنند چنانچه تو میکنی و نسب و بزرگی خود در جنگ کدام کس
بیان نمیکند و تو آخر وقت وصفِ خود میگوئی همه جا سبکساری تو خواهند گفت

من کدارا

सर्ग-३०

खर का वध

रामचन्द्र ने खर से जिसका रथ टूट गया था और वह हाथ में गदा लिये खड़ा था, यह कहा कि तुम हाथी, घोड़े, रथ और बड़ी सेना के साथ आये, बुरा किया। जो व्यक्ति जीवधारियों को कष्ट देता है, निःसन्देह वह पापी होता है और तीनों लोक में वह नेतृत्व के योग्य नहीं रहता है। जो संसार वालों की विधि के विपरीत कोई कार्य करता है वह मानों समस्त लोगों को मारता है जैसे कि सर्प को मारता है और इस कार्य का दण्ड नहीं जानता कि क्या देखेगा। क्योंकि तुमने दण्डकारण्य के तपस्या अर्थात् पूजा करने वालों का वध किया है और एक दीर्घकाल से यह पाप जो निष्कर्म, पाप है कर रहे हो। अब तुम किसी जर्जर और पुराने वृक्ष की भाँति बूढ़े हो चुके हो। निश्चय ही पाप करने वाले को उसका फल मिलना चाहिए। जब समय आता है और वह पाप करते रहते हैं तो अधिक समय नहीं जीवित रहते, जैसे कि कोई विषयुक्त भोजन खा ले। तुमने पाप किया और मुझ जैसे राजा के साथ शत्रुता करके दुनिया वालों की शत्रुता मोल ली। अब मेरे बाण तुम्हारे हृदय में इस प्रकार प्रवेश करेंगे जैसे कि छिद्र में सर्प प्रवेश करता है। तुमने पहले जिन ऋषियों की हत्या की थी। अब वह विमान पर सवार होकर तुम्हारी हत्या करने के लिए आये हैं। अब मैं नारियल के फल की भाँति तुम्हारा सर तोडूंगा तुमने दण्डकारण्य में बहुत मनोरंजन और उत्पात कर लिया इसका परिणाम देखो। राम ने यह कहते हुए क्रोध से आँखें लाल कर लीं। उसके पश्चात् खर ने हँसते हुए राम से कहा; ऐ दशरथ के पुत्र ! तुमने बलहीन राक्षसों को मारा है जो बड़े और शक्तिशाली होते हैं वह अपनी बड़ाई नहीं बताते। मूर्ख और नीच अपनी श्रेष्ठता और बड़ाई बयान करते हैं जैसे कि तुम कर रहे हो। और तुम अन्तिम घड़ी में अपना गुणगान कर रहे हो। सब जगह लोग तुम्हारे अपमान और तिरस्कार की चर्चा करेंगे।

من کدارا گرفته مانند ابر و کوه برای کشتن تو رسیدم چنانچه برای هر سه لوک
پاش در دست گرفته جم آید و دیگر بسیار پیش من مگو آفتاب بغروب رسید جنگ کن
اینقدر صورت من نظر کرده در جنگ مهورت یعنی دو گهری هم نخواهی زیست
با من دشمنی کرده زندگی تو مشکل است تو چهارده هزار راچهس را کشتی حالا ترا کشته
انتقام میگیرم و اشک خود میشویم اکنون از کدا سر تاجدار ترا بر زمین می اندازم و از خون تو
آنهار را آب میدهم یعنی ترپن میکنم این بگفت و کدارا از غضب بر رامچند رها کرد که مانند آتش
درختان و باره و خاشاک وغیره همه را سوخته خاکستر کرد و چون رامچند دید که نزدیک من می آید
چندان بارش تیر کرد که کدا بر زمین افتاد بنوعیکه کسی افعی را از افسون بر اندازد گهر آن
کدارا افتاده هیچ نه هراسید و مثل کوه مستقیم ماند و رامچند بعد شکستن از گهر تیر [illegible] گفت
اینک تمام زور ترا بر زمین انداختم تو خود را عبث زورمند میگفتی اینکه کدارا شکستم و نخوت ترا
چرا میگفتی که راچهسان مرده را حالا ترپن میکنم اکنون همچو تو سفله و بد طور را جان میبرم
چنانچه گر رامرت را و حالا از گلوی تو خون و چرک تیر هائی من میکشند و از خاک تمام خود
آلوده هر دو باز و کشاده بر زمین خواهی افتاد چنانچه زن با شوهر پیوندد و بخواب کلان رفت
خواهی خفت و دندکارن مکان پناه خواهان خواهد شد و منیشران همه جا بایمنی خواهند
حالا عورات راچهسان و عورات نو ماتم میکنند آنانرا که مثل تو شوهر بود و شمره ادهرم حالا در جنگ

मैं गदा लेकर बादलों के पर्वत की भाँति तुम्हें मारने के लिए पहुँचा हूँ जैसे कि तीनों लोक के लिए पाश हाथ में लेकर यम आता है और अब तुम मुझसे और अधिक बातें न करो। सूर्य अस्त हुआ चलो युद्ध करो। युद्ध में मेरी काया देखकर तुम एक मुहूर्त अर्थात् दो पल भी जीवित नहीं रहोगे। मेरे साथ शत्रुता करके तुम्हारा जीवन कठिन है तुमने हमारे चौदह हज़ार राक्षसों का वध किया। अब मैं तुम्हें समाप्त करके प्रतिशोध लूंगा और अपने अश्रु पोछूंगा। अभी मैं गदा से तुम्हारा मुकुट वाला शीश धरती पर गिराता हूँ और तुम्हारे रक्त से उसे तृप्त करता हूँ। यह कहते हुए उसने क्रोध से गदा रामचन्द्र पर चलाया कि जिसने अग्नि की भाँति वृक्षों, पारा और खाशाक आदि सबको जलाकर राख कर दिया। जब रामचन्द्र ने देखा कि वह मेरे निकट आ रहा है तो उन्होंने बाणों की ऐसी वर्षा की कि गदा धरती पर गिर पड़ा जैसे कि कोई अजगर को जादू और मन्त्र के द्वारा फेंक दे। खर ने वह गदा उठाया और तनिक भी भयभीत न हुआ और पहाड़ की भाँति अपने स्थान पर डटा रहा। रामचन्द्र ने तोड़ने के पश्चात् मुस्कुराते हुए खर से कहा; अभी मैं तुम्हारा सारा बल पृथ्वी पर डाले देता हूँ। तुमने अकारण अपने को बलवान और शक्तिशाली कहा। मैंने तुम्हारा गदा तोड़ा और उसी के साथ तुम्हारा घमण्ड भी। तुमने यह क्यों कहा कि तुम मृत्य राक्षसों का प्रतिशोध लोगे। अब मैं तुम जैसे दुराचारी की जान लेकर रहूँगा जैसे कि करण अमृत की। तुम्हारे गले से रक्त की धारा उबलेगी और मेरे बाण तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ेंगे और तुम धूल में लिपटे हुए तथा दोनों हाथ खोले हुए धरती से मिल जाओगे जैसे कि स्त्री पति से मिलती है, और चिरनिद्रा में सोओगे। दण्डकारण्य शरण ढूंढने वालों का शरण स्थल होगा, और मुनीश्वर प्रत्येक स्थान पर निर्भय होकर जायेंगे। अब राक्षसों की स्त्रियाँ और तुम्हारी स्त्रियां शोक करेंगी जिसका तुम्हारे जैसा पति है और अन्याय का फल तुम युद्ध में पाओगे।

میابی کهر از غضب در جواب رام گفت بسیار نادان هستی که نمیترسی از خوف من و گفتار تو
دروغ است که بمرگ نزدیک شده و بسبب مرگ گفتن و نگفتن را نمی فهمی بار دیگر هشیار شو
این بگفت و هر سو نظر کرد نزدیک درخت شال کلان دید از دو دست آنرا از بیخ
برکند و بر رام زد رام آنرا از تیرهای خود بشکست بعد از آن رامچندر هزار تیر بر کهر زد
وا و از تیرها مضطرب گشته بر رام دوید رام تیری مانند آتش یا مانند برهم دند برای
کشتن کهر گرفت و آن همان تیر بود که اگست را اندر داده بود و او برام داده آنرا
برکهر زد از آن تیر کهر بر زمین افتاد چنانکه از آتش سوخته برافتد و یا مهادیو اینک را
بسوزد یا بجر اندر بر تردیت برافتد چون کهر افتاده هلاک شد بعد از آن دیو رکهه و گندهرب
و مهرکهه آمده برام گفتند ای مهاتیج برای همین کار اندر به آشرم شربهنگ رکهه
بر زمین رفته بود و ترا بتدبیر مهرکهان برای کشتن راچهسان درین ملک آورد
تو این کار نیکو کردی که این را کشتی حالا مهرکهه در وند کارن با رام خواهند بود و اینک
دیوتا و گندهرب و سده و پرم رکهه بدعای فتح و صفت میکنند این عجایب را نظر کن
و برهما که در دانش کلان برهم بزرگتر است اینکار را دیده با دیوتاها و صفت میکنند
و مهادیو بر بهان نشسته با همه عقب روان خود ازین فتح وصف تو میکنند چون
دیو رکهه و غیره اینقدر گفتند رام از دور دیوتاها را دیده نمسکار کرد و درین اثنا لچهمن

खर ने क्रोध से राम के उत्तर में कहा तुम बहुत नादान हो कि तुम मेरे भय से भयभीत नहीं होते। तुम्हारी बात असत्य है कि तुम मृत्यु के निकट पहुँच चुके हो, मृत्यु के कारण अपनी कथनी और करनी में अन्तर नहीं कर पा रहे हो। अब चैतन्य हो जाओ यह कहकर उसने चारों ओर दृष्टि घुमाई और सबसे निकट शाल का एक बड़ा वृक्ष देखा दोनों हाथों से उसे धरती पर उखाड़ लिया और राम पर फेंका। राम ने उसे अपने बाणों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया इसके पश्चात् रामचन्द्र ने हजार बाण खर पर मारे और वह बाणों से परेशान होकर राम पर दौड़ पड़ा राम ने एक बाण अग्नि की भांति खर को मारने के लिए लिया। यह वही बाण था जो अगस्त्य को इन्द्र ने दिया था और उसने राम को दिया था उसको खर पर मारा। उस बाण से खर धरती पर गिर पड़ा जैसे कि कोई आग से जलकर गिरता है; या जैसे महादेव अन्धकासुर को जलाते हैं या जैसे इन्द्र का वज्र बकासुर पर गिरता है। जब खर गिरकर मर गया तो देवर्षि गन्धर्व और महर्षि ने राम से आकर कहा ''ऐ महातेज ! इसी कार्य के लिये इन्द्र शरभंग ऋषि के आश्रम में धरती पर गये थे और आपको महर्षियों के प्रयास से राक्षसों का वध करने के लिये इस देश में लाये थे आपने यह अच्छा कार्य किया कि इसको मार डाला। अब महर्षि दण्डकारण्य में आराम से रहेंगे देखिये देवता, गन्धर्व, सिद्ध और परमरक्ष आपकी विजय और सफलता की प्रार्थना कर रहे हैं और आपकी प्रशंसा कर रहे हैं। यह आश्चर्यजनक घटना देखिये और ब्रह्मा जो जानने वालों में श्रेष्ठ हैं। यह कार्य देखकर देवताओं से आपकी प्रशंसा कर रहे हैं और महादेव विमान पर बैठकर सबके साथ पीछे विदा हुए हैं तथा इस विजय पर आपकी प्रशंसा कर रहे हैं जब देवर्षि आदि ने यह कहा तो राम ने दूर से देवताओं को देखकर नमस्कार किया।

معه سیتا از غار برآمده بمکان خود رسید و رام هم باشرم خود درآمد فتح رامچند
دیده سیتا بخوشوقتی تمام گفت ای پسر خوشدل من دیدم که پرتگیا خود را راست
کردی و دشمن منیشران را که رکهه بود کشتی حالا منیشران بسبب زور بازوی تو آرام
خواهند گذراند بعد ازان آن کشنده لشکر راجهان را دختر راجه جنک بخوشوقتی و صفها کرد

درینجا صورت کهر هفت تیر رام خورده وقت جان دادن یک درخت عظیم برای زدن
بر رام برکنده و جان داده و رتهه و سارتهی و اسپان و دیگر راجهان شکسته و مرده افتاده
و رام و لچهمن و سیتا استاده و مهادیو و دیگر دیوتا برای تماشا آمده با بنان آفرین میکنند

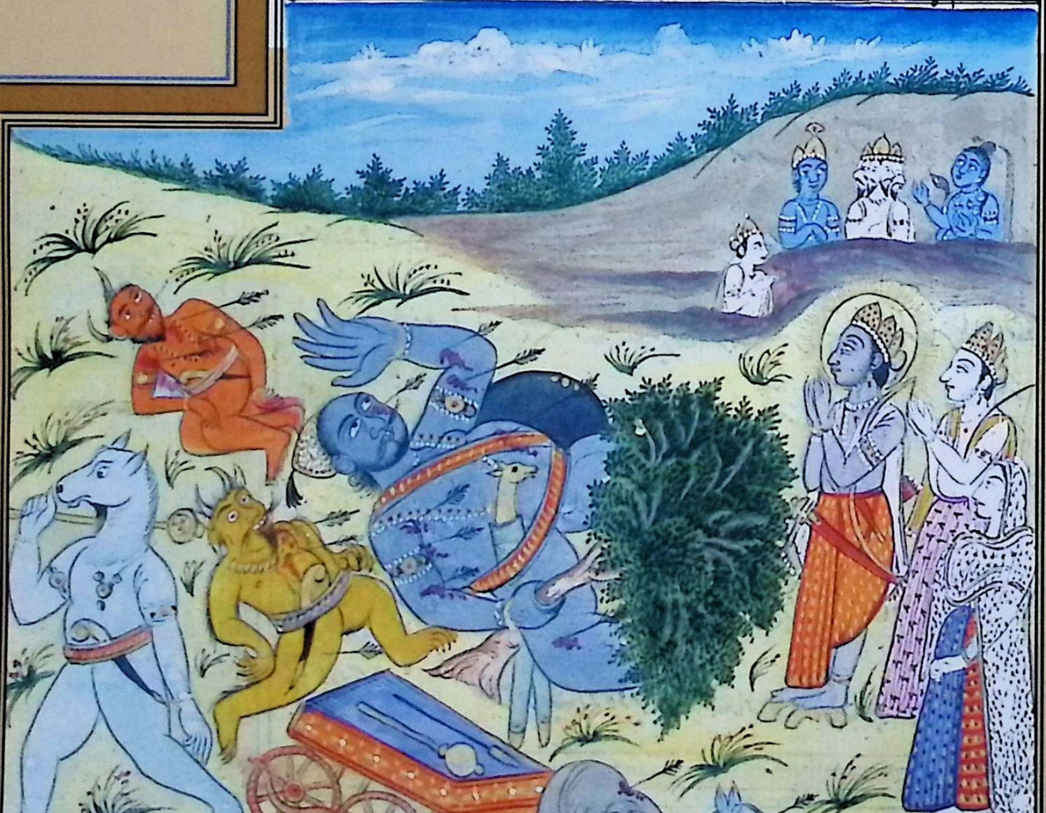

इस मध्य लक्ष्मण सीता के साथ गुफा से निकलकर अपने स्थान पर पहुँच गये और राम भी अपने आश्रम में आए। रामचन्द्र की विजय देखकर सीता ने अत्यन्त हर्ष व उल्लास से कहा ''ऐ मेरी सास के पुत्र ! मैंने देखा कि आपने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर ली और इसे सत्य प्रमाणित कर दिया तथा मुनीश्वरों के शत्रु को जो कि राक्षस खर था मार डाला। अब मुनीश्वर गण आपकी शक्ति के बल पर आराम से जीवनयापन करेंगे। उसके बाद राक्षसों की सेना को मृत्यु के घाट उतारने वाले की राजा जनक की बेटी ने प्रसन्नता के साथ प्रशंसा की।''

खर का चित्र, राम के सात बाण खाकर प्राण देते समय, एक बड़ा सा वृक्ष राम पर फेंकने के लिये धरती से उखाड़ कर उसने उठा रखा है, फिर उसने प्राण त्याग दिया और रथ, रथवान, घोड़े और दूसरे राक्षस घायल एवं मरे पड़े हैं। राम लक्ष्मण और सीता खड़े हैं, महादेव और दूसरे देवता तमाशा देखने के लिये आये हुए हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं।

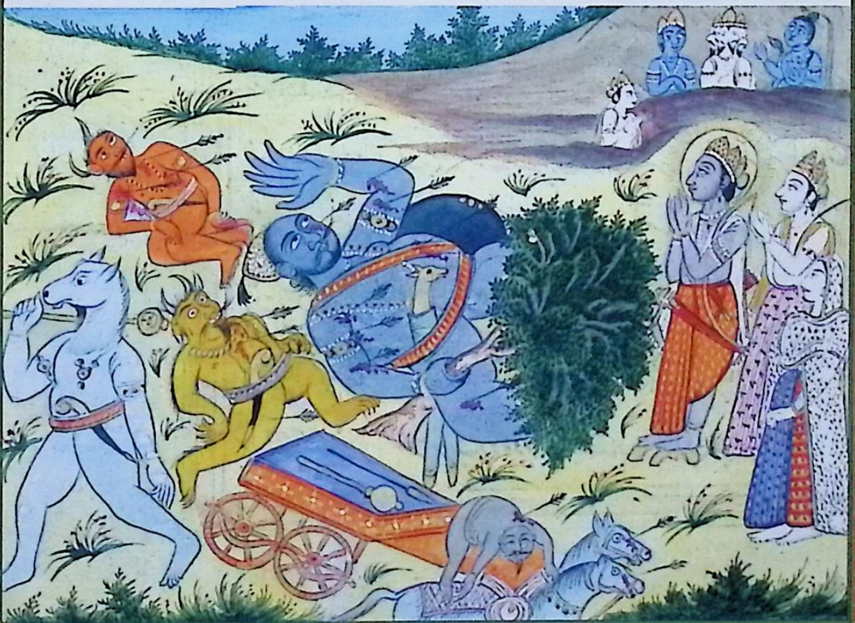

سرگ احوال راون و رفتن سوپنکها و دیدن سوپنکها چون دید که چهارده هزار راچهس را تنها رام
که آدمی پیاده بود تمام ساخت و کهر و دوکهن را هم کشت مانند ابر بسیار غرید و شور کرد
بعد از آن در لنکا که راون حاکم آنجا بود رسید دید که راون پیش یاران نشسته است
و وزرا گرد او مانند دیوتا که گرد آندر باشند و بر آسن طلائی مانند آفتاب مینماید چنانکه
در بیدی زرین آتش باشد باده سر و بیست دست خوشنما کشاده راجه عالی طور
غصه دار و مثل ابر تاریک برنگ و پیرایه های طلائی و دیبی پوشیده و خوش بازو و سفید
دندان کلان کتف مثل کوه و بر دیوتا و کند هرپ و بهوت فتح یابنده تحقیق گویا جم
نشسته است و در جنگ دیوتا هزیمت دهنده آندر و دندان اراوت فیل اندر
را شکسته بسیار چیز مهیا کرده و با دیوتا بسوها جنگ کرده بسیاری را زده و برهم
زننده دریای شور و سوراخ کننده کوه و دور کننده دهرم ها و خواهش کننده عورات
غیرها و کشنده مهارکهه ها و مذمت کننده برت ها و استرا جهان و کند هر یان آن دانسانها را
دلهنده و در شهر بهوگوتی رفته بر باسک افعی ظفر یافته و سندری نام عورت تچهک نام را
گرفته آورده و بر کبیر ظفر یافته و از ملک بدر کرده و او بر کیلاس کوه رفته مکان گزیده و بان
بشپک نام از او کشیده گرفته و چیترتهه بن را و نندن بن را که اقسام درخت و مکانهای
خوب دارد مستاصل ساخته خراب کرده و بر کوه ایستاده ماه و آفتاب را بزور دست خود

सर्ग-३१

रावण का वर्णन और सूपनखा का उसके निकट जाना

सूपनखा ने जब देखा कि चौदह हजार राक्षसों को राम ने, जो पैदल थे, अकेले ही मौत के घाट उतार दिया और खर और दूषण को भी मार डाला तो वह काले बादल के समान बहुत चिल्लाई और शोर मचाया। उसके बाद वह लंका में, जहाँ का संरक्षक रावण था, पहुँची। उसने देखा कि रावण विमान के सामने बैठा है और मंत्रीगण उसके चारों ओर बैठे हुए हैं जैसे कि इन्द्र देवता के चारों ओर होते हैं। सोने के सिंहासन पर सूर्य के समान दिखाई दे रहे हैं जैसे कि सुनहरी अंगीठी में आग होती है। जिसके दस सिर तथा बीस सुन्दर हाथ हैं, चौड़ी छाती हैं। राजा श्रेष्ठ और क्रोध वाला है तथा रंग में काले बादल के समान है। सोने के वस्त्र धारण किये हुए है, भुजा अच्छी, दाँत सफेद, कंधा चौड़ा पहाड़ के समान है और देवता, गन्धर्व और भूत पर विजय प्राप्त करने वाला है। ऐसा लग रहा था कि जैसे यम ही बैठा हुआ है और देवताओं के युद्ध में इन्द्र को पराजित करने वाला है। इन्द्र के हाथी ऐरावत के दाँत तोड़कर उसने बहुत सों को मारा है। पर्वतों में छिद्र करने वाला और बरत की निन्दा करने वाला है। राक्षसों, गन्धर्वों और मनुष्यों का अस्त्र जानने वाला है और उसने भगवती शहर में जाकर अजदहे पर नियंत्रण किया है और सुन्दरी नामी तक्षक सर्प की स्त्री को उठा लाया है। कुबेर पर विजय पाकर उसे देश से निकाल दिया। उसने कैलाश पर्वत पर जाकर नेतृत्व किया और उससे पुष्पक नामक विमान खींचकर ले लिया और चैत्ररथ बन और नन्दन वन को जहाँ भाँति-भाँति के वृक्ष और अच्छे स्थान थे उन्हें उखाड़कर खराब कर दिया। पर्वत पर खड़ा होकर चांद और सूरज को अपने हाथ के बल से चलने

از رفتن منع کرد و آنکه آتش نزدیک داشته در کوکرن پا بالا کرده تا ده هزار سال تپ کرد و هوم نمود
بخورش بوده برهما را خوشوقت نمود و برهما او را از مهربانی برها داد که در چشم زدن هر جا که خواهد
برسد و کامروپ یعنی ملبباسی که خواهد در آید و دندان مانند ماه نو و بروشنی چون آفتاب شدند و بیشتر
ازین سرهای خود بریده پرستش برهما کرده و او را از آنکار مهربان ساخته برها دیگر گرفته و سرها پیدا شدند
هر کسی که و نبوه بخورند بعد جگ
و در جگ برهمنان که از منتر هوم میکنند سوم پا از زور میگیرد و آفتاب از شهر او ترسان میگذرد
و در کننده جگ و کشنده برهمنان و بد طریق و سخت طور و بچهر و دشمن دانایان و آنچنان
که از دیوتا و گندهرپ و جچهه و دانو در جنگ هلاک نشود و سورپنکها آن راون را دید با او کر
دبالا و دب پارچه دارد و لپسر پلست است گفتار فساد انگیز و حقیقت گوش و بینی بریدن خود آغاز کرد

درینجا صورت راون ده سر و سورپنکها و دیگر راچهسان

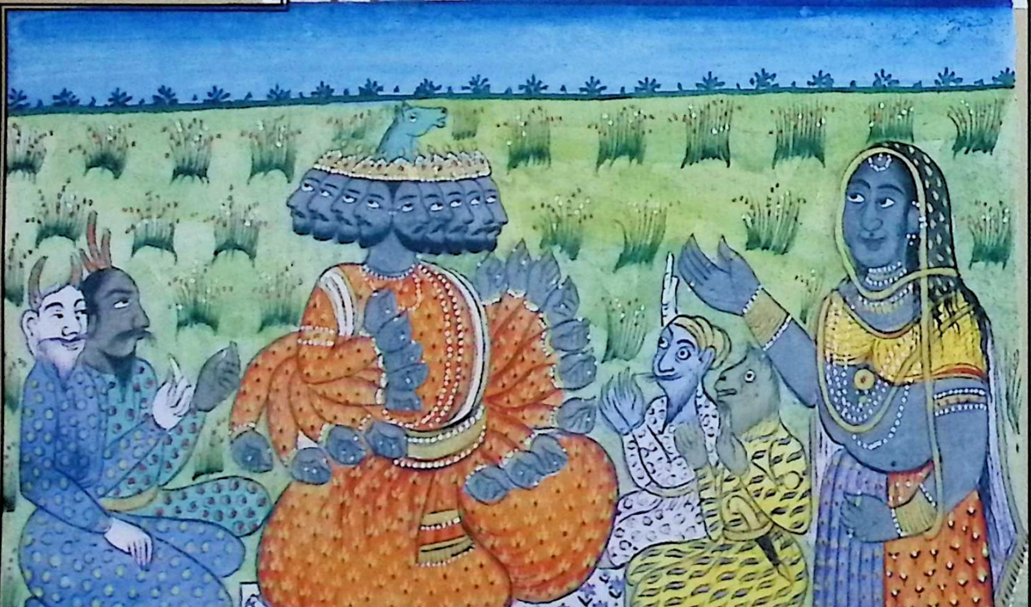

से रोक दिया और वह, कि जिसने अग्नि निकट रखकर कैलाश में दस हजार वर्ष तक तपस्या की और होम किया। बिना भोजन के रहकर ब्रह्मा को प्रसन्न किया और ब्रह्मा ने उसको अपनी कृपा से आशीर्वाद दिया कि पलक झपकते में जहाँ चाहेगा, पहुँच जायेगा और कामरूप अर्थात् जिस रूप में चाहेगा परिवर्तित हो जायेगा। उसके दाँत नये और चमक में सूर्य के समान हो गये थे और उससे पहले अपना सर काटकर ब्रह्मा की पूजा की। उन कार्यों से उसको अपने प्रति दयालु बनाकर दूसरे आशीर्वाद लिये और फिर उसके सर उत्पन्न हो गये। ब्राह्मणों के यज्ञ में जो मन्त्र से होम करते हैं सोम पा (एक प्रकार की घास) वह बलपूर्वक ले लेता है और उसके शौर्य से सूर्य डरते हुए गुजरता है। वह यज्ञ को दूर करने वाला और ब्राह्मणों की हत्या करने वाला कुकर्मी, दुष्ट, क्रूर और विद्वानों का शत्रु है। और ऐसा है कि देवता, गन्धर्व, यक्ष और दानव से भी युद्ध में नहीं मारा जाता है, और सूपनखा ने उस रावण को देखा जो एक हजार माला और एक हजार वस्त्र रखता है और पुलस्त्य का पुत्र है, उसकी बातें लड़ाई से भरी होती हैं। उसने अपने नाक, कान स्वयं ही काटने आरंभ किये।

दस सरों वाले रावण, सूपनखा और दूसरे राक्षसों का चित्र।

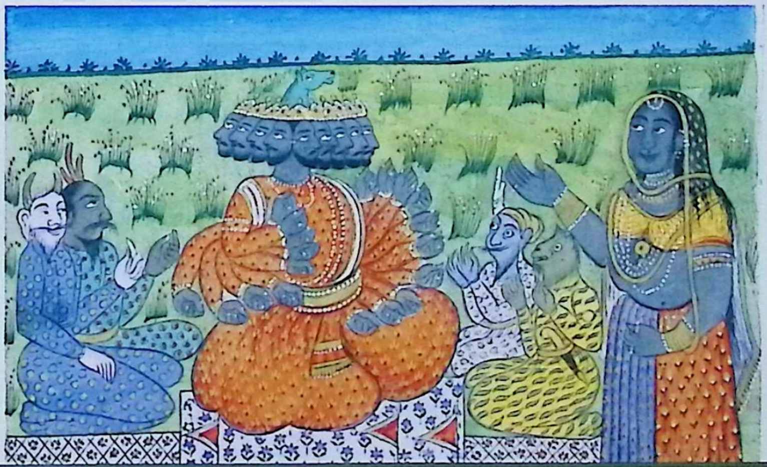

سرگ گفتار راجهسي سورپنکهي بحضور وزرا و امرا راون را از غصه گفت تو مستی و در لذاید
وحظها بیخود هستی و ادیب تو کسی نسبت ترا خوف عظیم رسیده و نمیدانی و راجه که در لذت ها و تمناهای
خود مشغول باشد مردم اعزاز او نمیکنند چنانچه رعایا آتش جای مردکان او راجه که گاهی بکار خود مقید
و مستقیم نگردد زود خراب و بدحال شود و راجه ها که از روش گمراه رفتن از خود منع میکنند چنانچه فقیر را
از خلاب و منجلاب در امان مانند و راجه ها که کار خود بدیگران نمیسپارند بطور میگیرند چنانچه از ساکر
کوه سر بر کشد تو خود میدانی که از دیوتا و دانوا در اجهس من زور آورم چون که تو
بد طریق و نامسخر کرده حواس هستی چسان راجه شوی و ترا جاسوس و لشکر و وزرا بخود قایم نیند
تو هم مانند غریب هستی و جاسوسان و مصلحتیان راجه نیک و بد شدنی بیان میکنند و تو
بد طریقی و راج تو هیچ که بیخبری و خبری نداری که کهر و دوکهن و ترشرا و چهارده هزار راچهس را
فقط یک رامچند که آدمی پیاده است هلاک کرد و رکهان ساکنان دندکارن را ایمنی بخشید و مکان
هایان بگرفت و تو در مستی بیخود هستی و نمیدانی هر راجه که غصه دار و کم دهنده و مست و بدنام
و دغاباز باشد هیچکدام مردم از او اقامت نمیخواهد و راجه که متکبر و بدعهد و غضبناک باشد او را
میکشند و تو بر کار خود مستقیم نه و از خوف نمیترسی عنقریب از راج افتاده مانند ترن یعنی کاه خشک
خواهی شد چه گفتم که کاه خشک و غلوله گل و خاک هم بکار آید لیکن راجه از راج افتاده هیچ کار نیاید
و راجه که هشیار و دهرم دان و مسخر کننده حواس و عاقل باشد او بر راج مستقیم بود اگرچه

[illegible]

सर्ग–३२

राक्षसी की वार्ता

सूपनखा ने मंत्रियों और धनाड्य लोगों के सामने रावण से क्रोध में कहा, तुम मस्ती में व्यस्त हो, तुम्हें कोई कहने वाला नहीं है। तुम्हें बड़ा भय हुआ है लेकिन तुम जानते नहीं और जो राजा अपनी इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त रहता है लोग उसका उसी प्रकार आदर नहीं करते हैं जिस प्रकार कि प्रजा शव की अग्नि के स्थान का आदर नहीं करती है। जो राजा अपने इरादों पर उस पर दृढ़ नहीं रहता है वह हमेशा ख़राब और बदहाल हो जाता है। जिस राजा को बुरे मार्ग पर चलने से स्वयं रोकते हैं जैसे कि हाथी को अंकुश से वे अमान में रहते हैं। जो राजा अपने कार्य दूसरों को नहीं सौंपते हैं वह प्रभुत्व पाते हैं जैसे कि समुन्द्र से पर्वत सर निकालता है। तुम स्वयं जानते हो कि मैं देवता दानव और राक्षस से अधिक शक्तिशाली हूँ। तुमको अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है तो तुम राजा कैसे हो सकते हो और कैसे तुमको जासूस सेना और मंत्रीगण स्वयं पर दृढ़ पर देखते हैं। तुम भी निर्धन के समान हो और राजा के जासूस और परामर्शदाता अच्छे बुरे का वर्णन करते हैं। तुम और तुम्हारा राज्य तुच्छ है क्योंकि तुम अनभिज्ञ हो और तुम्हें ज्ञात नहीं है कि खर और दूषण, त्रिशिरा और चौदह हजार राक्षसों की केवल एक राम ने जो मनुष्य है और पैदल है हत्या कर दी और दण्डकारण्य के रहने वाले ऋषियों को उसने शान्ति प्रदान की और हमारा स्थान ले लिया। कोई उसके पास नहीं रहता है। जो राजा कि वचन तोड़ने वाला होता है लोग उसको मार डालते हैं। तुम अपने काम पर दृढ़ नहीं हो और भय से नहीं डरते हो निकट ही घास के समान हो जाओगे। फिर सूखी घास भी काम आती है लेकिन राज्य से बेदखल और पदच्युत राजा किसी काम का नहीं रहता है। जो राजा सतर्क धर्म जानने वाला, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला और बुद्धिमान होता है वह राज्य पर दृढ़ रहता है।

بچشم خفته بود اما در طریق دنیوی بیدار باشد و راجه که بی غصه و کم مست و طوردان خود

خوبست و تو ای راون بیعقل و ازین هنرها و هستی و تراکسان تو نگفتند که راجهیان را

بلائی عظیم آمده و بسیار غصه و رود در لذائذ حواس و شهوت مغلوب و وقت و ملک را و نخوت

خلاصه نمیفهمی و بیعقلی و بی هنری را هنر قرار داده زود از راج می افتی تاملی کن و از زوال

قوت و رانچه نیک تو باشد فکر کن در اینجا صورت راون لباس سرخ پوشیده بر تخت نشسته

و دو راچهس استاده یکی چتر بکف گرفته سایه کرده و سورپ نکها روبرو استاده دست دراز کرده

سخن ازروان میگوید

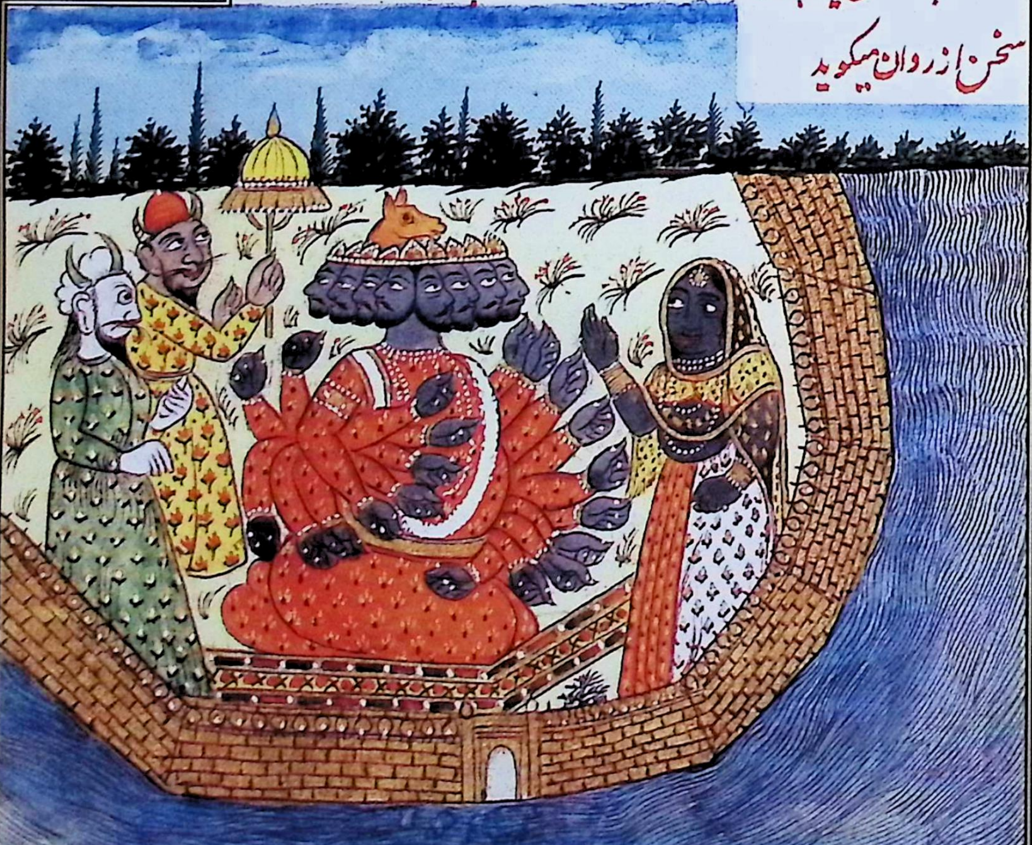

यद्यपि आँखों से सोया रहे लेकिन वह सांसारिक रूप से जागता रहता है। जो राजा कि काम, क्रोध पर विजय पाने वाला और अच्छे स्वभाव वाला होता है वह अच्छा होता है। ऐ रावण ! तुम बुद्धिहीन हो इन गुणों से दूर हो और मुझ से तेरे लोगों ने नहीं कहा कि राक्षसों के लिये एक बहुत बड़ी विपत्ति है वह बहुत क्रोध में है और तुम इन्द्रियों के भोग से विवश हो, समय और देश का हित नहीं समझते हो, तुमने अज्ञानता और अकुशलता को कुशलता मान रखा है। अतिशीघ्र तुम राज्य से वंचित हो जाओगे। विचार करो और धन अभिमान तथा शक्ति के संदर्भ में जो कुछ अच्छा हो उसकी चिन्ता करो।

रावण का चित्र जिसने लाल वस्त्र पहन रखा है और आसन पर बैठा हुआ है और दो राक्षस खड़े हैं। एक ने छत्र उठाकर छाया कर रखी है और सूपनखा सामने खड़ी है और हाथ उठाकर रावण से वार्ता कर रही है।

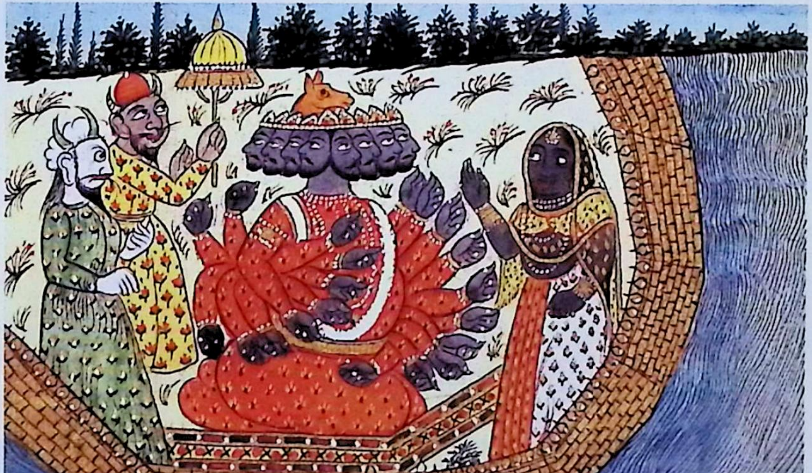

سرگفتار راون پس ازان بحضور امرا و وزرا سورپنکها را راون از قصه
پرسید که رام از کیست و کجاست و چه کام دارد و چه کار داند و چه قوت دارد و در دندکارن
چگونه آمده است و سلاح او چیست که ازان کهر و دوکهن و ترشرا کشت از والی راجهان
این سخن شنیده سورپنکها احوال رام آغاز کرد که رام دراز دست و چشم کلان
و سیاه اجن ابر پوشیده و مانند کام بصورت پسر راجه دسرته است و کمانی مانند
قوس اندر دارد و تیرها را و مانند مار زهردار و تمام لشکر راچهسان را از بارش تیرها بکشت
و کهر و دوکهن و غیره را هلاک کرد تنها من زنده ماندم که بسبب عذاب کشتن عورت مرا
و او را برادری منعوت برابر لچهمن نام بجای بازوی راست است و رام را عورتی کلان چشم
دهرم پتی خوش بینی خوش موی خوب روی نازک پای در ان جنگل مانند لچهمی
با زیب است و رنگ او مانند طلائی که فی الفور از آتش برآورده باشند و ناخن او
هم سرخ اند و سیتا نام دارد و مانند حسن او دیوی و گندهربی و اسری و راچهسی
هیچ زنی بر زمین ندیده ام هر کرا او اهلیه شود و در کنار گیرد او مانند اندر زندگانی کند
آن با آن خوبیها یکه بانوی تو لایق است من آنچه چشم کا فرا دید دل خود را بزور نگاه داشتم
تو هرگاه آن ماه رو را به بینی مفتون شوی محبوبی و شیرین زبانی او شهوت بر شهوت
افزاید اگر میخواهی که او را بدست آری زود بپای راست برآی آوردن بردار اولا

सर्ग-३३

रावण की वार्ता

इसके बाद मंत्रियों के सामने सूपनखा से रावण ने क्रोध से पूछा कि राम कौन है कहाँ है ?क्या कार्य करता है ?क्या कार्य जानता है ?और क्या शक्ति रखता है दण्डकारण्य में कैसे आया है ?उसका अस्त्र क्या है कि जिससे उसने खर, दूषण और त्रिशरा को मार डाला ?राक्षसों के राजा से यह बात सुनकर सूपनखा ने राम का वर्णन इस प्रकार करना आरंभ किया कि ''राम लम्बे हाथ बड़ी-बड़ी आँखों वाले, काला कम्बल पहनने वाले सुन्दर और राजा दशरथ का पुत्र है। एक धनुष इन्द्र के धनुष की भाँति रखता है और उसके बाण सर्प के विष के समान विषैले हैं। राक्षसों की पूरी सेना को बाणों की वर्षा से और खर तथा दूषण आदि की उन्होंने हत्या कर दी। अकेली मैं जीवित बची हूँ क्योंकि स्त्री की हत्या के पाप होने के कारण उसने मुझे नहीं मारा। उसका एक भाई भी है जो गुण और शक्ति में उसी के समान है। उसका नाम लक्ष्मण है। वह उसका सहयोगी है और राम के एक पत्नी भी है बड़ी-बड़ी आँखों वाली, धर्म पत्नी, जिसकी नाक, बाल और मुखड़ा सुन्दर एवं पाँव कोमल हैं वह उस वन में लक्ष्मी के समान सज रही है। उसका रंग सोने जैसा है कि जैसे तुरन्त आग से निकाला गया है। उस के नाखून भी लाल हैं उसका नाम सीता है। मैंने उनकी सुन्दरता के समान कोई देवी, कोई गन्धर्वी, अप्सरा और कोई राक्षसी, कोई स्त्री धरती पर नहीं देखी है जिसकी वह पत्नी हो और जो उसे गोद में ले और वह इन्द्र के समान जीवित रहे। वह उन समस्त गुणों के साथ तुमसे विवाह के योग्य है। मैंने उस सुन्दरी को देखकर अपने मन को कठिनता से सुरक्षित रखा। जब तुम उसको देखोगे उस पर मर मिटोगे। मधुर वाणी कामभावना को उत्तेजित करती है। यदि तुम उसे पाना चाहते हो तो शीघ्र उसको लाने के लिए प्रयास करो

رام و لچهمن را کشته انتقام راجهسان بگیر و چون سیتا هر دو را کشته ببیند پس تا نو
خواهد شد اگر گفته من پسند آید بی شبه این کار بکن والا خود را هم مانند
کهر و دوکهن و سایر راجهسان از تیرهای او کشته دانسته فکر خود بکن درینجا

صورت راون لباس چینی زرچکن هار مروارید در گلو بر تخت نشسته و دو راچهس استاده
و سورپنکها دست دراز کرده سخن میگوید

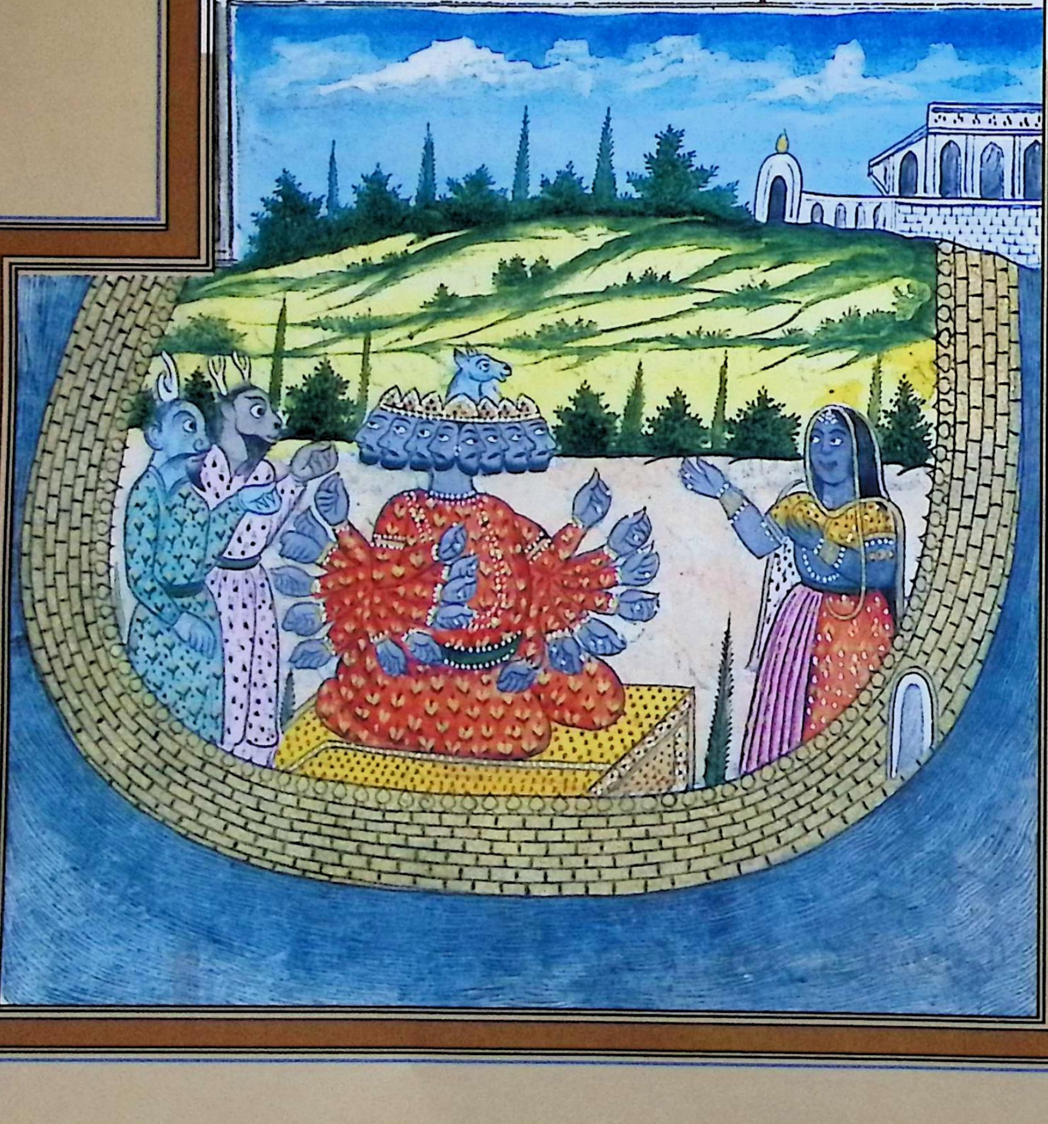

अन्यथा राम और लक्ष्मण को मारकर राक्षसों का बदला लो। जब सीता दोनों को मरा हुआ देखेगी तो तुम्हारी हो जायेगी। यदि मेरा कहा हुआ अच्छा लगे तो अवश्य यह कार्य करो अन्यथा स्वयं को भी खर और दूषण तथा समस्त राक्षसों के समान उसके बाण से मरा जानकर अपनी चिन्ता करो।

रावण का चित्र, सुनहरा चिकन का वस्त्र पहने हुए, मखारीद गले में डाले सिंहासन पर बैठा है, दो राक्षस खड़े हैं और सूपनखा हाथ फैलाकर वार्ता कर रही है।

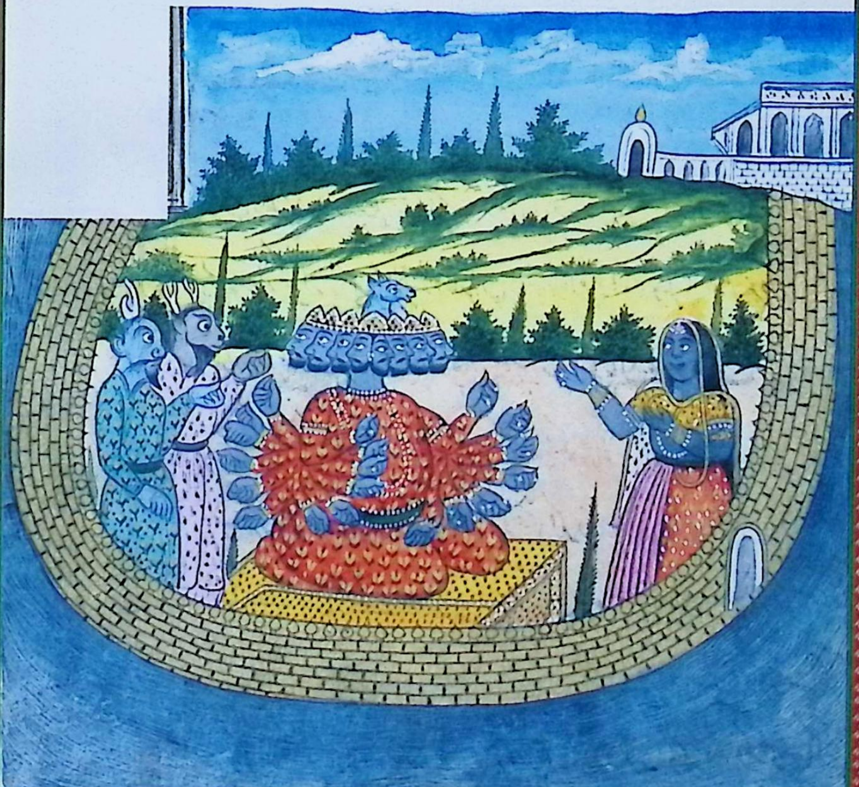

سه کس بهوان شبهن بادن رو آن گفته سورپ نکهی را شنیده در خشم شده
و موی بر تن او خاست و زیر او شیر انرا اجازت داده داخل محل شد برای آنکه مقدم
گناه و هنر و زور و ضعف همه را تامل کرده مقرر نموده در کاوخانه آمده بسارتهی گفته
که رتهه مرا طیار کن سارتهی رتهه طلای مرصع خرها با و پیوسته تاج لباس بر آن
سوار شده بر دریای شور روان شد و با سفید چتر و سفید بادکش هوئین و وده
و بست دست مانند کوه زیب آور بر رتهه زرین چنان مینمود که در برق میغ بنظر آید
و سیر کوه ها و دریا و درختان با اقسام اثمار و نیلوفرها و منبع های آب مینمود آشرم
کلان دید که مرد و زن در انجا جمع اند و کدلی و نارجیل و شال و تمال و در انجا خوشنما
و بسیار کمخوار رکهیشر اند و ماران و سوپرنان که اولاد کرباشد و کندهربان
و کنران و بیدادهر و سده و چارن هزاران و بمان های سفید و کلان بادیب مالا اند
و اپسرا هستند تماشا کرد و برهمنان سنکهان و بالکهلا و چهر بسیار کمخوار بادب پیرایه
و اپسران در خدمت شان استاده و جنگله اکر و مالاها و غیره که گوشت را از ان آرام
رسد و اشجار فلفل کرد و مروارید و سنکهه و مرجان و غیره انچه در موج می آید
و کوه ها طلا آمیز دید و بلاد ها با زر و غله و عورات و فیل و اسپ و درخت نکوده بوده
یعنی برگه بشاخهای او تا صد جوجن یعنی چهار صد کروه پر بود و گرفیل و کشف را که بر دو

सर्ग-३४

रावण का प्रस्थान करना

रावण सूपनखा की बात सुनकर क्रोधित हुआ। उसके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये और वह मंत्रियों, परामर्शदाताओं को आज्ञा देकर महल में गया । पाप, गुण, बल और कमजोरी सब सोचकर निर्णय करके घर में आया और रथवान से कहा कि मेरा रथ तैयार करो। रथवान ने सोने का सुसज्जित रथ तैयार किया जिसमें गधे लगे हुए थे। वह रेशमी वस्त्र धारण किये उस पर सवार होकर शोर नदी की ओर चल दिया और सफेद छत्रशाही, बालों के बने हुए सफेद बादकश दस सरों और बीस हाथों के साथ पहाड़ के समान रथ पर बैठा हुआ ऐसा लग रहा था जैसे बिजली में मेघ दिखाई देता है और वह पहाड़ों, नदियों, वृक्षों, भाँति-भाँति के फलों, नीलोफर और पानी झरनों की सैर कर रहा था और बड़े-बड़े आश्रम देखे जहाँ स्त्री पुरुष एकत्र हैं कदली, नारियल, साल और ताल आदि सुन्दर वृक्ष हैं, मुनीश्वर बहुत कम खाने वाले हैं और सर्प और सोपरतान जो कुर्की की सन्तान है और कन्धर्प, कज़, बेदाहर, सिद्ध और चारण हजारों की संख्या में हैं और श्वेत और बड़े-बड़े विमान हैं और अप्सरायें हैं। यह सब उसने देखे और ब्राह्मण, बालकहला, हरिचप आदि बहुत कम भोजन करने वाले हैं। अप्सरायें उनकी सेवा में खड़ी हैं और अगर और माला आदि का जंगला जिससे मांस को आराम मिलता है, काली मिर्च के वृक्ष हैं। मखारीद, संख, मरजान आदि जो कुछ कि समुन्द्र में होते हैं और उसने स्वर्ण युक्त पर्वत देखे और धन और अनाज, स्त्रियां, हाथियों और घोड़ों वाला शहर और नकरूदह (बरगद) का वृक्ष अर्थात् जिनकी टहनियों पर सौ जोजन अर्थात जिनमें चार सौ करोड़ शाखाएँ होती हैं। और हाथी, करर और कच्छप कि

چند جوجن کلان بودند برای خوردن خود گرفته بر همان نکروده رفته و شاخ کلان که از
بار او شکسته و در و پکهان نام بالکهیلا و مرجیبا آویزان بودند سوپرن از مهر شان
که مبادا از شاخ بیفتند و تصدیع یابند آن شاخ که تا چهار کروه دراز بود گرفته و آن فیل
و کشف را نیز گرفته بپرید و در شهر نکهادان رفته آن گوشت را بخورد و از آن شاخ
نکهادان را بکشت و رکهه ها را در انجار ها کرد و فکر آوردن امرت یعنی آب حیات نمود و در
مکان اندر رفته امرت آورد راقم ترجمه گوید این حقیقت در ادپرب مهابهارت مذکورست
غرض آن نکرودا و رامچندر نام ست راون را هم بدید و آن طرف دریای شور رفت
آنجا ماریچ نام راچهس دید در آشرم نشسته جتا و اجن دارد کم خوار با او ملاقات کرده
خیر و عافیت پرسید او هم موافق ضابطه تعظیم او بجا آورد راون گفت ای ماریچ
مضطرب و غمناک هستم و بغیر تو پناه ندارم آنجا که کهر و دوکهن برادر من و سورپنکهی
خواهر من و ترشرا و دیگر راچهسان خونخوار بحکم من اقامت میداشتند و در جنگل جنستهان
دهرماتمان را میکشتند حالا چهارده هزار راچهس بودند با رام جنگ کردند و او از تیرهای
زهردار همه را بکشت و رکهیشران دندکارن را ایمنی بخشید با آنکه آدمی بود و رام را
پدرش با عورت او از شهر بدر کرده و او در چهتریان سفله و بی شعور و سخت طور و احمق
و حریص و نا مسخر کنندهٔ حواس و ترک کنندهٔ دهرم و دانندهٔ ادهرم و دشمن حیوانات است ،

जो कि दो गुना जोजन थे। अपने खाने के लिए उसी नकरूदह (बरगद) पर गया और उसकी शाख जो फलों के बोझ से टूट रही थी और उस पर पीकहान नाम का बालकहला और मरजहा जड़े थे, उन पर दया करते हुए कि कहीं शाख से गिर न जायें और कष्ट उठाये उस शाखा को जड़ से उखाड़कर ले लिया और उस हाथी और कच्छप को भी लेकर उड़ गया और नकहा जानने वालों के शहर में जाकर वह मांस खाया और उसी टहनी से नकहादानों की हत्या की। और ऋषियों को जो वहाँ थे उनको स्वतंत्र किया और अमृत अर्थात् आबेहयात लाने की चिन्ता की और इन्द्र के मकान में जाकर अमृत लाया। अनुवादक कहता है यह वास्तविकता आदि परप महाभारत में लिखित है। उसका उद्‌देश्य पूरा नहीं किया उसका नाम मोरचन्द्र है उसने रावण को भी देखा और शोर नदी के उस पार गया वहाँ मारीच नामी राक्षस देखा। आश्रम में बैठा हुआ है और जटा और अजिन रखे हुए हैं और कम खाने वाला है। उससे भेंट करते हुए कुशल क्षेम पूछी। उसने भी नियमानुसार सम्मान किया। रावण ने कहा- ऐ मारीच ! मैं चिन्तित और दुखी हूँ। आपके अतिरिक्त मेरी और कोई शरण स्थल नहीं है। इस वन में मेरे दो भाई खर और दूषण, सूपनखा मेरी बहन, त्रिशिरा और दूसरे राक्षस मेरी आज्ञा से रहते थे और वन में धर्मात्मा मुनियों की हत्या कर देते थे इस समय चौदह हजार राक्षसों ने दण्डकारण्य में राम के साथ युद्ध किया। उसने विषैले बाण से सबको मार डाला और दण्डकारण्य के ऋषिवरों को शान्ति प्रदान की। और चूँकि वह मनुष्य है और राम के पिता ने उसे उसकी पत्नी सहित देश से निष्कासित कर दिया है। वह नीच क्षत्रियों में, अज्ञानी, अत्यन्त दुराचारी, मूर्ख लालची है और इन्द्रियों पर नियंत्रण न रखने वाला है, धर्म को छोड़ने वाला और अधर्म को जानने वाला है, और जीवधारियों का शत्रु है।

که او بی موجب دشمنی همشیره مرا گوش و بینی بریده است و عورت او
که سیتا نام بخوبی و جوانی مانند لچهمی است از انجا می آرم تو ممد و معاون
من شو اگر عقب من بوده مددکار باشی اندر وغیره دیوتا را بخاطر
نیارم و در قوت و عقل و دهرم مثل تو کسی نیست و برائی همین کار
نزد تو آمده ام و طریق مددکاری تو این است که تو خود را برنگ آهوی
طلائی بساز که بر و خالهای نقرئی باشند و بطرف آشرم رام رفته
بحضور سیتا بگذر سیتا ترا دیده بی شک برام و لچهمن بگوید که این را
چون برخیزند و عقب تو روند من وقت را غنیمت دانسته بی رنج و تصدیع
خواهم آورد چنانچه راه یعنی راس ضیا، ماه را بعد از ان چون رام
از مفارقت و مهاجرت عورت ضعیف خواشد باسانی خواهم کشت
ماریچ مقدر رام شنیده در لرزه افتاد و خشک دهن شد بعد از ان نیز و
رام را بخیال آورده دست بسته باعث سلامتی خود و عافیت راون بیان کرد

در اینجا صورت راون بهمان طور و لباس نافرمانی در بر کرده بر تخت نشسته و یک
راچهس سایه کش بر سر گرفته و چند راچهس دیگر در رتهه طلائی مرصع خران استاده
و سارتهی روبروی رتهه و ماریچ راچهس جتا بر سر و اجن شیر گسترده نشسته با راون سخن بگوید

इसने बिना किसी शत्रुता के मेरी बहन के नाक कान काट लिए। इसकी पत्नी जिसका नाम सीता है, सौन्दर्य और यौवन में लक्ष्मी की भाँति है। मैं उसे वहाँ से लाता हूँ। आप मेरे सहयोगी बन जाइये यदि आप मेरे पीछे मेरे सहायक होंगे तो मैं इन्द्र आदि देवताओं को भी कुछ नहीं समझूंगा और शक्ति और बुद्धि और धर्म में आप जैसा कोई और नहीं है। इसी कार्य के लिये मैं आपके पास आया हूँ। आपकी सहायता करने की विधि यह है कि आप स्वयं को स्वर्ण हिरन के रंग में परिवर्तित कर लीजिये जिस पर चांदी के जैसे छल्ले हों और राम के आश्रम की ओर जाकर सीता के सामने से जाइये। सीता आपको देखकर निश्चय ही राम और लक्ष्मण से कहेगी इस मृग को लाओ। जब वह उठकर आपके पीछे जाये तो मैं समय को उपयुक्त समझते हुए बिना किसी कठिनाई और कष्ट के उसे ले आऊँगा जैसे कि राहु चन्द्रमा के प्रकाश को हर लाता है। उसके पश्चात जब राम स्त्री के वियोग में कमजोर हो जायेंगे तो मैं उन्हें सरलता से मार डालूंगा। मारीच राम के आगमन को सुनकर भयभीत हो गया और उसने करबद्ध अपनी सुरक्षा और रावण की कुशल का वर्णन किया।

रावण का चित्र, उसी प्रकार और वही अवज्ञा वाला वस्त्र पहने हुए तख्त पर बैठा है। एक राक्षस उसके सर पर छाया किये हुए है। दूसरे राक्षसों का चित्र, गधों का स्वर्ण जड़ित रथ खड़ा है और रथवान रथ के सामने है और मारीच राक्षस सर पर जटा रखे शेर की खाल पहने बैठा रावण से वार्तालाप कर रहा है।

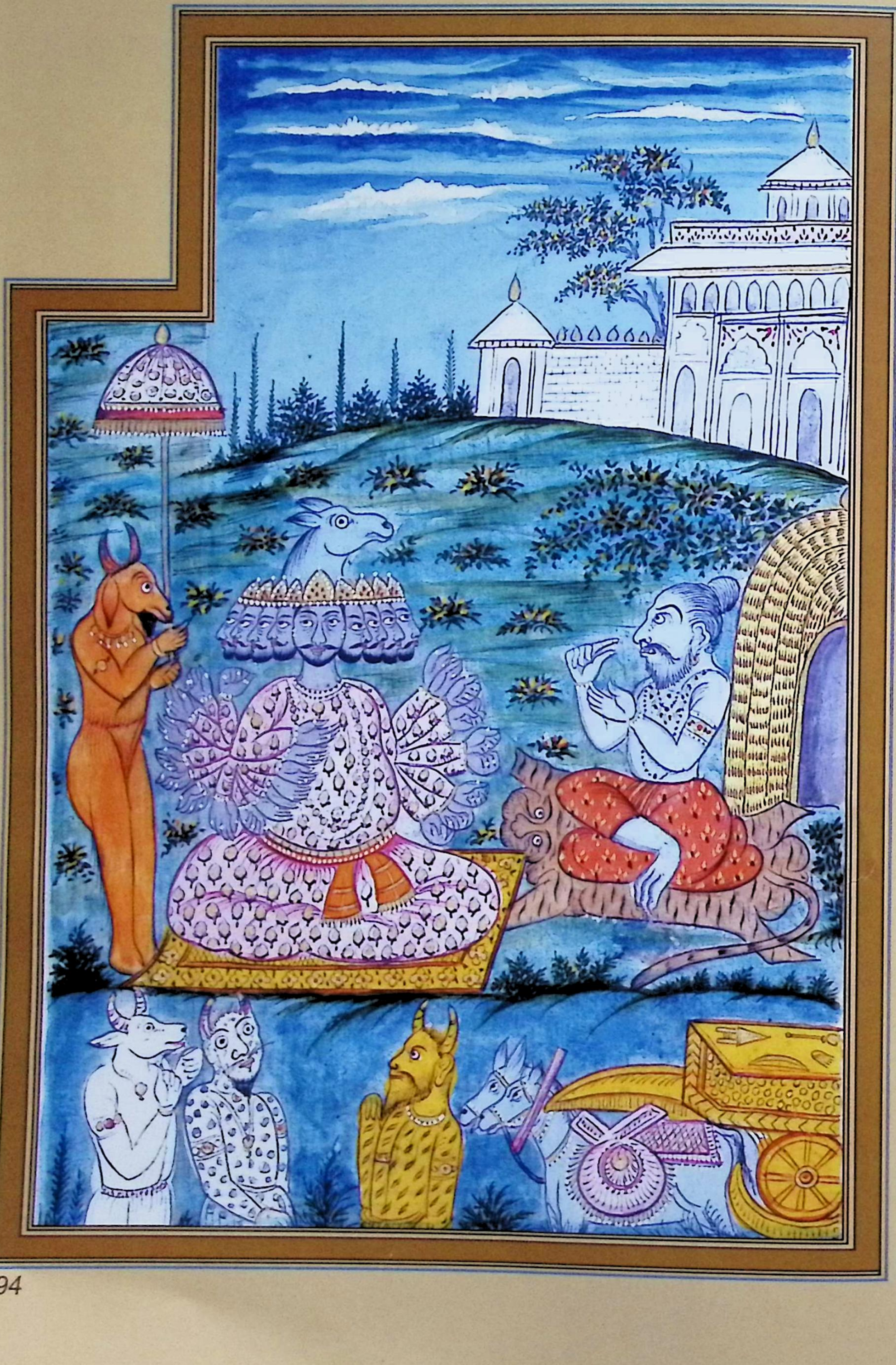

B

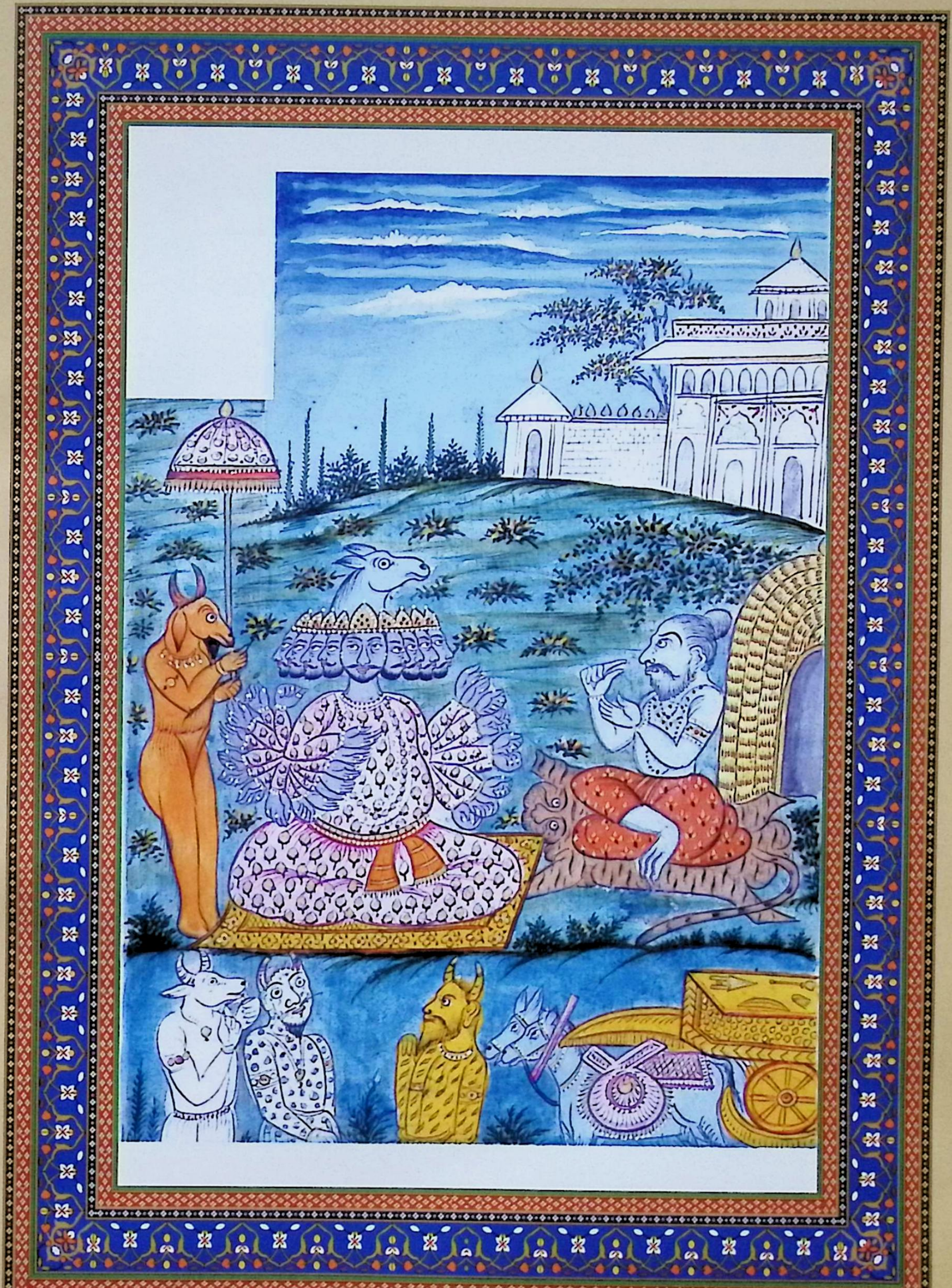

سرک گفت مارنج مارنج ازان بیهوشی باز بهوش آمده برخاسته گفت ای نهار آ
خوشامد گوی بسیار و تلخگو دار و بخشش کمیاب ای بدطریق تو قوت رام که مانند برن و اندراست
نمیفهمی راجهان را بر زمین خیرباد که راون از غصه جهانی را بی راجه نکند مگر سیتا
کشنده جان تو پیدا شده که برای او ترا تصدیع بسیار خواهد شد و تو خداوند لنکا شده ولی ادب
و حریص تری شاید که لنکا شهرها راجهان خراب شود پس جمیع راجهان خیر نیست اما زیرا
که مثل تو راجه بی عقل مغلوب حواس عذاب کار بی شعور و دارنده مشیران گناهکار هستی
خود را و اقربا را و رعایا و دولت را خراب کند و رامچندر را هرگز پدرش بدر نکرده و او
حریص و بی شعور و سفله چتریان جهان و غصه دار و خالی از دهرم نیست بل که همه ذیحیات را
نیکخواه هست و کیکئی مادر او و پدرش را دغا داده و او گفته او را قبول نموده برای خاطر
داشت کیکئی و دشرته راج و عیش را گذاشته در زندکارن درآمد و رام عاقل و نیکخوست
نه مغلوب حواس و نارا است کو تو چنین مگو که رام راجه همه جهان مانند اندر در دنیا هاست
سیتا را با وجود محافظت او چگونه از وی بری در آتش تیرهای رام داخل مشو و کمان او
مثل افعی و تیرها مانند دندان مار و هنگام غصه زهر دار است آن را مبین و بسوی راج
و آسایش فرزندگانی خود نظر کن و رام را سیتا بسیار عزیز است او را نتوانی برد
بلکه زندگی و راج و آرام هنگام جنگ با او خواهی سپرد برو و با مشیران مشورت کن و با دهرم دانان

सर्ग-३५

मारीच की वार्ता

मारीच ने इस मूर्छा से होश में आकर और उठकर रावण से कहा ''ऐ चाटुकार, कटुवार्ता वाले और दान कम करने वाले महाराजा। ऐ बुरे आचरण वाले ! तुम राम की शक्ति को जो वरुण और इन्द्र के समान है नहीं समझ रहे हो, राक्षस धरती पर कुशल हो क्योंकि राम क्रोध से सम्पूर्ण संसार को बिना राक्षस के न कर दे। लेकिन सीता तुम्हारे प्राण लेने वाली उत्पन्न हुई है। इसके लिए तुमको अधिक कष्ट नहीं होगा। तुम लंका के राजा हो चुके हो लेकिन असभ्य और सबसे अधिक लोभी हो। राक्षसों वाली हमारी लंका खराब हो जाये बस सारे राक्षसों की कुशलता नहीं है। जो राजा तुम जैसा बुद्धिहीन हो, इन्द्रियां उस पर भारी और वह उसके अधीन हो, पाप के कर्म करने वाला और परामर्शदाता भी पापी हो तो वह स्वयं को अपने सम्बन्धियों और प्रजा व धन को नष्ट करता है। रामचन्द्र को उनके पिता ने कदापि देश से निष्कासित नहीं किया है। वह लोभी, बुद्धिहीन क्षत्रियों में नीच, क्रोधी और धर्म से अनभिज्ञ नहीं है अपितु वह समस्त जीवधारियों की भलाई चाहने वाले हैं। उनकी माता कैकेयी ने उनके पिता को धोखा दिया है। वह उनका कथन स्वीकार करते हुए कैकेयी और दशरथ का मन रखने के लिए अपना राज्य तथा सुविधाएँ छोड़कर दण्डकारण्य आये हैं। राम बुद्धिमान व सज्जन हैं न कि इन्द्रियों के वश में और असत्य मार्ग पर चलने वाले। तुम ऐसा न कहो क्योंकि राम सारे संसार के राजाओं में ऐसे ही हैं जैसे देवताओं में इन्द्र हैं। तुम सीता को उनके संरक्षण से कैसे ले जा सकोगे ?राम के तीरों की आग में मत जाओ। उनका धनुष अजगर की भाँति है और उनके बाण सर्प के दाँत के समान और क्रोध के समय वह विषैले हो जाते हैं। उनको मत देखो और अपने राज्य व सुविधाओं और अपने जीवन पर दृष्टि रखो। सीता राम की पत्नी हैं, तुम उनको नहीं ले जा सकते। अपितु तुम युद्ध के समय अपना जीवन राज्य और सुख सुविधायें उनको सौंप दोगे। जाओ और परामर्शदाताओं से परामर्श करो और धर्म वालों के साथ

مصلحت نموده مشخص بکو و عیب و هنر و قوت و ضعف خود و رامچندر را فهمیده بعد ازان
انچه کنی بکن و من ترا در جنگ مقابل پسر کوشلا مستقیم نمیدانم بتاکید بشنو که ازین کار
درگذشتن بهتر است سر گفتار ماریچ ماریچ گوید که قبل ازین از تکبر قوت سیر میکردم
و زور هزار فیل میداشتم و مانند کوه برنگ ابر نیله کوندل و مکت و سلاح داشته مردم
خوف می افزودم و در دندکارن گوشت من همی خوردم تا وقتی برای وحشت افزودن
بشوامتر رکهه دهرما تما رفتم او وحشت خورده نزد راجه دشرته رفته گفت مرا از
ماریچ و ربرب کال دهشت است آن ازرام محافظت خواهد کرد دشرته مهورتی از
خود رفته بعد ازان گفت هنوز رامچندر را از سال شانزده هم کم است او را با راچهسان
قابل جنگ نمی بینم اگر خواهی تمام لشکر مرا ببر بشوامتر گفت سوای رام کسی با راچهسان
بزور مقابل نخواهد شد اگرچه کودک است اما از و دشکوه کلانست لهذا رام را
از تو میخواهم این بگفت و از راجه رام را خواسته بمکان خود آمد رام در انجا کمان
منقش گرفته در ربرب کال بایستاد یک پانچه پوشیده و جنیه داشته تمام
آن مکان را از طلعت خود منور نمود با نخوت قوت و زور در انجا رفتم و او را کودک
دانسته داخل شدم او مرا هیچ بخاطر نیاورده کمان از زه کرده تیری بر من زد که از ان
من در سمندر افتادم و بیهوش بودم بعد ازان بهوش آمده قریب لنکا جا گزیدم رام چنانست

सन्धि करके उचित बात कहो। पहले तुम अपना और रामचन्द्र का अवगुण व गुण तथा शक्ति व कमजोरी समझ लो उसके बाद जो चाहे करो। और मैं तुमको युद्ध में कौशल्या के पुत्र के मुकाबले पर उचित नहीं समझता। ध्यान से सुनो कि इस कार्य से विरत रहना ही उचित है।

सर्ग–३६

मारीच की वार्ता

मारीच कहता है कि इससे पहले मैं एक बार शक्ति के घमंड में सैर कर रहा था और एक हजार हाथियों की शक्ति रखता था। पहाड़ों पर नीले बादलों के समान कुण्डल, मुकुट और हथियार रखकर लोगों को भयभीत किया करता था और दण्डकारण्य में मुनियों का मांस खाया करता था। एक बार मैं धर्मात्मा विश्वामित्र ऋषि को भयभीत करने के लिये गया। उन्होंने भयभीत होकर राजा दशरथ के पास जाकर कहा; मुझको मारीच से पर्वकाल में भय है। राम उसकी रक्षा करेंगे। दशरथ थोड़ी देर तक शान्त रहे फिर कहा; अभी तो रामचन्द्र की आयु सोलह वर्ष से भी कम है मैं उसे अभी राक्षसों के साथ युद्ध के योग्य नहीं देखता हूँ। यदि तुम चाहो तो मेरी पूरी सेना ले जाओ। विश्वामित्र ने कहा; राम के अतिरिक्त कोई भी राक्षसों के साथ शक्ति में समान नहीं होगा। यद्यपि वह अभी बालक हैं लेकिन बल व शक्ति और भय में बड़े हैं। अतः मैं आपसे राम को माँगता हूँ। यह कहा और राजा से राम को मांगकर अपने स्थान पर आ गये। राम वहाँ धनुष लेकर पर्वकाल में खड़े हो गये। एक पारचा पहने हुए और चोंगा रखे हुए उस सम्पूर्ण स्थान को अपने सौन्दर्य और अस्तित्व से प्रकाशित कर दिया। मैं वहाँ अपनी शक्ति व बल के घमण्ड के साथ गया और उनको बालक समझकर अंदर प्रवेश कर गया। उन्होंने मुझे कुछ न समझते हुए धनुष चिल्ले पर चढ़ाकर एक बाण मुझे मारा, जिसके कारण मैं समुन्द्र में गिर गया और अचेत हो गया। उसके बाद होश में आकर लंका के निकट रहने लगा।

که بگفتم در حالت کودکی و نادانی و با آنکه استر هم نمیدانست که مرا به تیری دور انداخت
حالا تو راچهسان را که مشغول بازی و عیش اند عبث بخوف می اندازی و خرابی
خانه های مرصع که لنکا هستند بسبب سیتا خطر می آید و بیگناهان بسبب گناه تو در عذاب
افتند و راچهسان مالنده چندن و پیرایه پوشان را از تیرهای رام کشته خواهی دید و قبیله
داران را قبیله گذاشته گریزان خواهی دید و لنکا را از تیر و شمشیرهای رام در حصار
خواهی دید و تو هزاران عورات را باعث سیتا خواهی گذاشت و تو سیتا را برای
بلاکی خود و شهر و قلعه می آری اگر قیام آرام و افزونی نسب و راج میخواهی با رام دشمن مشو
و اگر با وجود منع من و دوستان سیتا را بزور آری دلس در جنگ از تیرهای او
در خانه جم خواهی رفت سرگ گفتار ماریج پیش ازین که گفتم حقیقت ایام گذشته
رام بود در نیولا انچه رو داده آنهم بشنو که من با دو راچهس که دیگر به جهوا و نجین و زنشتر
نام میداشتند در دندکارن میگذشتیم و گوشت میخوردیم و در اگن هوتر و بیدی
و غیره بسیار کمخواران و ریاضت کشان را میخوردیم و خون و گوشت تپسویان میخوردیم
ناگاه رام از خواهش رکهان و تپسویان در دندکارن در آمد کمان را کشیده تیرهای
با استر تاب داده که تمام آنجا را از تیر کی صاف نمود و سه تیر او بما هر سه رسید
آن هر دو بقتل رسیدند و من بیهوش شده از انجا برهیدم من نزدیک او نروم که او

مرکنت

राम ऐसे ही हैं जैसा कि मैंने तुमसे कहा। बचपन और अनभिज्ञता में और इसके बावजूद कि वे अस्त्र नहीं जानते थे लेकिन मुझे बाण मारकर दूर फेंक दिया। अब तुम राक्षसों को जो खेलकूद और सुख से हैं अकारण भय में डाल रहे हो। सुसज्जित भवनों की खराबी, जो लंका में है सीता के कारण दिख रही है और निर्दोष लोग तुम्हारे पाप के कारण कष्ट में पड़ेंगे। तुम चन्दन मलने वाले और हीरे जवाहरात पहनने वाले राक्षसों को राम के बाणों से घायल देखोगे तथा कबीले वालों को अपने कबीले छोड़कर भागने वाला देखोगे। लंका को राम के बाणों और तलवारों के कारण से घिरा हुआ देखोगे। तुम सीता के कारण हजारों स्त्रियों को छोड़ोगे और तुम सीता को अपनी, अपने शहर और किले की बरबादी के लिए ला रहे हो। यदि तुम आराम, परिवार की वृध्दि और राज्य में वृध्दि चाहते हो तो राम के शत्रु मत बनो और यदि तुम मेरे और मित्रों के मना करने के बावजूद बलपूर्वक सीता को लाओगे तो युद्ध में उसके बाणों से जम अर्थात् मृत्यु के घर चले जाओगे।

सर्ग-३७

मारीच की वार्ता

मारीच ने कहा कि इससे पहले मैंने जो कुछ कहा वह राम के बीते दिनों की सत्य घटना है। इस समय जो परिस्थिति सामने है अब वह भी सुनो कि एक बार मैं देरखझू और पंझन व नश्तर नामी दो राक्षसों के साथ दण्डकारण्य में जा रहा था और हम लोग मांस खा रहे थे और अग्निहोत्र और वेद आदि का पाठ करने वाले तथा बहुत से कम खाने वालों और तपस्या करने वालों को खा जाते थे और तपस्या करने वालों का रक्त और मांस खाते थे। अनायास राम, ऋषियों और तपस्या करने वालों की इच्छा पर दण्डकारण्य में आये। धनुष चढ़ाये हुए और अस्त्र के साथ बाणों को दाब दिये हुए कि इस समस्त स्थान को अंधकार से साफ कर दिया और उन्होंने हम तीनों को तीन बाण मारे। उन दानवों की तो मृत्यु हो गयी और मैंने अचेत होकर उस स्थान से स्वतंत्रता पाई।

مرگ منست من در هر درخت رام را با تیر و کمان و چیر کرش اجن انبر و پاش مانند جم

می بینم در هر باغ و صحرا رام رام بنظر می آید در خواب و بیداری غیر رام نمی بینم گویا

رام حاضرست بلکه هر لفظی که رکار یعنی را، ذر اول اوست مرا ترس می افزاید و در تن

یعنی جواهر بسبب رانی رام مرا خوف می افزاید تو هرگز با رام بجنگ بر نیایی اگر از تن

پرسی باو بستیز والا از تیرهای رام جان خواهی داد درینجا صورت راون بلباس سن

درا چهسالیه کش بر گرفته استاده و مارنچ مو بر سر ربستا اجن نشسته

باو سخن میگوید

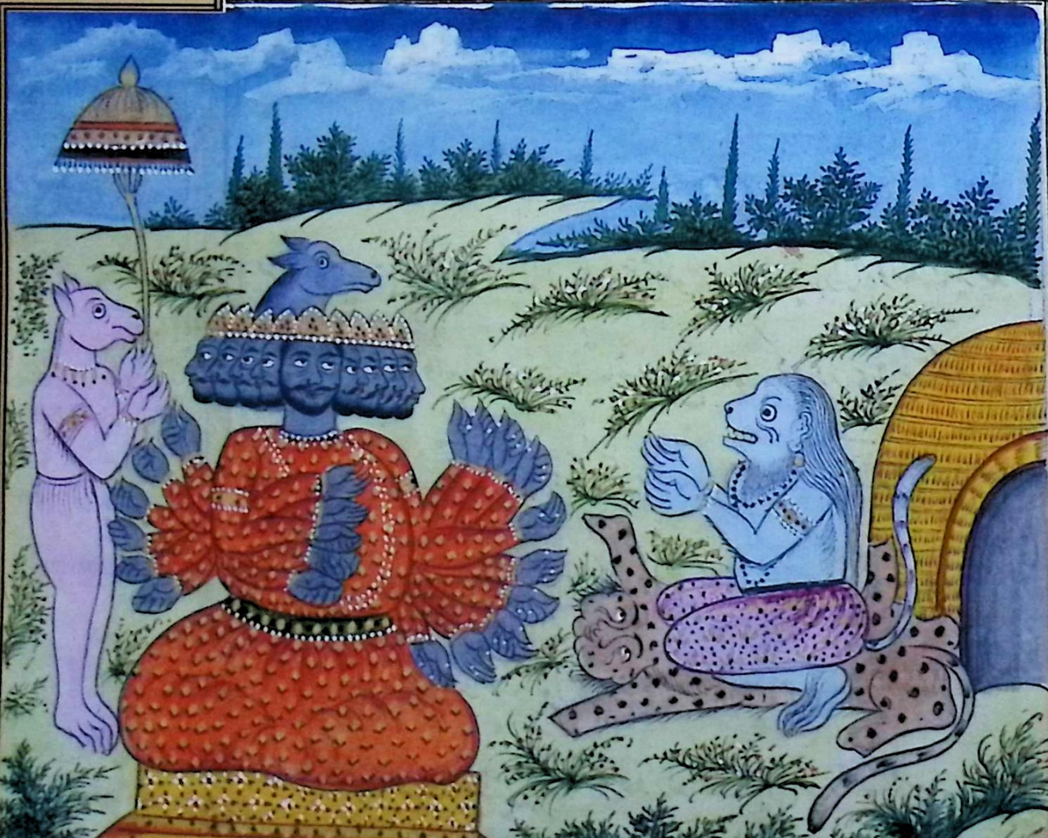

मैं उसके पास नहीं जाऊँगा कि वह मेरी मृत्यु है और मैं प्रत्येक वृक्ष में राम को धनुष बाण, कृष्णचीर (कालेमृग का चर्म) टाट और कम्बल के साथ मृत्यु की तरह देखता हूँ और हर बाग़ और जंगल में मुझे राम ही राम दिखाई पड़ते हैं। प्रत्येक ऐसा शब्द जिसकी 'र' उनके हृदय में है मेरे भय में वृद्धि करती है अपितु हीरे जवाहरात भी मेरे भय में वृद्धि करते हैं कि उनमें भी राम का ''र'' है। तुम कदापि राम के साथ युद्ध में सफल नहीं हो सकोगे। यदि तुम संरक्षण के लिये उनसे विनती करोगे तो अवश्य पाओगे अन्यथा राम के बाण से प्राण से हाथ धोवोगे।

रावण का चित्र पुराने वस्त्र में। एक राक्षस उनके शिर पर छतरी लिये हुए खड़ा है। और मारीच शिर पर बाल बांधे, शेर की खाल पहने हुए बैठा उससे वार्ता कर रहा है।

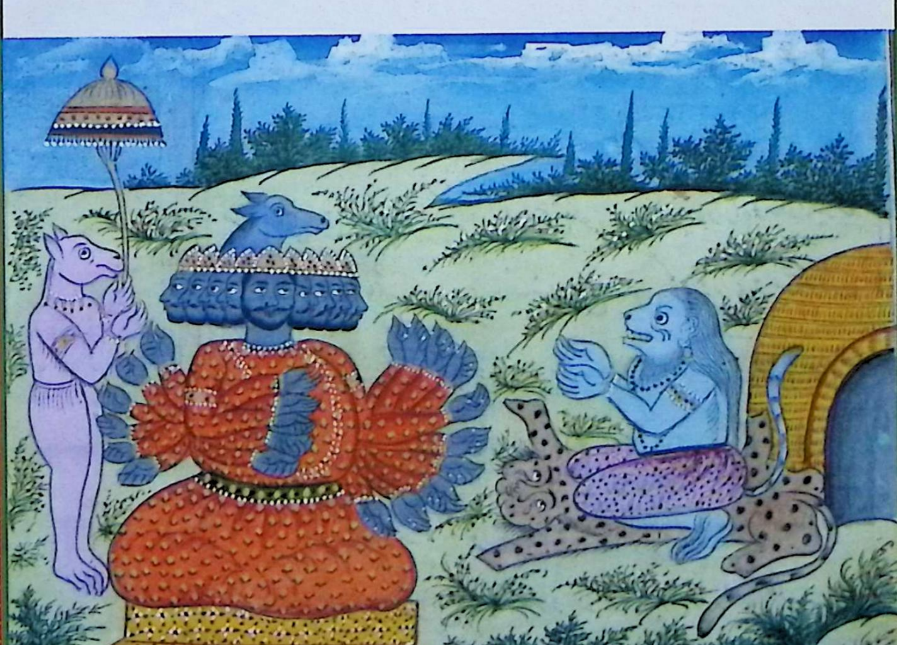

سرگ گفتار راون گفتهٔ ماریچ که دوا بود در آدن قبول نکرد چنانچه گرفته دوا نخورد
و از تکبر گفت ای ماریچ اینطور مرا ناسزا چرا میگوئی از این گفتار بی ثمر مثل تخم در زمین شور
خوف از رام نکنم او از دهرم دور و نادان و برادر او هم چنان که او را مادر و پدر گذاشته اند
در صحرا آمده است مرا البته با آن کشنده کهر جنگ باید کرد و سیتا را که برابر جان من است
می آرم و اینکه مرکوز خاطر منست اندر و دیگر دیوتا هم دور نتوانند کرد تو هنرهای او حضور من مگو
و آنچه راجه باشد خواه مطابق تدبیر خواه غیر تدبیر دوستان آن را نوع دیگر نمیگویند و اگر
زندگی خواهند از راجه دست بسته بزبان شیرین و طریق خدمت عرض میکنند و راجه پنج
صورت همیشه باشد آتش و اندر و ماه و جم و برن مهربان هم شوند و قهر هم کنند
بنابران هر وقت ایشان را از خوف باید پرستید تو دهرم را ندانسته فقط از حماقت
مرا میگویی من مهمانم مرا باید که از شکوه من نکوئی و صواب و گناه و نیک و بد نمیدانم
اعانت من بکن خود را آهوی طلائی با شاخ مرصع از جواهر کن و برای فریفته کردن سیتا
برو او ترا دیده البته برام خواهد گفت که این را بیار و بعد رفتن رام و لچهمن سیتا را
بی تصدیع خواهم آورد و برای این کار همراه من روان شو تا هر دو برادر را دغا
داده سیتا را گرفته بلنکا خواهم برد باعث این قدر امداد و اعانت نصف راج
خود بتو میدهم تو البته این کار بکن و در خلاف این ترا راحتی نیست بلکه شک

सर्ग–३८

रावण की वार्ता

मारीच की बात जो दवा थी रावण ने स्वीकार न की जैसे कि कोई बीमार दवा न खाये। और उसने घमण्ड से कहा ऐ मारीच ! तुम मुझे इस प्रकार भला बुरा क्यों कह रहे हो। यह निराधार वार्ता ऐसी ही है जैसे बंजर धरती में बीज डालना। मुझे राम का कोई डर और भय नहीं है। वह धर्म से दूर और मूर्ख है और उसका भाई भी ऐसा ही है कि उनको माता-पिता ने छोड़ रखा है। और वह वन में आए हैं। मुझे निःसन्देह उस खर को मारने वाले व्यक्ति से युद्ध करना चाहिए और मैं सीता को जो मेरे प्राण के बराबर है ले आऊँगा। यह जो बात मेरे हृदय में बैठ गयी है उसे इन्द्र और दूसरे देवता भी दूर नहीं कर सकते। तुम उसके गुणों का वर्णन मेरे सम्मुख मत करो। जो राजा होता है, चाहे युक्ति वाला हो या बिना युक्ति वाला, मित्र उसको कुछ नहीं कहते हैं। यदि जीवन चाहते हैं तो राजा से करबद्ध, मधुर वाणी और आदर के साथ निवेदन करते हैं। राजा पांच स्थितियों में सदा होते हैं अग्नि, इन्द्र, चन्द्रमा, मृत्यु और वरुण दयालु भी होते हैं और अत्याचार भी करते हैं। अतः हर समय भय से उनकी पूजा करनी चाहिए। तुम धर्म को न जानते हुए केवल मूर्खता से मुझसे कह रहे हो कि मैं अतिथि हूँ मुझे अधिकार है कि मैं पुण्य, पाप और अच्छा व बुरा न जानूं। मेरी बात मानों और स्वयं को सोने का हिरन सींग सहित बनाकर रत्नों से सुसज्जित कर लो और सीता को आसक्त करने के लिए जाओ। वह तुम्हें देखकर निःसन्देह राम से कहेगी कि इस हिरन को लाइये। राम व लक्ष्मण के जाने के बाद मैं सीता को बिना किसी कठिनाई के उठा लाऊंगा। इस कार्य के लिए मेरे साथ चलो ताकि मैं दोनों भाईयों को छल कर सीता को उठाकर लंका ले जाऊँ। इतनी सहायता के लिये मैं अपना आधा राज्य तुम्हें दे दूंगा। तुम अवश्य यह कार्य करो और इसके विरुद्ध करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है

در زندگی است و مرگ تو البته از دشمنی خواهد شد یعنی ترا خواهم کشت

این را فهمیده گفتهٔ من بکن

درینجا صورت راون بطور ولباس شایق

و دو راجهس خدمتگار استاده یکی سایه کش بر سر گرفته و ماریچ راجهس بر اجین نشسته سخن میکند

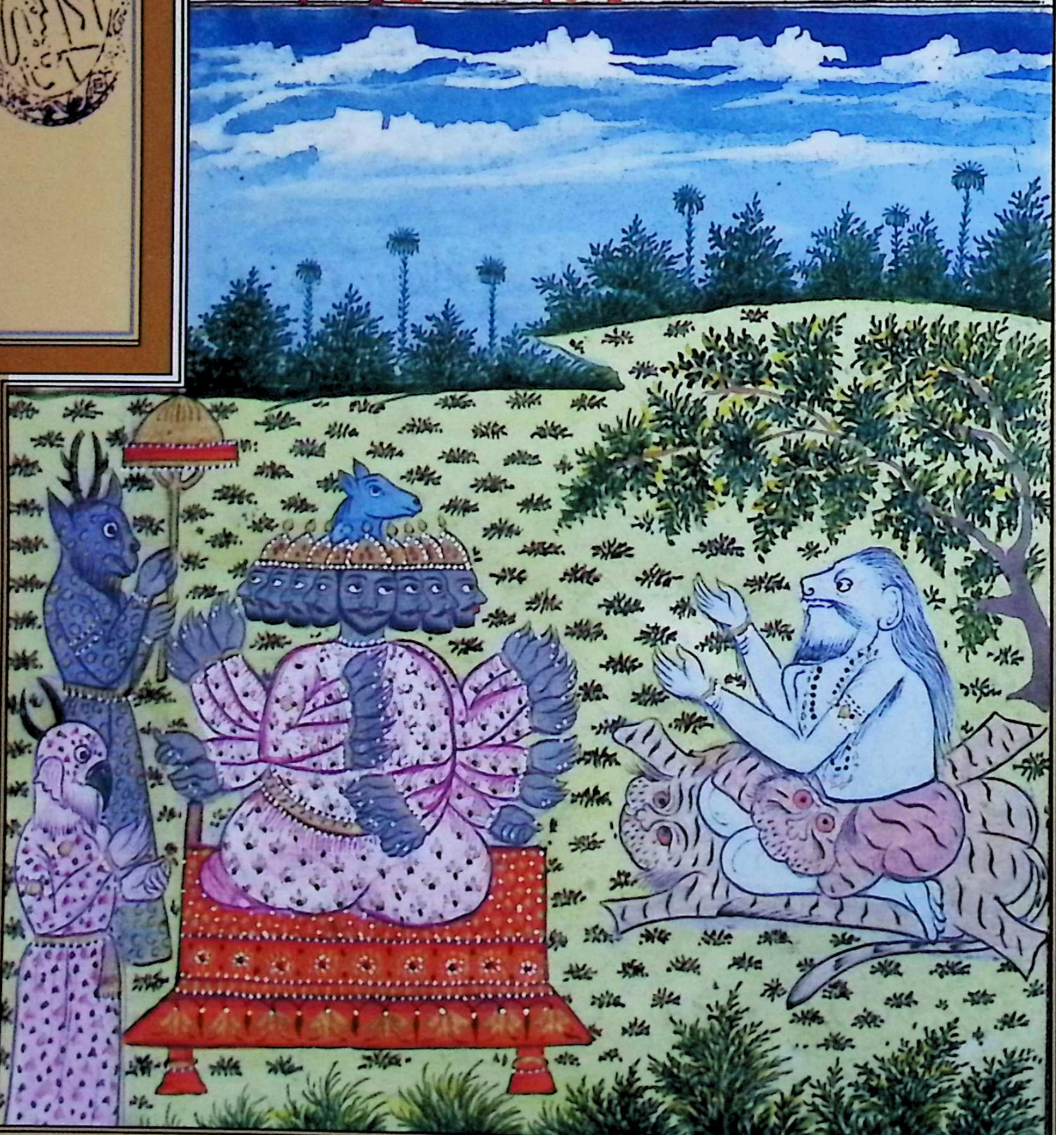

अन्यथा तुम्हारा जीवन संदिग्ध हो जायेगा और शत्रुता व विरोध के रूप में निःसन्देह तुम्हारी मृत्यु होगी अर्थात् मैं तुम्हें मार डालूंगा। इस बात को भली प्रकार समझकर मेरा कहा मानो।

रावण का चित्र पहले जैसे वस्त्र में, दो सेवक राक्षस खड़े हैं एक सर पर छतरी लिये हुए है और मारीच कम्बल पर बैठा वार्ता कर रहा है।

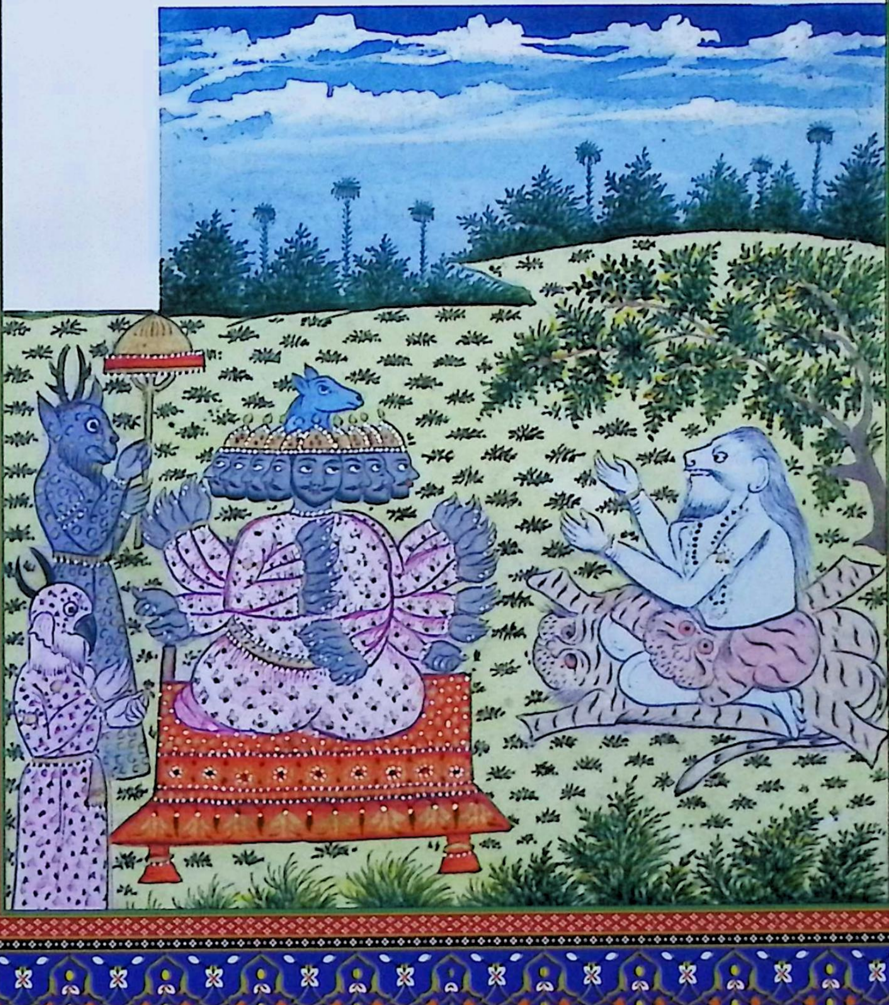

سرگ گفتار مارنج مارنج گفته راون را عکس دانسته گفت ای راون این مصلحت را
که داد که باعث خرابی شهر و سلطنت و وزراست آن دشمن تست که این دروازه
مرگ کشاده و منتریانِ تو علمی ندانند که ترا موافق شاسته نمیگویند و راجه که خودکام
و مغلوب لذات باشد او قبول کردنی را هرگز قبول نکند و منتریان خواهانِ دهرم و دولت
و امید و نیکنامی بر زمین از لطف الهی یافته میشوند و خلاف این اگر وزرا باشند
راجه را خراب کنند و از بدگفتن و خلافِ رسم و غصه داری راج را محافظت نتوانی
نمود و وزرای زبون با تو هلاک خواهند شد چنانچه سارتهی با اسپان گمراه و نیکان
و کنندگانِ دهرم در جهان بسیار اند اما هر که خیرخواه راجه باشد او چاکر خوب است و از راجه
بدگو و غصه دار رعایا زیاده نمیشود و آسوده نمیگردد چنانچه شغال از گرگ و الا همه راجهان
هلاک خواهند شد که آنان را مثل تو راجه بیدانش است و این راج ترا مانند زاغ و ثمره
درخت تال است و این نقل در جای دیگر چنان است که ثمره از درخت تال بر زمین می افتاد
از تال شکسته بود که زاغی رسید و آنرا در دهن گرفت غرض که بعد کشتن من تو هم
از دست رام کشته خواهی شد و من ازین شادم که بدست او کشته شوم که از دیدن رام
فی الفور مرگ من خواهد شد و هرگاه سیتا را بیاری خود را هم مرده شماری نه تو باشی
نه من باشم نه لنکا و نه راچهس هم تو چرا سخن مرا مانند کوتاه عمران نمیشنوی سرگ گفتار

सर्ग-३६

मारीच की वार्ता

मारीच ने रावण की बात को गलत जानते हुए कहा ऐ रावण ! तुम्हें यह परामर्श किसने दिया कि जो शहर व राज्य और मंत्रियों की बरबादी का कारण है। वह तुम्हारा शत्रु है जिसने मृत्यु का यह द्वार खोला है। तुम्हारे मंत्री कोई ज्ञान नहीं रखते हैं जो तुम्हें शास्त्र के अनुसार परामर्श दें और बात कहें। जो राजा कि स्वयं कार्य और इच्छाओं का दास हो वह स्वीकार करने वाली बात कदापि स्वीकार नहीं करता है धर्म, धन और आशावादी मंत्री ईश्वर की कृपा से पाये जाते हैं। यदि मंत्री इसके विपरीत होते हैं तो वह राजा को नष्ट कर देते हैं। विरुद्ध बोलने वाले क्रोध से राज्य की रक्षा नहीं कर सकते। तुम्हारे साथ यह बुरे मंत्री भी मारे जायेंगे जैसे कि रास्ता भटक जाने वाले घोड़ों के साथ रथवाला भी मारा जाता है। संसार में सज्जन लोग और धर्म का पालन करने वाले बहुत हैं लेकिन जो राजा का शुभचिन्तक हो वही अच्छा कर्मचारी है और बुरा, बोलने वाले और क्रोधी राजा का राज्य अधिक नहीं होता है। बुरे आचरण और तीक्ष्ण स्वभाव वाले राजा से प्रजा संतुष्ट नहीं होती है जैसे कि गीदड़ भेड़िये से। अन्यथा वह सारे राक्षस मारे जायेंगे जिनका राजा तुम जैसा मूर्ख और बुद्धिहीन है। तुम्हारा राज्य कौए की भांति और वृक्ष ताल का फल है। यह स्थिति किसी अन्य स्थान पर नहीं है। ताल का फल पृथ्वी पर गिरता है ताल का एक फल गिरा हुआ था कि इतने में एक कौआ पहुँचा और उसको मुख में रख लिया। निष्कर्ष यह कि मेरा वध करने के पश्चात् तुम भी राम के हाथों मृत्यु पाओगे। मैं इस पर प्रसन्न हूँ कि उनके हाथ से मारा जाऊँ क्योंकि राम को देखने से तत्काल मेरी मृत्यु हो जायेगी और जैसे ही तुम सीता को लाओगे वैसे ही अपने को भी मृतक में गिनती करोगे। न तुम रहोगे न मैं रहूंगा न लंका और न राक्षस। तुम क्यों बच्चों की भांति मेरी बात नहीं सुन रहे हो।

مارنج مارنج بار دیگر براون گفت مرا تا آن زمان که موی سرم گرفته بکشتی ترا باید گفت
درانچه خیر خود و خیر تو باشد از روی دهرم خیر خواهی تو مرا باید کرد که بسبب کام دهرم را
گذاشتن سزاوار تو نیست راستی و دهرم بر زمین نیک چیز اند اینها را گذاشتن بتو
نمیرسد این همه سابق رام بودند حالا دیگر بشنو که براده و سوباهو راچهسان که قبل ازین
با ما بودند و دندان دراز و صورت کلان و زور آور بودند آنها را در صحرا کشت
اگر تو عورت او را بیاری باعث هلاک خود بینی هر چند که رامچند برای کاری غصه نمیکند
و برائی عورت غصه او نباشد بلکه برائی دهرم است بجهة آنکه اگر عورت کسی را کسی برد
رهانیدن آن دهرم است سعی خواهد کرد و از همه چیز گرفتن عورت بسیار عیب است
درین کار جان خود را هم گذاشته سعی باید کرد رام برائی این کار نا کردنی خواهد کرد
و او قوت مند جبلی است او دریائی شور را خشک خواهد کرد تو درین تامل کن که درین کار
اندک هم از روش بزرگان نیست و اگر بتقدیر لباس آهو نموده من رام را از خانه برآورم
تا هم ترا دست آمدن سیتا دشوار است که لچهمن هم بزور مانند اوست و اگر بتقدیر
در غیبت آن هر دو سیتا را گرفتی تا بر هم لوک جائی برائی بودن نیست و اگر بتقدیر گرفتی
پس لعنت هر سه لوک بر خود بگیر و بغیر مصلحت خیر خواهان هر چه راجه کند او دیر نپاید
چنانچه نیلوفر در تالاب بی آب و مرا بکشی اگر ازین کار تو خلل نپذیرد خواه داد باشد

सर्ग-४०

मारीच की वार्ता

मारीच ने पुनः रावण से कहा, मैं उस समय तक, जब तक तुम मेरे सिर के बाल लेकर मुझे मारोगे मैं तुमसे कहता रहूंगा और जो कुछ मेरे और तुम्हारे लिये भला होगा वह धर्म और तुम्हारी शुभ चिन्ता के लिए मुझे करना चाहिए। क्योंकि किसी कार्य के कारण धर्म छोड़ना तुम्हारे लिये उचित नहीं है। पृथ्वी पर सच्चाई और सत्य मार्ग तथा धर्म अच्छी वस्तुएं हैं। उन्हें छोड़ना तुम्हें शोभा नहीं देता। यह सारे गुण राम में, पहले से हैं और अब एक अन्य बात सुनो कि बरादह और सुबाहु राक्षसों को जो इससे पहले हमारे साथ थे और लम्बे दांत और भीमकाय थे बलशाली थे उनको वन में राम ने मार डाला यदि तुम उनकी पत्नी को लाओगे तो अपनी मृत्यु का कारण स्वयं होगे। यद्यपि कि रामचन्द्र किसी कार्य के लिये क्रोध नहीं करते और स्त्री के लिए भी उनका क्रोध नहीं होता बल्कि वह धर्म और न्याय के लिये है। क्योंकि यदि कोई किसी की पत्नी को उठा ले जाता है तो उसे छुड़ाना न्याय और धर्म है वह प्रयास करेंगे और समस्त वस्तुओं में से स्त्री को लेना बहुत बुरी बात है और इस कार्य में अपने प्राण से हाथ धोकर भी प्रयास करना चाहिए। राम यह न करने वाले कार्य भी करेंगे और वह जन्म से शक्तिशाली हैं, और वह समुन्द्र को सुखा देंगे। तुम इस बात में विलम्ब मत करो कि इस कार्य में तनिक सी भी पूर्वजों की विधि नहीं है। यदि मैं हिरन का रूप धारण करके राम को घर से बाहर ले भी जाऊँ तब भी तुम्हारे लिये सीता का प्राप्त होना कठिन है। क्योंकि लक्ष्मण भी शक्ति में उन्हीं के समान है और यदि मान लो कि तुमने उन दोनों की अनुपस्थिति में सीता को ले लिया तो भी ब्रह्मलोक तक रहने का कोई स्थान नहीं है। यदि तुमने ले लिया तो तीनों लोक का अभिशाप तुम पर होगा और राजा अपने शुभचिन्तकों के परामर्श के बिना जो भी कार्य करता है वह दीर्घकालिक नहीं होता जैसे कि कुण्ड में जल के बिना नीलोफर और तुम मुझे मार डालना यदि तुम्हारे इस कार्य से व्यवधान न उत्पन्न हो चाहे वह न्याय हो या अत्याचार।

نخواه بداد تو بلنکا برو و تقصیر رام مکن و اگر گفته من بگوش قبول نیاری چارناچار
انچه گوی بکنم کردنی باشد یا ناکردنی در اینجا صورت راون بطور و لباس
سابق و دو راچهس استاده یکی سایه کش بر سر گرفته و ماریچ راچهس مو فرو هشته نشسته
و با راون بسخن پیوسته

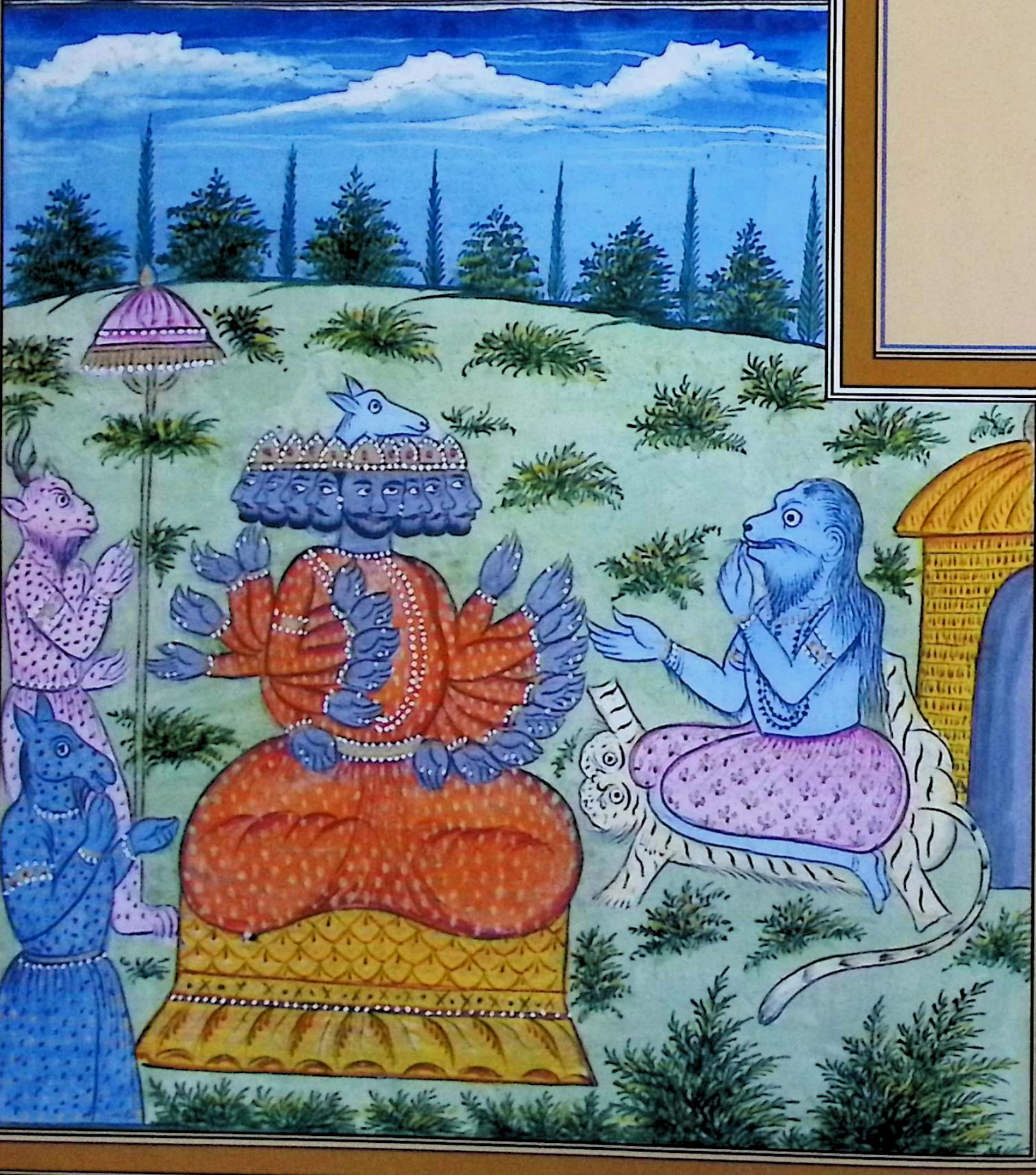

लंका वापस जाओ और राम के विरोध का विचार मन में न लाओ। यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे तो विवश होकर जो तुम कहोगे मैं करूंगा चाहे वह करना उचित हो या अनुचित।

रावण का चित्र, पूर्व की भांति और उन्हीं वस्त्रों में, दो राक्षस खड़े हैं एक सर पर छतरी लिये हुए और मारीच कम्बल पर बैठा रावण से बात कर रहा है।

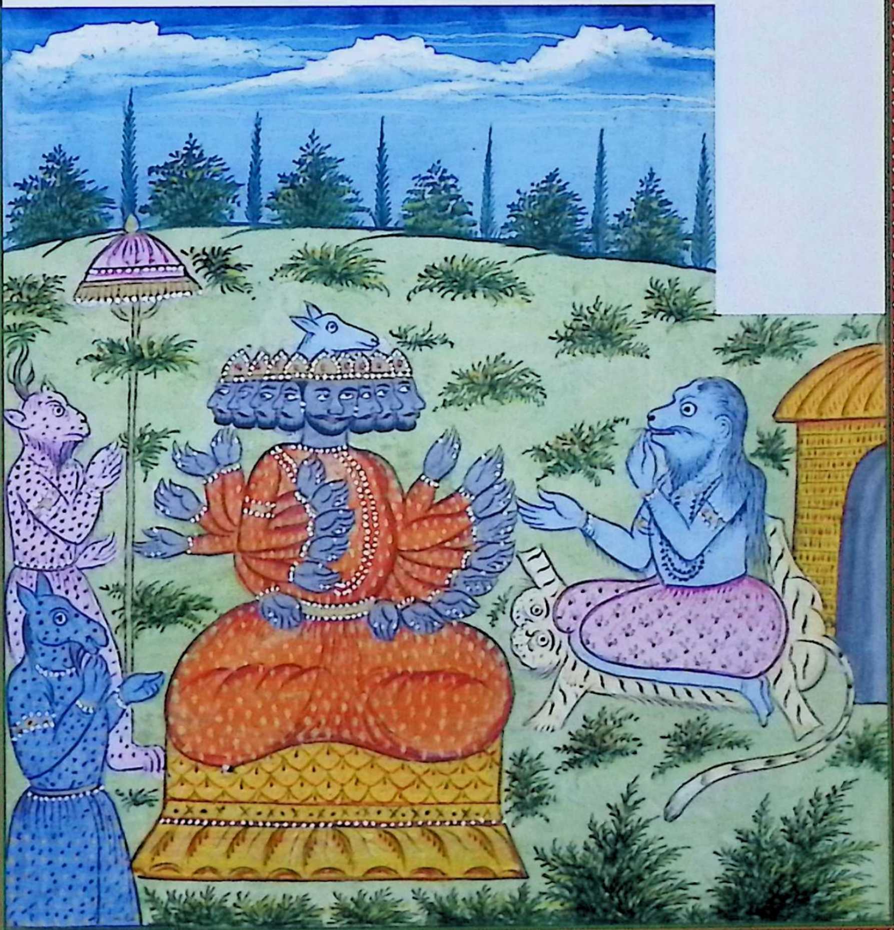

سرگفتار راون راون وقتیکه از زبان مارنج بشنید که خواهم کرد از اخلاص مارنج
گفت رام از راج افتاده او را مشیران نیستند و بتقدیر اگر مانند اندر باشد چه خواهد کرد
رام خوردنی ماست از وچه میترسی اقبال را به بن وز ورمند شو از آدمی کم عقل هیچ
کار نمی شود در آسمان نمی پرد و راجهان در آسمان میروند من سیتا را گرفته براه فلک در لنکا
خواهم برد و رام ازطرف سمدر از تدبیر چه خواهد کرد هر چند زور داشته باشد دیوتا و با
با من جنگ نتواند کرد و هر ئسه لوک برابر من نیست از زور من اندر که برابرادت سوار بود
دیوتا ها بود شکست یافت و برادر من که کبیر جم و برن است همگنان را تسخیر کردم و هر سه
لوک در تصرف آوردم و هنگامیکه مهادیو با پاربتی بر کوه بازی میکرد آن کوه را
بهر دو دست برداشتم و هیچ ترس نکردم سیتا را گرفتن و براه آسمان در لنکا آمدن
چه کار رود در لنکا که در سمدر بر ترکوٹ کوه هست کرا طاقت رفتن هست در خواب هم و تو
طاقت داری و هنرمند هستی سیتا را بر خود فریفته گردان و همراه من بیا من معاون و مددکار
ترا خواهم شد سیتا را گرفته رام را دغا داده با رام خواهی رفت بدین آیین راون
با مارنج متفق گردید بسبب تصدیع رام در پیش کرد و مارنج او را منع کردن نتوانست در دل گفت
اگر میروم از دست رام کشته میشوم والا از دست راون پس بدست رام مردن بهتر این را
گفته و ترک حیات کرده برخاست **سرگ آمن راون و مارنج** آن را جس مرگ خود دانسته

सर्ग–४१

रावण की वार्ता

रावण ने जिस समय मारीच से सुना कि ''करूंगा'' तो उसने बड़े प्रेम से मारीच से कहा ''राम राज्य से निकाल दिया गया है। उसके पास परामर्शदाता नहीं है और माना कि यदि इन्द्र के समान हो तो वह क्या कर लेगा ?राम हमारा शिकार हैं। उससे तुम क्यों भयभीत होते हो ?हाथियों को देखो और शक्तिशाली हो जाओ। कम बुद्धि वाले व्यक्ति से कोई काम नहीं होता है। वह आकाश में नहीं उड़ता है और राक्षस आकाश पर जाते हैं। मैं सीता को लेकर आकाश के रास्ते लंका ले जाऊँगा और राम समुन्द्र के उस पार अपनी बुद्धि से क्या कर लेगा। अगर वह बलवान है लेकिन देवता भी मेरे साथ युद्ध नहीं कर सकते। तीनों लोक में मेरे समान कोई नहीं है। मेरी शक्ति से इन्द्र भी जो आदित्य और दूसरे देवताओं के समान हैं पराजित हुए और मेरा भाई जो यम और वरुण जैसा है मैंने सबको वश में किया। तीनों लोक का प्रयोग किया और जिस समय कि महादेव पार्वती के साथ पहाड़ पर विश्राम कर रहे थे। मैंने उस पर्वत को दोनों हाथों में उठा लिया और तनिक भी नहीं डरा। सीता को पकड़ना और आकाश के मार्ग से लंका में पहुँचना कौन सा बड़ा काम है?और लंका में जहां समुन्द्र में बरतरकूट पर्वत है, पहुँचने की स्वप्न में भी किसमें शक्ति है?हाँ तुम शक्ति रखते हो और तुम गुणी हो। सीता को स्वयं पर आसक्त करो और मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारा सहायक हूंगा। सीता को लेकर और राम को छल देकर तुम निश्चिन्त होकर जाओगे।'' रावण इस प्रकार मारीच के साथ वार्ता करके राम के कष्ट का कारण बना। मारीच उसको मना नहीं कर सका। उसने दिल में कहा; यदि मैं जाता हूँ तो राम के हाथों मारा जाऊँगा और नहीं जाता हूं तो रावण के हाथ से। बस राम के हाथ मरना अधिक उचित है, यह कहकर और जीवन से निराश होकर वह उठा।

सर्ग–४२

रावण और मारीच का आना

उस राक्षस ने अपनी मृत्यु समझकर

ترک آرزو کرده دمها کشیده از ترس راون گفت خوب میروم من رام را می بینم که برای
کشتن من تیر و کمان را گرفته است خیر میروم راوان ازین سخن خوشوقت شده او را در کنار
گرفت گفت همین لایق تست با من برین رتهه که از جواهر مرصع و هر جا که خواهد میرود سوار شو
بعده راون و ماریچ بر رتهه سوار شده بسرعت باشرم رام رفتند کوهها و صحراها و دریاها
و شهرها را تماشا کنان در رفتند کارن رسیدند از رتهه فرود آمده دست ماریچ را
گرفت گفت اینک آشرم رام هست که در انجا گلهای بسیار و اقسام طیوران و اشجار گلدار
دلخواه بیشمار اند برای کاری که ما آمده ایم آنکار را بخوشوقتی بکن ماریچ این را شنیده
خود را بصورت آهو کرده نزدیک اشرم رام گذشت بصور فریبنده طلائی وجود او بر و خالها
نقره و قدری از مرجان و قدری از مروارید آراسته و شاخ آن ازجات روب سبت
و بجواهر چهار قسم مرصع و ماریچ که آهو شده بود در آنوقت بخاطر گذرانید که اگر کردنی
یا ناکردنی کار راون باید کرد درین کار بدست رام مردن من بهتر است این را بدل
مقرر کرده و مرگ خود را مشخص نموده در انجا روان شد و بطریق بازی آن بسر سند
راچهس بحضور رام سیتا را فریفتن گرفت سیتا از دور دید که کاهی چنین ندیده بود

بدید و متحیر گردید درینجا صورت آشرم رام و گرداگرد اشجار و درختان گلدار و جانوران: رند
و چرند و در آشرم سیتا و لچهمن نشسته و رام کمان کشیده برای شکار آهوی طلا و خال او نقرئی

इच्छायें त्याग करके सांस खींचकर डर से रावण से कहा ठीक है मैं जाता हूँ। मैं राम को देख रहा हूँ कि वह मुझे मारने के लिए धनुष बाण लिये हुए हैं। अच्छा मैं जाता हूँ रावण ने इस बात से प्रसन्न होकर उसे गोद में लेकर कहा तुम्हारे यही योग्य है। मेरे साथ इस रथ पर, जो रत्नजड़ित है और जहां चाहे जा सकता है सवार हो जाओ। उसके बाद रावण और मारीच रथ पर बैठकर शीघ्रता से राम के आश्रम में गये, पर्वतों, नदियों और शहरों को देखते दण्डकारण्य में पहुंचे रथ से उतरकर उसने मारीच का हाथ पकड़कर कहा, यह राम का आश्रम है जहाँ कदली बहुत है और विभिन्न प्रकार के पक्षी तथा फलदार व हृदयप्रिय वृक्ष अधिकांश हैं। जिस कार्य के लिये हम आये हैं तुम उसे प्रसन्नता से करो। मारीच ने यह सुनकर स्वयं को हिरन के रूप में परिवर्तित करके राम के आश्रम के निकट छोड़ दिया। हृदय को लुभाने वाली उसका स्वर्ण रूप, जिस पर श्वेत गोले थे कुछ मखारीद और कुछ मारीच से सुसज्जित था। उसकी सींग जातरूप (सोना) और चारों प्रकार के रत्न से सुसज्जित थी और मारीच के हृदय में जो हिरन बन चुका था उस समय यह विचार आया कि चाहे यह करना उचित हो या न हो, लेकिन रावण का काम करना चाहिये। इस कार्य में राम के हाथ से मरना उचित है। हृदय में यह निश्चय करके और अपनी मृत्यु निश्चित करके वहाँ चला और खेलकूद करके उस सुंदर राक्षस ने राम के सामने सीता को दूर से इस प्रकार लुभाना आरंभ कर दिया। सीता ने कभी ऐसा दृश्य नहीं देखा था वह देखकर चकित रह गयीं।

राम के आश्रम का चित्र जिसके चारों ओर वृक्ष, पशु व पक्षी हैं। आश्रम में सीता और लक्ष्मण बैठे हुए हैं और राम धनुष उठाकर सोने के हिरन के शिकार के लिये जाते हैं।

و شکم او سفید مانند صدف و پای او سرخ و سر او بلند و شاخ مرصع بزر

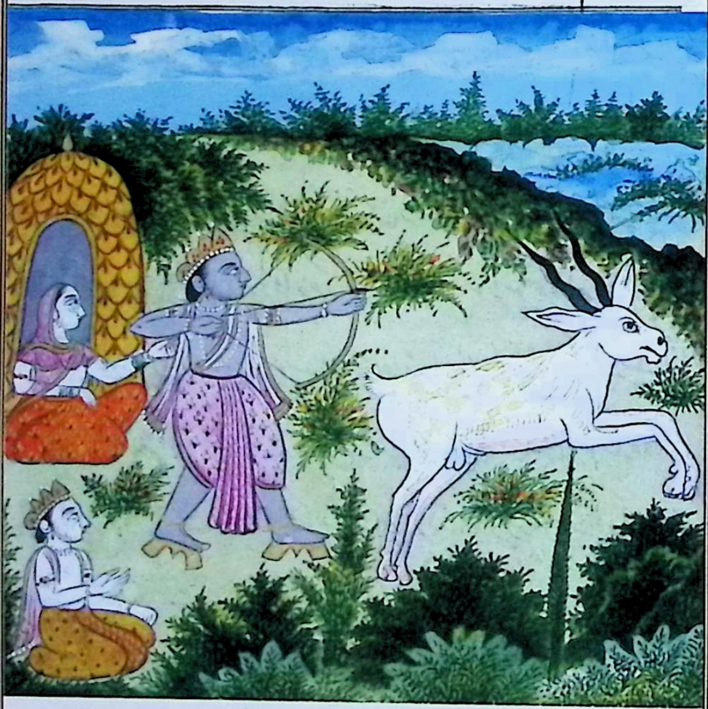

سرگ گفتار سیتا سیتا آن آهو را که نوک شاخ او از جواهر قیمتی و گلو اندک بلند

و موی سر او بعضی از نیلم و شکم مانند گل کند و ماهتاب و مینز زیب آور و پشت از طلا

و نقره با قسام نقش آراسته و حوافر یعنی کهر او از بدوره که جواهر نیل رنگ میباشد بدینصورت

و دم او مانند کمان اندر که قوس قزح باشد و گوشها مانند شنکه لیحو ز سیره

برو روان آشرم رام روان شدن گرفت و در زیر شالانی که رام نشسته بود رفته

और उसका पेट सीप के समान श्वेत (सफेद) है, पाँव लाल, सर ऊँचा और सींग सुन्दर व सुसज्जित और वह चला जा रहा है।

सर्ग-४३

सीता की वार्ता

सीता ने उस हिरन को देखा जिसकी सींग की नोक रत्न से अधिक मूल्यवान थी। उसकी गर्दन लम्बी थी। उसके सर के कुछ बाल नीलम के थे। पेट गुलकन्द व चन्द्रमा और हंस के समान सुन्दर था। पीठ विभिन्न प्रकार के सोने चाँदी से सुसज्जित थी। उसके खुर नीले रंग के रत्न की भांति रंगीन थे। उसकी दुम इन्द्र के धनुष के समान थी जो इन्द्र धनुषी रंग से मिलती जुलती होती है। उसके कान भी सुन्दर थे। इस रूप में वह हिरन राम के आश्रम के द्वार पर फिरने लगा और राम की पर्णशाला अर्थात् झोपड़ी में जाकर जहाँ राम बैठे हुए थे।

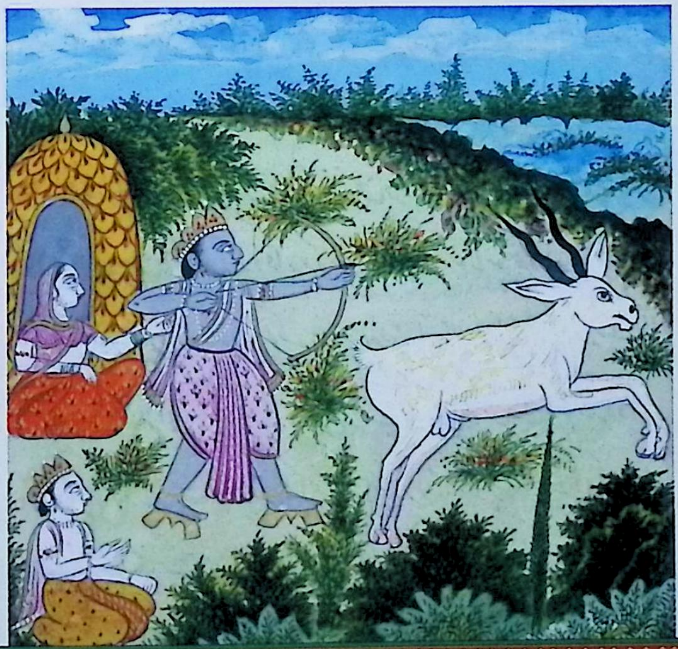

تمام شکل خود را بنمود سیتا در آن وقت کل میچپید او هم آهو را دیده خوشدل گشت

و نزدیک شوهر رفت دید که رام و لچهمن هر دو آن آهو را می بینند سیتا آنرا مانند آهوی

که بر فلک است نظر کرده بطریق تبسم برامچندر گفت این آهوی زرین و مرصع از عجایبات است

و از خود در اینجا آمده است اگر اینطور آهو درین ذندکارن نمیباشند پس دروغ نیست

که اینجا خلاصه جهانست آرزو دارم که پوست این آهو را بپوشم و مانند [illegible] این

آرزوی خود بیان کردم زیرا که پوست این مرا زیبا مینماید اینقدر گفته سیتا از رامچندر

شنیده شادان لچهمن گفت ببین که سیتا را شوق بپوست آهو شده و شکل

این نه در نندن است نه در چترتهه که مکانهائی دیوتا اند و بر زمین نظیر او کجاست

و موی های او خوشنما و زبان وقت دهن کشادن مانند شفق شام مینماید و صورت

چون آفتاب و مانند سفید صدف شکم اوست و شاخها مانند قله کوه هماچل مینماید و با مانن

مرجان و پشت مانند ماه و انجم دیده میشود کیست که این را دیده فریفته نشود و در شکار

راجه ها آهو را برای گوشت و بازی میکشند تو بخاطر جمع نزد سیتا با اسلحه مستقیم باش تا من

آهو را به تیر کشته بیارم و شتاب می آیم و تو از اینجا هرگز هرگز نروی تا من نیایم که راچهسان بد طریق

در پی عداوت اند و سیتا این پوست را پوشیده زیبا میشود و اجن این کرده با خود بیار رویم و تو

با استصواب جتایو طیور مسبوق الذکر نگهبان سیتا باش و انتظار من دار سرگردان شدن رام رام بار بار

अपना पूरा रूप दिखाया। सीता उस समय फूल चुन रही थी वह भी हिरन को देखकर प्रसन्न हुई और पति के पास गयीं। देखा कि राम और लक्ष्मण दोनों ही उस हिरन को देख रहे हैं। सीता ने उसको उस हिरन के समान जो आकाश पर है देखकर मुस्कुराते हुए रामचन्द्र से कहा कि ''यह सुनहरा और सुसज्जित हिरन आश्चर्यजनक वस्तुओं में से है और स्वयं यहाँ आया है। यदि इस प्रकार के हिरन इस दण्डकारण्य में है तो यह बात गलत नहीं है कि यहाँ सम्पूर्ण संसार का सार है। यह मेरी इच्छा है कि मैं इस हिरन की खाल पहनूँ। और मैंने स्त्रियों की भाँति अपनी यह इच्छा इसलिये व्यक्त की है कि इसकी खाल मुझे अच्छी लग रही है।'' सीता की यह बात सुनकर रामचन्द्र ने प्रसन्नता के साथ लक्ष्मण से कहा; ''देखो ! सीता को हिरन की खाल पहनने की इच्छा हुई है और इस प्रकार का हिरन न नन्दन में है और न चैत्ररथ में, जो देवताओं का स्थान है। धरती पर उसका उदाहरण कहाँ है। उसके बाल सुन्दर हैं, उसकी जीभ मुँह खोलते समय शफक़ (भोर के प्रकाश) जैसा प्रतीत होती है और रूप सूर्य जैसा है, श्वेत सीप के समान उसका पेट है और उसकी सींग हिमांचल पर्वत की चोटी के समान लगती है। पाँव मरजान जैसे और पीठ चाँद तारों जैसी दिखती है कौन है जो इसको देखकर उस पर आसक्त न हो ?राजाओं के शिकार में हिरन को माँस और खेल के लिये मारते हैं। तुम सावधानी से हथियार सहित सीता के पास रहो ताकि मैं हिरन को तीर से मार लाऊँ। और मैं शीघ्र ही आता हूँ। तुम यहाँ से कदापि-कदापि कहीं न जाना जब तक मैं न आ जाऊँ। क्योंकि बुरे आचरण वाली राक्षसी शत्रु बनी है और सीता यह खाल पहनकर सुन्दर लगेगी, और हम उसी का अंजन बनाकर अयोध्या जायेंगे और तुम पूर्व की भाँति जटायु पक्षी के परामर्श से सीता की रक्षा करो और मेरे आने की प्रतीक्षा करो।

सर्ग-४४

राम का प्रस्थान करना

राम बार-बार

برای نگهبانی سیتا میگفت و کمان را زه نمود و دو تیر در دست گرفت و شمشیر به بست و بسمت آهویی دوان

روان شد بنوعیکه عقب آهوی چک راجه دیهه مهادیو برود آهو دور رفت رامچندر تیری روشن پرتاب داد.

چون بر آن آهو رسید جگر او سوراخ کرد و آهو فی الفور صورت را گذاشته راچهس شد و لچهمن لچهمن

شور بلند کرده مانند درخت تال بر زمین افتاد و در آخر وقت خود او چنان برگشت که آواز رام

ای لچهمن ای لچهمن مرا محافظت کن و بخاطر گرد این آواز را شنیده سیتا لچهمن را خواهد فرستاد و مراد راون

برآید و بعد از آن صورت دراز دندان با بازوبند مرصع و پیرایه ها و مالا طلائی مبدل شد و کلان شبیه گشت

رام او را بر زمین افتاده دیده سیتا را در دل یاد کرد و موی تن او برخاست و مضطرب و غمگین گشته

دیگر آهوان را برائی خوردن نکشته نزدودی سمت آشرم خود برگشت در اینجا رام تیر بکمان آورده بر آهو زده

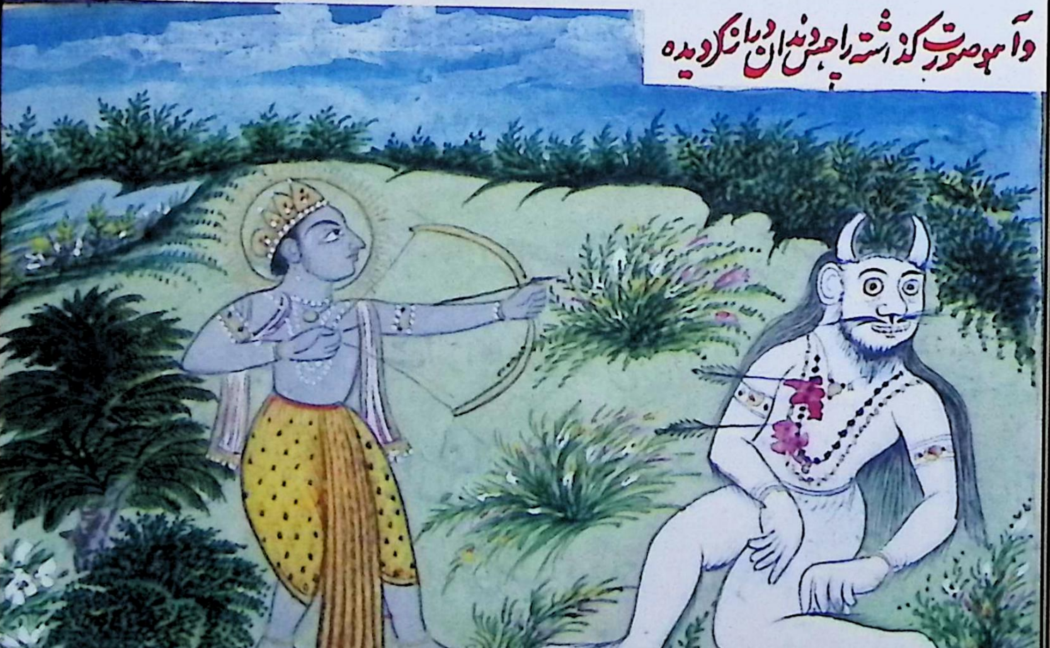

و آهو صورت گذاشته راچهس دندان دراز گردیده

सीता की सुरक्षा के लिये कह रहे थे। फिर उन्होंने धनुष बाण पर चढ़ाया दो बाण हाथ में लिये और तलवार बाँधी और दौड़ते हुए हिरन की ओर चले गये ऐसे जैसे कि राजा और महादेव हिरन के पीछे जाते हैं और वह हिरन दूर चला गया। रामचन्द्र ने एक चमकता हुआ तेज बाण मारा। जब वह बाण हिरन तक पहुँचा तो उसके हृदय में छेद कर दिया और हिरन तुरन्त अपना रूप छोड़कर राक्षस बन गया और लक्ष्मण लक्ष्मण चिल्लाकर ताल वृक्ष की भाँति धरती पर गिर पड़ा। और अन्तिम समय में उसकी आवाज़ ऐसी हो गयी मानों राम की आवाज में कह रहा हो : "हे लक्ष्मण ! हे लक्ष्मण ! मेरी रक्षा करो।" उसने हृदय में सोचा कि यह आवाज सुनकर सीता लक्ष्मण को भेजेगी और रावण की इच्छा पूरी होगी। उसके बाद वह लम्बे दाँत वाला सुनहरे वस्त्र और सुन्दर माला वाले के रूप में परिवर्तित हो गया और भयभीत हो गया। राम ने उसको धरती पर पड़ा हुआ देखकर हृदय में सीता का स्मरण किया और उनके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये और वह व्याकुल तथा दुखी हो गये और दूसरे हिरनों को अपने खाने के लिये न मारकर शीघ्र अपने आश्रम की ओर वापस आये।

यहाँ राम बाण को धनुष में रखकर हिरन पर चला रहे हैं और हिरन अपना रूप छोड़कर लम्बे दाँतों वाला राक्षस बन गया है।

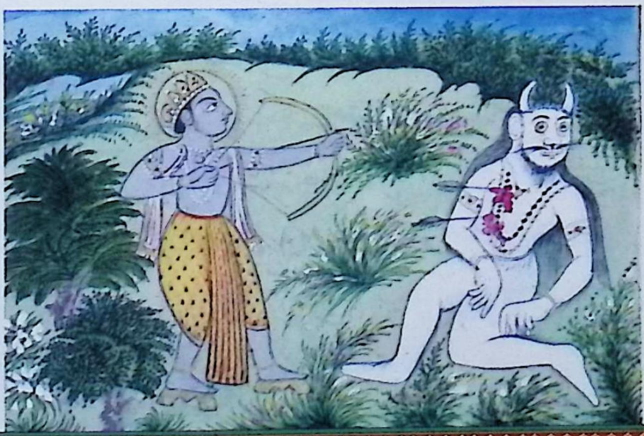

سرگذشت سیتا سیتا آن آواز راچهس را آواز شوهر خود دانسته بلچهمن گفت جان من برقرار نیست بدین آواز مضطربانه برادر عزیز تو شور میکند شتاب برو و نگهبانی او بکن که برادر تو در بند راچهسان افتاده است چنانچه گاو میان شیران لچهمن گفت مرا حکم برادر نیست هرگز نروم بار دیگر سیتا بغصه گفت تو بصورت دوست دشمن برادر هستی که در چنین وقت پیش برادر نمیروی و تصدیع او را روا داشتی و هیچ اخلاص نداری و مرا بی او آرام نیست و عورات را از همه شوهر فایق تر است اینچنین گفته سیتا در گریه شد لچهمن گفت در دیوتا و انسان و گندهرب و طیوران و راچهس و پشاچ و کنر و افعی کسی نیست برابر رام که با او جنگ تواند کرد اگر اندر هم باشد و ترا من به تنها در صحرا نمیتوانم گذاشت تو در دل اضطراب مکن که اینک رام با ثمرات جنگلی برای خوردن می آرد و این آهوی زرین را فریب راچهسان میدانم مانند شهر گندهرب و مرا اینجا رام فهمیده گذاشته تو مرا جدا مکن مایان در اینجا با راچهسان دشمنی کرده ایم و راچهسان اینجا که جن و استهان است انواع سخنان و آواز میکنند تو مرا مفرست نسبت زور رام بی نهایت است آنرا بخاطر کرده تامل کن و آن آواز غریبانه که شنیدی ازو زیرا که رام شجاع و متحمل است اگر سرش ببرند در آنوقت هم هرگز چنان نگوید لچهمن بدین آئین تامل کرده برفتن خود راضی نشد بار دیگر سیتا بغصه تمام گفت این عجایبات نیست که از ساتین یعنی شریک بدی بوقوع آید بتخصیص مثل تو بیحیا که عمری در لباس خیانت گذرانیده

وازدوغا

सर्ग-४५

सीता की वार्ता

सीता ने उस राक्षस की आवाज़ को अपने पति की आवाज़ समझते हुए लक्ष्मण से कहाः "मुझे चिन्ता हो रही है ऐसी पीड़ायुक्त आवाज़ के साथ आपके भाई चिल्ला रहे हैं। शीघ्र जाइये और उनको बचाइये। क्योंकि आपके भाई राक्षसों की क़ैद में पड़ गये हैं जैसे कि गाय शेरों के बीच आ जाती है।" लक्ष्मण ने कहा "मुझे भाई का आदेश नहीं है, मैं कदापि कहीं नहीं जाऊँगा।" पुनः क्रोध से सीता ने कहा; "तुम मित्र के रूप में अपने भाई के शत्रु हो कि ऐसे समय में भाई के पास नहीं जा रहे हो और उनके कष्ट के भागीदार हो। तुम्हारे भीतर कोई प्रेम नहीं है और मुझे उनके बिना आराम नहीं है। और स्त्रियों के लिये उनके पति सबसे उच्च होते हैं।" यह कहकर सीता रोने लगी। लक्ष्मण ने कहा; "देवता मनुष्य, गन्धर्व, पक्षी, राक्षस, पिशाच और सर्प इनमें से कोई राम के बराबर नहीं है कि उनके साथ युद्ध कर सके। चाहे वह इन्द्र ही क्यों न हों। और मैं आपको वन में अकेला नहीं छोड़ सकता हूँ। आप चिन्तित न हों। अभी थोड़ी देर में राम खाने के लिये जंगली फल लेकर आ रहे होंगे और इस सुनहरे हिरन को मैं राक्षसों का छल समझता हूँ, शहर गन्धर्व के समान। मुझे यहाँ राम कुछ समझकर ही छोड़ गये हैं। आप मुझे अलग मत कीजिये। हम लोगों ने यहाँ राक्षसों से शत्रुता मोल ली है और यहाँ के राक्षस जोजन और अस्थान हैं, विभिन्न प्रकार की बातें करते और आवाजें निकालते हैं। आप मुझे न भेजिये राम की शक्ति अपार है। इसको हृदय में लाकर सोचिये और वह अजनबी आवाज़ जो आपने सुनी, उनकी नहीं है। क्योंकि राम वीर और सहन शक्ति रखने वाले हैं। यदि उनका शिर भी काट दें तब भी वह इस प्रकार नहीं बोल सकते।" लक्ष्मण यह सोचकर अपने जाने पर तैयार नहीं हुए। पुनः सीता ने क्रोध से कहा कि यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जो बुराई के सम्पर्क से उत्पन्न हुए हैं, निश्चय ही तुम जैसे हैं, तुम निर्लज्ज हो कि एक आयु तुमने धोखे के वस्त्र में व्यतीत कर दी

وازدغا همراه رام مانده و بهرت از برای گرفتن من ترا فرستاده است من چسان رامچندر را گذاشته خواهش غیری کنم باز گریه نمود و گفت میدانم که رام کشته شد لچهمن دست بسته بگریست گفت من جواب نمیتوانم داد که مخدومه منی و اینچنین گفتن را لایق نه لیکن این خصائل عورات در هر شهر لو له هرم و دو رکنند و فریب کار باشند و در شوهر و خیر خواه او دشمنی اندازند و اینهمه باشند کان صحرا شاهد اند و میشنوند که ترا گفتار ناسزا گفتم و تو مرا دیگ ای نکوهش میکنی مردنم خوب است چون تو مرا بدگفتی بر گفته گرو قایم بودم ناچار حالا آنجا که رام است میروم ترا خیر باد و همه دیوتای صحرا نگهبان تو باد مرا شگون بد مینماید باز آمده ترا با رام بینم یا نه بینم بار دیگر سیتا اشک ریخته گفت من در دریای گوداوری غرق خواهم شد یا زهر خورده خود را هلاک شوم یا در آتش بسوزم بی رامچند نخواهم زیست لچهمن سیتا را بدینسان دیده تسلی کرده دست بسته قدری سر فرود کرده نمسکار نموده بار بار بسمت او نظر کنان طرف رام روان شد درینجا صورت جنگل

و سیتا در مکان نشسته و لچهمن کمان بکف گرفته رو بتفحص میرود

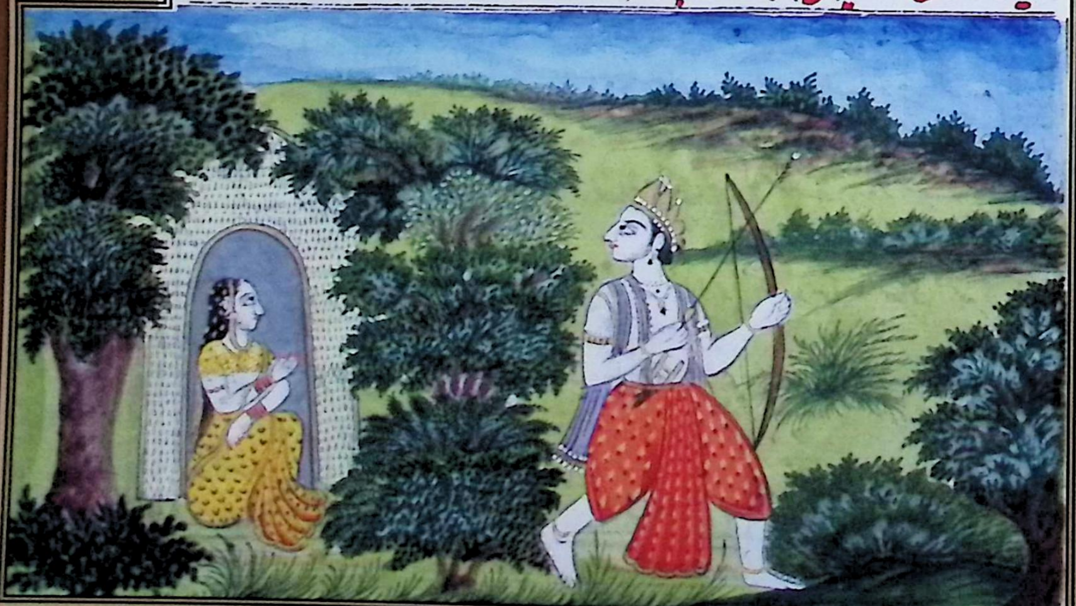

और धोखे से राम के साथ रहे हो और भरत ने मुझे लेने के लिये भेजा है मैं कैसे रामचन्द्र को छोड़कर किसी दूसरे की इच्छा करूँ ?उन्होंने पुनः रोते हुए कहा; "मैं जानती हूँ कि राम मार दिये गये हैं।" लक्ष्मण ने करबद्ध कहा "मैं उत्तर नहीं दे सकता क्योंकि आप मेरे अधीन हैं और इस प्रकार की बात आपको शोभा नहीं देती। लेकिन तीनों लोक में स्त्रियों का यही स्वभाव है कि सत्य और न्याय को दूर करती है और धोखा खाती हैं तथा पति और उसके शुभचिन्तक में शत्रुता उत्पन्न करवाती हैं। वन के यह समस्त निवासी साक्षी हैं और सुन रहे हैं कि मैंने आपको सम्मान के अनुसार ही बात कही और आप मेरी निन्दा कर रही हैं। चूँकि आपने मुझे बुरा कहा इसलिये मेरा मर जाना ही उचित है। मैं गुरू के कथन पर स्थिर था लेकिन अब मैं विवश होकर वहाँ जा रहा हूँ जहाँ राम हैं। और आपसे विदा होता हूँ। वन के सारे देवता आपकी रक्षा करेंगे। मुझे अपशकुन दिख रहा है। क्या मालूम वापस आकर आपको राम के साथ देखूँ या न देखूँ। सीता ने पुनः आँसू बहाते हुए कहा मैं गोदावरी नदी में डूब जाऊँगी या विष खाकर मर जाऊँगी या अग्नि में जल जाऊँगी लेकिन बिना राम के मैं जीवित नहीं रह सकती। लक्ष्मण सीता को इस प्रकार देखकर उन्हें सांत्वना देते हुए करबद्ध शिर झुकाकर उनको नमस्कार करते हुए और उनकी ओर बार-बार देखते हुए राम की ओर चल दिये।

वन का चित्र सीता अपने स्थान पर बैठी हुईं हैं और लक्ष्मण धनुष लिए हुए पीछे की ओर मुड़कर देखते हुए जा रहे हैं।

سرک رفتن لچهمن و آمدن راون چون لچهمن روان شد در این اثنا راون قابو یافته بلباس
ابهیاگت یعنی مسافر پیش سیتا در رسید چنانکه بعد غایب شدن مهر و ماه طلام برسد
و سیتا را بی رامچندر مانند روهنی بی چندر نظر کرد و از خوف راون درختان آنجا در
جنبش آمدند و باد از حرکت بماند و جانداران دریا از خوف او در ته کوداوری رفتند
راون در غیبت رام بر سیتا چنان آمد که بچتر از حل آید و در اصل بدمرد بطریق نیکان آید
چنانچه چاه از کاه انباشته شود و سیتا ابلیه رام را که روی او مانند ماه و دندان و لب
خوشنما در برن شالا نشسته غمگین نظر میکرد و راون نزدیک او که پارچه زرد پوشیده بود
رسید و برهمن گونه که آواز گدایان باشد نمود و گفت تمام وجود تو خوب و بانند لچهمی هستی
و کالبد تو زیباست و پستان تو خوشنما و برابر و فریبنده دلکشانند بدندان خوش
و چشم جادو دل مرا میفریبی و باین رنگ طلائی با زرد پارچه کیستی یا ربی یا سری
یا کیرتی یا لچهمی یا بهوتی یا رتی زیرا که نوک دندان تو برابر و سفید اند و چشم کلان
و مردمک سیاه اند و زیر زانوهای تو کلان و بران تو پر گوشت مانند دست فیل اند موی تو
خوش و پستان تو سخت اند بدین شکل هیچ زن از دیوی و گندهربی و انسری و کنری ندیده ام
تو با این حسن و نوجوانی درین صحرا چرا میباشی در اینجا بودن تو لائق نیست درینجا راچهسان خوفناک
و کامروپی میباشند و مکانات دلکش و باغهای خوش و محلهای خوب و اسواب و پیرایههای اسلوب

सर्ग-४६

लक्ष्मण का जाना और रावण का आना

जब लक्ष्मण चले गये तो इसी मध्य रावण को अवसर मिल गया और वह एक संन्यासी के रूप में सीता के पास पहुँचा जिस प्रकार कि सूर्य व चन्द्रमा के छुपने के बाद अंधेरा हो जाता है। सीता को उसने राम के बिना रामचन्द्र के ऐसा पाया जैसे कि रोहणी बिना चन्द्र के। रावण के भय से वहाँ के वृक्ष हिलने लगे, वायु रुक गयी नदी के जीवधारी उसके भय से गोदावरी नदी की तल से चले गये। रावण राम की अनुपस्थिति में सीता के पास ऐसे आया जैसे कि शनिश्चर ग्रह चित्रा के सामने आता है। वास्तव में वह बुरा मनुष्य पुण्य के मार्ग पर था जैसे कि कुँआ घास से ढांक दिया जाता है और राम की पत्नी सीता जिसका मुख चन्द्रमा के समान था, जिसके दाँत और होंठ सुन्दर थे पर्णशाला में बैठी दुखी दिखाई दे रही थी। रावण जिसने पीले वस्त्र पहन रखे थे उसके निकट पहुँचा और ब्रह्म घोष जो भिक्षुकों की आवाज़ होती है प्रकट की, और कहा तुम पूर्ण रूप से सुन्दर हो, तुम लक्ष्मी के समान हो, तुम्हारा शरीर सुन्दर है तुम्हारे स्तन सुन्दर सुडौल, आसक्त करने वाले और मन को आकर्षित करने वाले हैं, तुम अपने सुन्दर दाँतों और मायावी नेत्रों से मुझे आसक्त कर रही हो। इस रंग रूप के साथ तुम कौन हो ?यार हो, शीरीं हो, कीर्ति हो, लक्ष्मी हो, भवानी हो या भारती ?क्योंकि तुम्हारे दाँतों की नोंक बराबर और श्वेत है, नेत्र बड़े, पुतली काली है। तुम्हारे कूल्हे बड़े और रान पर मांस हाथी के हाथ के समान है। तुम्हारे केश सुन्दर और स्तन कठोर हैं मैंने ऐसी कोई स्त्री, देवी, गन्धर्वी, अप्सरा और कज़ी नहीं देखी है। तुम इस सुन्दर यौवन के साथ वन में क्यों रहती हो, तुम्हारा यहाँ रहना उचित नहीं लगता है। यहाँ राक्षस भयानक और कामरूप रहते हैं

لایق تست و شوهر فائق باید چه تو از رودران با مرقتان و بسوان هستی مرا از دو تا

مینماهی و اینجا چگونه آمده در اینجا اژدرها و شیران و اُچهسان وغیره خونخواران میباشند تو

نمیترسی که اینجا فیلان مانند کوه ها میرسند از اولاد کیستی و برای چه در دندک تنها میباشی سیتا

راون را بلباس برهمن گدا دانسته اکرام نمود و پرستش او بجا آورد و آسن برای نشستن داد

و پاد یعنی آب برای شستن پا وغیره داد و گفت ایک خوردنی برای تو موجود ست نخور

راون باراده برداشته بردن او گفت که قبول کردم و سیتا در انتظار رام و لچهمن

که بشکار رفته بود سمت صحرا نظر میکرد و گرفته بردن خود نمیدانست درینجا صورت سیتا

در پرن شالا نشسته دست دراز کرده و راون بصورت فقیران جتا بر سر دست دراز کرده

بنگاه دزدیده جیزی میکرد و می بیند

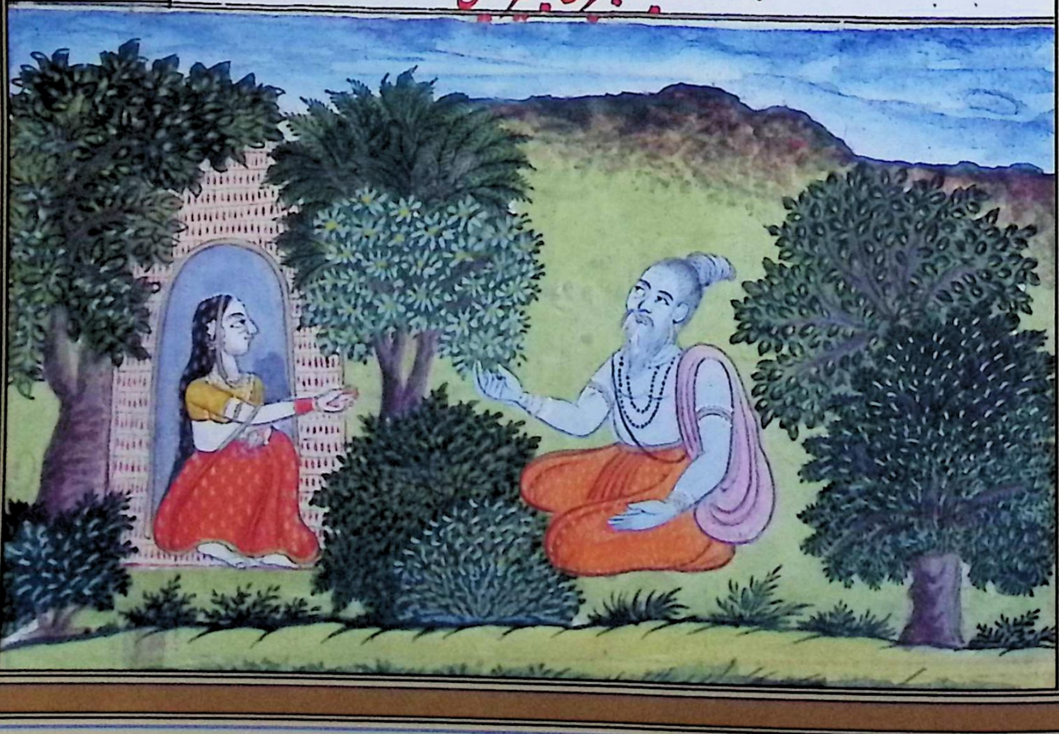

तुम्हारे योग्य तो आकर्षक भवन, अच्छे उपवन, सुन्दर हार, अच्छे वस्त्र और पारचे हैं और पति को श्रेष्ठ होना चाहिए क्योंकि तुम रुद्रों में से हो और मुझे देवताओं में से दिखाई देती हो। तुम यहाँ क्यों आयी हो ?यहाँ तो अजगर, शेर और भयंकर राक्षस आदि रहते हैं। क्या तुम डरती नहीं हो कि यहाँ हाथी पर्वतों के समान आते हैं। तुम किसकी सन्तान हो और कौन हो तथा किसलिये दण्डकारण्य में अकेली रहती हो ?सीता ने रावण को ब्राह्मण के वस्त्र में भिक्षुक समझते हुए उसका सम्मान किया और उसकी पूजा की तथा बैठने के लिये आसन दिया और पाँव आदि धोने के लिए पानी दिया एवं कहा; भोजन है खा लीजिये। रावण ने उसे उठा ले जाने के विचार से कहा कि मैंने स्वीकार किया और सीता राम और लक्ष्मण की प्रतीक्षा में, जो शिकार के लिये गये थे, वन की ओर देख रही थी और अपने उठा ले जाने के षडयंत्र को नहीं जान रही थी।

सीता का चित्र जो पर्णशाला (कुटिया) में बैठी है। हाथ फैलाये हुए और रावण भिक्षुकों के वेष में हाथ फैलाये हुए चोरी से कुछ ले रहा है और देख भी रहा है।

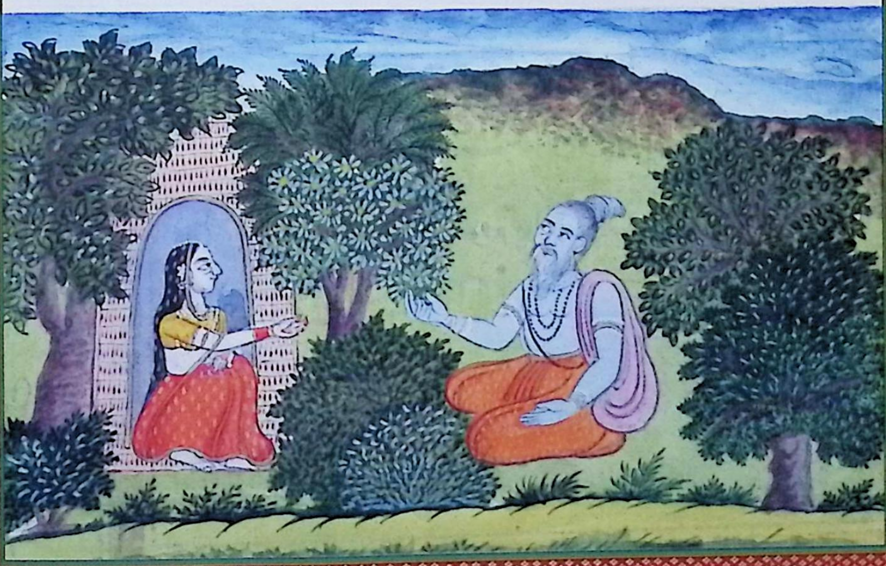

کس گفتار سیتا راون چون پیش ازین نسب و نسل سیتا پرسیده بود او و غابا اورا نفهمیده چنان گفت من دختر جنک ام که راجه متهلاست و سیتا نام من است و زوجه رامچندر ام تا دوازده سال در خانه خسر خود که راجه دشرته بود با نواع عیش و عشرت و آسایش و راحت گذرانیدیم در سال سیزدهم باستصواب منتریان خواست تا شوهر مرا راج دهد کیکئی نام خوشدامنه اوسط من از راجه عوض بر بدر کردن شوهر من بصحرا درخواست کرد و گفت نخورم و نخوابم و نه بر گردم بلکه جان خود را میدهم اگر رام را راج دهی ازین گفتار کیکئی خسر من مضطرب شده و دران وقت شوهر من بعمر بیست و هفت سال بود و عمر من هژده ساله و شوهر من که هنرمند و راست کار و کلان چشم و دراز دست و خیرخواه جمیع ذی حیات هست اورا پدرش برای خاطر کیکئی راج نداد و کیکئی با شوهر من چنان گفت که پدر تو مرا چنین بر داده که راج بهرت را دادن و ترا تا چهارده سال در صحرا بودن هست بنا بران تو بصحرا برو و پدر خود را ازین قرض خلاص کن رام ازین هیچ ترس ننموده قبول کرد و اراده رفتن صحرا نمود زیرا که بخشیده باز نگرفتن و راست گفتن و دروغ نگفتن این برت رام هست و برادر او لچهمن نام بطریق مددگاری همراه شد حالا ما هر سه از راج افتاده بسبب کیکئی در صحرا میگذرانیم تو مهورتی اینجا باش شوهر من اثمار جنگلی گرفته می آید تو هم نام و نسب خود را بگوی ای برهمن تو تنها

درونه کارن

सर्ग-४७

सीता की वार्ता

रावण ने चूँकि इससे पहले सीता के वंश के विषय में पूछा था। उन्होंने उसके छल को न समझते हुए कहा मैं जनक की पुत्री हूँ जो मिथला के राजा हैं और मेरा नाम सीता है तथा रामचन्द्र की पत्नी हूँ। बारह वर्ष तक अपने ससुर के महल में जो राजा दशरथ है हर प्रकार की सुख सुविधाओं के साथ बिताये। तेरहवें वर्ष राजा ने मंत्रियों के परामर्श से चाहा कि मेरे पति को राज्य दे। मेरी बीच वाली सास कैकेयी ने राजा से मेरे पति को वनवास भेजने की विनती की और कहा कि न मैं खाऊँगी न मैं पिऊँगी और न स्नान करूँगी अपितु अपने प्राण दे दूँगी यदि आप राम को राजगद्दी देंगे। कैकेयी की इस बात से मेरे ससुर चिन्तित हुए। उस समय मेरे पति की आयु २७ वर्ष थी और मेरी आयु अट्ठारह वर्ष और मेरे पति जो गुणी, सत्यवादी, बड़े-बड़े नेत्रों वाले, दानी और समस्त जीवधारियों के शुभचिन्तक हैं उनको उनके पिता ने कैकेयी के लिए राज्य नहीं दिया और कैकेयी ने मेरे पति से कहा कि तुम्हारे पिता ने मुझे वचन दिया है कि राज्य भरत को देना है और तुम्हें चौदह वर्ष तक वन में रहना है। अतः तुम वन में चले जाओ और अपने पिता को इस ऋण से मुक्त करो। राम उससे तनिक भी भयभीत न होते हुए। उसको स्वीकार किया और वन जाने का निश्चय किया। क्योंकि दी हुई वस्तु पुनः न लेना, सत्य बोलना झूठ न बोलना यह राम का नियम है और उनके भाई लक्ष्मण भी सहायक के रूप में साथ हो लिये। अब हम तीनों राज्य से दूर पड़े हुए कैकेयी के कारण से वन में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप कुछ देर रुकिये मेरे पति जंगली फल लेकर आते ही होंगे आप भी अपना नाम व वंश तब तक बताइये।

در دند کارن چرا آمدي چون سیتا اینچنین بر زبان راند راون در جواب گفت
از کسی که همه دیوتا و چر و اچر یعنی آنها که از جا حرکت میکنند و نمیکنند همه لوک خوف
میخورند من آن راون نام سردار راچهسانم و ترا برنگ زرین و با پارچه های زرد دیده
از عورات خود دل برداشتم و مرا بسیار زنان هستند آنهمه را تو بانو خواهی شد
آنسوی جزیره سمدر بر قله کوه لنکا نام شهر ست بمقدار سي جوجن یعنی یکصد و بیست گروه
آیت دارد یعنی طول و لفظ آیت بلندی را هم قیاس توان نمود و آنرا بشوکرمان بنا کرده
در انجا راچهسان مانند ابر سیاه رنگ میباشند آنجا با من در باغها تفرج خواهی کرد
لهذا اهلیه من شو راون چون این سخن بگفت سیتا مذمت گفتار او کرده گفت رام
که بسیار زور و متحمل مانند کوه و ژرف مانند سمدر است من پرستار اویم و رام که مانند
ماه چهاردهم روی دارد و مسخر کننده حواس است و کلان کیرت و بسیار قوتست
من پرستار اویم و رام که دراز دست و کلان دوش و چون شیر روش دارد پرستار
اویم و تو مثل شغال بوده مرا میخواهی آن طاقت نداري که مرا بدست آري چنانچه روشنی
آفتاب بدست کس نیاید تو میخواهی که آتش را تلمیس کنی یا هلاهل را خوری که مرا میخواهی
مگر در چشم خود سوزن میزني یا کارد را از زبان میلیسی که عورت عزیز رام را میخواهی
قبائل خود بدبن شیر چون میدهی یا شیر خفته را بپاره عروه بیدار میکنی و تفاوتی که

हे ब्राह्मण ! आप दण्डकारण्य में अकेले क्यों आये हो ?सीता ने जब यह बात कही तो तो रावण ने उत्तर में कहा; जिससे कि सारे देवता और चर-अचर अर्थात् अपने स्थान से हिलने वाले और न हिलने वाले सारे लोग भय खाते हैं।

मैं वह रावण हूँ राक्षसों का सरदार और मैंने तुझे सुनहरे रंग और पीले वस्त्रों में देखकर अपनी स्त्रियों से विमुख हो गया हूँ। मेरी बहुत सी पत्नियाँ हैं। तुम उन सबकी पटरानी होगी। वहाँ समुन्द्र के द्वीप की ओर पर्वत की चोटी पर लंका नामक एक शहर है। तीस जोजन अर्थात् एक सौ बीस कोस लम्बाई रखता है और लम्बाई से ऊँचाई को मापा जा सकता है। इसे विश्वकर्मा ने निर्मित किया है। वहाँ राक्षस बादलों के रंग के समान रहते हैं। वहाँ तू मेरे साथ उपवन में सैर करेगी अतः मेरी पत्नी बन जा। रावण ने जब यह बात कही तो सीता ने उसकी बात की निन्दा करते हुए कहा कि ''राम जो पर्वत के समान बलवान, धैर्यवान और समुद्र के समान बड़े दिल वाले हैं, मैं उनकी पूजा करती हूँ, जिनका मुख चौदहवीं के चाँद के समान है, जो इन्द्रियों पर नियंत्रण रखते हैं, बड़ी कीर्ति करने वाले और बहुत शक्तिशाली हैं मैं उनकी पुजारिन हूँ। जो राम कि लम्बे हाथ वाले, बड़े कन्धे वाले और शेर के समान हैं, मैं उनकी पूजा करती हूँ और तुम गीदड़ की भाँति मुझे चाहते हो, तुम्हारे भीतर वह शक्ति नहीं है कि मुझे प्राप्त कर सको। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश किसी के हाथ में नहीं आता है तुम चाहते हो कि मुझे हाथ लगाओ या विष खाओ कि मुझे चाहते हो। अपितु तुम अपनी आँख में सूई मार रहे हो या छुरी अपनी जीभ से चाट रहे हो कि राम की प्रिय स्त्री के इच्छुक हो। तुम अपने कबीले को भयंकर शेर के मुँह में दे रहे हो या सोये शेर को जगा रहे हो।

میان شیر و شغال بود و تفاوتیکه میان سمندر و دریاچه شهری بود و فرقی که میان بادشاه و سپاهی بود همچنان تفاوت میان تو و رام ست و تفاوتی که میان زر و سرب و طلا و آهن و صندل و گل و فیل و گربه و میان زاغ و کرر و کلاغ و طاؤس و سارس و کده بود همچنان تفاوت میان تو و رام است از ان رامچندر اندر مانند مرا کشیده گرفته هضم نتوانی کرد چنانکه ماهی بحر را نتواند فرو برد اینقدر گفت سیتا در لرزه در آمد بنوعیکه درخت کدلی از فیل بلرزد و راون که مانند مرگ بود او را بدان نوع دید

برای خوف افزودن او کل یعنی نسل و نژاد خود به بیان در آورد درینجا صورت مکان رام و درختان و آشرم و سیتا بطور لباس سابق و راون بصورت برهمن آمده

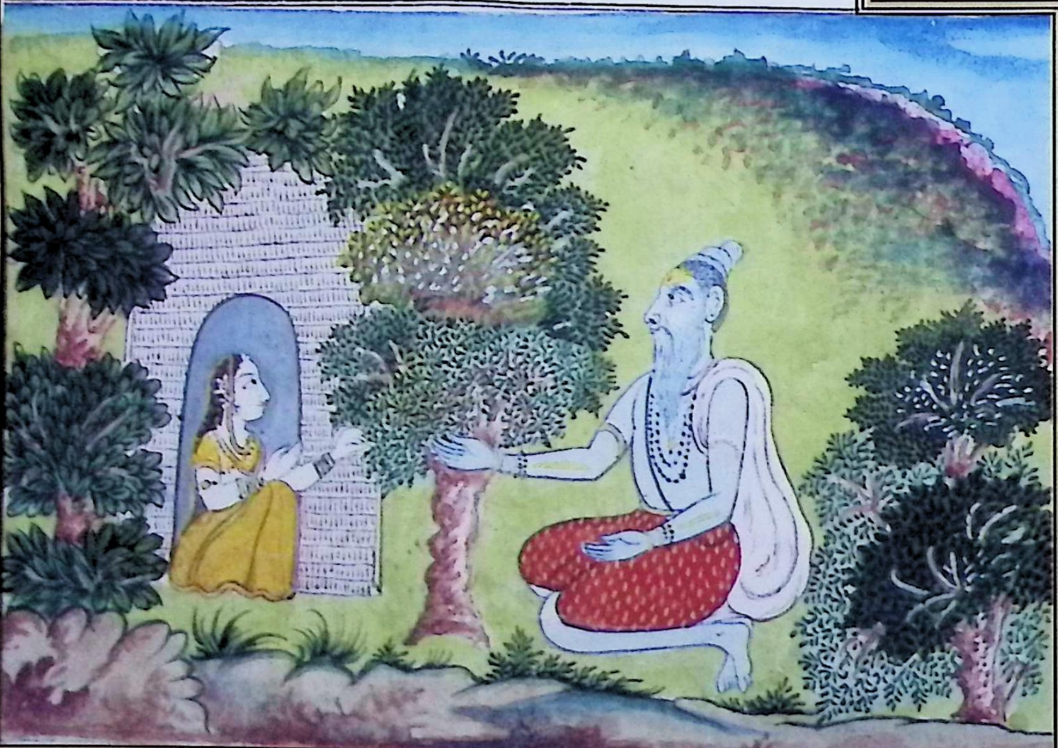

مرکب گفتار راون

जो अन्तर शेर और गीदड़ में होता है, जो अन्तर कि समुन्द्र और किसी शहर की छोटी नदी में होता है, जो अन्तर कि राजा और सिपाही में होता है वही अन्तर तुम्हारे और राम के मध्य है। या कि जो अन्तर सोने और पीतल में, सोने और लोहे में, सन्दल और मिट्टी में, हाथी और बिल्ली में, कौए और बुलबुल में, कौए और मोर, सारस और गिद्ध में होता है वैसा ही अन्तर तुम में और राम में है। उस इन्द्र की भांति राम से मुझे छीनकर पचा नहीं सकोगे। जैसे कि मछली जल को नहीं छोड़ सकती है।" सीता यह कहते हुए काँपने लगी जैसे कि कोई साधारण वृक्ष हाथी से हिलता है और रावण ने जो मृत्यु के समान था उसको इस प्रकार देखकर उसका भय और बढ़ाने के लिये अपने वंश और शक्ति का वर्णन किया।

राम का भवन, वृक्ष और आश्रम का चित्र– सीता पूर्व जैसे वस्त्र में हैं और रावण ब्राह्मण के वेष में आया है।

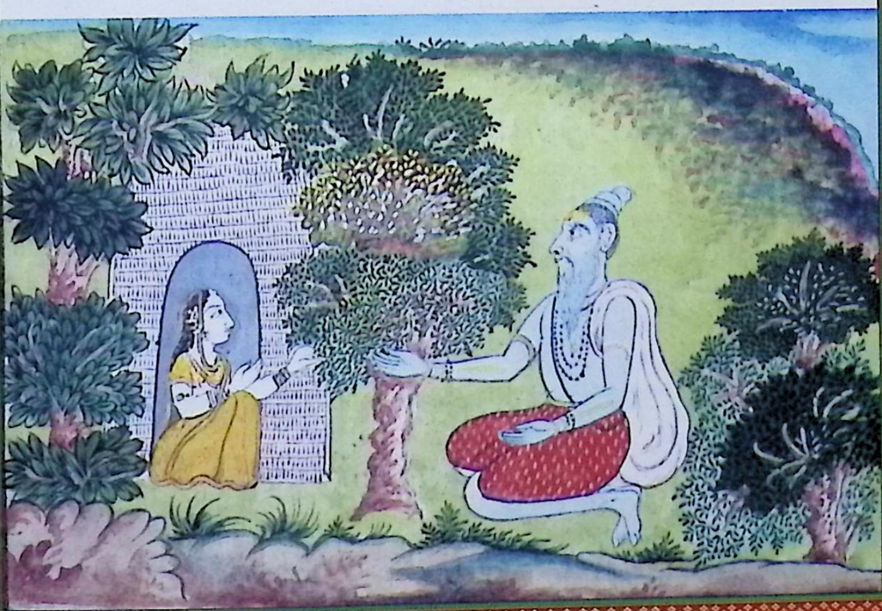

سرک گفت رراون راون گفت من برادر ساتین کبیر هستم و ساتین آن شد باکه یک
شوهر را دو عورت بود اولاد یکدگر ساتین باشد و راون نام من ست ده سر دارم و
از ترس من دیوتا و کند هرپ و پشاج و طیور و ماران میگریزند چنانچه مردم از مرگ خوف خوراند
من کبیر در جنگ ظفر یافته ام و او از خوف من مکان خود را گذاشته در کیلاس کوه رفته
اقامت کرده و بمان پهپک نام از و گرفتم بر و سوار شده هرجا که خواهم میروم هرگاه در غصه
میشوم جمیع دیحیات روی مرا دیده هر طرف میگریزند و جایکه اقامت میکنم آنجا باد
میترسد و آفتاب از خوف من مانند ماهتاب شعاع سرد میگذارد و برگ درختان حرکت
نمیکنند و دریاها از روانی باز مانند و آنطرف دریای شور لنکا نام شهر من ست مانند
امراوتی اندرو گرد نواح او سفید ست و قلعه آن از طلا و تورن یعنی بندروار دروازه هائی ختی
از بیدوره جواهر سبز و یاقوت سرخ ست آنجا فیلان و اسپان و رتهان بیشمار و نوا
هائی بسیار و درختان آنجا چنان هستند که هر نوع ثمر که بخاطر کسی گذرد همان ثمر دهند تو آنجا
با من بوده زنان آدمیان را یاد هم نخواهی نمود آنجا خطهای آدمیانه و دیوتانه کرده رام را
که آدمی کم عمر ست یاد هم نخواهی کرد و راجه دشرته پسر عزیز خود را که بهرت بود راج داد
و رام را کم زور دانسته از شهر بدر کرد و حالا تو با ریاضت کننده از راج افتاده از شوهر رفته
چه خواهی کرد و من سردار همه راچهسان راون نام از خود آمده ام و مغلوب شهوت هستم

सर्ग-४८

रावण की वार्ता

रावण ने कहा; ''मैं बड़े सातीन का भाई हूँ और सातीन वह होता है कि एक पति की दो पत्नियाँ हों तो एक दूसरे की संतान आपस में सातीन होती हैं। मेरा नाम रावण है, मेरे दस सर हैं, और मेरे भय से देवता, गन्धर्व, पिशाच, पक्षी और सर्प भाग जाते हैं जैसे कि लोग मृत्यु से डरते हैं। मैंने बड़े सातीन (कुबेर) पर युद्ध में विजय पायी है और वह मेरे भय से अपना घर छोड़कर कैलाश पर्वत पर जाकर रह रहा है। मैंने पुष्पक नामक विमान उससे ले लिया है उस पर सवार होकर जहाँ चाहता हूँ जाता हूँ। जिस समय मैं क्रोध में होता हूँ सारे जीव मुझे देखकर चारों ओर भागते हैं। जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ हवा भी डरती है और सूर्य मेरे भय से चाँद के समान ठण्डी किरणों के साथ गुजरता है। वृक्षों के पत्ते हिलते नहीं हैं। नदी अपना बहाव भूल जाती है। उधर समुन्द्र की ओर लंका नामक मेरा शहर है। इन्द्र के अमरावती के समान चारों ओर स्वच्छ है। उसका किला सोने का है और भारी पत्थर वाला है। हरे रत्न और लाल याकूत उधर अधिकांश पाये जाते हैं। वहाँ हाथी, घोड़े और रथ अधिकांश हैं। वहाँ के वृक्ष ऐसे हैं कि हर प्रकार के फल, जो किसी के मन में भी नहीं आये होंगे, देते हैं। तुम वहाँ मेरे साथ रहते हुए मनुष्यों की स्त्रियों तक को याद नहीं करोगी। वहाँ तुम मनुष्यों और देवताओं में मनोरंजन करके राम को भी, जो नवयुवक हैं, याद नहीं करोगी। राजा दशरथ ने अपने प्रिय पुत्र भरत को राज्य दे दिया है और राम को निर्बल समझते हुए देश निकाला दे दिया है। अब तुम तपस्या करने वाले, राज्य से दूर सजग इन्द्रियों से दूर व्यक्ति के साथ क्या करोगी ?मैं सारे राक्षसों का सरदार रावण स्वयं आया हूँ और वासना से परिपूर्ण हूँ

مرا پابوس مکردان و الا ندامت کشی سیتا گفت اگر تو برادر کبیر که مخدوم جمیع دیکیاست
هستی چرا خلاف روش میکنی البته جمیع راچهسان هلاک خواهند شد آنان را که
مثل تو سردار بیعقل و مغلوب حواس ست اگر شچی نام اهلیه اندر را بیاری
شاید که هم زنده باشی اما اهلیه رام را گرفته زنده نخواهی ماند جا دولت و اقبال کلانرا

گذاشته از تیرهای لچهمن البته نزد جم خواهی رفت درینجا صورت مکان و درختان
و جانوران و سیتا با پیرایهٔ سابق و راون صورت خود ده سر ظاهر نموده

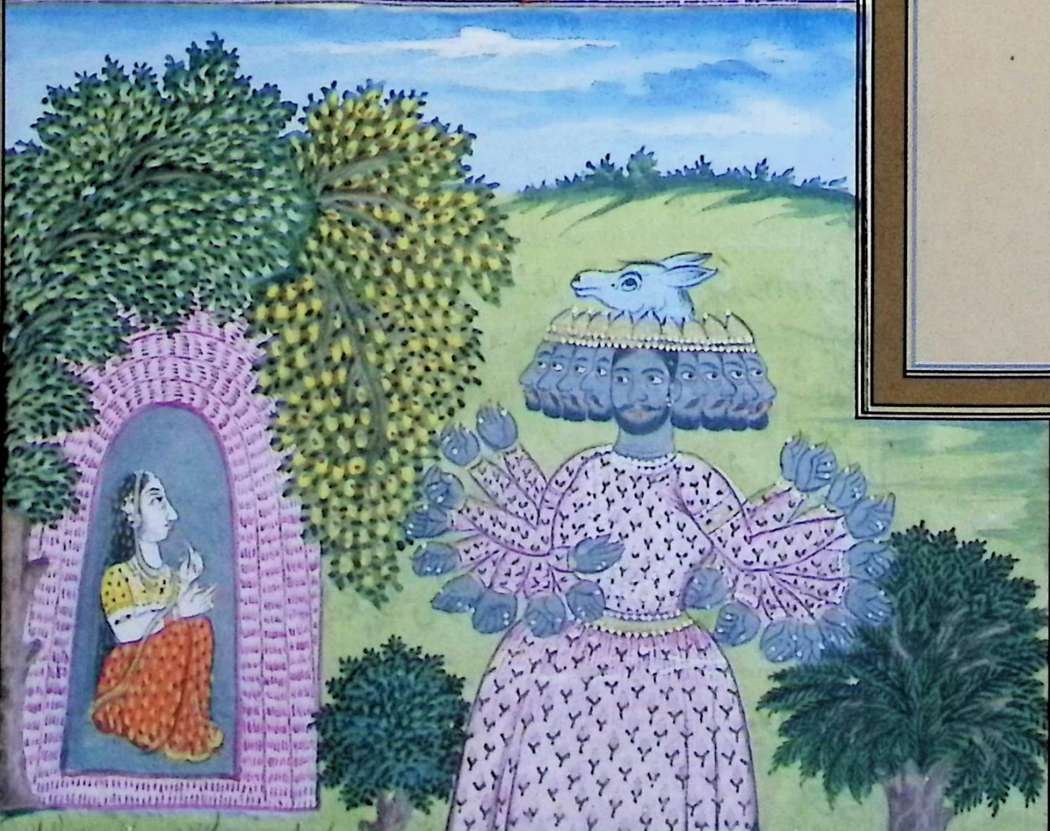

मुझे निराश मत करो अन्यथा तुम्हें पश्चाताप होगा।'' सीता ने कहा; तू कुबेर का भाई है जो समस्त जीवों का पालक है। क्योंकि तुम उसके विरुद्ध कार्य कर रहे हो निःसन्देह इस कार्य से सारे राक्षस मारे जायेंगे। जिनका सरदार तुम जैसा बुद्धिहीन और वासना से ग्रसित है यदि तुम शची नामी इन्द्र की पत्नी को लाओ तो संभवतः जीवित रहो लेकिन तुम राम की पत्नी को लेकर जीवित नहीं रहोगे। धन, दौलत मान, सम्मान को छोड़कर लक्ष्मण के बाण खाकर तुम निःसन्देह मृत्युलोक पहुँच जाओगे।

भवन, वृक्ष और पशुओं का चित्र– सीता पहले के समान हैं और रावण ने अपने दस सरों वाले रूप को प्रकट कर दिया है।

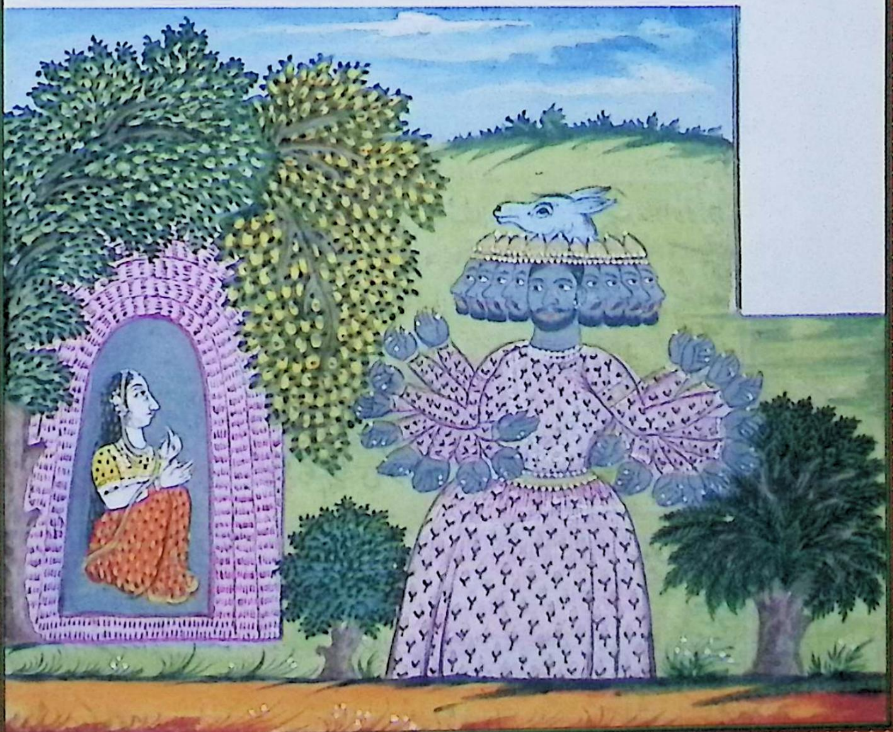

مرک بزدن سیتا گفت سیتا را شنیده راون از غصه دست را از دست سوده
وجود خود را کلان نمود و از طیش گفت تو زور مرا سرسری شنیده بخاطر نیاوردی
من بهر دو دست زمین را بردارم و آسمان را نیز و سمدر را بنوشم و مرگ را در جنگ بکشم
و آفتاب را از رفتن بند کنم و زیر زمین سوراخ نمایم و من بهر لباس که خواهم خود را بنمایم
این بگفت و لباس و صورت گدایان گذاشته بصورت خود مانند موت نمودار گشت
با چشم سرخ و کندل های طلائی و ده سر پدید شد و کمان و تیر گرفته و برنگ ابر سیاه
سرخ پارچه پوشیده پیش سیتا ایستاد و با سیتا گفت اگر سردار هر سه لوک شوهر
میخواهی مرا قبول کن من لایق توام و با رام از راج افتاده بچه هنر دوستی کرده او کودن است
و خود را عالم میداند که بمحض گفتن عورت راج را گذاشته و دوستان را ترک کرده
درین صحرا آمده مرا قبول کن ترا هیچ تصدیع نخواهد شد و طور آدمیان بگذار و با من
دوستی کن اینقدر بگفت و از دست چپ موی سر سیتا و از دست راست هر دو ران او
او بگرفت و در کنار گرفته بر رتهه خود سوار کرد و آن راون کوه مانند و تیز دندان و بسیار
زور را دیده دیوتاهای جنگل وغیره بگریختند و او بر رتهه خران سوار بوده بگفتار شور آواز
مینمود و سیتا از غم رام رام نام میکرد اما رام دور بود راون او را گرفته براه فلک روان شد
سیتا گاه رام و گاه لچهمن را آواز میکرد و میگفت ای لچهمن تو نمیدانی که راچهس عذاب کار

सर्ग-४६

सीता का ले जाना

सीता की बात सुनकर रावण ने क्रोध में अपना हाथ और अधिक बड़ा किया और क्रोध में कहा; ''तू मेरी शक्ति को साधारण समझते हुए मुझे किसी योग्य नहीं समझती। मैं दोनों हाथ से धरती उठा लेता हूँ और आकाश को भी। समुन्द्र को पी जाता हूँ और मृत्यु को युद्ध में डालता हूँ तथा सूर्य को चलने से रोक देता हूँ। पृथ्वी के नीचे छिद्र कर देता हूँ और मैं जिस रूप में चाहता हूँ स्वयं को प्रकट करता हूँ।'' उसने यह कहा और अपना और भिक्षुकों का रूप छोड़कर मृत्यु के रूप में प्रकट हुआ। लाल आँखें, सोने के कुण्डलों और दस सरों के साथ प्रकट हुआ और धनुष बाण लेकर काले बादल के समान लाल पारचा पहनकर सीता के सामने खड़ा हो गया और सीता से कहा कि ''यदि तीनों पति के सरदार को चाहती हो तो मुझे स्वीकार कर लो। मैं तुम्हारे योग्य हूँ और तुमने राजगद्दी से दूर राम से किस गुण के कारण मित्रता की है। वह बच्चा है और स्वयं को ज्ञानी जानता है कि केवल स्त्री के कहने से राजगद्दी और मित्रों को छोड़कर इस वन में चला गया। मुझे स्वीकार कर लो, तुझे कोई चिन्ता नहीं होगी। मनुष्यों का नियम छोड़ और मेरे साथ मित्रता कर'' उसने यह कहा और बाए हाथ से सीता के सर के बाल और दाहिने हाथ से उनकी दोनों जांघें पकड़ लीं और गोद में लेकर रथ पर सवार कर लिया। पर्वत के समान तेज़ दांतों वाले और बहुत अधिक शक्ति वाले रावण को देखकर वन के देवता आदि सब भाग गये और वह गधों के रथ पर सवार था। बोलने में कोलाहल करने के समान आवाज़ निकलती थी और सीता दुख के कारण राम-राम कर रही थीं लेकिन राम दूर थे और रावण उन्हें लेकर आकाश के मार्ग से चला। सीता कभी राम को कभी लक्ष्मण को पुकारती थीं और कहती थीं :

مرا میبرد داز اد هرم میبرد ای رام توکه بدر وهتا زانز امیدهی این راچراس ز امیدهی
از انجا که کرده خویش بپیش می آید یقین که راون هم از دست رام بزودی کشته شود و حالا کی را
مراد حاصل باد که اهلیه رام را چهن میبرد و کلهای کرنکا این مکان جن استهان است میشنوید
نزد برام بگوئید که سیتا را راون برد ای دندک و کوه ها شمار انبسار باد ای گوداوری که هنس
وسارس بر کنار داری برام بگوئید که سیتا را راون برد بهرد یوتا این صحرا و درختان و هر
ذیحیات و هرچه هست بشما التماس میکنم که برام بگوئید که سیتا را راون برد و مرا بزور بجانه جم
خواهد فرستاد واهی جتایو نام کده اینحال من برام و لچهمن بگوئی که راون بعقل براد کبیر سیتا را

برده است درینجا صورت درختی و زیر او جتایو نشسته و راون بر رته خران سوار گردیده سیتا را
هوکنان برداشته بر رته سوار کرده

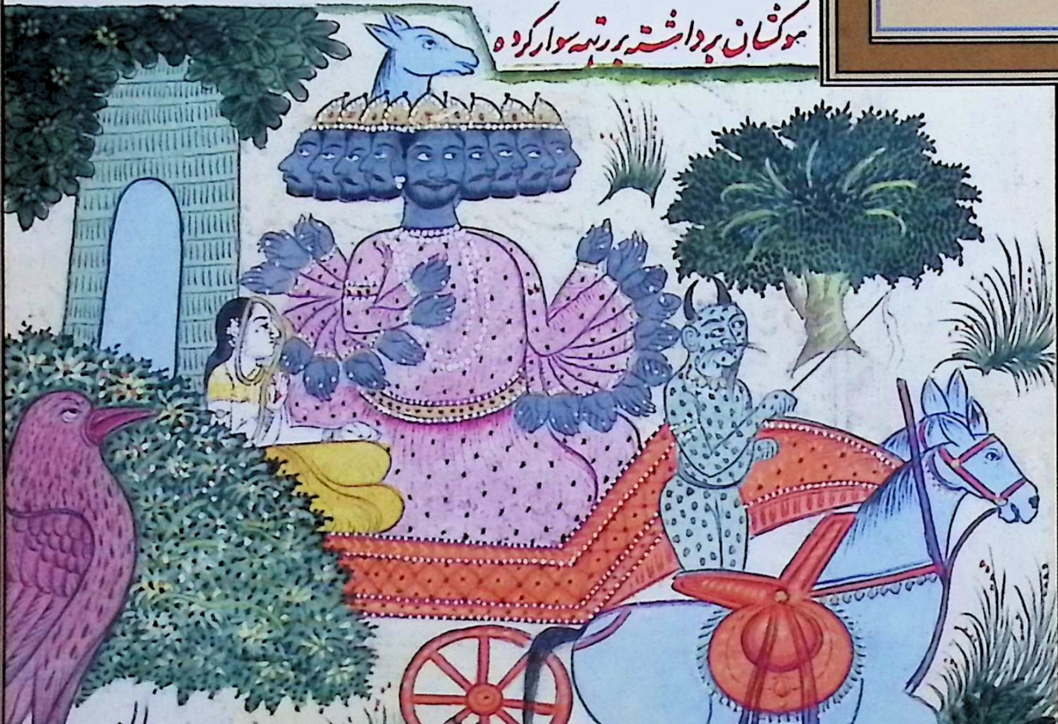

हे लक्ष्मण ! "तुम नहीं जानते कि पापी राक्षस मुझे ले जा रहा है और अन्यायपूर्वक ले जा रहा है। और हे राम आप जो कि गलत कार्य करने वालों को दण्ड देते हैं उसे क्यों दंड नहीं दे रहे हैं ?चूँकि अपने किये का फल अवश्य मिलता है। इसलिए विश्वास है कि रावण भी राम के द्वारा मारा जायेगा। अब कैकेयी की इच्छा पूरी होगी कि राम की पत्नी को राक्षस ले जा रहा है। जिनों वाले स्थान की धरती के रंगारंग फूल जो सुन रहे हों, शीघ्र राम से कहो कि सीता को रावण ले गया। ऐ वन्दक और पर्वतों ! तुम्हें नमस्कार करती हूँ और ऐ गोदावरी कि किनारे पर हंस और सारस शीघ्र ही राम से कहो कि सीता को रावण ले गया है। मैं इस वन के प्रत्येक देवता से, वृक्षों से और प्रत्येक जीव से जो कि हैं, मैं निवेदन करती हूँ कि राम से कहो कि सीता को रावण ले गया और मुझे मृत्युलोक भेज देगा। जटायु गिद्ध मेरी यह दशा राम व लक्ष्मण से कहो कि कुबेर का भाई मूर्ख रावण सीता को ले गया है।

एक वृक्ष का चित्र जिसके नीचे जटायु बैठा है, रावण गिद्धों के रथ पर सवार है और सीता को बाल से खींचते हुए उठाकर रथ पर सवार कर रहा है।

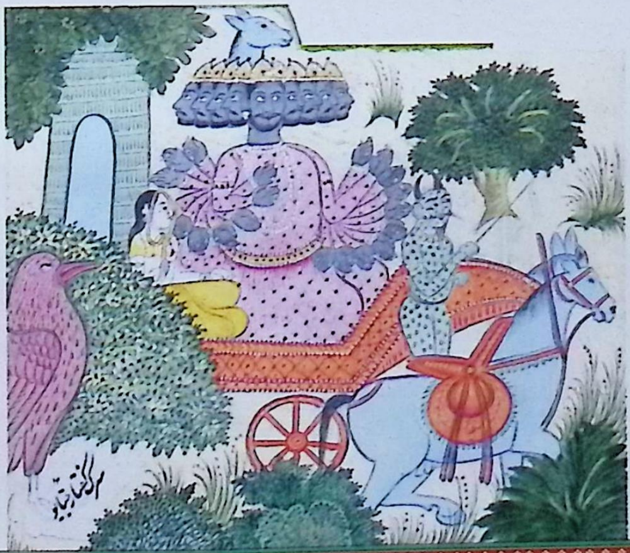

سرک کفت رجنابو درین اثنا جتایو که این را شنیده مانند کوه با منقار تیز
در رسید و براون کفت ای ده سر دهرم کن من جتایو نام راجه کدها ام و راجه همه لوک
مانند اندر و برن رام ولد دشرته هست این سیتا اهلیه اوست که تو میبری راجه دهرم
دان بوده عورت غیر را چرا میکیری بکذار بکذار و من بروش نیک میکویم اکر سیتا را
نکذاری از رتبه ترا فرود می اندازم چنان کار مکن که مذموم دیکران باشد چنانچه
خود در محافظت زن خود میکوشی همچنان غیر را هم باید دانست با عورت خود معاشرت
کن هر که از زور شهوة خود را نکاه نمیدارد دیر نپاید خواه برای زر خواه برای شهوت هر که
خلاف شاستر کند آن راجه از دهرم می افتد و راجه دهرم و کام سمدر میباشد و باعث راجه هر کار
نیک و بد میشود ای غدار کار سیتا را بکذار که رام با تو بدی نکرده تو با او چرا بدی میکنی چون کهر
از کفته سورپنکهی آمد و با رام کستاخی و دلیری از حد کذرانید تا کشته شد اکنون مزاحم سیتا
مشو شاید که رام ترا بچشم خشم دیده سوخته کند تو مار را در پارچه می بندی و نمیدانی که در
کلو بند مرک می اندازی و نمی بینی آن مار را باید برداشت که ازان تصدیع نشود و آن طعام باید خورد
که هضم کردد و از کاری که نه دهرم نه کیرت نه جس شود و آن از وجود خود بوقوع آید عاقل آنرا
چکونه کند و عمر من شصت هزار سال کذشته و بر راج آبا و اجداد خود با حسن وجوه مستقیم
بوده ام اما عورت غیر را کرفتن ندیده ام نشنیده ام من پیرم و تو جوان و رتهه و کمان

सर्ग-५०

जटायु की वार्ता

इसी मध्य जटायु गिद्ध उसको सुनकर पर्वत के समान तेज़ चोंच के साथ पहुँच गया और रावण से कहा ''ऐ दस सर वाले धर्मकर! मैं गिद्धों का राजा जटायु हूँ और सारे लोक का राजा इन्द्र और वरुण के समान दशरथ का पुत्र राम है। यह सीता उसकी पत्नी है जिसे तुम ले जा रहे हो इसे छोड़ दे, छोड़ दे। मैं भलाई में कह रहा हूँ। यदि तुम सीता को नहीं छोड़ोगे तो में तुम्हें रथ से नीचे गिरा दूँगा। ऐसा कार्य मत करो जो दूसरों के निकट निन्दनीय हो। जिस प्रकार तुम अपनी पत्नी की रक्षा करने का प्रयास करते हो उसी प्रकार दूसरों को भी समझना चाहिये। अपनी स्त्री के साथ रहो। जो व्यक्ति वासना के बल से अपने को सुरक्षित नहीं रखता उसका भला नहीं होता है चाहे धन के लिये चाहे संभोग के लिये। जो व्यक्ति शास्त्र के विरुद्ध कार्य करता है। वह राजा धर्म से गिर जाता है। धर्म और काम वाला राजा समुन्द्र होता है। राजा का कृत्य अच्छे और बुरे का कारण होता है। ऐ पापी ! सीता को छोड़ दे क्योंकि राम ने तेरे साथ बुरा नहीं किया है। तू क्यों उसके साथ बुरा करता है ?खर सूपनखा के कहने से आया और राम के साथ उसकी धृष्टता और दुस्साहस इतना बढ़ गया तो मारा गया। अब तुम सीता के न बनो अन्यथा हो सकता है कि राम तुम्हें क्रोध की दृष्टि से देखकर जला डालें। तुम आस्तीन में सांप पाल रहे हो और नहीं जानते हो कि गुलुबन्द से दूर मौत फेंक रहे हो और नहीं देखते हो कि उस सर्प को उठाना चाहिये कि जिससे कष्ट न हो और वह भोजन करना चाहिए जो पच जाये। और जो काम कि उससे न धर्म हो, न कीर्ति हो, न प्रसन्नता हो और वह अपने आपसे स्वयं उत्पन्न हो तो कोई बुद्धिमान कैसे वह कार्य करे। मेरी आयु साठ हज़ार वर्ष बीत चुकी है और मैं अपने पुरखों के राज्य पर भली प्रकार स्थिर हूँ लेकिन मैंने किसी अजनबी की स्त्री की ओर नहीं देखा और न सुना है। मैं वृद्ध हूँ तुम नवयुवक,

وجوشن داري با وجود من سيتا را گرفته سلامت نروي چنانچه شود در شرت بيد خواند
اگر مردي ساعتي باش وجنگ كن كه حالا بر زمين مرده مي افتي مانند كهر برادر خود ان را انجنبد
كه در جنگ دنت ودانوان را كشته زود مي آيد وترا ميكشد چكنم كه آن هر دو برادر دور تر رفتند
والا بسرعت ميكشتند وبا وجود زندگي من هم سيتا را نتواني برد ومرا البته بجان ودل كار
دشرتهه ورام بايد كرد ودمي باش ومهورتي با من جنگ كن وزور من به بين كه سيتا را از تو

خلاص ميكنم درينجا صورت رتهه راون وخران جگر دريده وسارتهي كشته وراون
بر رتهه ايستاده ودهوجا وچتر شكسته افتاده وكمان كشيده تير اندازي ميكند وجتايو
.قد كلان با منقار وچنگ جنگ وستيزه آغاز نموده وزخمها در بغل راون زده

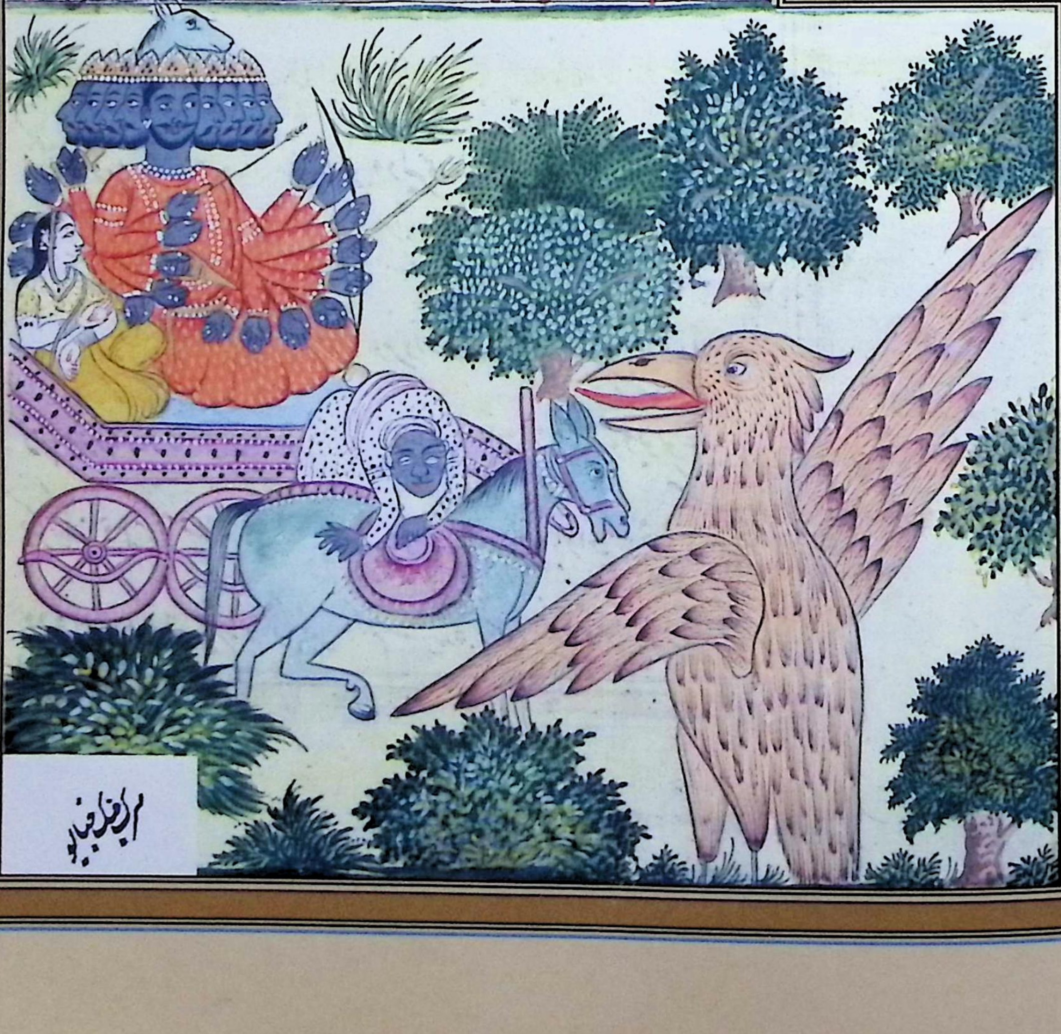

धनुष और बाण लिये हो तथा उत्साह रखते हो। मेरे रहते हुए तुम सीता को लेकर सकुशल नहीं जा सकते जैसे कि शूद्र शरत वेद पढ़ता है। यदि तुम में पौरुष हो तो थोड़ी देर रुको और युद्ध करो अभी तुम धरती पर अचेत हो कर गिर पड़ोगे, अपने भाई खर के समान। वह रामचन्द्र युद्ध में दन्त और दान को मारकर शीघ्र ही आते हैं और तुम्हारी हत्या करेंगे। मैं क्या करूँ कि वह दोनों भाई दूर चले गये अन्यथा शीघ्र ही तुम्हारी हत्या कर देते। मेरे जीवन काल में भी तुम सीता को नहीं ले जा सकोगे। मुझे वास्तव में दशरथ और राम का कार्य करना चाहिए। तनिक रुको और मुझसे युद्ध करो तथा मेरा बल देखो कि मैं सीता को तुमसे छुड़ा लेता हूँ।

रावण के रथ और गधों का चित्र, सारथी मारा गया और रावण रथ पर बैठा हुआ है, प्रतीक और शाही छतरी फटी हुई पड़ी है, धनुष खींचकर निशाना लगा रहा है और जटायु ने अपनी चोंच से युद्ध का आरंभ कर दिया है और रावण के घाव लगाये हैं।

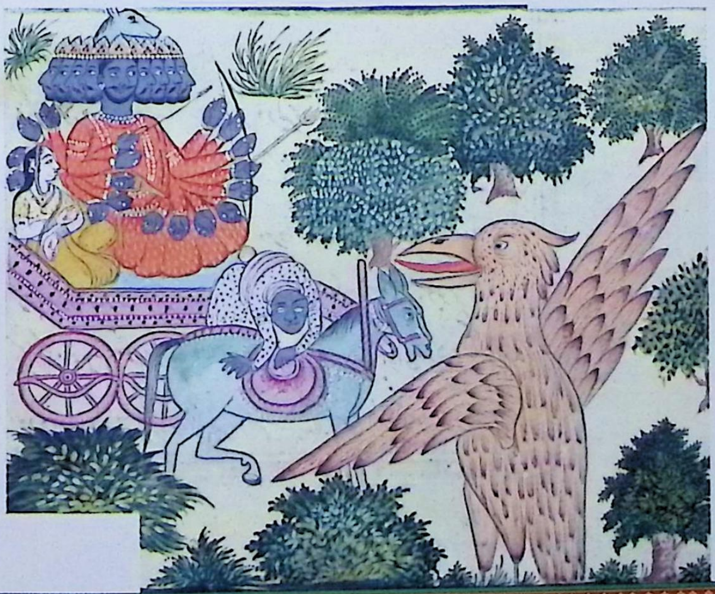

سرگ جنگ جتایو چون جتایو اینقدر گفت آن ده سر از ده نظر بغصه بدو دید و برو دوید

چنانچه جا بهم معرکه کلان شد و از جنگ آن هر دو گرد و باد برخاسته و بر آسمان مانند میغ گشته

آن محاربه بنوعیکه کوه مالونت و هماکوه بپردازند و جنگ بکنند محاربه کلان واقع گشت

بعد از آن راون تیرهای تیز قریب صدها برو بارید جتایو همه را برداشت کرده از ناخن و پاهای خود

در وجود راون زخمها نمود و بعد از آن راون ده تیر دیگر مانند مرگ برو فرستاد جتایو کمان

و تیرهائی او را از زور بالها شکست و اشو درشن او نیز شکست و از ناخن خود سارتهی را بکشت

و دهنبه و خرهائی او را که بلباس پشاچ بود هلاک ساخت و چتر مانند بدر او را شکسته بر زمین انداخت و در وندکاران

ساکنان زمین و آسمان اینکار دیده آفرین گفتند که کار دشوار را خوب کردی بعد از آن بار دیگر جتایو

بجنگ مستعد شد درینجا صورت صحرا و جتایو کرده کلان قد که منقار کشاده بارتهی و خران و دهنبه را شکسته و راون را بلرزه انداخته

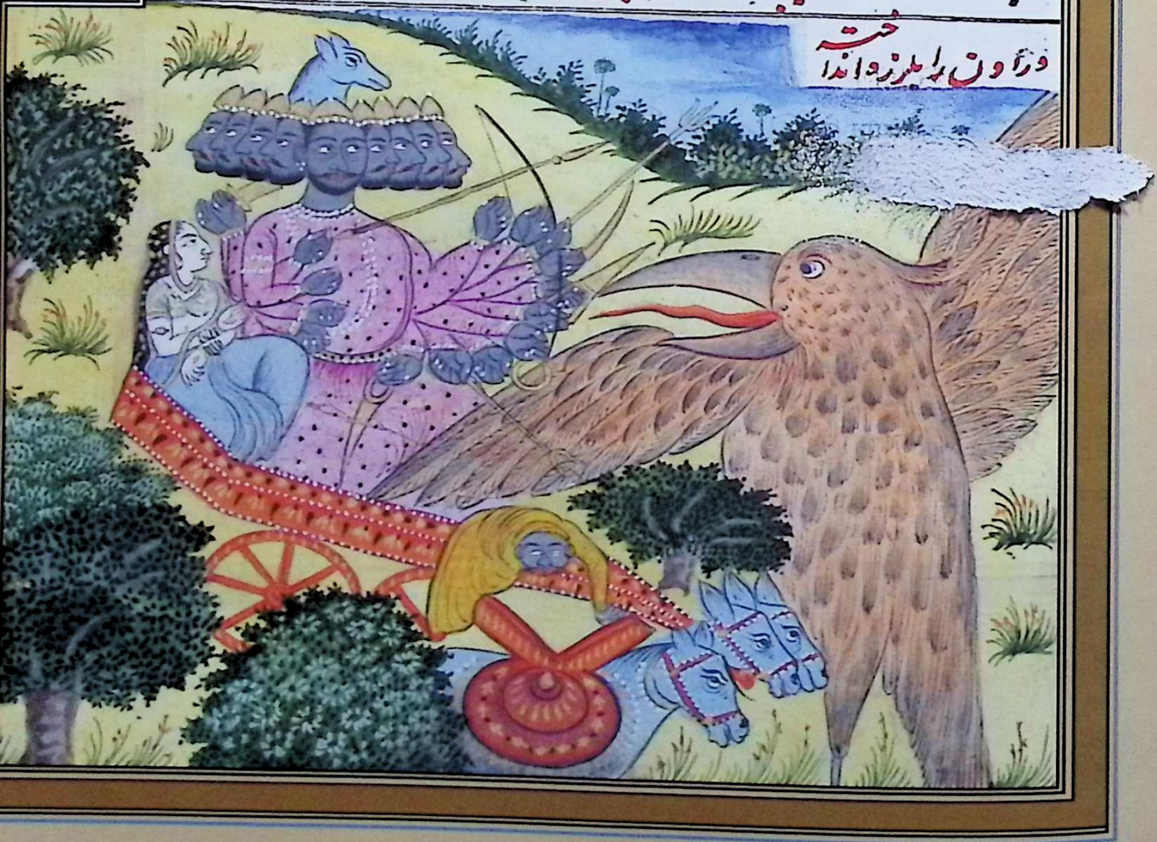

सर्ग-५१

जटायु का युद्ध

जब जटायु ने यह कहा तो उस दस सरों वाले (रावण) ने दस दृष्टि से उसे देखा और उस पर चढ़ दौड़ा। अतः भयंकर युद्ध हुआ और उन दोनों के युद्ध से धूल, मिट्टी और आंधी उठी एवं आकाश पर मेघ के समान पहुँची। वह युद्ध ऐसा था जैसे कि मालवन्त पर्वत और महापर्वत लड़ते हैं। भयंकर युद्ध हुआ। उसके बाद रावण ने लगभग सौ बाण उस पर बरसाये। जटायु ने उन सबको सहन करते हुए अपने पंजे से रावण के शरीर पर घाव किये। उसके बाद रावण ने दस दूसरे बाण मृत्यु के समान उस पर फेंके। जटायु ने उसका धनुष और बाणों को अपने बालों की शक्ति से तोड़ दिया और उसका अश्रु दर्शन भी टूट गया। अपने नाखून से सारथी को मार डाला। उसके रथ और गधों को जो पिशाच के रूप में थे मार डाला तथा चन्द्रमा के समान उसके शाही छत्र को तोड़कर धरती पर डाल दिया। और दण्डकारण्य में धरती व आकाश के निवासियों ने यह कारनामा देखकर सराहा कि तुमने कठिन कार्य भली प्रकार किया उसके बाद [illegible] पुनः युद्ध के लिये तैयार हुआ।

वन और बड़े काय वाला जटायु गिद्ध का चित्र, जिसने चोंच खोलकर सारथी और गधों को तोड़ फोड़ दिया है और रावण काँप रहा है।

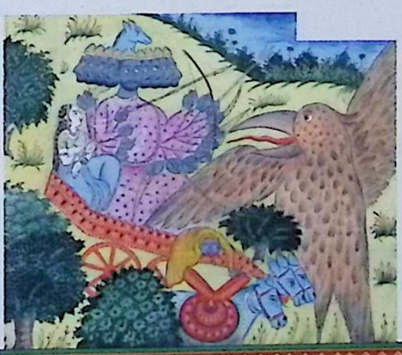

سرگ جنگ جتایو راون که تیر و کمان و رتهه و سارتهی و اسپان او همه رفتند سیتا را
در بغل گرفته بآسمان دوید جتایو بسرعت مقابل او پرید و گفت ای بیعقل سیتا را بگذار
و برای قتل جمیع راچهسان مهر تو با پسران و برادران و لشکریان و متعلقان زهر میخوری
چنانچه تشنه آب خورد از رسن مرگ بسته شده کجا میبری شجاعان کسان را میکشند
و دختر می برند این طریق دزدان شجاعان نمی پسندند و رام زود ترا خواهد کشت و هر که از مردم
کند برای هلاک خود میکند اگر برهما هم خطا کند سزا بیند این کار را که نمی فهمی و میکنی زود
با دوستان و برادران و وزرا و متعلقان کشته خواهی شد این بگفت و بر پشت او رسید
از ناخن و منقار مجروح و ریش کرد و موی سر او بر کندید و راون مضطرب شده بلرزید
و سیتا را از بغل چپ فرو گذاشت و از غصه طپانچه بر جتایو زد و بسیار مشت و لگد برو زد
چنانچه میان ایشان مهورتی معرکه کلان ماند جتایو بازوهای راون و سینه او را مجروح کرد
و چشمهایش از منقار بدرید و اسلحه او را بهر سو انداخت بعد از آن راون
از کهرگ یعنی از تیغ بال و منقار و پای او را بشکست و جتایو با رمقی از جان
بر زمین افتاد و سیتا او را بر زمین افتاده دیده بجای برادر خود دانسته از غم
بسمت او دوید و او را استمالی کرده در گریه شد

درینجا صورت جتایو منقار و بازو شکسته مرده افتاده و سیتا نزد او استاده و راون با رته خون آلود شمشیر بکف استاده

सर्ग-५२

जटायु का युद्ध

रावण जिसका बाण, धनुष, रथ, सारथी और घोड़े सब चले गये सीता को बगल में लेकर आकाश पर दौड़ गया। जटायु ने शीघ्रता से उसके बराबर उड़कर कहा : ऐ अबुद्ध ! सीता को छोड़ और सारे राक्षसों की हत्या करने के लिये उसे मत ले जा। तू अपने पुत्रों भाईयों, सैनिकों और सम्बन्धियों सहित विष खा लेगा। अतः तू प्यासा पीने का पानी मौत की रस्सी से बाँधकर कहाँ ले जा रहा है ?वीर पुरुषों की हत्या करते हैं और लड़की नहीं ले जाते। वीर पुरुष चोरों का नियम नहीं पसन्द करते हैं और राम शीघ्र ही तेरी हत्या कर डालेंगे। जो अत्याचार करता है वह अपनी मृत्यु के लिए करता है। यदि ब्रह्मा भी गलती करें तो उसका दण्ड भोगेंगे। यह कार्य जो तुम अनजाने में कर रहे हो शीघ्र ही तुम मित्रों, भाईयों, मंत्रियों और संबंधियों सहित मारे जाओगे। यह कहा और उसकी पीठ पर पहुँचकर अपने नाखून और चोंच से उसे घायल कर दिया और उसके सर के बाल उखाड़ दिये और रावण व्याकुल होकर काँपा और सीता को छोड़ दिया तथा क्रोध से जटायु के तमाचा मारा और उस पर घूंसे एवं मुक्के बरसाये। अतः उनके मध्य बहुत देर तक भयंकर युद्ध होता रहा। जटायु ने रावण की भुजाओं और छाती को घायल कर दिया। अपनी चोंच से उसकी आंखें फोड़ दीं और उसके हथियार चारों ओर फेंक दिये। उसके बाद रावण ने तलवार से उसके बाल, चोंच एवं पांव तोड़ दिये और जटायु थोड़े प्राण के साथ धरती पर गिर पड़ा। सीता ने उसको धरती पर पड़ा हुआ देखकर और अपने भाई के स्थान पर मानकर दुख से उसकी ओर दौड़ी और उसको सांत्वना देते हुए रोने लगी।

जटायु का चित्र, जिसकी चोंच और पर टूटे हुए हैं और वह मरा पड़ा है सीता उसके निकट खड़ी हैं तथा रावण रक्तरंजित वस्त्रों में तलवार लिए खड़ा है।

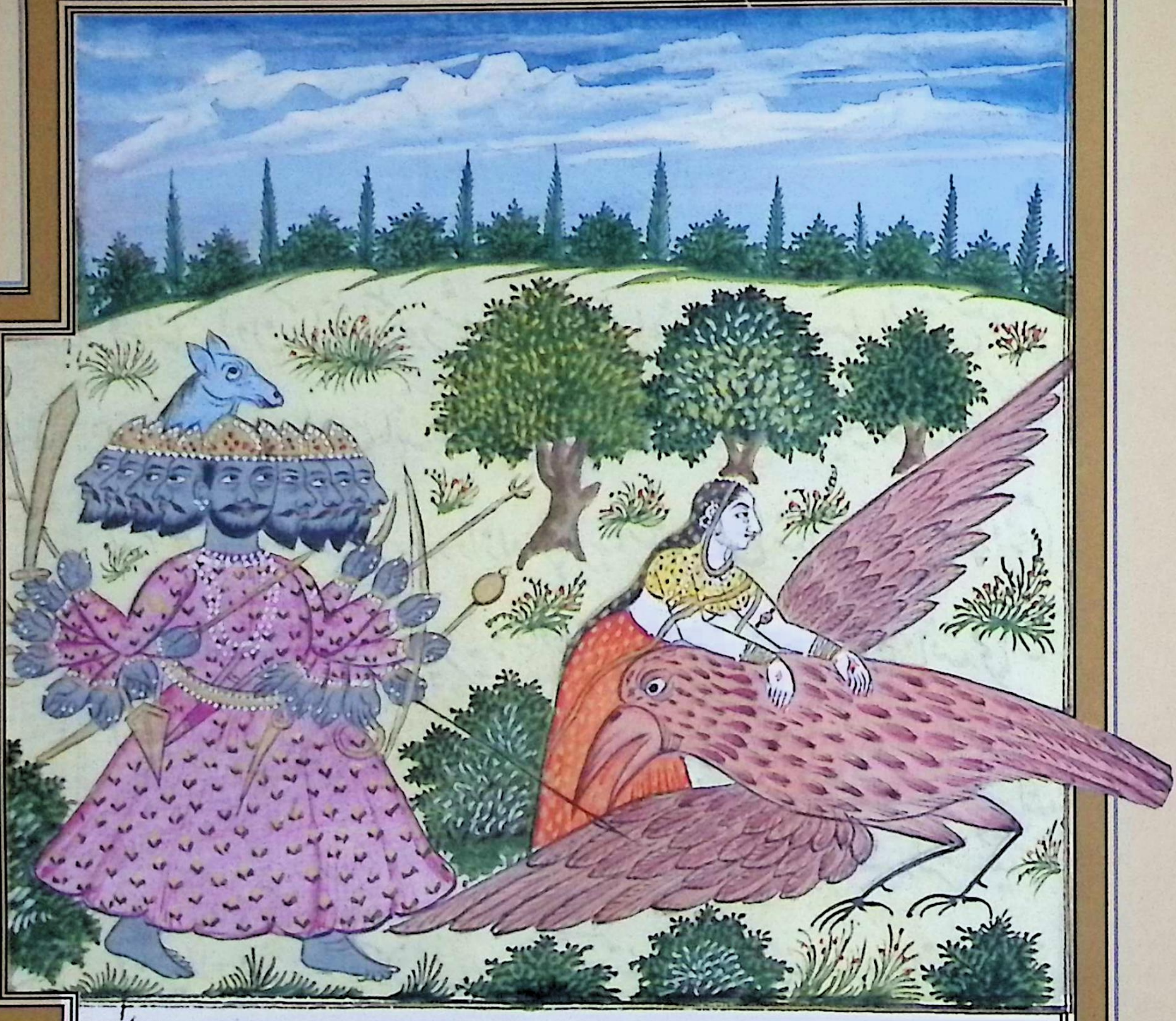

سرک اندیشه سیتا برجتایو سیتا جتایو را با رمق جان مضطرب و مجروح قریب مکان رام
افتاده دیده بسوی راون نظر کرده گریان شد و گفت نمت یعنی واسطه کار و لچهمن یعنی
نمود از وکیان یعنی دیدن نیک و بد و شکون و سر یعنی روشن با دها و ربنی این البته
در هنگام راحت و رنج در نمایش می آید و رام البته تصدیع مرا خواهد دانست که او را
شکون هایی بد نمودار شده باشد القصه سیتا رام رام و لچهمن آواز میکرد و مالا

सर्ग-५३

जटायु के लिए सीता की चिन्ता

सीता जटायु को थोड़े प्राण के साथ व्याकुल और घायल राम के भवन के निकट पड़ा हुआ देखकर रावण की ओर देखकर रो पड़ी और कहा ''उसकी नाक में लच्छन व ज्ञान का प्रकट होना और अच्छे व बुरे का देख लेना और वायु का चलना सुख व दुख के समय प्रकट होता है। राम निःसन्देह मेरे कष्ट को जान लेंगे कि अपशकुन हुआ होगा। संक्षिप्त में सीता राम और लक्ष्मण की आवाज निकालती थी और अपने हार

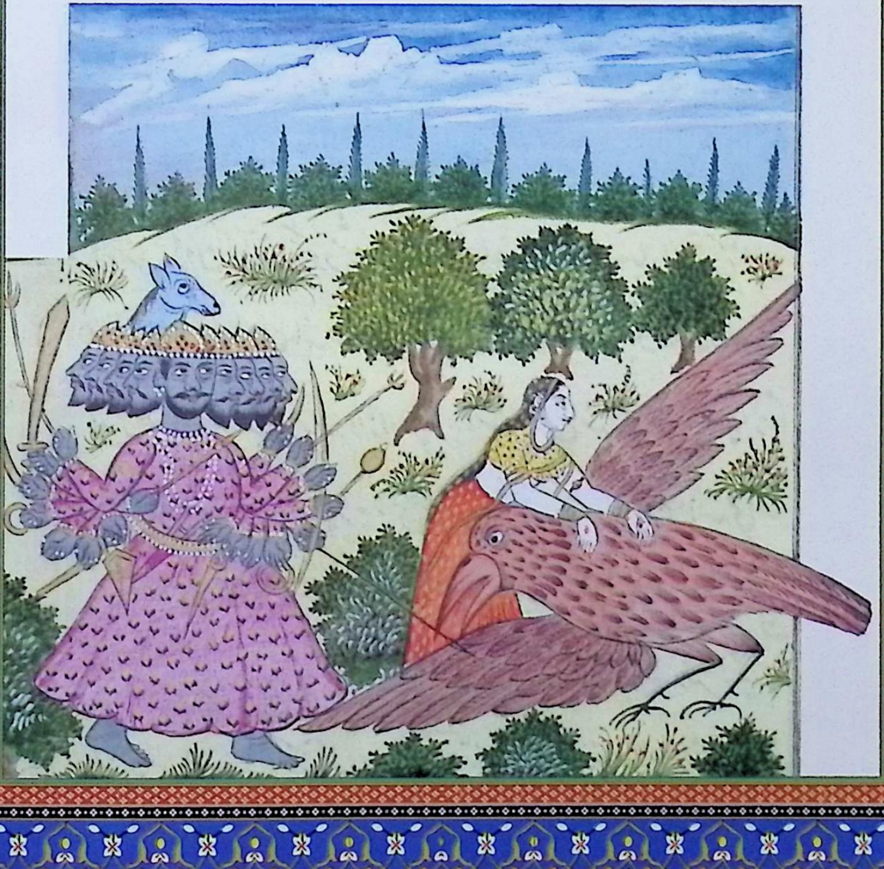

و پیرایه ها می شکست و در درختان برائی مخفی شدن میکرد دید که راون برد و دید
موسی او بکرفت او از غربت و مسکینی که بی رام بود بکذار بکذار میکفت و هنکام کرفتن سیتا
تمام جهان بظلمات آلوده شد و او را در کنار کرفته براه آسمان روان شد سیتا با جامهٔ زرد
در کنار راون که مانند ابر بود مثل برق مینمود یا چنانچه در کوه سیاه آتش مشتعل شود
در روی او در بغل راون مانند ماه در میغ و رنگ او مانند برف در نیله رنگ راون و با کنابچی
زرین ترصیع نیلم درنمودار بود و از او از پیرایه هایش راون مانند ابر در غرش بود و از تمام
وجود او کویا کلها میبارید و پیرایه های او مانند آتشی که از شور بر زمین افتد می افتاد
کویا از آسمان نجم می افتد هار مروارید او که سفید بود چون بر زمین میچکید کویا کنکا از فلک
می افتد و طیوران که مضطرب میپریدند درختان میکفتند تو مرسید تو مرسید و نیلوفران
و ماهیان وغیره جانوران آبی بر حالت سیتا حیرت میکردند و از هر طرف شیران و
بیا کهران و آهوان و طیوران از غصه در عقب سایه سیتا میرفتند از کوه ها
که آب میرفت کویا خبر کرفتاری سیتا بابانک بلند میکفت سیتا را آفتاب بدین حالت
دیده شعاع خود رها کرده سفید شده بود و آواز می آمد هر دم نیست و صدق رفت
و ملایمت شد و فهمیده کی کذشت که عورت رام را راون میبرد بدین آئین همه از
آسمان دریغ میخوردند و سیتا را بکف راون دیده آهوان و کبوتران از بیچارکی

तथा वस्त्र फाड़ती थी। छुपने के लिये वृक्षों में फिरती थी कि रावण उनकी ओर दौड़ा और उनका बाल पकड़ लिया तथा वह दीन दुखी होने के कारण जो बिना राम के थी ''छोड़ो-छोड़ो- कहती जाती थी। सीता को पकड़ने के समय सारे संसार में अंधेरा हो गया और रावण उन्हें पकड़े हुए आकाश की ओर चल दिया। सीता पीले वस्त्रों में रावण के बराबर में जो नीले आकाश के समान था बिजली के समान लगती थी। या जैसा कि काले पर्वत पर आग होती है और उनका मुखड़ा रावण के बराबर बरसात के चांद की तरह था उनका रंग रावण के नीले रंग में बर्फ जैसा था और जैसे कि सुन्दर कांच में नीलम जड़ा गया हो, लगता था। पूरे अस्तित्व से मानों फूल बरसते थे। उनके वस्त्र अग्नि के समान थे कि जो शोर के साथ धरती पर पड़ती है। मानों आकाश से तारे गिरते हैं उनकी मखारिद की माला जो श्वेत थी जब धरती पर टपकती थी तो ऐसा लगता मानों आकाश से गंगा गिर रही है। पक्षी जो व्याकुल होकर उड़ रहे थे वृक्ष से कहते थे कि मत डरो, मत डरो। नीलू मछलियां और दूसरे जल पशु सीता की दशा पर आश्चर्य करते थे और चारों ओर शेर, बाघ, हिरन और पक्षी सीता की छाया के पीछे चल रहे थे। पर्वतों से जो जल गिरता था वह मानों तेज आवाज में सीता के कैद होने की सूचना देता था। सूर्य ने सीता को इस दशा में देखकर अपनी किरणों को छोड़कर श्वेत हो गया और ध्वनि आती थी ''धर्म नहीं है सत्य समाप्त हो गया और अपमान आ गया और बुद्धि क्षीण हो गयी कि राम की स्त्री को रावण ले जा रहा है।'' इसी प्रकार सबके सब आकाश से भी दुख प्रकट कर रहे थे और सीता को रावण के हाथ में देखकर हिरनों और कबूतरों ने विवशता से

رسیده سر بالا کرده بودند و پایها بر نظر کرده دیوتاهای صحرا اشک ریزان شده
میلرزیدند و راون سیتا را که موی او پراکنده شده بود و برانی هلاکی خود بر بود

و او هر طرف نظر کنان انتظار

رام و لچهمن بسیار میکرد

درینجا صورت راون پارچه نافرمانی پوشیده و سیتا را با پارچه زرد در بغل کشیده
باسمان پریده و موی سیتا در دستی گرفته و صورت جانوران صحرائی مانند آهو و شیر

و کبوتر سر بالا کرده و دیوتا بر آسمان

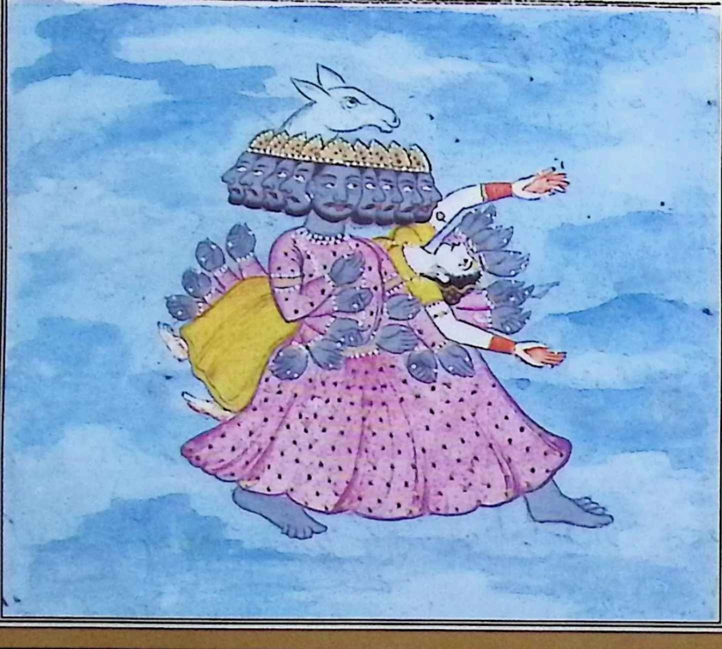

डरते हुए सर ऊपर उठा रखे थे और बार-बार देखते थे। वन के देवता आंसू बहाते हुए कांप रहे थे और रावण सीता को जिनके केश मुट्ठी में थे, अपनी हत्या के लिये ले जा रहा था और चारों ओर देखकर राम और लक्ष्मण की बहुत प्रतीक्षा करता था।

रावण का चित्र। अवहेलना का वस्त्र पहने हुए सीता को पीले वस्त्र में साथ में लिये हुए आकाश की ओर जा रहा है। सीता के केश मुट्ठी में पकड़े हुए है और हिरन, शेर और कबूतर जैसे वन के पशु-पक्षी सर उठाये हुए हैं और देवता आकाश पर।

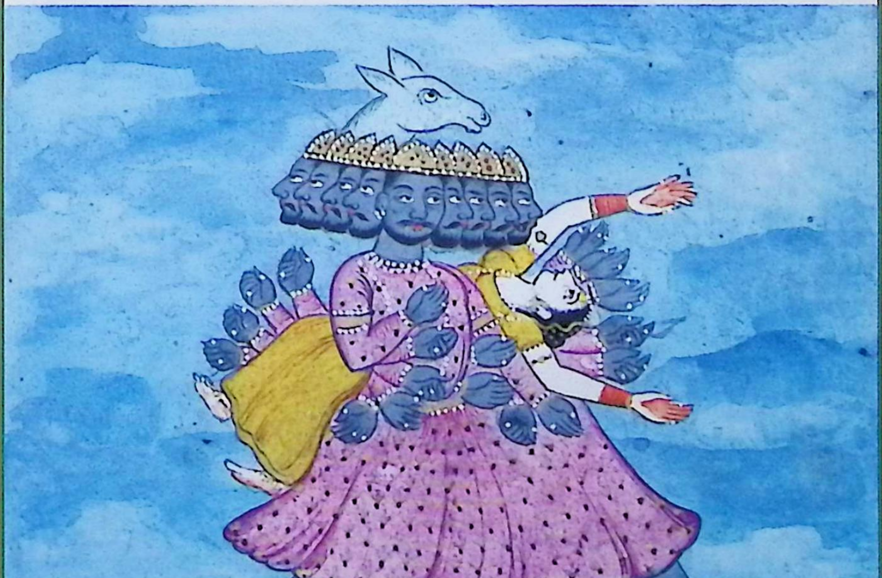

سرگفتار سیتا سیتا در کنار راون غم آلوده برای فلک بلند تاثیر رفت و متفکر
از گریه میگفت رامچندر و لچهمن خواهند دانست که من در بند راون افتاده ام و اگر
جانور برای نگاهبانی من برخاست اینهم مردای راون سفله البته تو بصورت آهو شوهر مرا
فریب داده دور بردی قوت تو معلوم میشد اگر با رام جنگ کرده مرا گرفتی اینچنین کار
نامعقول میکنی و شرم نداری لعنت بر زور و قوت تو که میکنی و بر نسل تو که اینطور
داری مهور رقمی باش که چگونه زنده میروی اگر بچشم رام و لچهمن در آیی با تمام لشکر
کشته خواهی شد بهتر آنکه مرا بگذاری در عقل خود تامل کن از خبر بردن من رامچندر
با لچهمن برای کشتن تو خواهد دوید بعد ازان در جای دیگر خواهی گذاشت در پی آن مطلبی
که مرا میبری آن مطلب تو حاصل نخواهد شد و تحقیق سلامت خود نمیخواهی چنانکه کس هنگام قرب
مرگ کارهای خلاف عادت کند و احمقان را هنگام مردن دوا خوش نمی آید و می بینم که در گردن
رسن مرگ بسته است که ازین خوف نمیترسی ترا در سیل آب بتیرنی که در پایی پیش
مرگ است جای همیشه و بدین آئین در لنگا نخواهی زیست چنانکه کودک زهر خورده باشد
تو که بسته رسن مرگ هستی با پسران و برادران و گماشتیان از دست رام کجا روی
گاه و بیگاه چشم زدن چهارده هزار راچهس را بکشت بدین آئین سیتا از غم سخنان
بسیار گفت راون او را از فقره رفت مرگ انداخته اقدمی و در آن هنگام مردن او

सर्ग-५४

सीता की वार्ता

सीता रावण के साथ दुखी लंका की ओर आकाश पर चली जा रही थी और चिन्तित होकर रो-रोकर कह रही थी ''रामचन्द्र और लक्ष्मण को पता चल जायेगा कि मैं रावण की क़ैद में पड़ी हूँ, और जो पक्षी (जटायु) मेरी रक्षा के लिये आगे आया वह भी मारा गया। ऐ दुष्ट रावण ! निःसन्देह तू हिरन के रूप में मेरे पति को छल से दूर ले गया। यदि तू राम के साथ युद्ध करके मुझे क़ैद करता तो तेरी शक्ति का पोल खुल जाता। तू ऐसा बुरा कार्य करता है और तनिक लज्जा नहीं आती है। धिक्कार है तेरे बल और शक्ति पर। जो तू कहता है और तेरे वंश पर जो कि ऐसा है। तनिक ठहर तब पता चलेगा कि तू जीवित कैसे जाता है। यदि तू राम और लक्ष्मण को दिख जायेगा तो पूरी सेना सहित मारा जायेगा। उचित यही है कि मुझे छोड़ दे। बुद्धि का उपयोग कर, मेरे ले जाने की सूचना पाकर रामचन्द्र लक्ष्मण के साथ तुझे मारने के लिये दौड़ पड़ेंगे। उसके बाद तू किसी दूसरे स्थान पर मुझे छोड़ेगा और जिस उद्देश्य के लिये तू मुझे ले जा रहा है तेरा वह उद्देश्य पूरा नहीं होगा। लगता है तू अपनी कुशलता नहीं चाहता। जैसे कोई मौत के समय स्वभाव के विरुद्ध अनेक कार्य करता है और मृत्यु के समय दवा अच्छी नहीं लगती है। और मैं देख रही हूँ कि तेरी गर्दन में मौत की रस्सी बंधी है जिसके भय से तू नहीं डरता है। तुझे चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। तू इस प्रकार लंका में जीवित नहीं रहेगा। जैसा कि विष खाया हुआ बच्चा होता है। तू मृत्यु की रस्सी से बँधा हुआ है और तेरे पुत्र, भाई और सम्बन्धी सबकी यही दशा है। राम से बचकर तू कहाँ जायेगा, जिसने पल भर में चौदह हज़ार राक्षसों को मार डाला था।'' सीता दुखी होकर भय के कारण ऐसी बहुत सी बातें कहती जाती थी लेकिन रावण उन्हें लेकर चला गया।

سرگفتار سیتا سیتا در کنار راون غم آلوده برای فلک بلند نگاه میرفت و میگر
از گریه میگفت رامچندر و لچهمن خواهند دانست که من در بند راون افتاده ام و اگر
جانور برای نگاهبانی من برخاست اینهم مردای راون سفله البته تو بصورت آهو شوهر مرا
فریب داده دور بردی قوت تو معلوم میشد اگر با رام جنگ کرده مرا گرفتی اینچنین کار
نامعقول میکنی و شرم نداری لعنت زور و قوت تو که میکونی و بر نسل تو که اینطور
داری مهور رقمی باش که چگونه زنده میروی اگر بچشم رام و لچهمن درآئی با تمام لشکر
کشته خواهی شد بهتر آنکه مرا بگذاری در عقل خود تامل کن از خبر بردن من رامچندر
با لچهمن برای کشتن تو خواهد دوید بعد ازان در جائی دیگر خواهی گذاشت در برای این مطلبی
که مرا میبری آنمطلب تو حاصل نخواهد شد و تحقیق سلامت خود نمیخواهی چنانکه کس هنگام قرب
مرگ کارها خلاف عادت کند و احمقانه هنگام مردن دوا خوش نمی آید و می بینم که در گردن تو
رسن مرگ بسته است که ازین خوف نمیترسی ترا در سیل آب بتیرنی که دریائی پیش خانه
مرگ است جائی بلشو و بدین آئین در لنکا نخواهی زیست چنانکه کودک زهر خورده باشد
تو که بسته رسن مرگ هستی با پسران و برادران و لنکائیشیان از دست رام کجا روی
که او بیک چشم زدن چهارده هزار راچهس را بگشت بدین آئین سیتا از غم سخنان خوف افزون
بسیار گفت اما راون او را گرفته برفت سرگ اندا خته . اوتری در ان هنگام بردن راو

सर्ग-५४

सीता की वार्ता

सीता रावण के साथ दुखी लंका की ओर आकाश पर चली जा रही थी और चिन्तित होकर रो-रोकर कह रही थी ''रामचन्द्र और लक्ष्मण को पता चल जायेगा कि मैं रावण की क़ैद में पड़ी हूँ, और जो पक्षी (जटायु) मेरी रक्षा के लिये आगे आया वह भी मारा गया। ऐ दुष्ट रावण ! निःसन्देह तू हिरन के रूप में मेरे पति को छल से दूर ले गया। यदि तू राम के साथ युद्ध करके मुझे क़ैद करता तो तेरी शक्ति का पोल खुल जाता। तू ऐसा बुरा कार्य करता है और तनिक लज्जा नहीं आती है। धिक्कार है तेरे बल और शक्ति पर। जो तू कहता है और तेरे वंश पर जो कि ऐसा है। तनिक ठहर तब पता चलेगा कि तू जीवित कैसे जाता है। यदि तू राम और लक्ष्मण को दिख जायेगा तो पूरी सेना सहित मारा जायेगा। उचित यही है कि मुझे छोड़ दे। बुद्धि का उपयोग कर, मेरे ले जाने की सूचना पाकर रामचन्द्र लक्ष्मण के साथ तुझे मारने के लिये दौड़ पड़ेंगे। उसके बाद तू किसी दूसरे स्थान पर मुझे छोड़ेगा और जिस उद्देश्य के लिये तू मुझे ले जा रहा है तेरा वह उद्देश्य पूरा नहीं होगा। लगता है तू अपनी कुशलता नहीं चाहता। जैसे कोई मौत के समय स्वभाव के विरुद्ध अनेक कार्य करता है और मृत्यु के समय दवा अच्छी नहीं लगती है। और मैं देख रही हूँ कि तेरी गर्दन में मौत की रस्सी बंधी है जिसके भय से तू नहीं डरता है। तुझे चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। तू इस प्रकार लंका में जीवित नहीं रहेगा। जैसा कि विष खाया हुआ बच्चा होता है। तू मृत्यु की रस्सी से बँधा हुआ है और तेरे पुत्र, भाई और सम्बन्धी सबकी यही दशा है। राम से बचकर तू कहाँ जायेगा, जिसने पल भर में चौदह हज़ार राक्षसों को मार डाला था।'' सीता दुखी होकर भय के कारण ऐसी बहुत सी बातें कहती जाती थी लेकिन रावण उन्हें लेकर चला गया।

سیتا کسی را محرم خود ندید ناگاه بر بالای کوه پنج بوزنه دید از پیرایه ها اوتری زردار
که مانند طلا سنبهالش بود با دیگر پیرایه ها در میان آنها فرو انداخت و در دل خطره ساخت
که اینها را رامچندر خواهند گفت و آنهمه که زرد چشم و کلان بودند بسمت راون و سیتا ها
دیدند بعده سیتا را بهر دو دست گرفته از پنپا نام دریا دورتر گذشت و صحرا ها و کوه ها و دریا ها
و سر انسی براه فلک زود در نوشت و از دریای ساگر که نهنگ و گرگ و غیره پر بود هم عبور
نمود و از آسمان سد ها آواز کردند که اینک مرگ ده سر آمد و سیتا را در کنار گرفته داخل
شهر لنکا شد و او را مانند ما یا متیا سر نگاه داشت و به پشاچیان و راچهسی ها امر کرد
که این زن از مروارید و مرجان و سوب ها و اجن و صندل هر چه بخواهد بدهید و هر که
این را خواه دانسته یا نادانسته سخنی خلاف مرضی او گوید کشته خواهد شد راچهسی ها
قبول کردند و خود در آمد محل شد و در تردد بود که چکنم ناگاه هشت راچهس بنظر افتادند
آنها فرمود که اقسام اسلحه بسته و پیرایه ها پوشیده زود بمقام جن استهان
که آنجا کهر و غیره بودند آنان کشته شدند بروید و در آنجا شخصی بسیار زور و شنیده ام که کهر
و دوکهن و غیره را کشته رام نام دارد مرا با او عداوت شده است آرزوی انتقام بسیار
دارم تا او را نکشم نخوابم و الحال او را میکشم تا بمقصود برسم چنانچه مفلس زر
یابد و آن درنده جنگل و چیر هر گاه بدست من کشته شود اعضا او را شما خواهید خورد

सर्ग-५५

उत्तरीय का गिराना

रावण के ले जाने के समय सीता ने किसी अपने को नहीं देखा अनायास उन्होंने पर्वत पर पांच वानर देखे। उन्होंने उत्तरीय के वस्त्रों में से, जो देखने में सोने के समान लगते थे, दूसरे वस्त्रों के साथ उनके बीच डाल दिया और हृदय में सोचा कि यह रामचन्द्र से कहेंगे। उन सबने जिनकी आँखें बड़ी और पीली थीं रावण और सीता की ओर देखा। उसके बाद रावण सीता को दोनों हाथों में पकड़कर पम्पा सरोवर (तालाब) से और दूर हो गया। आकाश के मार्ग से वन, पर्वत और नदी अति शीघ्र पार कर लिये और सागर को भी जो तिमि (एक प्रकार की मछली) तथा नाकों (मगरमच्छ) आदि से भरे थे, पार कर लिया और आकाश से सिद्धों ने कहा कि दस सर वाले की मृत्यु आ पहुँची, और सीता को लेकर लंका शहर में प्रवेश किया, और उनकी धन के समान सुरक्षा करता था। और कर्मचारियों और एक राक्षस को आदेश दिया कि यह स्त्री मखारीद, मरजान (मोती), सूप, अजन और चन्दन जो कुछ मांगे सब दे दो और जो भी कोई बात जाने या अनजाने में उसकी इच्छा के विरुद्ध कहेगा, मारा जायेगा। राक्षसों ने उसकी बात मानी और स्वयं महल में चला गया और अभी दुविधा में था कि क्या करूँ कि अचानक आठ राक्षस दिखाई दिये। उनको आज्ञा दिया कि हर प्रकार के हथियार सजाकर और वस्त्र पहनकर शीघ्रता से जिनों के स्थान पर, उस स्थान पर जहाँ खर आदि थे और सब मारे गये, जाओ और वहाँ एक शक्तिशाली व्यक्ति है। मैंने सुना है कि उसने खर और दूषण आदि को मार डाला है। उसका नाम राम है। मुझे उससे शत्रुता हो गयी है। प्रतिशोध की इच्छा रखता हूँ। जब तक उसे मार नहीं दूँगा, नहीं सोऊँगा। उसको अभी मारूँगा ताकि अपना उद्देश्य पूरा करूँ। जैसे कि कोई निर्धन धन पा लेता है और वह वल्कल (पेड़ों की छाल से बना वस्त्र) और चीर धारण करने वाला जिस समय मेरे हाथ से मारा जायेगा तुम सब उसके अंगों को खाओगे

حالا شما و آنجا جن استهان باشد بهشیاری اقامت گزینید و تدبیر گشتن رام نمائید و شما را به تخصیص همین فرمان است که سر رام بیارید راچهسان قبول کرده راون را نمسکار نموده لنکا را گذاشته بسمت جن استهان روان شدند و راون سیتا را

یافته با رام دشمنی نموده خوشوقت بود درینجا صورت رکهه و بر دو درختان و طیور و آهو و شیر و پرندها و زیر درخت مکان رکهان و میان قلهٔ کوه و بر آن پنج بوزنه سگریو و هنومان و غیره نشسته و راون سیتا را در بغل گرفته بآسمان میرود و سیتا پیرایه زر در بر بوزنها انداخت

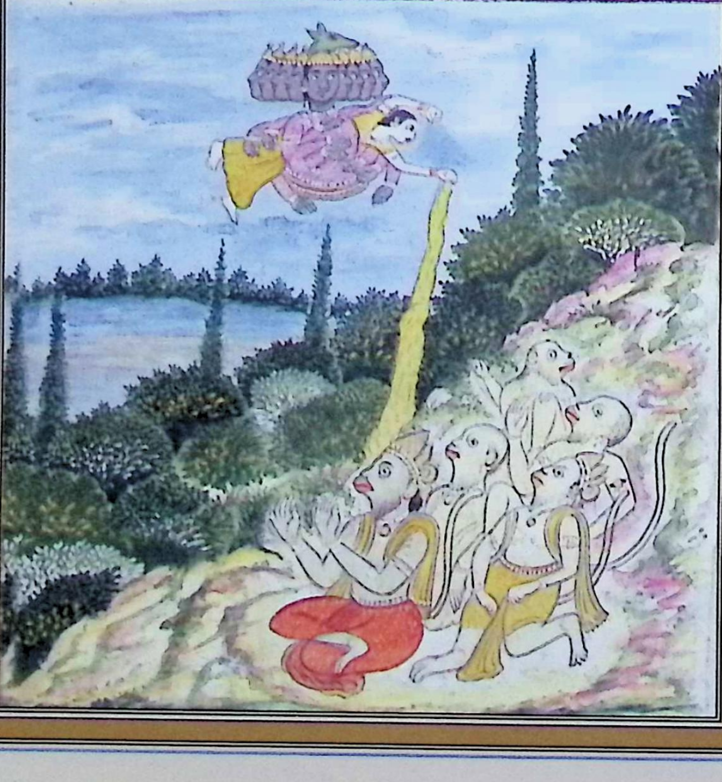

अब तुम सब वहाँ, जो जनस्थान है, सतर्कता से रहो और राम को मारने की योजना बनाओ। और तुमको विशेष रूप से मेरा यही आदेश है कि राम का सर लाओ। राक्षसों ने स्वीकार करते हुए रावण को नमस्कार किया और लंका को छोड़कर जन स्थान की ओर चले गये। और इधर रावण सीता को पाकर राम की शत्रुता में व्यस्त था।

ऋषि का चित्र और उस पर वृक्ष, पक्षी, हिरन और शेर है, वृक्ष के नीचे और पर्वत की चोटी के मध्य ऋषि का मकान है, उस पर पाँच बन्दर सुग्रीव और हनुमान आदि बैठे हैं, रावण सीता को पकड़े हुए आकाश की ओर जा रहा है और सीता सुनहरे वस्त्र वानर के सर पर डाल रही हैं।

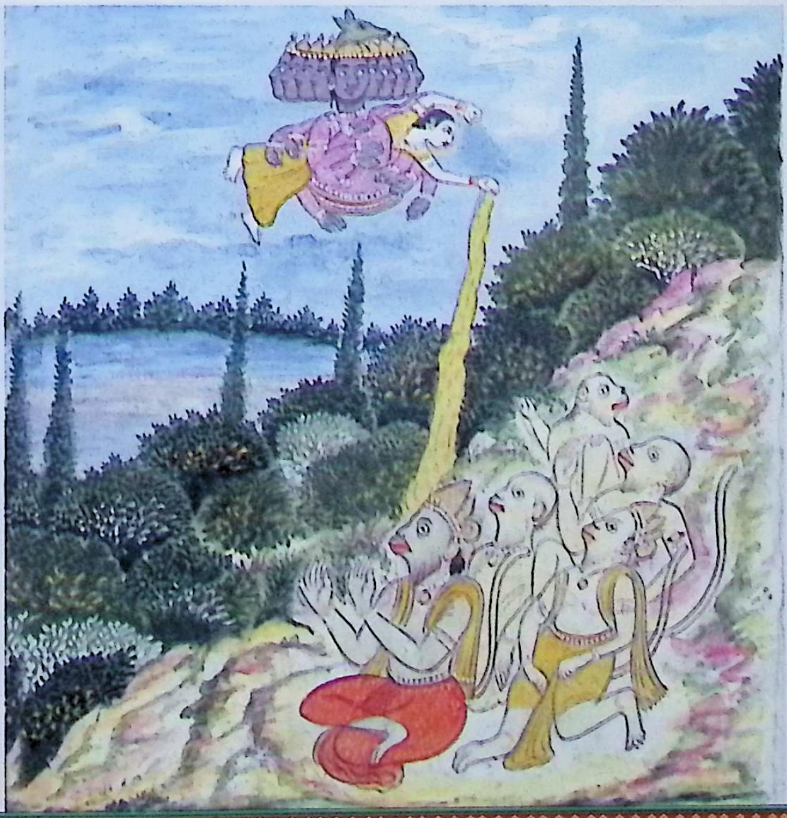

سرکب بیان لنکا راون هشت راچهس را برای بودن جن اسنبان فرستاد گارا
کرده اعتبار ننمود و سیتا را در خانه خوب داخل کرد او با روی اشک ریزان ولبان
گرد آلود مانند مسکینان بود چنانچه ماده آهو از آهوان دور افتد و او در حالت سرنگونی
وپارچه کهنه هم زیبا بود چنانچه ماهتاب شب در میغ و راون او را در مکان نفیس در آورد
که در آن هزاران غرفه و شبک بود و هزاران عورات برای پرستاری بودند
و اقسام طیور بسیار و انواع جواهر بسیار و ستونهای زر و عاج و پهتاک و نقره
و بجر یعنی الماس و بید وریه پشتر بودند و بر درها نقارهای دپ و دیگر ساز مینواختند
با سیتا راه نردبان طلائی مرصع بالا بر آمد و در آنجا از عاج و نقره دریچه ها نظر کرده بام
زرین مناظرها دید و با اقسام جونه جواهر زمین او را بنمود و تالابهای کلان با نواع
درختان اینهمه را مشاهده کنانیده گفت که ده کرور راچهس در بندگی من اند و سی و
دو کرور دیگر زور آورتر اند و اینهمه را خداوند منم و هزار هزار راچهس را انک یک سردار است
اینقدر لشکریان من اند که هرگز نمیرند و پیر نمیشوند اینهمه راج تابع تست زیرا که تو مرا از جان
عزیزتر هستی و هزاران عورات نزد و چه مرا تو مخدومه شوی البته من باش اگر گفته من بخاطر
می آید بر من مهربان شو که مغلوب شهوتم و ترا در لنکا اینطرف دریا شور که پهنای آن
چهار صد کروه است آورده ام آنقدر هم با سر و ا سر نتواند گرفت و نیز در دیوتا و کند هرب

सर्ग-५६

लंका का वर्णन

रावण ने आठ राक्षसों को जन स्थान पर रहने के लिये भेजा। और कार्य करके विश्वास किया और सीता को अच्छे महल में रखा। सीता रोते हुए मुख और मिट्टी लगे वस्त्र पहने दीनहीन की भाँति थी जैसे कि मादा हिरनी अपने समूह से दूर हो जाती है। वह सर झुकाए और गन्दे वस्त्रों में भी अच्छी लग रही थी जैसे कि वर्षा में चन्द्रमा होता है। रावण उनको अच्छे महल में लाया जिसमें हज़ारों खिड़कियाँ और झरोखे थे और हज़ारों स्त्रियाँ सेवा के लिये नियुक्त थीं। भाँति-भाँति के पक्षी और हीरे जवाहरात असंख्य थे और सोने, हाथी दाँत, चाँदी और इलमास आदि के खंभे थे और द्वार पर दब और दूसरे वादक वाद्य की ध्वनि बिखेर रहे थे। वह सीता के साथ स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित प्रकट हुआ और भाँति-भाँति के रत्न उनको दिखलाए और बड़े-बड़े तालाब, कुएँ और भाँति-भाँति के वृक्ष उनको दिखलाकर कहा कि दस करोड़ राक्षस मेरे कर्मचारी हैं। बत्तीस करोड़ उनसे भी अधिक शक्तिशाली है और उन सबका राजा मैं हूँ। और हज़ार हज़ार राक्षस पर एक-एक सरदार हैं। मेरी इतनी अधिक सेना है कि वह कदापि न मरेंगे और न वृद्ध होंगे। यह सब राज्य तुम्हारे आधीन है क्योंकि तुम मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हो और मेरी हज़ार स्त्रियों की तुम मेरी पटरानी बन जाओ। यदि मेरा कहा हुआ समझ में आता है तो मुझ पर दयालु हो जाओ क्योंकि मुझ पर वासना का नशा चढ़ा है। मैं तुम्हें लंका में समुन्द्र के उस ओर जिसकी दूरी चार सौ कोस है, लाया हूँ इन्द्र भी नहीं ले सकता

وجهه ده مهر که به زور من که مقابل تواند شد رام از راج افتاده که مسکین و کم عمر آدمی
پیاده است چه خواهد کرد و جوانی تو هم دایم نخواهد ماند لهذا مرا شوهر خود کن و از رام
شوق بردار و این خیال دور کن او در اینجا بکدام قدرت برسد که باد در راه آسمان هم نرسد
که چراغ اینجا را ضرر رساند و رهبرت لوک کسی را نمیدانم که ترا بزور از دست من ببرد پس
عورت من شده این راج کلان لنکا را تواهیشک کن انچه سابق گناه کرده بودی
جزای آن در بودن صحرا گذراندی و آنچه نیکوی کرده ثمره آن این راج لنکا بگیر و انیک مالاها
و خوشبوها بگیر و بان پهپک نام که از کبیر گرفته ام و آن کلان هست و دلخواه است
آخر کن نشسته با من بعیش بازی مشغول شو و نازک بدن تو که خوب است قابل غم نه و ریاضت دبرم
سرم بیا تو که بر بنده لطفی کن و این از کسی نگفته ام چون این بگفت دانست که سیتا بمن میل کرده و را انواع تسلی نمود

اینجا صورت لنکا و راون و سیتا

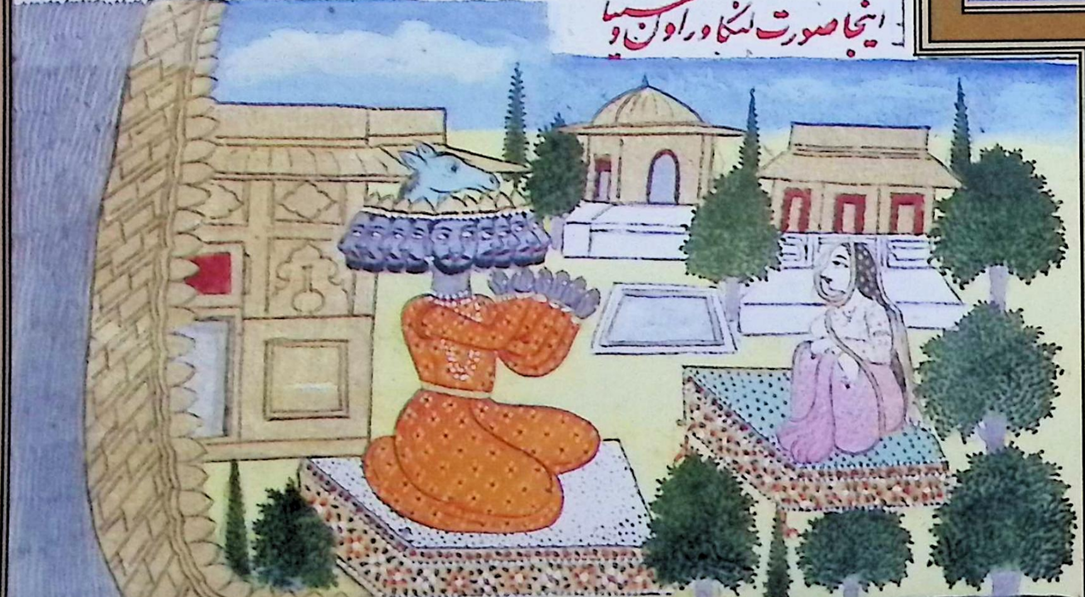

और देवताओं, गन्धर्व, यक्ष और महर्षियों में से कौन मेरी शक्ति के सामने आ सकता है ?राम जो राजगद्दी से वंचित, अल्प आयु और पैदल है, वह क्या कर लेगा ?और तुम्हारा यौवन भी सदा नहीं रहेगा। अतः मुझे अपना पति बना लो और राम से अलग हो जाओ। यह विचार कर लो कि वह किस दैवीय शक्ति के चमत्कार के द्वारा यहाँ पहुँचेगा ?क्योंकि वायु भी आकाश के रास्ते से यहाँ नहीं पहुँचती है कि दिया को यहाँ क्षति पहुँचाए। मैं तीनों लोक में किसी को नहीं जानता हूँ कि तुम्हें शक्ति के बल पर मेरे हाथ से ले जा सके। अतः मेरी स्त्री बनकर लंका का यह बड़ा राज्य स्वीकार करो। जो कुछ पिछला पाप तुमने किया था उसका प्रायश्चित्त तुमने वन में कर लिया और जो कुछ पुण्य किया है उसके बदले में लंका का यह राज्य ले लो। यह माला और सुगन्ध ले लो और पुष्पक विमान पर, जो मैंने कुबेर से लिया है वह बड़ा है और दिल लुभाने वाला है, उस पर बैठकर मेरे साथ सुख भोगो। तेरा कोमल शरीर जो बहुत सुन्दर है दुख के योग्य नहीं है। धर्म की तपस्या समाप्त करो, मेरा सर तुम्हारे चरणों में है, कि मुझ पर दया करो और मैंने यह बात किसी से नहीं कही है। उसने जब यह बात कही तो समझा कि सीता मेरी ओर आकर्षित हो गयी है और सीता को उसने विभिन्न प्रकार से सांत्वना दी।

लंका, रावण और सीता का चित्र।

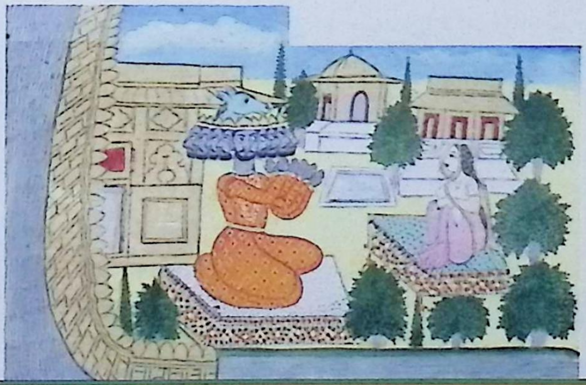

هرک گفتار سیتا سیتا گفتار راون را بکار نبرده گفت راجه دشرته که مانند اندر بزرگ بود
رامچندر پسر اوست و دهرماتما مشهور بر سه لوک دراز دست کلان چشم شیر کتف از اولاد اجهواکو
او شوهر منست با لچهمن آمده ترا خواهد کشت اگر تو حضور او مرا گرفتی مانند کهر برادر خود بر زمین
خفتی و هر قدر استر که میدانی و هر قدر صورت که میکنی اینهمه پیش رام هیچ نخواهد شد چنانچه باران
پیش کرر و تیر او وجود ترا چنان بشگافد که موج گنگا ریگ را و تو خواه از اسر خواه سر خواه مار وغیره
در جنگ محروس شوی اگر رام زنده هست زندگی تو محال هرگاه تو رام را بینی با راچهسان زود
گریزی که هرگاه او بخشم آید دریای شور را خشک کند تو خود مرده و دولت تو رفته
و قوت و جوانی تو رفته حالا لنکا نگری بیوه خواهد شد و این کار عذاب ترا راحت نه بخشد
که مرا در غیبت شوهر گرفته آوردی عنقریب او با لچهمن آمده غرور ترا خواهد شکست و بر تو بارش تیر
خواهد کرد همه لشکر و اقربا با آتش قهر ترا بسوزد و اگر مانند رامچندر والی نمیبود من ترا از آتش
شاپ بسوختمی هر کرا از تقدیر ازلی موت می آید آن زن غیری را میگیرد مرا گرفته مرگ تو آمده است
خود را و راچهسان و برادران و شهر را نتوانی نگاهداشت و این وجود مرا خواه ببند خواه بکش
مقید توام و این وجود بلکه جان من هم نگاهداشتنی نیست و نمیخواهم که بماند راون چون
این سخن بشنید خاموش ماند و هیچ نگفت بعد لحظه گفت ای سیتا بشنو اگر بعد دوازده ماه
که یکسان باشد مرا قبول نکنی همه راچهسان ترا پاره پاره خواهند کرد این بگفت و حکم کرد که زنان

सर्ग-५७

सीता की वार्ता

सीता ने रावण की बात को घास बराबर समझते हुए कहा "राजा दशरथ जो धर्म के पुल के समान थे, रामचन्द्र उनके पुत्र हैं। तीनों लोक में धर्मात्मा प्रसिद्ध हैं। लम्बे हाथों वाले, बड़ी आँखों वाले, शेर जैसे कन्धे वाले और इक्ष्वाकु की सन्तान में से हैं। वह मेरे पति हैं। लक्ष्मण के साथ आकर तुझे मारेंगे। यदि तू उनके सामने मुझे पकड़ेगा तो अपने भाई खर के समान धरती पर सोयेगा। जितना तू मन्त्र जानता है और जितने रूप तू बदल सकता है राम के सामने यह सब कुछ नहीं है जैसे कि साँप छछून्दर के सामने। उनका बाण तेरे शरीर को इस प्रकार फाड़ेगा जैसे कि गंगा नदी रेत को। और तू चाहे असुर के द्वारा या सुर के द्वारा, चाहे सर्प आदि के द्वारा युद्ध में घिर जायेगा। यदि राम जीवित है तो तेरा जीवन कठिन है। जिस समय तू राम को देखेगा राक्षसों के साथ शीघ्र भाग जायेगा। जिस समय उन्हें क्रोध आता है, समुन्द्र को सुखा देते हैं। तू स्वयं मुर्दा है, तेरा धन बेकार है, तेरी मानसिक अवस्था ठीक नहीं है, अब लंका नगरी विधवा हो जायेगी और यह पाप वाला कार्य तुझे शान्ति नहीं देगा। चूँकि तुम मुझे पति के न रहने पर कैद करके लाये हो। शीघ्र ही वह लक्ष्मण के साथ आकर तेरा घमण्ड तोड़ेंगे और तुझ पर बाणों की वर्षा करेंगे और तुझे सेना और सम्बन्धियों सहित क्रोध की अग्नि में जला डालेंगे। यदि रामचन्द्र जैसे मेरे पति न होते तो मैं तुझे श्राप से जला डालती। जिसके भाग्य से मौत आती है वह किसी अन्य की पत्नी लेता है। तूने मुझे जो पकड़ा है तो तेरी मौत आयी है। तू अपनी, राक्षसों, भाईयों और शहर की रक्षा नहीं कर सकता। मेरा यह शरीर, चाहे बांधो, चाहे मार डालो, निःसन्देह मैं तेरी कैद में हूँ और मेरा यह शरीर भी रक्षा करने के योग्य नहीं है। मैं नहीं चाहती कि शेष रहे। रावण यह बात सुनकर शान्त रहा और कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर बाद उसने कहा, ऐ सीता ! सुनो यदि बारह महीने में अर्थात् एक वर्ष बाद तू मुझे स्वीकार नहीं करेगी तो सारे राक्षस तुझे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। उसने यह कहा और आदेश दिया कि राक्षसों की भयानक पत्नियाँ शीघ्र उपस्थित हों।

راچهسان مخوف دیدار زود حاضر شوند چون زنان گوشت وخون خواران دست بسته حاضر آمدند حکم کرد که سیتا را در اشوک بن که باغ بیرون لنکاست برند و نگهبند از وانواع ترس و سهم نمایند تا مرا قبول کند آنان سیتا را گرفته در اشوک بن رفتند در آنجا چنان درختان بودند که هر طور ثمر که خواهند فی الفور پیدا شود و گوناگون گلها میداشتند وطیوران باقسام خوش آواز بودند در انجا سیتا با غم و الم مانند ماده آهو که در قید ماده شیران باشد بود و هیچ آرام نگرفت و مدام شوهر و لچهمن را یاد میکرد

درینجا صورت اشوک بن و درختان وطیوران و سیتا و چند راچهسی های مهیب

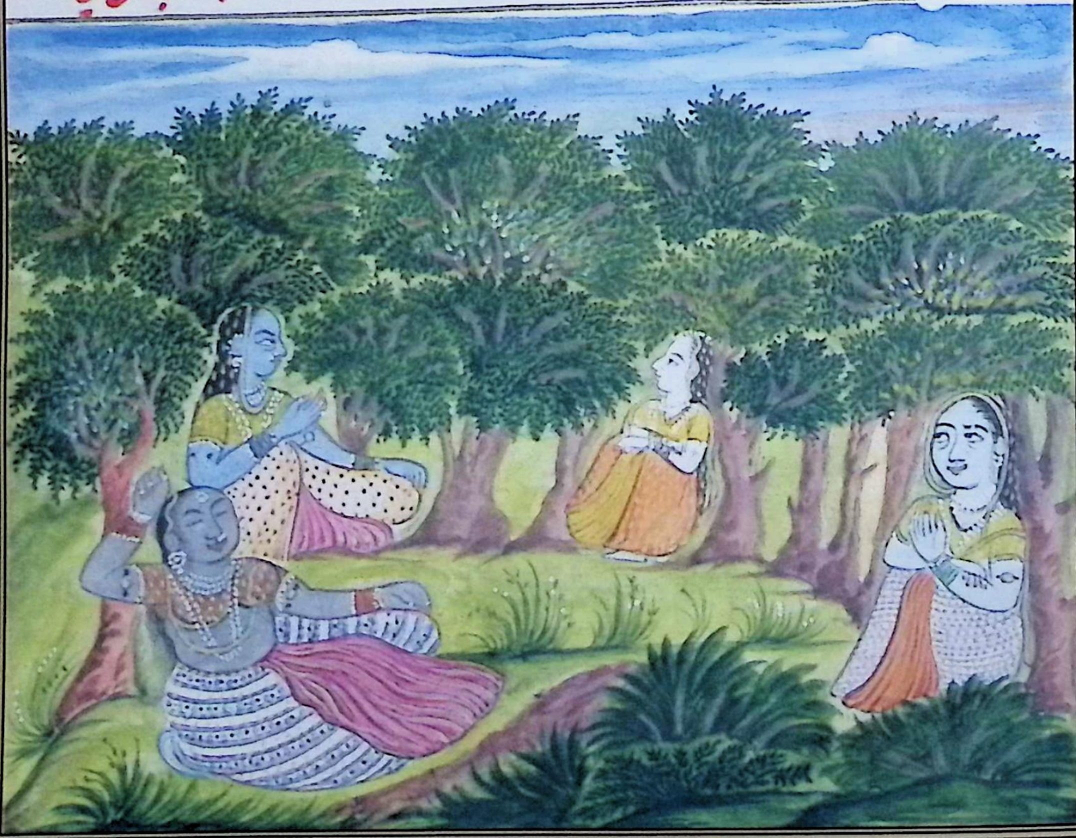

जब माँस और रक्त खाने वाली स्त्रियाँ उपस्थित हो गयीं तो उसने उन्हें आदेश दिया कि सीता को अशोक वन में, जो लंका के बाहर एक बाग है, ले जायें और रक्षा करें और विभिन्न प्रकार से डराएँ यहाँ तक कि वह मुझे स्वीकार कर ले। वे सब सीता को लेकर अशोक वन चली गयीं। वहाँ ऐसे वृक्ष थे कि जिस प्रकार के भी फल चाहे तुरन्त उत्पन्न हो जाते थे और उन पर भाँति-भाँति के फूल थे और मधुर वाणी वाले असंख्य पक्षी थे। सीता ने वहाँ दुख के साथ मादह हिरन की भाँति जो शेरनी की कैद में थी, तनिक भी विश्राम नहीं किया और सदा अपने पति और लक्ष्मण को याद करती रहती थीं।

अशोक वन और वृक्षों, पक्षियों और सीता का चित्र और कुछ भयानक राक्षसों का चित्र।

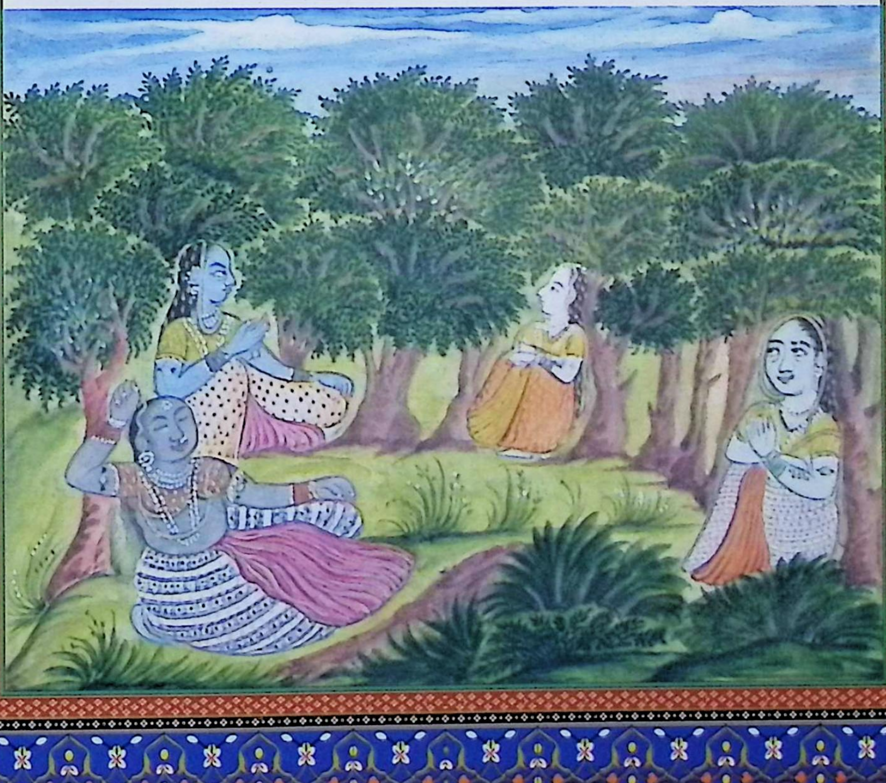

سرگ آمدن اندر بعد داخل شدن سیتا در لنکا برهما باندر گفت برای نیکخواهی
هر سه لوک و برای کشتن راچهسان سیتا داخل لنکا شده و او پت برتا یعنی خواهان شوهر
و لایق آسایش است در قید راچهسان افتاده انتظار دیدن شوهر دارد و درین فکر است
که رام چسان بداند که من در لنکا ام مبادا بمیرد و درین کار او را شبه افتاده است
بنابران تو نزد او در لنکا رو هواوتم یعنی شیر بدو بده چون برهما چنین گفت اندر نندرا
یعنی خواب را همراه گرفته در لنکا آمد و بعد ازان بخواب گفت که همه راچهسان را بیهوش کن
او همچنان کرد پس ازان اندر با سیتا گفت من راجه دیوتا اندر نام اینجا آمده ام که رامچندر
با برادر بخیر و عافیت هست در لنکا خواهد آمد و سمدر را عبور خواهد نمود و من با نندرا یعنی خواب
جهت برآوردن مطلبی آمده ام اینک هواوتم که دیوتا کرده اند بگیر که از خوردن این ترا گرسنگی
و تشنگی تا آیت یعنی ده هزار سال نخواهد شد سیتا گفت من چسان دانم که اندر هستی
بلباسی و طرحی که حضور رام و لچهمن دیده بودم همان طور مرا بنما گفته سیتا را شنیده اندر
همچنان کرد چنانچه قدم بخاک زمین نمی آلود و مژگان برهم نمیزد و سوبهای گرد آلوده نبود
و مالا از چنان گلها که هرگز پژمرده نشوند سیتا بدین صورت اندر را دیده خوشوقت شد
و گفت چنانکه مرا خسر دشرتهه است یا راجه جنک همچنان تو هم خداوند شوهر من هستی
از گفته تو این هواوتم که لایق است یعنی شیر میخورم فی الجمله سیتا از دست اندر گرفت و اول

सर्ग-५८

इन्द्र का आना

सीता का लंका में प्रवेश करने के बाद ब्रह्मा ने इन्द्र से कहा; तीनों लोकों की भलाई के लिये और राक्षसों को मारने के लिये सीता लंका मे प्रविष्ट हुई हैं। वह पतिव्रता और सुख सुविधा के योग्य हैं। राक्षसों की कैद में है, पति को देखने की प्रतीक्षा में हैं, और इस चिन्ता में है कि राम को कैसे मालूम हो कि मैं लंका में हूँ। संभवतः वह मर न जायें और इस कार्य में उनको संदेह हो गया है। अतः तुम अतिशीघ्र लंका जाओ उन्हें दूध दो। ब्रह्मा ने जब यह कहा तो इन्द्र नींद को साथ में लेकर लंका में आये उसके बाद स्वप्न से कहा कि सारे राक्षसों को अचेत कर दो। उसने ऐसा ही किया। उसके बाद इन्द्र ने सीता से कहा मैं राजा इन्द्र नामी देवता हूँ। यहाँ यह बतलाने के लिये आया हूँ कि रामचन्द्र अपने भाई के साथ सकुशल हैं। वह लंका में आयेंगे और समुन्द्र को पार करेंगे। मैं नींद के साथ एक उद्देश्य को पूरा करने के लिये आया हूँ। और वह यह है कि उत्तम हविष्य (दिव्य खीर) जो करदह के देवता हैं ले लीजिये। उसको खाने के बाद भूख प्यास हजार वर्ष तक नहीं लगेगी। सीता ने कहा मैं कैसे जानूं कि आप इन्द्र हैं ?जिस वस्त्र और रूप में मैंने आपको राम व लक्ष्मण के सामने देखा था वही रूप मुझे दिखाइये। सीता की बात सुनकर इन्द्र ने वैसा ही रूप धारण किया। अतः उनके पाँव धरती की मिट्टी से गंदे नहीं होते थे और पलकें नहीं झपकती थीं ओर ऐसे फूलों की माला पहने हुए थे जो कभी मुरझाते नहीं हैं। सीता इन्द्र को इस रूप में देखकर प्रसन्न हो गयीं और कहा; ‘‘मेरे लिये जिस प्रकार राजा दशरथ है या राजा जनक उसी प्रकार आप भी मेरे पति के भगवान हैं आपके कहने से मैं यह दिव्य खीर पी लेती हूँ। अतः सीता ने इन्द्र के हाथ से लिया और सबसे पहले

بنام شوهر و لچهمن نبویدن کرد و گفت اگر شوهر من و لچهمن زنده اند بانها برساد
واز بهکت منیخورم بدین آئین سیتا را بهواوتم یعنی شیر از اندر رسید و گرسنگی
وغیره از و برفت و در دل او محبت رامچندر افزودن گرفت بعده اندر از سیتا
اجازت گرفته بانند را یعنی خواب بخانه خود رفت درینجا صورت باغ واشجار میوه دار
وطاوس وغیره و سیتا نشسته و اندر با صورت خود آنندراجها گوشواره کمرش انداخته
و بر همه تن نشان چشم و مالا در گلو و پارچه خوب و آوند شیر از دست خود به سیتا میدهد
و همه راچهسیها را بخواب مبتلا کرده

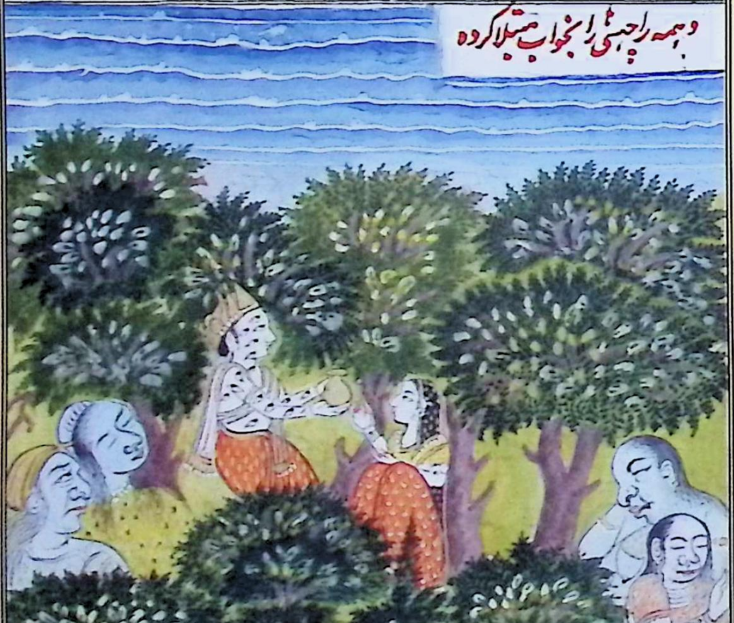

अपने पति और लक्ष्मण के नाम निवेदन किया और कहा यदि मेरे पति और लक्ष्मण जीवित हैं तो उन्हें पहुँचे। मैं भक्ति से इसे पीती हूँ। इस प्रकार सीता को इन्द्र की ओर से दूध पहुँचा और उनकी भूख आदि सब समाप्त हो गयी और उनके दिल में रामचन्द्र का प्रेम अधिक हो गया। उसके बाद इन्द्र सीता से आज्ञा लेकर नींद के साथ अपने घर चले गये।

उपवन, मेवादार, वृक्ष और मोर आदि का चित्र- सीता बैठी हुई हैं और इन्द्र सुन्दर रूप में राजाओं की भाँति हैं और सारे शरीर पर आँख के निशान है, गले में माला है वस्त्र सुन्दर है, और एक हाथ से सीता को दूध दे रहे हैं, सारे राक्षसों को नींद में सुला दिया है।

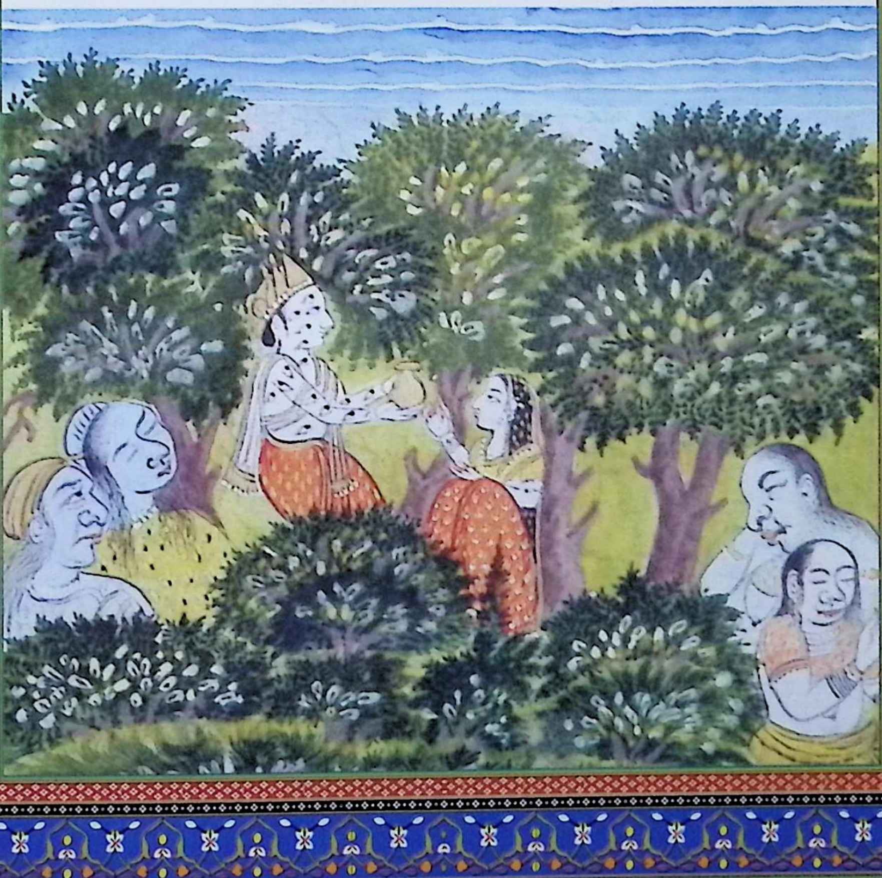

سرگ برگشتن رامچند بالمیک رکهه مینویسد که رامچندر راچهس را که بصورت آهو بود کشته
شتاب برگشت تا سیتا را ببیند که ناگاه از پس پشت شغال که کومایو گویند بش
بشور آواز کرد رام ازا شنیده متفکر شده بخاطر کرد که شگون زبون شد
سیتا بی لچهمن شده باشد و خیر نبوده باشد این راچهس که آواز کرده
لچهمن آزا شنیده سیتا را گذاشته باشد یا خود سیتا او را فرستاده باشد
داو بجانب من روانه شده باشد بدین آئین فکر و اندیشه کنان و حالت
سیتا را در یاد گذران بطرف جن استهان روان شد ناگهان آهوان
و بهایم و طیوران از طرف چپ آواز شغب ناک کردند رام این شگونها را
دانسته گفت خیر باد ما همه را باز روان شد ناگاه لچهمن رو برو آمده و آنها را راه
دید با چهرهٔ غمناک غمزده نظر کرد رامچندر آمدن لچهمن را بسیار بد گفت و دو دست
لچهمن بدست چپ گرفته گفت دریغ لچهمن تو بد کردی که سیتا را گذاشته
اینجا آمدی مرا شبه است که خیر نیست که سیتا را راچهسی کشته یا خورده باشد
که مرا این شگونهای زشت مینماید این راچهس صورت آهو کرده مرا دور برد و خود را
هلاک کرد و سیتا دور از من و تو شده مبادا کسی او را برده یا خورده باشد یا مرده باشد

درینجا صورت صحرا و درختان و چپ و راست جانوران مثل آهو و شغال

सर्ग-५६

रामचन्द्र की वापसी

महर्षि वाल्मीकि लिखते है कि रामचन्द्र उस राक्षस को जो हिरन के रूप में था मारकर शीघ्र ही वापस हुए ताकि सीता को देखें कि अचानक पीछे से एक गीदड़ ने जिसे गोमायु कहते हैं, शोर मचाया। राम ने उसे सुनकर, चिन्तित होकर मन में सोचा कि अपशकुन है। सीता बिना लक्ष्मण के होंगी और कुशल नहीं होगी। उस राक्षस ने आवाज़ की होगी तो लक्ष्मण ने उसे सुनकर सीता को छोड़ दिया होगा या स्वयं सीता ने भेजा होगा और वह मेरी ओर आया होगा। इसी प्रकार सोचते हुए और सीता की दशा को याद करते हुए जन स्थान की ओर चले अचानक हिरनों, पशुओं और पक्षियों ने बायीं ओर से शोर मचाया। राम ने उन शकुनों को समझते हुए कहा; ''हम सबका भला हो'' फिर चल दिये अचानक लक्ष्मण सामने आ गये उनको मार्ग में दुखी मुख के साथ देखा और रामचन्द्र ने लक्ष्मण के आगमन को बहुत बुरा कहा और लक्ष्मण का हाथ बायें हाथ में पकड़कर कहा; ''लक्ष्मण ! तुमने बुरा किया कि सीता को छोड़कर यहाँ चले आये। मुझे सन्देह है कि सब कुशल नहीं है। सीता को राक्षस ने मार दिया होगा या खा गया होगा। क्योंकि मुझे यह बुरे शकुन लगते हैं। यह राक्षस हिरन का रूप धारण कर मुझे दूर ले गया और स्वयं को मार डाला और सीता मुझसे तुम से दूर हो गयी। निःसंदेह कोई उन्हें उठा ले गया होगा या खा गया होगा या वह मर गयी होगी।

و بهایم و طیور زبان و دهن کشاده آواز میکنند و رام بدست چپ لچهمن بدست راست گرفته
سخن میگوید

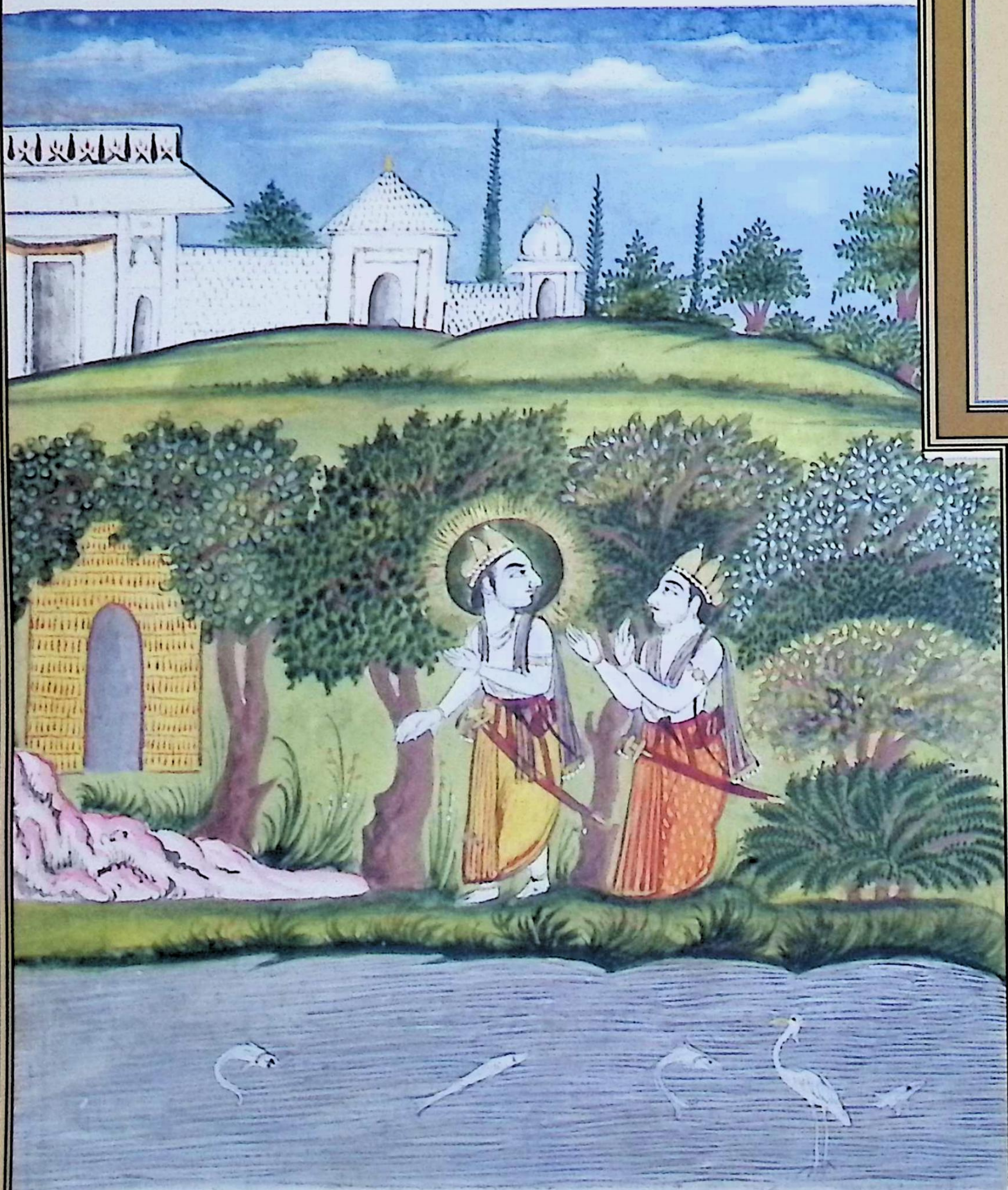

वन और वृक्षों का चित्र- और दाहिने बायें हिरन, गीदड़ जैसे पशुओं और बहायम एवं पक्षियों का चित्र जो मुॅह खोले हुए शोर मचा रहे हैं और राम लक्ष्मण का बायॉ हाथ अपने दाहिने हाथ में लेकर बातें कर रहे है।

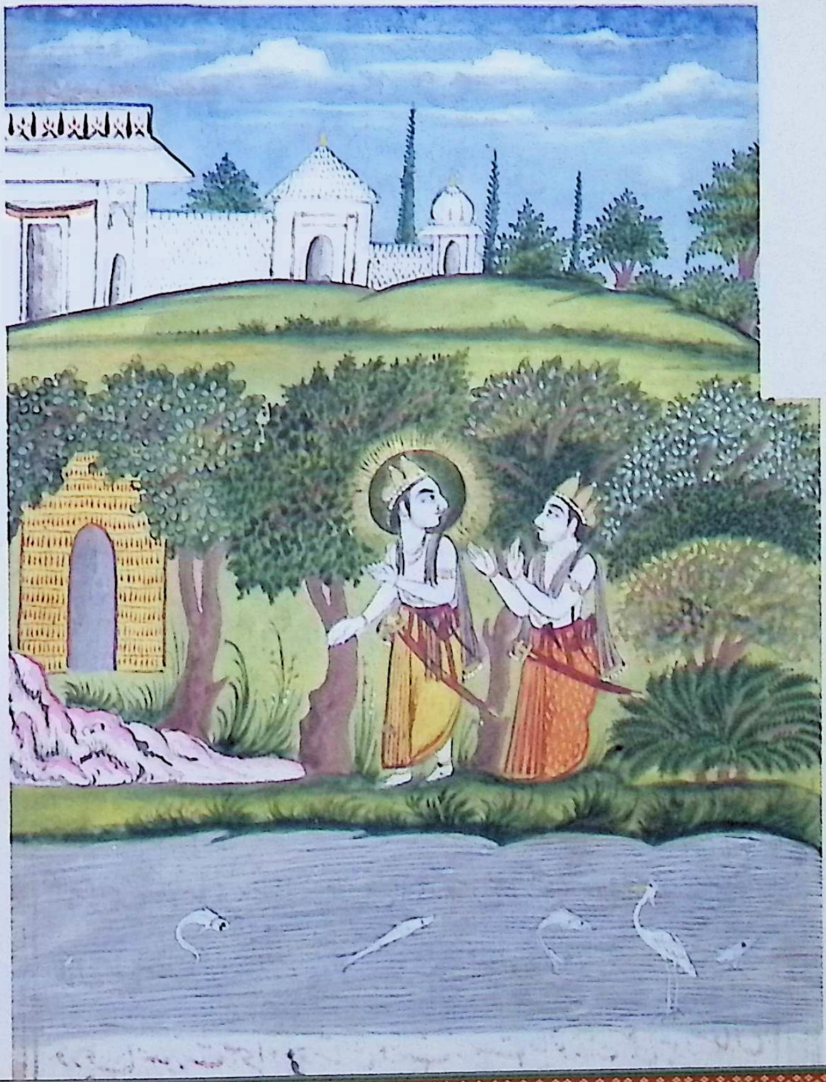

سرگفتار لچهمن ت رامچندر بغیرت از لچهمن پرسید آن سیتا که تو او را کذاشت

درینجا آمدی کجاست و من از راج افتاده و فرزند کار زن کزیده را باعث تسلی کو که بی او نبود

نتوانم زیست و جچه شدن و دیوانه شدن و تمام زمین یافتن بی او آرزو ندارم اگر جه سیتا زنده ست

و کو که برآمدن من از شهر لاینفع شود و کو که مراد کیکئی برآید من برای سیتا خواهم مرد و تو بی من

خواهی رفت بهرت را راج بآسایش خواهد داد و کوشلا مراد نخواهد یافت اگر سیتا زنده است

ما باز خواهیم رفت و بی او جان را خواهم کذاشت ای لچهمن آن راچهس از دغا آواز مثل من کرد

و سیتا آن را شنیده ترا فرستاد و تو شتاب برائی دیدن من آمدی تو این کار لایق خود

نکردی بی شبه راچهسان بانتقام کهر سیتا را خوردند حالا چکنم که او را بیابم رام بدین آئین

سیتا را یاد کنان با لچهمن در جن استهان رسید در اثنای راه باز با حواس پریشان

بلچهمن گفت مرا شکون ها بد پیش می آید بسیار تصدیع تا مدتی مرا خواهند داد القصه رام

از ماندگی راه و گرسنگی و تشنگی دهن خشک شده آه سرد میکشید و برادر را ملامت میکرد و غمناک گشت

بدین حال با شرم رسید چون خالی دید هر سو دوید اصلا اثری ندید مو بر تن او برخاست

سرکن بیان شکون بد رام از آشرم برآمده با اضطراب تمام بلچهمن گفت ای لچهمن تو سیتا را کذاشته

چرا رفتی از دور ترا دیده چشم من پریده و بازو و جگر من جهید فی الفور دانستم لچهمن

از ترس و خوف گفت من از خود سیتا را نگذاشتم آواز که مانند آواز شما بشنید که مرا نگاهدار

सर्ग–६०

लक्ष्मण की वार्ता

रामचन्द्र ने विवशता के साथ लक्ष्मण से पूछा कि वह सीता जिनको तुम छोड़कर आए हो कहाँ है ?मुझसे राज्य से दूर पड़े हुए और दण्डकारण्य को अपनाए हुए से सांत्वना की कोई बात कहो कि मैं सीता बिना थोड़ी देर भी जीवित नहीं रह सकता और उनके बिना मुझे यक्ष हो जाने, देवता हो जाने और सम्पूर्ण पाने की भी इच्छा नहीं है। यद्यपि सीता जीवित हो और कहो कि मेरा शहर से आना हानिकारक होगा और कहो कि कैकेई की मनोकामना पूरी हो जायेगी। मैं सीता के लिये मर जाऊँगा और तू मेरे बिना चला जायेगा। भरत निश्चिन्त होकर राज्य करेगा और कौशल्या की मनोकामना नहीं पूरी होगी। यदि सीता जीवित है तो हम फिर जायेंगे और उनके बिना अपने प्राण दे देंगे। ऐ लक्ष्मण ! उस राक्षस ने छल से मेरी आवाज़ निकाली और सीता ने वह सुनकर तुम्हें भेज दिया और तुम शीघ्र मुझे देखने चले आये। तुमने यह अच्छा कार्य नहीं किया। निःसन्देह राक्षसों ने खर के प्रतिशोध में सीता को खा लिया। अब मैं ऐसा क्या करूँ कि उनको पा लूँ"। राम इसी प्रकार सीता को याद करते हुए लक्ष्मण के साथ जन स्थान पहुँचे। मार्ग में फिर चिन्तित होकर लक्ष्मण से कहा; "मुझे अपशकुन आ रहे हैं। यह एक समय तक मुझे कष्ट देंगे।" संक्षिप्त यह राम मार्ग की थकान और भूख प्यास के कारण मुख सूखा आह खींचते थे और भाई की निन्दा करते थे। इसी दशा में आश्रम पहुँचे। जब उसे खाली देखा तो चारों ओर दौड़े। लेकिन सीता को कहीं नहीं पाया। उनके शरीर के बाल खड़े हो गये और वह दुखी हो गये।

सर्ग–६१

अपशकुन का वर्णन

राम ने आश्रम से निकलकर बड़ी व्याकुलता के साथ लक्ष्मण से कहा; "ऐ लक्ष्मण ! तुम सीता को छोड़कर क्यों गये थे ?तुमको दूर देखकर मेरी आँख फड़की थी और मेरी भुजाएँ और हृदय फड़फड़ा रहे थे। मैंने उसी समय जान लिया।" लक्ष्मण ने भय के साथ कहा; मैंने स्वयं सीता को नहीं छोड़ा। उन्होंने जैसे ही आपकी जैसी आवाज सुनी कि मुझे बचाओ।

او با ضطراب مرا گفت برو برو من چند بار قبول نکردم و گفتم آن کیست که رام را خوفی رسا
ازین گفتار مرا بد گفتن و ملامت کردن گرفت و سفله گفت و گفت چرا برادر را محافظت نکنی
باز گفتم که چنان کسی نبوده و نخواهد شد که رام را در جنگ بکشد باز مرا سیتا از خشم چشم سرخ کرده
بگریه گفت ای خطا کار خطا در خاطر تست اگر برادر تو بمیرد مرا نخواهی یافت دریافتم که تو از حکم
بهرت بطریق دشمنی با رام میباشی که درینوقت مدد کار نمیشوی تو دغا بازانه برای من باشی
چون اینچنین از سیتا بشنیدم از آشرم بدر رد و دیدم رام گفت تو خوب نکردی زیرا که تو قوت
و طاقت من و کشتن راچهسان میدانستی تو مغلوب غصه گشته امر مرا بجا نیاوردی اینک ببین آن
راچهس را که بصورت آهو شده مرا از آشرم بیرون کشیده کشته افتاده است چون کشتم شکل آهو گذاشته
دارنده بازو بند شد و آن آواز کرد تو آنرا شنیده اینجا آمدی درینجا صورت جنگل و جانوران و رام و لچهمن و

دآهوی طلائی مرده و یکطرف آشرم

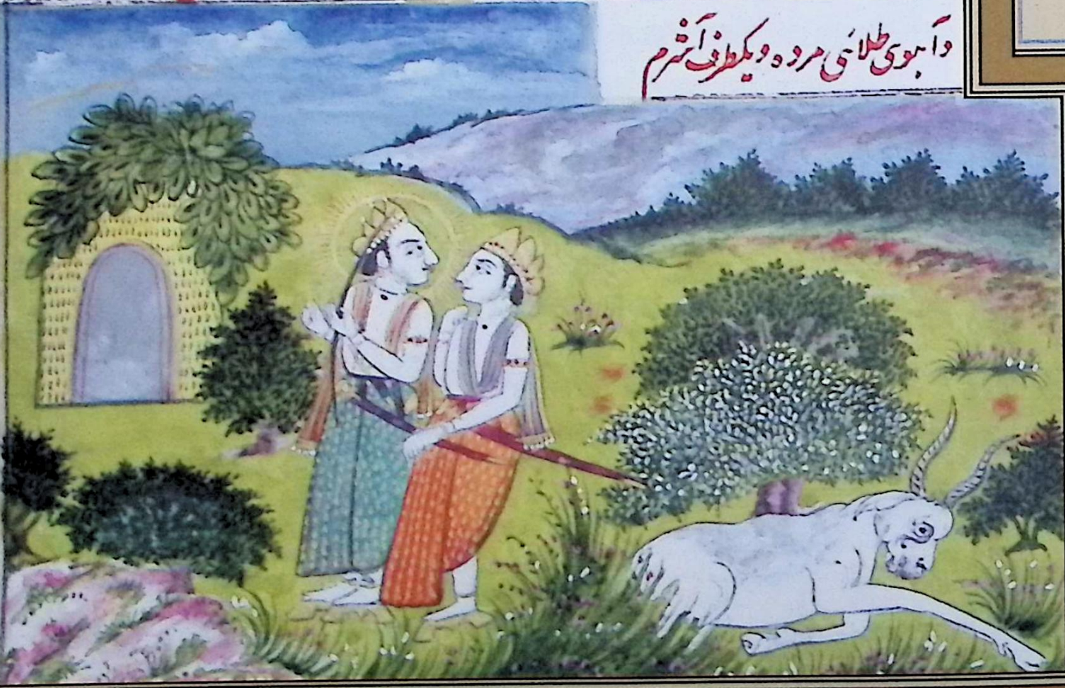

उन्होंने व्याकुल होकर मुझसे कहा ''जाओ जाओ।'' मैंने कई बार उनकी आज्ञा नहीं मानी और कहा ''वह कौन है जो राम को कोई हानि पहुँचा सकता है।'' इस पर वह मुझे बुरा भला कहने और निन्दा करने लगीं, कमीना कहा और कहा कि तुम क्यों भाई की रक्षा नहीं करते ?मैंने फिर कहा कि ''ऐसा न कोई हुआ है और न होगा कि राम को युद्ध में मारे।'' फिर सीता ने मुझे लाल आँखों से देखते हुए रो-रोकर कहा; ऐ पापी ! तेरे मन में पाप है। यदि तेरा भाई मर जायेगा तो तू मुझे भी न पायेगा। मुझे ज्ञात है कि तुम भरत की आज्ञा से शत्रु के रूप में राम के साथ रहते हो कि ऐसे समय उनकी सहायता न करे। तू मेरे लिये छल के रूप में रहता है।'' जब मैंने सीता की यह बात सुनी तो आश्रम के बाहर दौड़ गया राम ने कहा तुमने अच्छा नहीं किया क्योंकि तुम मेरी शक्ति और बल राक्षसों की हत्या करने में जानते थे। तुमने क्रोध से प्रभावित होकर मेरा आदेश नहीं माना। अब देखो उस राक्षस को कि हिरन का रूप धारण करके मुझे आश्रम से निकाल लाया था। अब मरा पड़ा है। जब मैंने उसे मारा तो हिरन का रूप छोड़कर वह राक्षस बन गया और वह आवाज निकाली जिसे तुम सुनकर यहाँ चले आये। वन और पशुओं का चित्र- राम और लक्ष्मण जा रहे हैं तथा सोने का हिरन मरा पड़ा है और एक ओर आश्रम है।

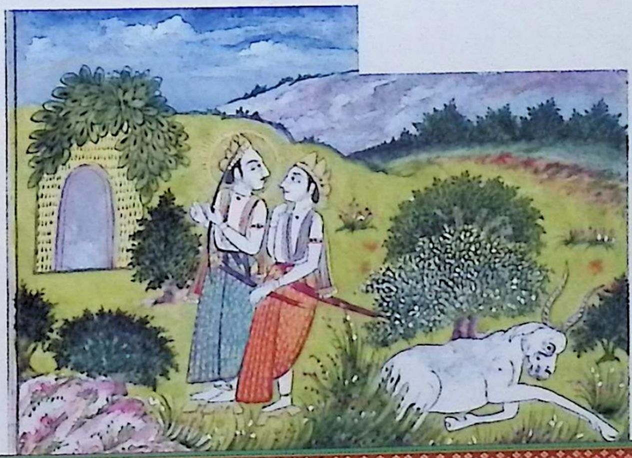

سرک آمدن باشرم بار دیگر رام باجهیدن چشم چپ و با نفاس شکسته بجسم لرزنده
باشرم آمده سیتا را بار بار آواز میداد و باز بسرعت بآرزوی دیدن سیتا بصد اضطراب شتابان
باشرم رسید مکانرا خالی یافت و چند غمناک شد جابجا تمام جن استهان را نظر کرد و چون
بی سیتا بیرونق یافت گویا درختان میگریند و گل و بار گرد آلوده اند و خوبی رفته و دیوتا
صحرا گذاشته اند همه جا را خالی دیده از غم و گریه زاری نموده گفت سیتا ریاضت کش مرا
کسی برد یا مرد یا خورد یا برای اثمار و گلها رفته در صحرا غایب شد یا برای نیلوفر رفته در دریا
افتاد از بیهوشی و دیوانگی از درختان پرسیدن گرفت ای درخت کدنب صاف برگ
اگر سیتا زرد پوش را دیده باشی بگو وای درخت بلو آنرا که پستانش مانند بلوست
اگر دیده باشی بگو ای درخت ارجن وای لگوبهه وای درخت تلک وای درخت آشوک
بزودی شوک یعنی غم من دور کن وای درخت چنبو یعنی نارنگی اورا که لب او برنگ بار تست
دیده بگو وای آهو اورا که چشم او مانند چشم تست اگر دیده بگو وای فیل آنرا که ران او
مانند خرطوم تست اگر دیده بگو وای شیر اگر اورا که از دهشت تو میترسد دیده بگو ای سیتا
چرا در درختان مخفی میشوی و دور دور میروی بایست مگر در تو مهر نیست و تو پیشتر
چنین هرزه خند طور نبودی چرا از دستور خود نمینمائی چرا میگریزی ایستاده شو بار دیگر
گفت آن خنده روا اینجا نیست هر آینه اورا چیزی خورد والبته آن خوش دندان خوش لب

सर्ग-६२

आश्रम में राम का आना

पुनः राम बाईं आँख फड़कती हुई, टूटी सांसों और काँपते शरीर के साथ आश्रम में पहुँचे। वह सीता को बार-बार पुकार रहे थे और फिर शीघ्रता से सीता को देखने की इच्छा में व्याकुलतापूर्वक इधर-उधर पहुँचते थे और घर को खाली देखकर पहले से अधिक दुखी हो जाते थे। समस्त जन स्थान को देखते थे और वीरान कुटिया को सीता के बिना तेज हीन पाते थे। मानों वृक्ष रो रहे हों और फूल पत्ते मिट्टी से भरे हैं देवताओं ने वन छोड़ दिया है। समस्त स्थान को खाली देखकर दुख के कारण विलाप करते हुए कहते थे। मेरी तपस्विनी सीता को कोई उठा ले गया या वह मर गई या किसी ने खा लिया या फलों या फूलों के लिये वन में जाकर खो गयी या नीलोफर के लिए नदी में जाकर डूब गयी। राम अचेतन अवस्था और मानसिक सन्तुलन ठीक न होने के कारण से वृक्षों से पूछने लगते हैं कि ऐ स्वच्छ पत्तों वाले वृक्ष कदम्ब! यदि तुमने पीला वस्त्र धारण किये सीता को देखा हो तो बताओ। ऐ विल्व (बेल) वृक्ष। जिसका स्तन बेल के समान है, यदि तुमने देखा हो तो कहो और ऐ वृक्ष अर्जुन। ऐ ककूकह। ऐ तिलक वृक्ष और अशोक वृक्ष ! शीघ्र मेरा दुख दूर करो और ऐ चम्पू वृक्ष अर्थात् नारंगी ! जिसके होंठ तेरे रंग के समान हैं यदि उसे देखा हो तो बताओ। और ऐ हिरन जिसकी आंखे तेरी आँखों जैसी हैं यदि देखा हो तो बताओ और हे हाथी जिसकी जांघे के समान कोमल है यदि उसे देखा हो तो बताओ और ऐ शेर ! यदि उसे जो तुझसे भयभीत होती है यदि देखा हो तो बताओ। ऐ सीते ! तुम क्यों वृक्षों में छिपी हो और दूर-दूर जाती हो। संभवतः अब तुम में प्रेम नहीं रहा और तुम पहले तो ऐसी नहीं थीं क्यों तुम अपना रूप नहीं दिखलाती हो ?क्यों भागती हो ?खड़ी क्यों नही होती, पुनः कहा, वह यहां नहीं है वास्तव में उसे राक्षस ने खा लिया है। अवश्य वह सुन्दर दाँतों वाली सुन्दर होंठ वाली,

خوش بینی خوش طور باروئی مانند قمر غایب شد و آن برنگ چینک و نازک غزیزه مرا کسی خورد
و یا بغیر من دردام را چهسان افتاد بدین آئین اضطراب کنان از صحرا بصحرا میگذشت
جای میدوید و جای بیهوش میشد جای مانند مست افتان و جای نظر کنان جای دوان
و جای نعره زنان جای آهسته گویان میرفت صحراها و دریاها و کوه‌ها و جای برآمدن آب
بجست و باز بلچهمن گفت ای لچهمن تو سیتا را بجو و مرا زود آمده بگو بدین آئین نوحه کنان
با دل بریان و دیده گریان در هر جا بگذشت درینجا صورت رام و لچهمن و پرن شالا و صورت جنگل و درختان
و آهوان و شیران و طاوس و غیران

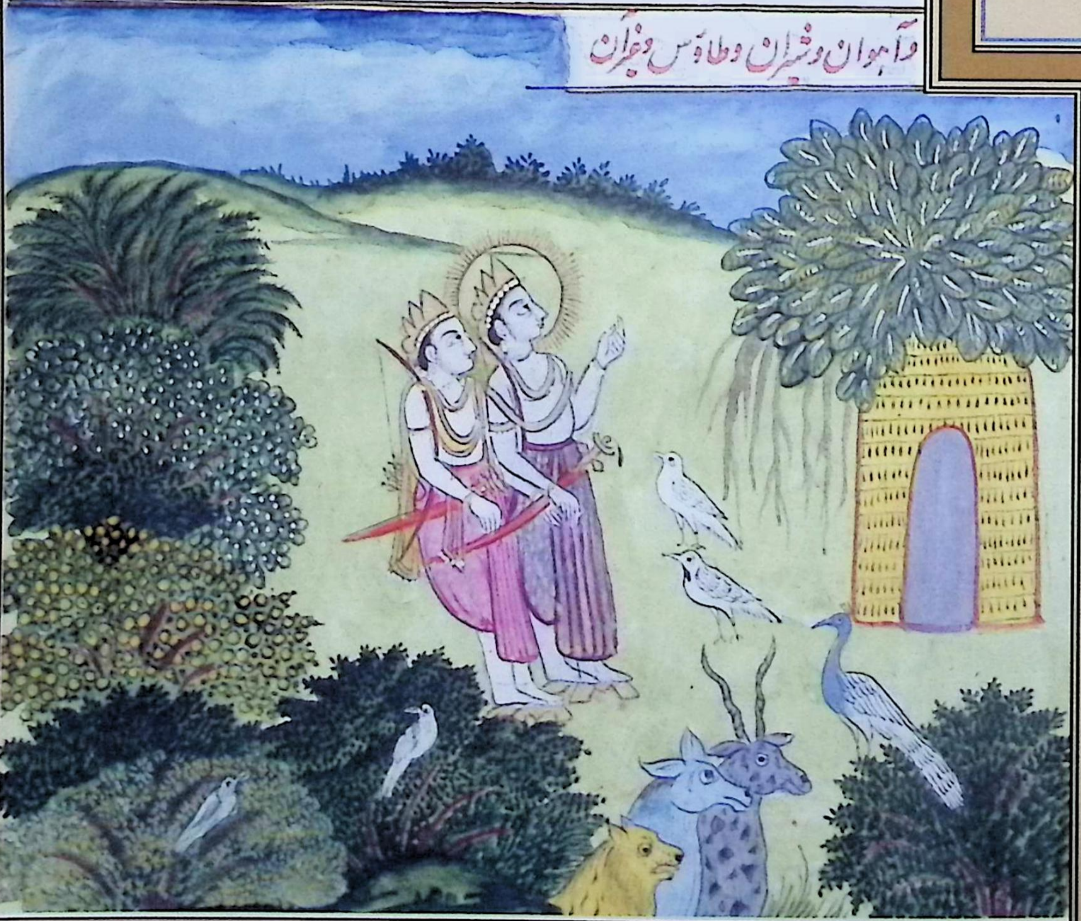

अच्छी नाक वाली, अच्छे कार्य करने वाली और चाँद जैसे मुख वाली गायब हो गयी। और मेरी इस चंग के रंग वाली और कोमल प्रिया को किसी ने खा लिया या वह मेरे बिना राक्षसों के जाल में फँस गयी। इसी प्रकार चिन्ता और व्याकुलता प्रकट करते हुए एक वन से दूसरे वन में जा रहे थे। कहीं दौड़ते थे कहीं बेहोश हो जाते थे, कहीं मस्तों की भाँति गिरते पड़ते, कहीं देखते हुए, कहीं दौड़ते हुए, कहीं नारा लगाते हुए और कहीं धीरे बोलते हुए चले जा रहे थे। वन, नदी, पर्वत और तालाबों पर ढूँढ़ते और फिर लक्ष्मण से कहते थे। ''ऐ लक्ष्मण ! सीता को ढूँढ़ो और मुझको शीघ्र आकर बतलाओ।'' इसी प्रकार शोक करते हुए, जलते हुए दिल और रोती हुई आँखों के साथ वह हर जगह जाते थे।

राम, लक्ष्मण और पर्णशाला का चित्र-और वन, वृक्ष, हिरनों, शेरो और मोर आदि का चित्र।

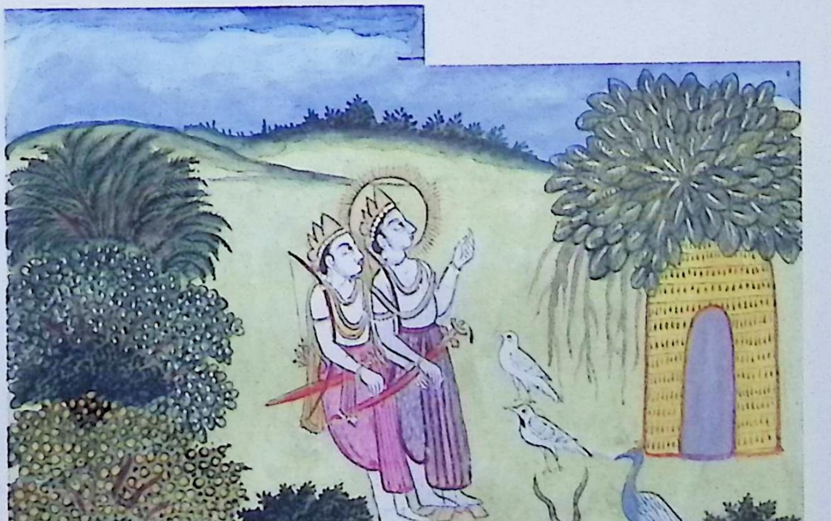

سرکت دیدن پرن شالا رامچندر جن استهان و پرن شالا وغیره را خالی از سیتا دید

بمسکینی و غریبی بلچهمن گفت سیتا را کدام سو گذاشتی و کدام کس خورد میدانم که او را چهینیے برد

برد و کشت و پاره کرد و بخورد حالا بدین جهت ما را با راچهسان جنگ کلان واقع میشود از کشتن

سیتا راچهسان عداوت کلان با من کردند بدین نوع از آشرم یک کروه بگذشت دید که اسلحه آراسته

و کار هائی جنگ بر زمین افتاده رامچندر آن را نظر کرده بلچهمن نمود که این کمان که از مروارید

و کوچ یعنی زره آفتاب وار از بیدرویه مرصع افتاده و چتر که با مالاها و صد شلاکها زیباست

و خرها با رسن زرین و لباس پشاج و تیرها با کنکنی یعنی زنکوله وغیره بر زمین افتاده انداز کیست حالا دانستم

که البته سیتا مرده و هوشم برد و پدرم دشرته بنظر می آید آثار مرگ مرا مینماید و پدر در عاقبت مرا دوبک یعنی لعنت

خواهد گفت که از غم طپیده و از مطلب و ربوده مرا سیتا بگذاشت و آنجوبه من چه شد چنانچه شعاع مهر بغروب رود

در ینجا صورت رام و لچهمن و رتهه معه خران کشته افتاده و سایه کش زرین افتاده و صورت صحرا و پرن لا

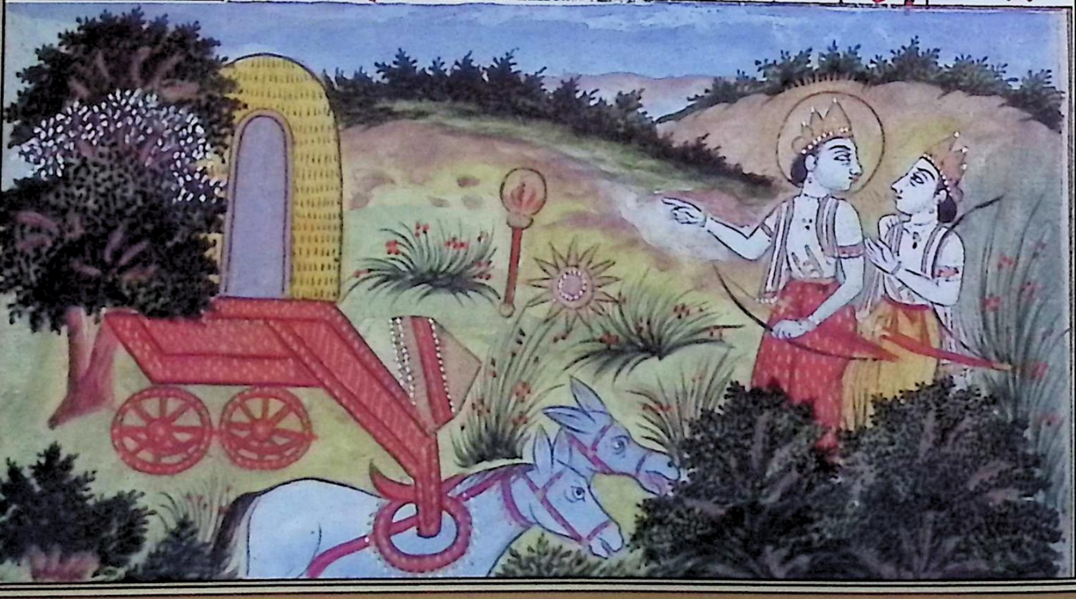

सर्ग-६३

पर्णशाला को देखना

रामचन्द्र ने जन स्थान और पर्णशाला आदि को सीता के बिना देखकर दुखी और विवशता के साथ लक्ष्मण से कहा ''तुमने सीता को किस ओर छोड़ा और किसने उन्हें खाया ?मैं जानता हूँ कि उनको वही राक्षस ले गया और मारकर टुकड़े-टुकड़े करके खा गया। अब राक्षसों के साथ भयंकर युद्ध होगा। सीता को मारने से राक्षसों ने मुझसे बड़ी शत्रुता कर ली है।'' इस प्रकार आश्रम से एक कोस आगे बढ़ गये देखा कि हथियार और युद्ध सामग्री पृथ्वी पर पड़ी है। रामचन्द्र ने उन्हें देखकर लक्ष्मण को दिखलाया कि यह धनुष मखारीद से सुसज्जित है, सूर्य के समान चमकती हुई सुसज्जित कवच और रत्नों से जड़ा हुआ ताज सुन्दर है और गधे सुनहरी रस्सियों और रेशमी वस्त्रों के साथ और बाण आदि पृथ्वी पर पड़ा है। यह किसके हैं अब मैंने समझा कि सीता वास्तव में मर चुकी हैं। मेरा बुद्धि विवेक ले गयी, और मेरे पिता दशरथ मुझे दिखाई दे रहे हैं। मुझे मौत दिखाई देती है। पिता परलोक में मुझसे धिक्कार भेजेंगे कि दुख से तड़पते हुए और अपने उद्देश्य से दूर पड़े हुए मुझको सीता ने छोड़ दिया। वह मेरी प्रेमिका क्या हुई जैसे कि सूरज की किरणें अस्त हो जाती है।

राम लक्ष्मण का चित्र और रथ गधों के साथ पड़ा हुआ है और सुन्दर छतरी पड़ी हुई है और वन और पर्णशाला का चित्र।

سرگ غم رام بعد از انکه رآم غمزده با سیتا ملاقی نشد مانند فیل بگل فرو مانده دم ها می کشید
لچهمن بطریق تسلی میگفت که اضطراب مکنید تدبیر باید تمام صحرا بجوئیم شاید که برای نیلوفر و گلها رفته
یا در دریا آمده باشند غمگین مشو آخرش رآم و لچهمن هر دو بجست و جو مقید شدند چنانکه صحرا ها
و کوهها و قله ها و کوه و غار ها همه جا تلاش کردند لیکن سیتا را نیافتند ناچار رآم بلچهمن گفت
من سیتا را نمی یابم لچهمن گفت تو آن دختر جنک را بیابی چنانچه آتشمن راجه بل را بسته
تمام زمین از و بگرفت رآم از غمگینی و بیکسی گفت همه صحرا و کوه ها جستیم لیکن از سیتا
نشان نیافتیم بدین آئین رآم از هجر سیتا تا بصورت بیهوش شد و دیوانه طور دم سرد
کشیدن گرفت و بشور تمام ای عزیزهٔ من میگفت و لچهمن دست بسته انواع انواع تسلی
میکرد و رام بخاطر نمی آورد و از مسکینیت و غربت و تنها بر داشته شور کرده میگفت راجه
هر سه لوک را که اندر شوهر شچی است خراب میکنم مگر عورت مرا برائی بازی برده باشد ای لچهمن
زود بر کنار دریائی منداکنی برو و خبر بیار شاید که برای نیلوفر در انجا رفته باشد لچهمن بسرعت
بر آن دریا رفت و تجسس نمود و نبود آمده برآم گفت در تیر به دیدم و آوازها دادم کسی جوابی نمیدهد
معلوم نیست که سیتا کجاست و منداکنی میگوید که راون نامی برای هلاک کردن جهانیان
برده این سخن را سیتا به نیلوفرها گفته رفت که برام بگوئید رام این سخن شنیده خود بر منداکنی
رسید و پرسید که سیتا کجاست منداکنی از خوف کار و صورت راون یاد کرده با رام

सर्ग-६४

राम का दुःख

इसके बाद दुखी राम की सीता से भेंट नहीं हुई। वह दलदल में फँसे हाथी के समान ठण्डी आह भरते थे और लक्ष्मण सांत्वना के रूप में कहते थे कि ''चिन्ता न करें, योजना बनाइये। हम सारे वन में ढूढेंगे। हो सकता है कि नीलोफर और फलों के लिये गयी हो या नदी पार कर गयी हों, दुखी न हो'' अन्त में राम और लक्ष्मण दोनों ढूँढ़ने में लग गये। अतः वन, पर्वत, पर्वत की चोटियों और गुफाओं प्रत्येक स्थान पर ढूंढ़ा लेकिन सीता को नहीं पाया। विवश होकर राम ने लक्ष्मण से कहा; ''मैं सीता को अब नहीं पाऊँगा।'' लक्ष्मण ने कहा; आप जनक की उस पुत्री को अवश्य पायेंगे। उसी प्रकार जिस प्रकार विष्णु ने राजा बलि को बाँधकर समस्त पृथ्वी उससे ले ली थी।'' राम ने दुख और दीनता से कहा; हमने सारा वन और पर्वत ढूँढ़ लिया लेकिन सीता को कहीं नहीं पाया। इस प्रकार राम सीता के वियोग में कुछ समय के लिये बेहोश हो गये और पागलों के समान आह खींचने लगे और तेज आवाज से ''ऐ मेरी प्रिय'' कहते थे कि मैं तीनों लोक के राजा जो लालची पति इन्द्र है उसको नष्ट कर दूँगा। संभवतः वही खेलने के लिए मेरी पत्नी को ले गया होगा। ऐ लक्ष्मण ! तुम शीघ्र मन्दाकिनी नदी के किनारे जाओ और सूचना लाओ। संभवतः वह वहाँ नीलोफर के लिये गयी हो। लक्ष्मण शीघ्र उस नदी पर गये और सीता की खोज की। लेकिन वह वहाँ नहीं थी। वापस आकर राम से कहा; मैंने तीर्थ में देखा आवाज़ें दी लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। मालूम नहीं सीता कहाँ हैं और मन्दाकिनी कहती है कि रावण संसार वालों की हत्या करने के लिये ले गया है। यह बात सीता नीलोफर से कहती हुई जाती थी कि राम से कह देना। राम यह बात सुनकर स्वयं मन्दाकिनी पर पहुँचे और पूछा कि सीता कहाँ हैं ?मन्दाकिनी ने परिणाम के भय से और रावण का रूप याद करके राम से सीता की कोई सूचना नहीं दी।

هیچ خبر سیتا نگفت رام نا امید برگشته بلچهمن گفت من با همه اقربا و برادران و با مادر سیتا
چه خواهم گفت آن سیتا که با من از راج افتاده در جنگل با ثمار صحرا قناعت نموده غم مرا دور میکرد
کجا رفت و او را اگر نخواهم دید تمام شب از بیداری بیقراری چون روز محشر دراز خواهد شد
از کنار هند اگنی و جن استبهان و این کوه اگر سیتا را نه بنیم زودم لچهمن گفت سیتا درینجا نیست
مضطرب مشوید از تامل تدبیر کنید و گرنه من و تو هر دو هلاک خواهیم شد بدین آیین با یکدیگر گویان
هر دو برادر بر زمین افتادند بعد از آن کلبا را دیده رام بلچهمن گفت میدانم که سیتا برای
کلها رفته باشد بدینگونه غم کرده از کوه بغصه گفت اگر نشان عورت مرا نمیدهی ترا با کوه و نواح تو
میسوزم و از تیرها استر خاکستر میکنم و آب و گیاه و درخت تو هیچ نماند و با لچهمن گفت این دریارا
خشک میکنم که سیتا ماهروی مرا نشان نمیدهد بدین روش از غصه و غم میطپید که ناگاه نشان
پای راچهس سیتا بر زمین بدید باضطراب تمام بلچهمن گفت اینک قدم راچهس و سیتا در کوه
نیست بر کوه بیجا غصه کردم لچهمن آن قدم خوفناک را بنگرید بعده رام کمان برکشید
گفت اگر جم با قبیله خود بیاید و مرگ هم با قربا خود برسد اگر تو عقب من باشی هیچکس از عهده
نتواند برآمد اکنون قوت و زور مرا هر سه لوک می بینند که از تیرهای من دیوتاها پاره پاره
شده می افتند هرگاه من از غصه کمان مطابق خواهش برکشم تمام لوک را خالی از راچهسان
به بینی حالا از رفتن سیتا آتش غم مشتعل شده مانند داوا اگنی که در کوه شود اگر ابلیه من

राम ने निराश होकर लक्ष्मण से कहा मैं अपने सम्बन्धियों, भाईयों और माता से सीता के विषय में क्या कहूँगा ?वह सीता जो राज्य से दूर होकर और वन में जंगली फलों पर संतोष करते हुए मेरा दुख दूर करती थी कहाँ चली गयी ?और यदि मैं उसे नहीं देखूंगा तो पूरी रात्रि व्याकुल एवं अनिन्द्रा के कारण प्रलय की भाँति लम्बी हो जायेगी। मैं मन्दाकिनी के तट से और उस जन स्थान और उस पर्वत से यदि सीता को नहीं देखूंगा तो नहीं जाऊँगा। लक्ष्मण ने कहा; ''सीता उन स्थानों पर नहीं हैं। आप चिन्तित न हों। हम विचार करके उपाय निकालेंगे अन्यथा मैं और आप दोनों मर जायेंगे। इस प्रकार की बातें करते हुए दोनों भाई धरती पर पड़ गये। उसके बाद राम ने फूलों को देखकर लक्ष्मण से कहा ''मैं जानता हूँ कि सीता फूलों के लिये पर्वत पर गयी होगी। इस प्रकार दुखी होते हुए क्रोध से पर्वत से कहा। यदि तुम मेरी स्त्री का पता नहीं बताओगे तो मैं तुम्हें तुम्हारे आस पास समस्त को जला डालूँगा और बाणों से धरती पर गिरा दूँगा और तुम्हारा जल, घास और वृक्ष कुछ नहीं रहेगा। और लक्ष्मण से कहा ''मैं इस नदी को सुखा दूंगा जो मेरी सीता का पता नहीं देती। इसी प्रकार वह क्रोध के कारण उत्तेजित हो रहे थे कि अचानक उन्होंने राक्षस और सीता के चरणों के निशान धरती पर देखे और बड़ी व्याकुलता से लक्ष्मण से कहा; यह रहे राक्षस और सीता के पाँव के निशान। वह पर्वत में नहीं है, मैंने पर्वत पर अकारण क्रोध किया। लक्ष्मण ने वह भयानक पाँव देखा इसके बाद राम ने धनुष खींचते हुए कहा यदि जम भी अपने क़बीले के साथ आये और मृत्यु भी अपने सम्बन्धियों के साथ पहुँचे। यदि तुम मेरे साथ रहोगे तो कोई भी हमसे युद्ध में विजयी नहीं हो सकेगा। अब मेरा बल और शक्ति तीनों लोक देखेंगे कि मेरे बाण से देवता भी टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ेंगे। जिस समय मैं क्रोध से इच्छानुसार धनुष खीचूँगा तुम सारे लोक को राक्षसों से खाली पाओगे। इस समय सीता के जाने से मेरे दुख की अग्नि किसी पर्वत के ज्वालामुखी के समान भड़क उठी है। यदि मेरी पत्नी दिखाई नहीं देती है तो मैं यक्ष, गन्धर्व, राक्षस और सारे लोगों को नष्ट कर दूँगा।

دیده نشود چچه وکند هرپ وراچهس و تمام را برهم میزنم درینجا صورت دریا منڈا

ویکطرف صورت کوه و جنگل و درختان و اهوان و خرسان و خرگوش و نیلگاو و بطرف بالا کوه و بطرف

پائین دریا و دران ماهیان وغیره و در سبزه رام و لچهمن غمین نشسته و در جای نشان قدم را چهس و ستیا

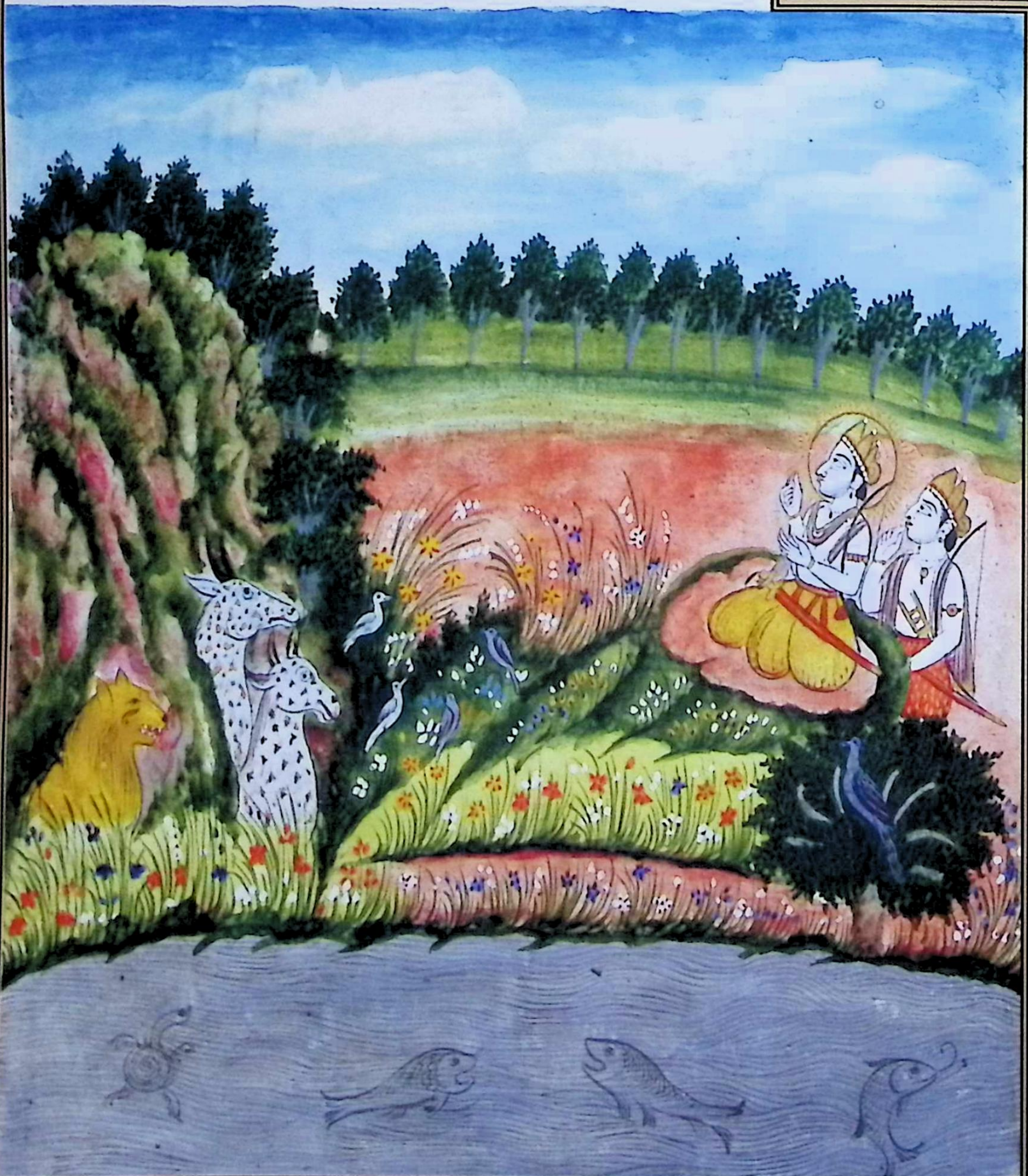

मन्दाकिनी नदी का चित्र- एक ओर पर्वत, वन, हिरनों, वृक्षों, खरगोशों और नील गायों का चित्र, पर्वत के ऊपर की ओर नीचे नदी है। उसमें मछलियाँ आदि हैं और घास पर राम और लक्ष्मण दुखी बैठे हुए हैं और एक स्थान पर राक्षस और सीता के पाँव के चिह्न हैं।

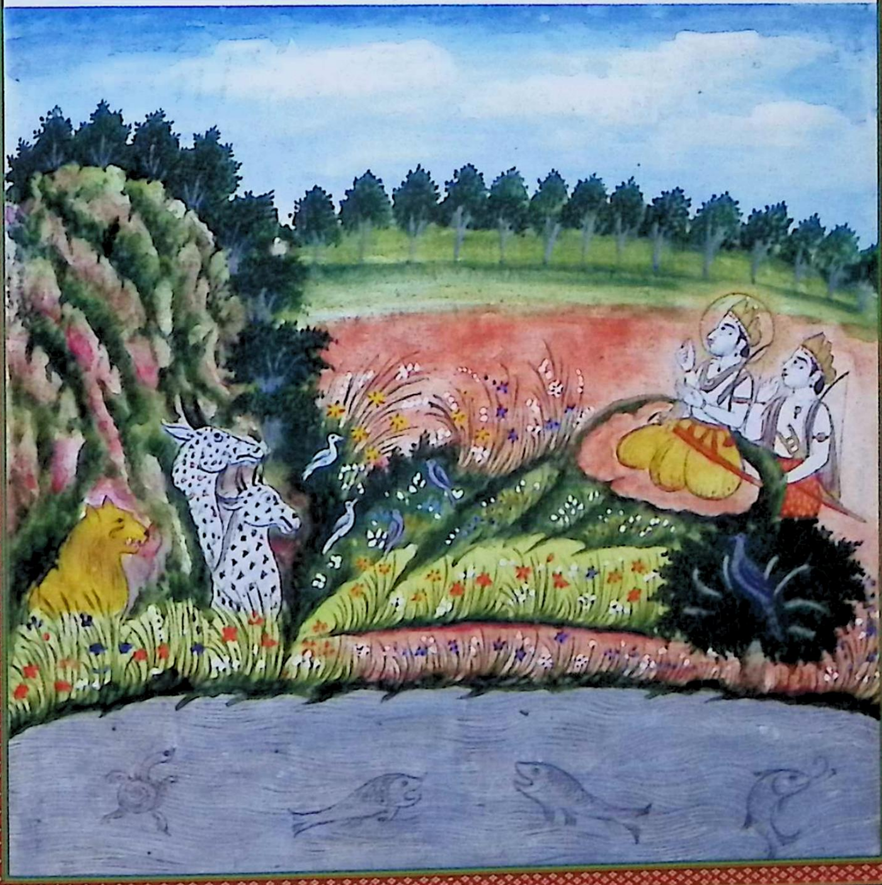

سرگ اضطراب بدین آئین رام از غم رفتن سیتا طپیده کمان در دست گرفته چنان
نمودار میشد که برائی کشتن راجه دچهه مهادیو باشد غصهٔ رام را بدین طور دیده لچهمن
دست بسته با دهن خشک بر زبان آورد تو پیشتر خیرخواه خلق الله و نرم دل
بوده سزاوار خشم نیستی ماه روشنی خود را گذارد و آفتاب شعاع را و باد رفتن را
و زمین حلم را تو کیرت خود را نگذاری و گفتهٔ مرا که راست بود سیتا نشنید و مرا نالائق
سخنان گفت من جواب نتوانستم داد از بار بار گفتن سیتا پیش تو رسیدم و این نمیدانم
که این رتهه شکسته افتاده کیست و اسلحه و پیرایه کدام کس است و قطرات خون که بر زمین افتاده
است این جنگ با کسی راجه شده اما تنها معلوم میشود دویمی نیست و لشکر بسیار هم معلوم نمیشود
و تو برائی هلاک یک کس بهلاکی عالم سزاوار نه میباید که هر یک را موافق گناه سزا دهی هرگاه تو
پناه عالم باشی چگونه همه را کشی و ترا باید که با دریا و کوه و دیوتا و گندهرب و دانو
بد نکنی که دیچهار تو چنین است کسی که سیتا را گرفته او را تفحص کن و همراه منم و الا سمندر را
خشک کنیم و کوه و صحرا را برهم زنیم و دیوتا و گندهرب را بکشیم اگر سیتا ترا بوجه نیک
نخواهد رسید بعد از آن لوک ها را از تیرها برهم زنی چنانچه آندر از بجگر سرگ غم رام
چون لچهمن اینچنین گفت رام قبول کرد و در آن صحرا روان شد تیر و کمان بدست گرفته
و شمشیر بسته میرفت و لچهمن عقب بود و رام از بیهوشی و غم و گرسنگی و تشنگی بی آرام بود

सर्ग-६५

व्याकुलता

इस प्रकार सीता के जाने के दुख में राम व्याकुल और चिन्तित हाथ में धनुष लिये हुए इस प्रकार प्रकट हो रहे थे जैसे कि राजा व दक्ष को मारने के लिये महादेव होते हैं। राम का इस प्रकार का क्रोध देखकर लक्ष्मण ने करबद्ध सूखे मुख के साथ कहा; ''आप पहले भगवान के बनाये जीव जन्तु के शुभचिन्तक और कोमल हृदय वाले रहे हैं, आपको क्रोध शोभा नहीं देता है। चन्द्रमा अपना प्रकाश छोड़ सकता है, सूर्य अपनी किरणों को छोड़ सकता है, हवा बन्द हो सकती है और धरती अपने बोझ से वृत हो सकती है लेकिन आप अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकते हैं। मेरी बात जो सत्य थी, सीता ने नहीं सुनी और मुझे बुरा भला कहा। मैं उत्तर नहीं दे सकता था। सीता के बार-बार कहने से मैं आपके पास पहुँचा था। मैं नहीं जानता कि यह टूटा हुआ पृथ्वी पर पड़ा हुआ रथ किसका है ?और यह हथियार और वस्त्र किसके हैं और यह रक्त की बूँदें जो पृथ्वी पर पड़ी हुई हैं किसकी हैं। यह किसी राजा के साथ युद्ध हुआ है ?वह अकेला मालूम होता है, दूसरा कोई नहीं है। और बहुत अधिक सेना भी नहीं प्रतीत होती है और एक व्यक्ति की हत्या के लिये सारे संसार को नष्ट करने के भागीदार नहीं हैं। चाहिए कि हर एक को उसके पाप के अनुसार दण्ड दें। जब आप संसार के संरक्षक हैं तो कैसे सबकी हत्या करेंगे ?और आपको चाहिए कि आप नदी, पहाड़, देवता, गन्धर्व और दानव के साथ बुराई न करें क्योंकि आपका व्यवहार ऐसा ही है। जो सीता को ले गया है उसे ढूँढ़े और मैं आपके साथ हूँ अन्यथा हम समुन्द्र को सुखा देंगे। पर्वत और वन को नष्ट कर देंगे तथा देवता और गन्धर्व को मार डालेंगे। यदि सीता आपको अच्छी तरह नहीं मिल सकी तो उसके बाद आप समस्त लोक को बाणों से नष्ट कर डालियेगा जैसे कि इन्द्र राम के दुख के वज्र से किया।'' जब लक्ष्मण ने यह बात कही तो राम ने उसे स्वीकार किया और उस वन की ओर चले। हाथ में धनुष बाण लेकर और तलवार बाँधकर चल रहे थे। लक्ष्मण उनके पीछे थे और राम बेहोशी, दुख, भूख प्यास के कारण चिन्तित थे

ناکاه بلچهمن کفت من میدانم که راچهسی سیتارا کرفته در هوا رفته است و درینجا نشان رفتن او
معلوم نمیشود و لچهمن از کدام کس پرسم و بکدام طرف بروم آنطرف نمیدانم که بدانسو سیتارا
کرفته برده است لچهمن کفت اکر پنڈت یعنی عالم دانا را تصدیع رود بداز عقل آنرا بکذراند
واکر نادان را رود بد مانند سنک در آب غرق شود و بخود در ماند و خراب میشود و از غم
خلاص نمیکردد تو عاقل هستی چرا مانند نادانان برائی عورتی بیهوش میشوی رام کفت آنچه
میکوئی درهمین تدبیر سعی میکنم سرکفتار رام بار دیکر رام بلچهمن کفت از روئی غربت و دهرم
راج و مادر و پدر را کذاشته در دندکارن آمدم از بجا آوردن امر پدر مطلب دهرم بود
از رفتن سیتا محافظت دهرم نمیشود سیتا را کسی خورد یا کرفته برد کدام کس مطلب من برآرد
منکه زدم دلم و بدخواه همکنانم و مهربان خاطرم دیوتا ها مرانجا طرحی آرند و چون که کیرنده یا خورنده
سیتا را ببینم خیریت لوک ست والا نه دیوتا نه کندهرپ و نه پشاج و نه راچهس و نه کنر
آرام نیابند اکر سیتا زنده است خیریت لوکها ست وکرنه همه لوکها را مرده بدان
د بغیر سیتا بصورت هم نخواهم زیست و بعد مردن من هر سه لوک با چر و اچر مرده بدانکه
وزور استر مرا ببین هر سه لوک را از فلک بر می اندازم و انجم و آفتاب را
دور میکنم و باد و آتش و قمر را می افکنم و کوه ها بشکنم و دریا ها و تالاب ها خشک کنم
و درختان وغیره می برم واز تیرهائی مانند آتش جهانی را خالی از آدمی میکنم اکر سیتا را

अचानक उन्होंने राम से कहा मैं जानता हूँ कि एक राक्षस सीता को लेकर हवा में गया है। इस स्थान पर उसके जाने का कोई चिह्न नहीं मिलता है और लक्ष्मण मैं किससे पूँछू और किस ओर जाऊँ ?इस ओर मैं नहीं जानता हूँ कि वह सीता को लेकर किधर गया है ?लक्ष्मण ने कहा; यदि पंडित को कठिनाई आती है तो वह उसे बुद्धि से हल करता है और यदि किसी मन्द बुद्धि को कोई कठिनाई आती है तो वह पत्थर के समान नदी में डूब जाता है तथा स्वयं थक जाता है और नष्ट होता है एवं दुख से उबर नहीं पाता है। आप तो बुद्धिमान हैं। क्यों आप, मूर्ख के समान एक स्त्री के लिये बेहोश हो जाते हैं। राम ने कहा जो कुछ तुम कह रहे हो मैं, उसी का प्रयास कर रहा हूँ।

सर्ग–६६

राम की वार्ता

पुनः राम ने लक्ष्मण से कहा ''मैं धर्म के आधार से राज्य और माता पिता को छोड़कर दण्डकारण्य में आया। पिता की आज्ञा मानने में धर्म का पालन उद्देश्य था। सीता के जाने से धर्म की रक्षा नहीं होती है और सीता को कोई खा गया या पकड़कर ले गया। कौन मेरा उद्देश्य पूरा करेगा ?मैं जो कि कोमल हृदय वाला हूँ और सबका भला चाहने वाला हूँ, दयालु हूँ देवता मुझे कुछ नहीं समझते। यदि मैं सीता को पकड़ने वाले या खाने वाले को देखूँगा तभी लोक की कुशलता है अन्यथा न देवता न पिशाच, न राक्षस और न कज़ कोई शान्ति से नहीं रहेगा। यदि सीता जीवित है तो समस्त लोक को मरा हुआ जानो। सारे लोक को मरा हुआ समझो और बिना सीता के एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता, मेरे मर जाने के बाद तीनों लोक सब मर जायेंगे। मेरे अस्त्र का बल देखो, मैं तीनों लोक को आकाश से नीचे फेंक देता हूँ, तारों और सूर्य को दूर कर देता हूँ तथा वायु, अग्नि, चन्द्रमा को फेंक देता हूँ। पर्वतों को चकनाचूर कर देता हूँ, नदी व तालाब को सुखा देता हूँ, वृक्षों आदि को काट देता हूँ और अग्नि के समान बाणों के द्वारा संसार को मनुष्यों से खाली कर देता हूँ।

بخیریت والیان لوک نمیدهند همین زمان زور مرا می بنیند که از تیر های من آسمان
بزمین می افتد و عالم برهم میشود و جهان را از پشاچ و راچس خالی میکنم چنان خشم
می آید که تمام فلک را پر از تیر ها نمایم چنانچه پیری و موت و وقت و طور بر نمیگردد
همچنان تیر های من بار دیگر لچهمن گفت قدری تامل کن و بر کسان رنج مرسان
راجه ججاتی از عمل نیک به اندرلوک رفت و باز بر افتاد راقم ترجمه گوید این افسانه در
آدپرب مهابهارت مذکور است اگر خواسته خداست در اوترکاند این را این هم
مذکور خواهد شد و هم راجه سودرسن صد پسر پروهت را کشت این دنیا که والده جهان
و نمسکار کرده همه است روش این درین زمین بر وقت خود بر میگردد و این مهر و ماه
که چشمهای جهان اند اینها را هم خسوف و کسوف میشود و از بزرکان و دیوتا هیچکس را
رهائی نیست اگر سیتا مرد یا کسی برد تو بغم کردن سزاوار نه چنانچه نادان و مثل تو کسانی
که همه را یکسان می بینند غم نمیکنند مغز سخن را بفهم که دانایان نیک و بد را از عقل خود دور میکنند
در پیش آمدن شادی شاد و از رسیدن غم دلتنگ نمیشوند و تو مرا خود بدینسان بسیار
نصیحت کرده لهذا ایاد میدهم و ترا نصیحت نمیکنم و ترا که آموزد تو مانند برسپت یعنی مشتری
هستی عقل تو عالی تر و عقلا را غم نمیباشد و تو دب استر داری و باشکوه اچهوا کو در کشتن
دشمن مستعد میشوی ترا کشتن همه را چکار است آن را بکش که سیتا را برد چون لچهمن چنین گفت

यदि लोक के शासक सीता को कुशलपूर्वक वापस नहीं करते तो अभी इसी समय वह मेरी शक्ति देखेंगे कि मेरे बाणों से आकाश धरती पर आ गिरेगा और संसार नष्ट हो जायेगा। संसार को पिशाच और राक्षस से रिक्त कर दूँगा मुझे ऐसा क्रोध आयेगा कि समस्त आकाश को बाणों से भर दूँगा और जिस प्रकार परी, मृत्यु, समय और युग नहीं लौटता है। उसी प्रकार मेरे बाण भी नहीं लौटेंगे। पुनः लक्ष्मण ने कहा ''थोड़ा सोचिये और लोगों को कष्ट मत पहुँचाइये। राजा ययाति अपने अच्छे कर्मों से इन्द्रलोक चला गया और फिर गिर पड़ा।'' अनुवादक कहता है कि कथा आदि पर्व महाभारत में लिखित है यदि ईश्वर ने चाहा तो उत्तरकाण्ड में यह रामायण भी लिखित होगी। तथा राजा सुदर्शन ने पुरोहित के सौ पुत्रों को मार डाला। यह पृथ्वी जो संसार की माता है और जिसे आपने नमस्कार किया सब यही है उसकी चाल इस धरती में अपने समय पर घूमती है। यह सूर्य चन्द्रमा जो संसार की आँखें हैं उन पर ग्रहण होता है और वरिष्ठ लोगों तथा देवताओं में से किसी को छुटकारा नहीं है। यदि सीता मर गयी या उन्हें कोई ले गया तब भी आपको ऐसे दुखी होने की आवश्यकता नहीं है जैसे कि मूर्ख लोग दुख करते हैं। बात का अर्थ समझे कि बुद्धिमान लोग अच्छे व बुरे को बुरे को बुद्धि के द्वारा हल करते हैं। प्रसन्नता मिलने से प्रसन्न और दुख के मिलने से हृदय प्रभावित नहीं होते हैं। आपने स्वयं मुझे इस प्रकार की बहुत सी शिक्षा दी है। अतः वह मैं आपको याद दिलाता हूँ। आपको शिक्षा नहीं देता हूँ और फिर आपको भला कौन सिखायेगा। आप तो बृहस्पति अर्थात् मुशतरी के समान हैं आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र है और बुद्धिमानों को दुख नहीं होता है। और आप दिव्य अस्त्र रखते हैं और इच्छवाकु के प्रताप के कारण हत्या करने में तत्पर रहते हैं। आपको समस्त लोगों के वध से क्या तात्पर्य है उसका वध कीजिये जो सीता को ले गया है'' जब लक्ष्मण ने यह बात कही

رام از برهم زدن جهان عقل را باز داشت و سیتا را یاد کرده دم ها سرد میکشید و گفت
درینجا هم صورت جنگل و درختان و طایران و آهوان و شیر و خرگوش
و دیگر وحوش و رام و لچهمن غمگین طور آه سرد میکشند و میروند

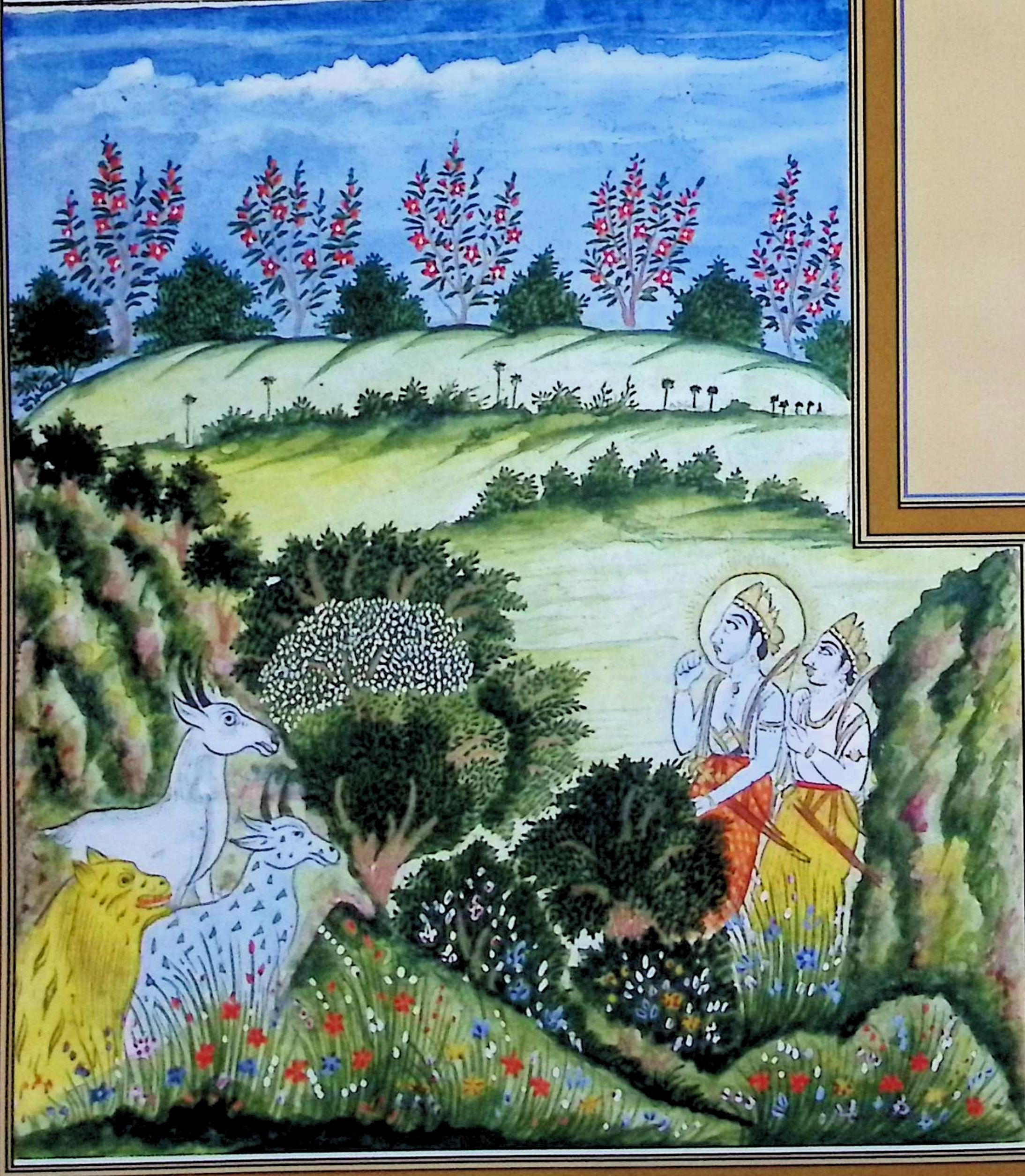

तो राम ने संसार को नष्ट करने का विचार, बुद्धि के द्वारा, दूर रखा और सीता को याद करके आह खींचते हुए कहा।

यहाँ भी वन, वृक्षों, पक्षियों, हिरनों, शेर, खरगोश और दूसरे पशुओं का चित्र है और राम लक्ष्मण दुखी।

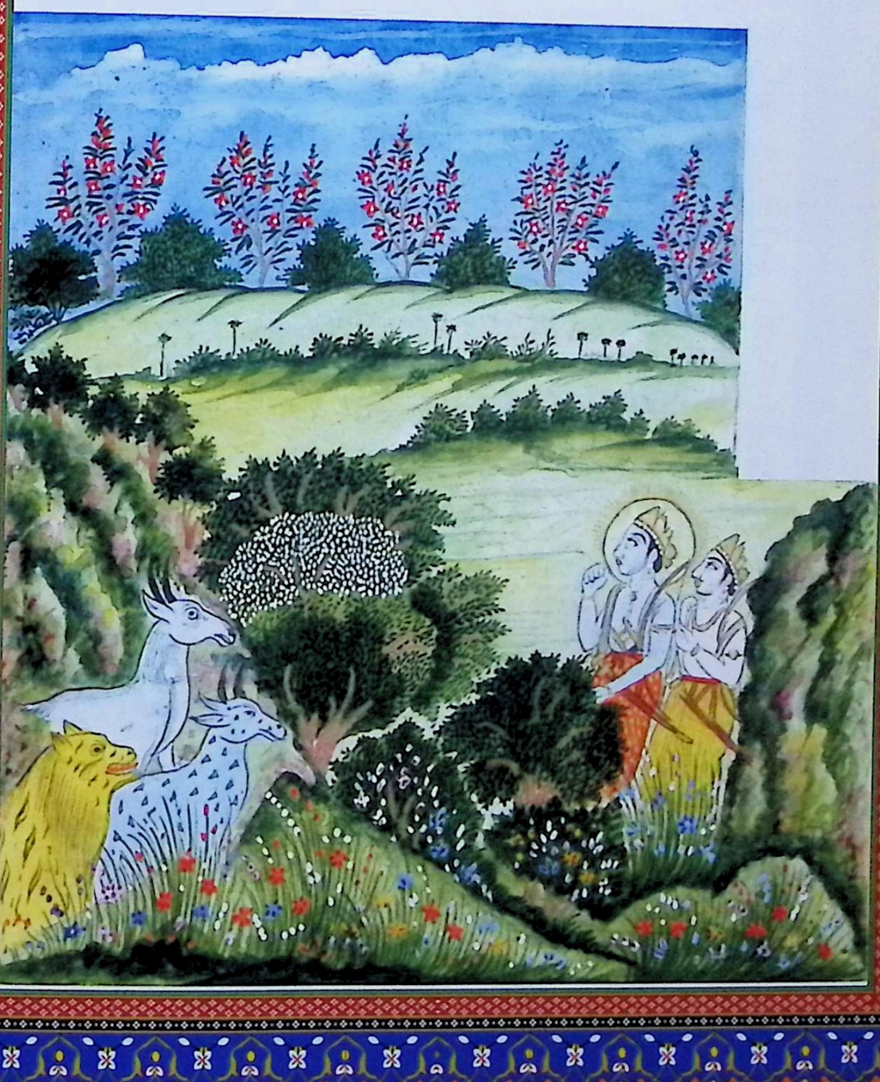

پس رام از گفتهٔ لچهمن غصه را فرو خورده گفت پس من چکنم و کجا روم فکر بکن چطور
سیتا را ببینم لچهمن گفت همین جن استهان را که درینجا راچهسان میباشند و درختان
بسیار اند باز تفحص کن کوها اند و غارها اند کندرا و نرجهرا اند و کندهر پاین و کنهران وغیره میباشند
باز جست و جو کن مثل تو عاقل داننده آتما در غمها بتغیر از نمیشود و بعد ازان رامچند تیر بکمان آورده
با لچهمن تفحص کنان در صحرا روان شدند ناگاه جتایو کده را نظر کرد که بال او شکسته و مانند کوه
زخمی شده بر زمین افتاده رام بلچهمن گفت این راچهس بصورت کده شده درینجا میماند
همین سیتا را خورده است درین شبه نیست این را از تیر میکشم چنانچه اندر از غصه بجر فرو هشتند
بو وجن را بزند این بگفت و از غضب تیر در کمان کرد چنانچه زمین تا سمدر در لرزه آمد جتایو
که کف بر دهان آورده قی خون میکرد گفت ای رام ای رام آن دوا را که باعث آرام عمر تست
درین صحرا میجوئی آن را و جان مرا هر دو را آن راچهس برد یعنی سیتا را چون دیدم که میبرد
من آن را دیده بجنگ پیش آمدم رتهه و چتر او را شکسته مضطرب بر زمین انداختم اینک
وهو جا شکسته و تیرهای او اینجا بجنگ با او پرداختم و از پرها و ناخن و منقار وجود او را
مجروح ساختم و او پر و بال مرا شکست و مرا بزد تو دیگر مرا مکش رام ماجرای سیتا را ازو
شنیده او را بار بار تسلی میداد و بلچهمن میگفت از راج افتاده ام و بودن صحرا کردیم و سیتا رفت
و پدر مرد اگر یکی ازین تصدیعها بر کسی بود سمدر را خشک کند چه جای آنکه همه یکجا شوند اگر بدر باشکو

सर्ग-६७

राम की वार्ता

राम ने लक्ष्मण के कहने से क्रोध को रोकते हुए कहा ''फिर मैं क्या करूँ और कहाँ जाऊँ ?सोचो कि सीता को मैं किस प्रकार देखूँगा।'' लक्ष्मण ने कहा ''इसी जन स्थान में कि जहाँ राक्षस रहते हैं और वृक्ष अधिकांश है फिर ढूढ़िये। पर्वत है गुफा है, कन्दरा और नरजहरा दुर्गम स्थान है, गन्धर्व और किन्नर आदि रहते हैं। पुनः संघर्ष कीजिये और आप जैसा बुद्धिमान और आत्मा को जानने वाला दुख में व्याकुल नहीं होता है।'' इसके बाद रामचन्द्र धनुष बाण लेकर लक्ष्मण के साथ ढूढ़ते हुए वन में चले गये। अचानक जटायु गिद्ध को देखा कि इसके बाल टूटे हुए हैं और वह पर्वत के समान घायल धरती पर पड़ा है। राम ने लक्ष्मण से कहा; ''यह राक्षस गिद्ध के रूप में यहीं रहता है। उसी ने सीता को खाया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसको मैं बाण मारता हूँ जैसे कि इन्द्र क्रोध से वज्र को छोड़ते हैं और परोजन को मारते हैं। उन्होंने यह कहकर कि क्रोध से धनुष पर बाण रखा जिससे धरती समुद्र तक काँप गया। जटायु ने जो हाथ मुख पर रखकर रक्त की उल्टी कर रहा था। कहा हे राम ! हे राम ! वह प्रिय जो आपका सुख है और जिसे आप इस वन में ढूंढ़ रहे हैं उसे और मेरे प्राण दोनों को रावण राक्षस ले गया है। अर्थात् जब मैंने सीता को देखा कि वह उन्हें ले जा रहा है तो मैं उसको देखकर युद्ध करने लगा। मैंने उसका रथ और छत्र तोड़कर व्याकुल करके पृथ्वी पर डाल दिया। यह उसका प्रतीक टूटा हुआ है और उसके बाण यहाँ हैं। मैं उसके साथ युद्ध में व्यस्त हुआ और अपने परों, नाखूनों और चोंच से उसके शरीर को घायल कर दिया और उसने मेरे बाल व पर तोड़ दिये और मुझे मारा। अब आप पुनः मेरा वध मत कीजिये। राम उससे सीता की व्यथा सुनकर बार-बार उसको सान्त्वना देते जा रहे थे और लक्ष्मण से कहते जा रहे थे ''मैं राज्य से दूर हूँ, मैंने वन में रहना उचित जाना, सीता चली गयी और पिता का देहान्त हो गया। यदि इन कष्टों में से कोई एक कष्ट किसी को होता तो वह समुन्द्र को सुखा देता। सब एक साथ हो जायें यदि मैं समुन्द्र में पांव रख दूँ तो वह भी

قدم نهم آنهم از طالع من خشک شود مثل من هیچکس درین لوک کمطالع نیست که اینقدر
تصدیعها بمن رسید این جتایو که بجای پدر من بود از کمطالعی من شکسته شده بزمین افتاده
این بگفت و از اخلاص دست برو گذاشت و خون از پر و بال او صاف کرد و پرسید

که سیتا برابر جان من کجاست درینجا صورت جتایو کده کلان هیکل و منقار مانند کوه
زخمی افتاده و رام دست برو گذاشته خاک و خون از پرهای او صاف میکند و لچهمن را بر
باعقب او و یکطرف رتهه معه فران شکسته افتاده و تیر و کمان و زره هم شکسته افتاده

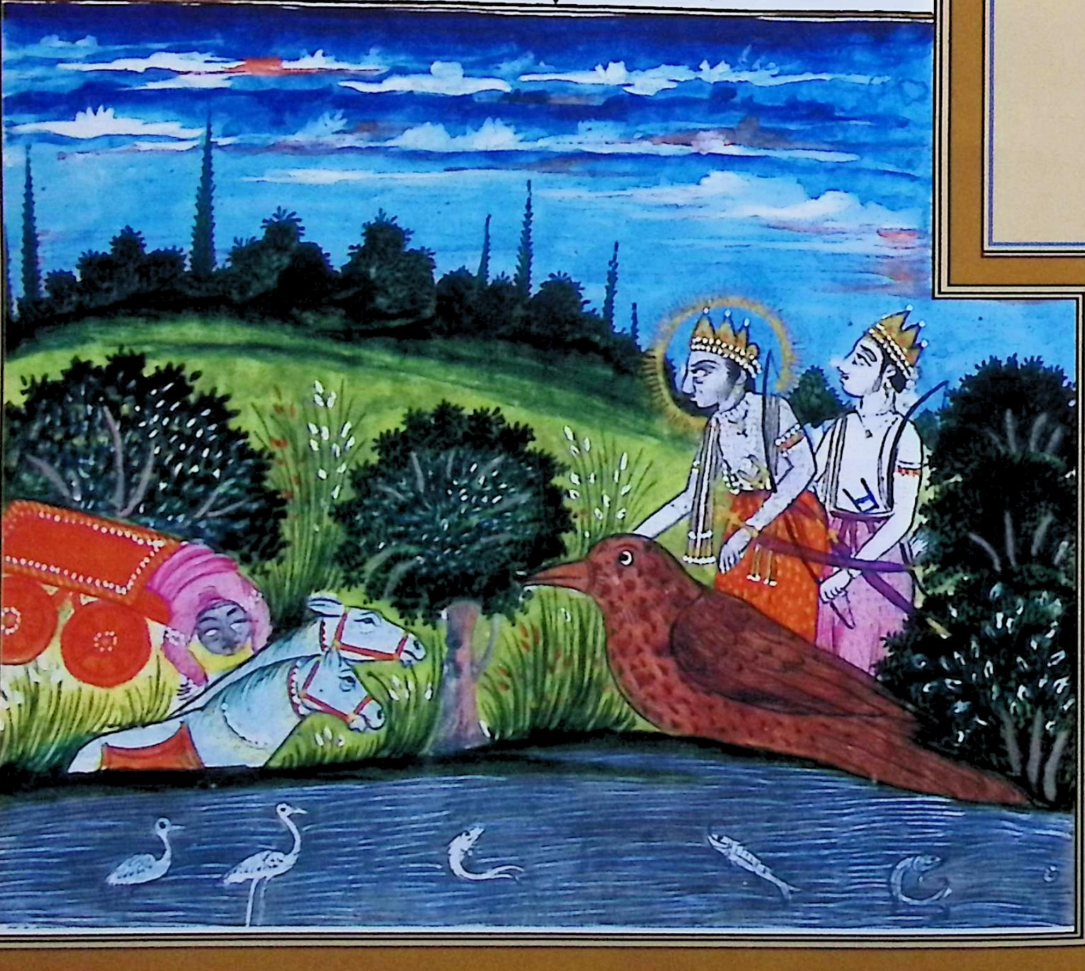

[illegible]

मेरे प्रताप से सूख जाए और मेरे समान कोई व्यक्ति इस लोक में दुर्भाग्यशाली नहीं है कि मुझे इतना कष्ट पहुँचे। यह जटायु जो मेरे पिता के समान थे मेरे दुर्भाग्य के कारण घायल होकर धरती पर पड़े है।'' राम ने यह कहते हुए प्रेम व सद्भाव से उस पर हाथ फेरा और उसके बाल व पर रक्त से साफ करके पूछा कि मेरी प्राण प्रिय सीता कहाँ है।

जटायु गिद्ध का चित्र जो बड़े शरीर वाला और पर्वत के समान चोंच वाला है, घायल पृथ्वी पर पड़ा हुआ है और राम उस पर हाथ फेरते हुए उसके परों से मिट्टी और रक्त साफ कर रहे हैं और लक्ष्मण उनके पीछे बराबर में खड़े हैं और एक ओर रथ घोड़ों सहित टूटा पड़ा है और छत्र धनुष और चिल्ला भी टूटा पड़ा है।

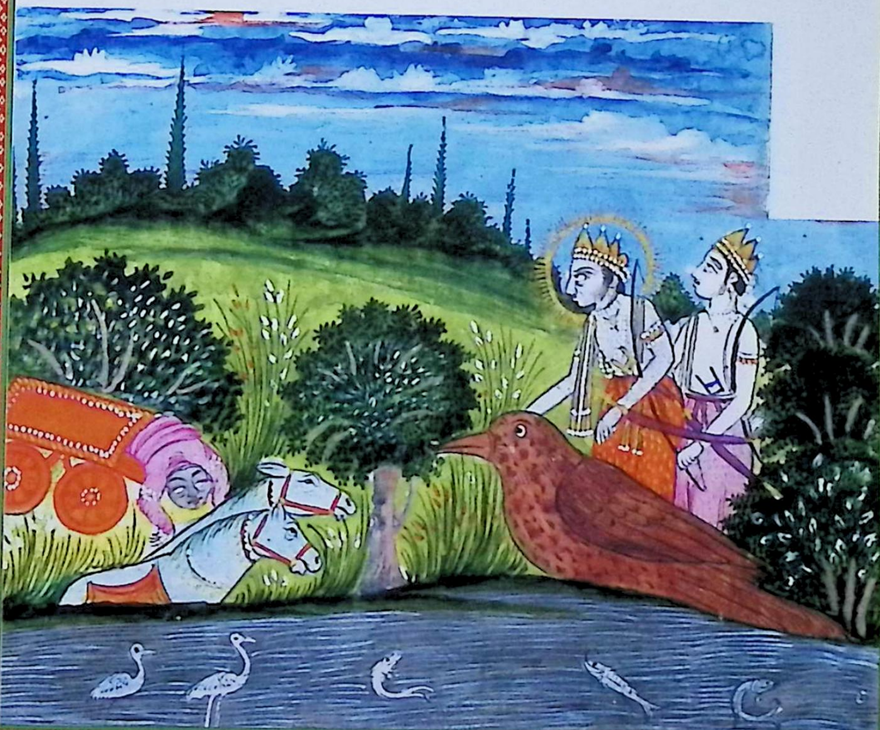

سرک احوال رام ولچهمن بعد ازان از ماجراء سیتا که از جتایو شنیدند رام ولچهمن
هردو گریه و زاری کرده بر زمین افتادند تا مهورت یعنی دو گهری بیهوش ماندند بعد ازان
لچهمن قدری بخویش آمد و پائی رام را چپی کرد و گفت که راجه دشرته از بسیار تپ و کرب چو
چنانچه دیوتا امرت را یابند ترا یافت و از مفارقت تو بدیولوک بنوعیکه بهرت گفت سیتا رفت
و هنگام مردن راجه بر زبان راند که آنان نیک کردارند و خوب هستند که رامچندر را
بعد آمدن از صحرا خواهند دید و کوشلا نیکوست که رام را خواهد دید اگر رامچندر دست
بر سن گذارد جم هیچ نتواند کرد این بگفت و بمرد او را تو پسر هستی از جگهای کلان ترا
کوشلا زائیده چنانکه ادت آندر را زاید و او مانند اروندهتی و روشنی ماه صاف الست
و آرزوی دیدن تو دارد راحت او در خواهش تست او را مایوس مکن و بهرت بحکم تو
راج سیکند و پادوک یعنی نعلین چوبین ترا میپرستد و دلیپ و نهوکهه و اچهواکو را
با راج کلان برداشتند و بگذاشتند اینهمه محکوم و مطیع تست بنوعیکه اینهمه خراب نشود
بعمل آر و بر من نظر کن مثل من خادم را بگذاشتن نزاواری و مثل تو نیکان مضطرب نشوند
و چنانچه مراغم همچنان بهرت را چنانچه سیتا را همچنین کوشلا را آسایش همه در آرام تست
اینهمه را تامل کرده بر ما مهربان شو اگر جتایو گفت راون سیتا را برده است مرا بفرما
که من او را میکشم یا تو خود از تیر بکش چنانکه کهر را کشتی هرگاه تو از غصه کمان بکشی

सर्ग-६८

राम और लक्ष्मण की स्थिति

इसके बाद सीता की व्यथा जटायु से सुनकर राम और लक्ष्मण दोनों विलाप करते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े तथा दो क्षण अचेत पड़े रहे। उसके बाद लक्ष्मण होश में आये और राम के चरणों पर मालिश करते हुए कहा; राजा दशरथ ने बहुत अधिक तपस्या और यज्ञ करके, जिस प्रकार देवता अमृत पाते हैं, उसी प्रकार आपको पाया था और आपके वियोग से देवलोक, जैसा कि भरत ने बताया, चले गये। और मरते समय राजा के मुँह से निकला कि जो लोग अच्छे आचरण के हैं वे भले है कि रामचन्द्र को वन से वापस आने के बाद देखेंगे। कौशल्या भली है कि राम को देखेगी। यदि रामचन्द्र मुझ पर हाथ फेरें तो यम भी कुछ नहीं कर सकेगा। वह यह कहकर परलोक सिधार गये। और आप उनके पुत्र हैं बड़े यज्ञ करके कौशल्या ने आपको जन्म दिया। जैसा कि अदिति इन्द्र को उत्पन्न करते हैं और वह अरुन्धती और चन्द्रमा के प्रकाश के समान स्वच्छ हैं। आपको देखने की इच्छा रखती है और उसका सुख आपकी इच्छा में है। उसे निराश मत कीजिये और भरत आपकी आज्ञा से राज्य कर रहे है तथा आपकी खड़ाऊँ की पूजा करते हैं। और दिलीप, नहुष और इक्ष्वाकु को बड़े राज्य के साथ उठाया और छोड़ दिया वह सब आपके अधीन है, किसी प्रकार इनको कष्ट न हो कर्म कीजिये और मुझ पर दृष्टि कीजिये। मुझ जैसे सेवक को छोड़ना आपको शोभा नहीं देता है। आप जैसे सज्जन लोग व्याकुल और दुखी नहीं होते हैं। जैसा दुख मुझे है, वैसा ही भरत को भी है और जैसा सीता को है वैसा ही कौशल्या को है। सबका सुख आपके सुख में है। यह सब सोचते हुए हम पर दया कीजिये। यदि जटायु ने बताया कि रावण सीता को ले गया है तो मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं रावण का वध कर दूँ। या आप स्वयं उसे बाण से मार डालिये जैसा कि आपने खर का वध किया। जब आप क्रोध से धनुष उठायेंगे

هر که با تو دشمنی کرده نخواهد زیست و مکان و راه آن راچهس معلوم شد سر او را شکسته
سیتا را بدست آر و خوشوقت شو کہ سنکار جٹایو بعد ازان رام جٹایو را
که راون کشته بود نظر کرده بلچهمن گفت هر آئینه این جانور را راون بسبب من کشته
و این جان خواهد داد اما تا که قوت گفتار دارد از حالت سیتا و حقیقت راون بپرسیم
پس ازان بگده گفت اگر ترا قوت گفتار هست پس بگو که سیتا را بکدام سمت برد و تو
بی تصدیع و بعافیت هزاران سال زنده باش بگو راون سیتا را چرا برد و او را با من چکار
و راون از من چه خطا دید و سیتا درانوقت چه گفت و آن راچهس چه صورت و چه قوت دارد
و چه کار میکند و کجا میباشد همه بگو جٹایو گفت راون سیتا را براه آسمان برد و آن روز
از گرد و باد تیره بود که با من مقابله شد و پر و بال مرا شکسته بسمت دکن یعنی جنوب
رفت و دو جهائی من بسته میشود و نظر از جا بر میگردد و درختان را می بینم که از طلا هستند
و بالای سرها مو دارند دیگر بشنو درانوقت که راون سیتا را برد صاحب آن وقت
نشست هست او را زود خواهی یافت و ریندا نام مهورت آن را راچهس نفهمید او شتاب
هلاک خواهد شد چنانچه ماهی از شست گوشت آهن میخورد و میمیرد تو برای او
غم مکن سیتا را خواهی یافت و راچهس را خواهی کشت درین اثنا از دهن
جٹایو وقت مردن خون جاری شد هنگام نزع جٹایو چنان گفت راون

तो जिसने भी आपके साथ शत्रुता की है वह जीवित नहीं बचेगा। उस राक्षस का घर और मार्ग मालूम हो गया है, उसका सर तोड़कर सीता को प्राप्त कीजिये और प्रसन्न हो जाइये।''

सर्ग–६८

जटायु का संस्कार (अन्तिम संस्कार)

उसके बाद राम ने जटायु को जिसकी रावण ने हत्या की थी देखकर लक्ष्मण से कहा ''निःसन्देह इस पक्षी को रावण ने मेरे कारण मारा है और यह प्राण दे देगा लेकिन जब तक उसके अन्दर बोलने की क्षमता है तब तक हम उससे सीता की दशा और रावण की वास्तविकता पूछते हैं। फिर उसके बाद गिद्ध से कहा ''यदि तुम में बोलने की क्षमता है तो बताओ कि वह सीता को किस ओर ले गया है ?और तुम बिना किसी कष्ट के और शान्ति से हजारों वर्ष जीवित रहो। बताओ रावण सीता को क्यों ले गया और उसको मुझसे क्या मतलब है ?और रावण ने मेरा कौन सा अपराध देखा। और सीता ने उस समय क्या कहा ?और वह राक्षस कितनी शक्ति और कैसा रूप रखता है ?और क्या काम करता है और कहाँ रहता है ?सब बताओ। जटायु ने कहा रावण सीता को आकाश के मार्ग से ले गया है और उस दिन आकाश धूल मिट्टी के कारण अंधेरा था कि मेरे साथ मुकाबला हुआ और मेरे बाल व पर तोड़कर दकन अर्थात् दक्षिण की ओर गया और मेरा सांस लेना कठिन हो रहा है। मैं वृक्षों को देखता हूँ कि वह सोने के हैं और सर के ऊपर बाल रखे हैं। दूसरी बात सुनिये जब रावण सीता को ले गया उस समय का स्वामी विन्द है। उसको आप शीघ्र पालेंगे उसका नाम विन्द है उसके मुहूर्त को राक्षस नहीं समझेगा और शीघ्र ही मारा जायेगा। जैसे कि मछली कांटे से मांस खाती है और मर जाती है, आप उसके लिये दुख न कीजिये आप सीता को अवश्य पायेंगे और राक्षस का वध करेंगे। उसी समय जटायु के मुँह से, मरते समय, रक्त बहने लगा। अन्तिम समय जटायु ने कहा

پسر بشروا و برادر کبیر است این بگفت و جان داد رام همچنین میگفت که بگو بگو که جان
بر آسمان رفت و سرش بر زمین افتاد و پای فراخ بگشاد رام او را مانند کوه مرده دید
بلچهمن گفت در میان بسیار راجهسان بسیار سال بآسایش گذرانده و هزاران را
کشته باشد و درین دندکارن مدت گذرانده حالا این مرده خفته است لهذا مرگ زود آوردست
و برای من این خداوند جانوران جان داد در همه جایگان میباشند و در جانوران
هم شجاع و پناه دهند هستند این برای من جان داد البته بسرگ خواهد رفت
و پسران و عورت و مشورتیان را گذاشته بجانب جم رفت مرا غم رفتن سیتا
چندان نیست که غم مردن این جتایو است چنانچه مرا راجه دشرتهه پرستیدن
سزاوار بود همچنان این جتایو است ای لچهمن هیمه بیار من آتش می آرم
و این را میسوزم که برای من جان داده است و گفت بمکانی که دهرماتما میروند و بجای
که آتش پرستان میروند و بمقامیکه دهندگان زمین میروند و بمنزلی که پناه دهندگان
میروند و بموضعی که بخشندگان زر میرسند و بدرجه که دهندگان ماده کاو ره میبرند
از ستگار من این کده همانجا برسد این بگفت و جتایو را نهاده بسوخت بعد سوختن
و غیره گرش یعنی کاه گرفته هر کار که پس میت میکنند نمود بعد ازان هر دو برادر بر دریای
گوداوری رفته غسل کردند بنام جتایو آب دادند آن کده اینچنین کار کرد

रावण विश्रवा का पुत्र है और वह कुबेर का भाई है। उसने यह कहा और प्राण त्याग दिये। राम यही कहते रहे कि ''कहो-कहो'' कि उसकी आत्मा परलोक चली गयी, और सर पृथ्वी पर गिर पड़ा, एवं पाँव फैला दिया। राम ने उसको पर्वत के समान मरा हुआ देखकर लक्ष्मण से कहा ''इसने बहुत से राक्षसों के मध्य अनेकों वर्ष सुख सुविधा के साथ बिताये और इसने हजारों को मारा होगा। और उस दण्डकारण्य में भी अवधि बितायी अब यह मृत पड़ा है अतः मृत्यु अधिक शक्तिशाली हैं। मेरे लिये पशुओं के भगवान ने प्राण दे दिये। सबमें सज्जन लोग होते हैं और पशुओं में भी वीर और शरण देने वाले होते हैं। यह अवश्य स्वर्ग में जायेगा। पुत्रों, स्त्रियों और परामर्श देने वालों को छोड़कर यम के घर चला गया। मुझे सीता के जाने का इतना दुख नहीं है जितना कि इस जटायु के मरने का है। जैसा कि राजा दशरथ मेरी पूजा के भागीदार थे उसी प्रकार यह जटायु है। ऐ लक्ष्मण ! लकड़ी लाओ, मैं अग्नि लाता हूँ और उसको फूंकता हूँ कि उसने मेरे लिये प्राण दे दिये। और कहा कि जिस स्थान पर धर्मात्मा लोग जाते हैं, जिस स्थान पर अग्नि पूजा करने वाले जाते हैं, जिस स्थान पर धरती दान करने वाले जाते हैं, जिस जगह शरण देने वाले जाते हैं, जिस स्थान पर धन दान करने वाले जाते हैं और जिस स्थान पर गाये देने वाले जाते हैं। मेरे अन्तिम संस्कार करने से यह गिद्ध उसी स्थान पर पहुँचेगा। यह कहा और चिता पर रखकर उसको जला दिया। जल जाने के बाद कुश लेकर जो कार्य पीछे तिलांजलि करते हैं वह किया। उसके बाद दोनों भाईयों ने गोदावरी नदी पर जाकर स्नान किया। जटायु के नाम पर जल दिया।

در جنک جان داده کویا اوتار مهر کبه بود که بمکان پون از کردار خود برفت

در ینج صورت چتاو جتایو کده را رام
درونهاده آتش داده و لچهمن عقب استاده

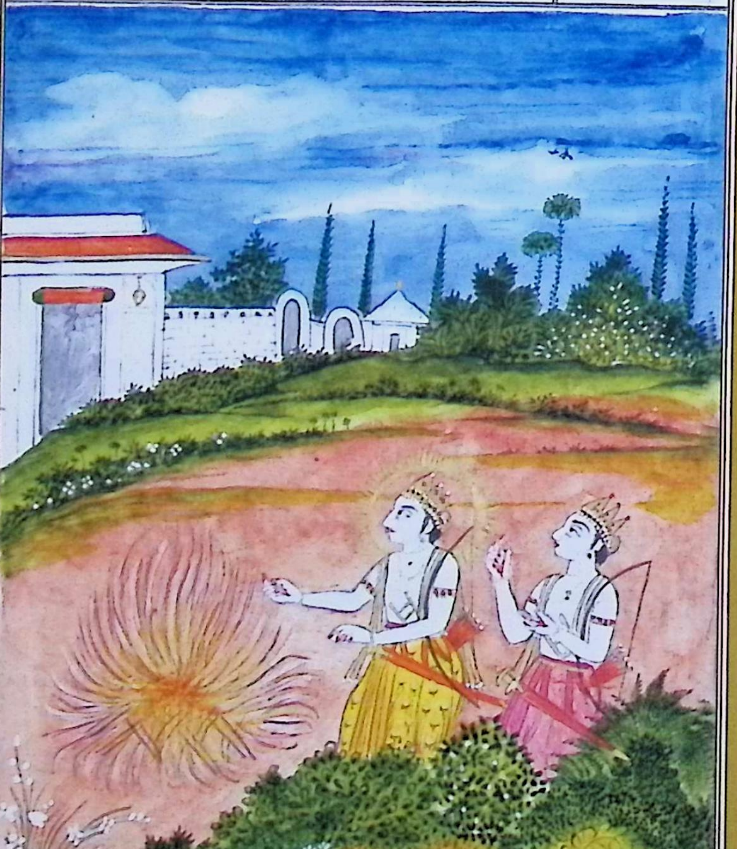

उस गिद्ध ने ऐसे ही कार्य करके युद्ध में प्राण दिया मानों महर्षि का अवतार था कि अपने कर्म से स्वर्ग में गया।

चिता का चित्र जिसमें राम ने जटायु गिद्ध को रखकर अग्नि दिया और उनके पीछे लक्ष्मण खड़े हैं।

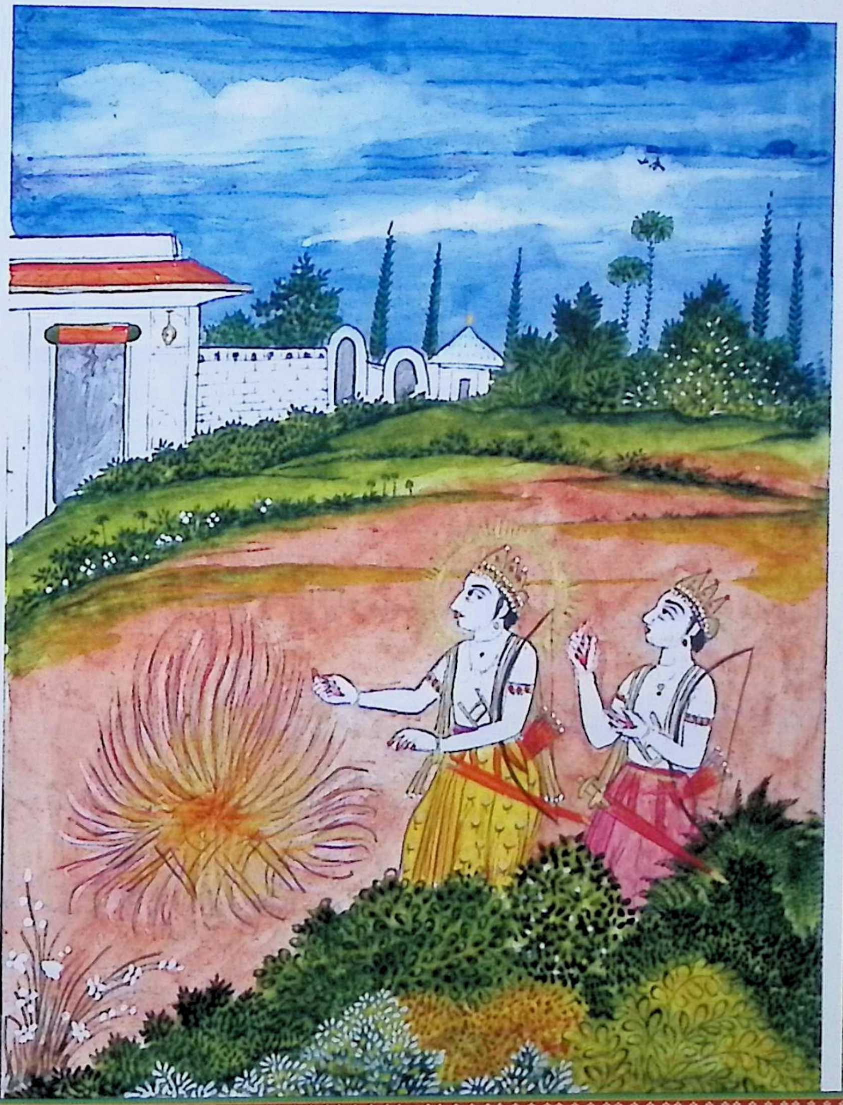

گردیدن کبنده بعد ازان رام و لچهمن بنام جتایو که آب داده دریغ گویان هنگام غروب آفتاب بآشرم رسیدند درانجا بسبب تصدیع مهاجرت سیتا شب گذراندن نتوانستند آنجارا گذاشته بسمت پچهم یعنی مغرب روان شدند براهی رسیدند که آنجا اقسام اقسام درختان و شیران بودند بسرعت ازانجا درگذشتند چون از جن استهان سه کروه راه طی کردند در جنگلی رسیدند که درانجا انواع درخت و اقسام گل و بوقلمون بیور بودند آنجا هم سیتا را تفحص مینمودند ناگاه لچهمن دست بسته برام گفت بازوان من میجهد و دلم میطپید و شگونهای بد بنظر می آیند بنابران مستعد شوید و بشتاب بگذرید و اینک خوف پیدا میشود که این پنچهی بلیور نام همین شگون میگوید درین اثنا دران صحرا شوری عظیم افتاد چنانکه اسمان ها برند ناگاه راچهس کلان قد کلان نظر کردند در هر دو دست او گرفتار شده رام و لچهمن روبرو وا ایستادند و آن راچهس بصورت بی سر و گلو و باسخت مو مانند کوه کلان و برنگ ابر نیله و آواز چون رعد و دهن در سینه و یکچشم بهم درانجا و دندان دراز بار بار می مکید و آهوان و افیال هرچه در دهن می آمد فرو می خورد و هر دو بازو تا یک یک جوجن یعنی چهار کروه دراز بود و از دستها اقسام بهایم و طیور را گرفته در دهن می انداخت سر راه رام و لچهمن را بند کرد و اینها او را از یک کروه نظر کردند کلان شبیه و مخوف بطریق کبنده یعنی کسیکه سر نداشته باشد و دانستند که در هر دو بازوی او گرفتار شدیم او از دستهائی که مانند مار پنج دهن بود بخود درکشید و گفت شما کیانید که کتف مانند گاو دارید

सर्ग-६६

कबन्ध का देखना

इसके बाद राम और लक्ष्मण जटायु गिद्ध के नाम पर पानी देकर शोक करते हुए, सूर्य अस्त के समय, आश्रम में पहुँचे। वहाँ सीता के चले जाने के दुख के कारण रात्रि नहीं बिता सके। वह स्थान छोड़कर पश्चिम की ओर चल दिये और एक ऐसे मार्ग पर पहुँचे जहाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष और शेर थे। शीघ्रता से वहाँ से वह आगे बढ़ गये। जन स्थान से तीन कोस मार्ग तय करने के बाद वे एक ऐसे वन में पहुँचे जहाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष, फल, फूल और पक्षी थे। वहाँ भी उन्होंने सीता को खोजा। अचानक लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर राम से कहा ! ''मेरी भुजा फड़क रही है, हृदय धड़क रहा है, और अपशकुन दिख रहा है। अतः आप सतर्क रहें और शीघ्रता से यहाँ से चले जाये। यह भय इसलिये उत्पन्न हो रहा है कि वञ्जुल नामक पक्षी यही शकुन बता रहा है। उसी समय वन में एक भयानक शोर उत्पन्न हुआ, जैसे आकाश उड़े जा रहे हों। अचानक उनको एक दैत्याकार राक्षस दिखाई दिया उसके दोनों हाथों में बांधे हुए राम और लक्ष्मण उसके सम्मुख खड़े हो गये। इस राक्षस की वाणी बिना शीश और गर्दन की, भारी केश किसी बड़े पर्वत की भाँति कठोर रंग नीलापन लिये हुए बादल जैसा, आवाज बिजली की कड़क, जैसी, मुख सीने के अन्दर, और एक आँख वाला था। वह अपने लम्बे दाँत बार-बार पीस रहा था और हिरन व हाथी जो उसके मुँह में आते सबको अन्दर खा जाता। दोनों भुजाएँ एक-एक योजन अर्थात् चार-चार कोस लम्बी थी और हाथों से विभिन्न प्रकार के पशु व पक्षी पकड़कर मुँह में डालता जाता था। उसने राम व लक्ष्मण का मार्ग रोक रखा था। उन्होंने इसको एक कोस दूर से देख लिया। बड़ा भीमकाय वाला और किसी कबन्ध की भाँति, जिसके शीर्ष न हों, भयानक था। उन्होंने समझा कि उसकी दोनों भुजाओं में क़ैद हो चुके हैं। उसने अपने हाथों से, जो पाँच मुख वाले सर्प के समान थे, उन्हें अपनी ओर खींचा और पूछा कि तुम लोग कौन हो कि तुम्हारी भुजाएँ बैल की भाँति हैं

وتیر وکمان دارید درین صحرا برای خور اکم رسیده اید راست بگوئید چرا آمده اید رامچند ماجرا بیان
کرد که من پسر راجه دشرتهه ام ورام نام دارم وپدرم بخاطر ابلیه خود از شهر معه عورت بدر کرد واین لچهمن برادر من
بصحرا آمده بودیم که عورت مرا راچهسی برد تلاش او درینجا آمده ایم حالا گرفتار تو ایم کبنده گفت با عورت
در صحرا ماندن خلاف دهرم است جتیا نزاد در صحرا برای سلاح چکار را آخر شد من بلچهمن گفت رنج بر رنج به بین
عورت را نیافتیم و جان دادن افتاد و مرگ بر همه شجاع روز آور است و استر دانان از مرگ مانند پلی ریگ

می افتند این بگفت ولچهمن را دیده عقل خود بخویشتن باز آورد درینجا صورت کبنده راچهس بی سر و گلو
سخت مو مانند کوه کلان و بلند و برنگ نیله و دهن و یک چشم در سینه و در دهن دندان دراز و یک آهو و فیل
در دهن او و دو دستها او تا یک جوجن دراز و قدر زیاده از جوجن و در هر دو دست او مثل شیر و وحوش و فیل گرفتار

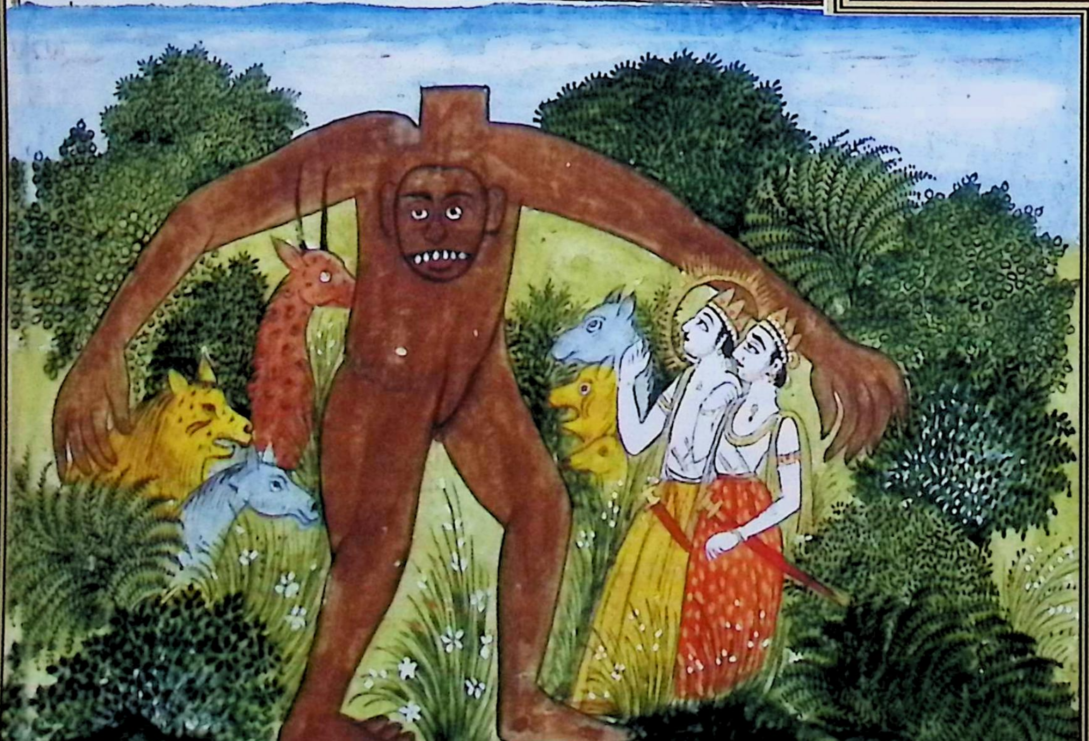

और तुम धनुष बाण भी रखते हो। क्या तुम इस वन में मेरा भोजन बनने के लिये आए हो ?सत्य कहो तुम यहाँ क्यों आए हो ?रामचन्द्र ने सारा वृत्तान्त बताया कि मैं राजा दशरथ का पुत्र हूँ। मेरा नाम राम है। मेरे पिता ने मुझे अपनी पत्नी की इच्छापूर्ति के लिये पत्नी सहित देश निकाला दे दिया और यह मेरा भ्राता लक्ष्मण है। हम वन में इसलिए आये थे कि मेरी धर्मपत्नी को एक राक्षस उठा ले गया है। उसकी खोज में हम यहाँ आए हैं। अब हम तुम्हारे बन्दी हैं। कबन्ध ने कहा वन में स्त्री के साथ रहना धर्म के विरुद्ध है और जटाधारियों को वन में शस्त्रों से क्या काम है ?राम ने दुखी भाव से लक्ष्मण से कहा मुझे दुख पर दुख मिल रहा है। मुझे अपनी पत्नी भी नहीं मिली और यहाँ जान भी जोखम में है और मृत्यु समस्त बलशालियों पर भारी है तथा अस्त्र जानने वाले मृत्यु से रेत के पुल की भाँति गिर जाते हैं। उन्होंने यह कहते हुए लक्ष्मण की ओर देखा और फिर अपनी सुध में वापस आ गये।

कबन्ध राक्षस का चित्र, बिना सर और गर्दन के। केश अत्यन्त कठोर जैसे भारी और ऊँचा पर्वत, बादलों के समान नीला रंग, मुँह और एक आँख छाती में, मुँह में लम्बे-लम्बे दाँत, उसके मुँह में एक हिरन और हाथी हैं। उसके हाथ चार कोस तक लम्बे हैं, कद एक जोजन से भी अधिक है और उसके दोनों हाथों में शेर, जंगली पशु और हाथी जकड़े हुए हैं।

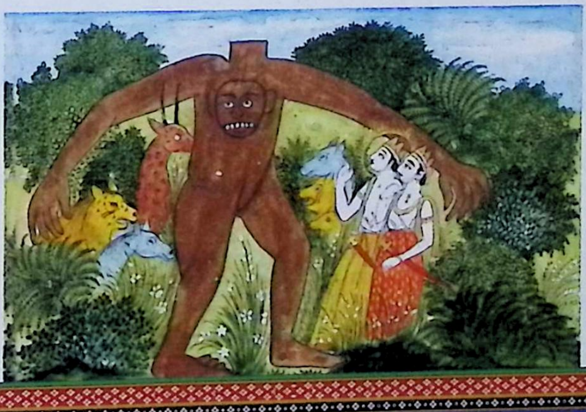

سرک احوال کبنده وسکریو آن هردو را در بازوی خود گرفتار دیده کبنده گفت
مرا گرسنه دیده چرا مانده اید برای خوراکم آمده اید دیگر هیچ مگوئید رامچندر بشنید و لچهمن
گفت من و تو هردو واز اسی یعنی شمشیر هردو بازوی این را ببریم بعده هردو از
کهرک یعنی شمشیر هردو بازوی او را بریدند بازوی راست رام و بازوی چپ را لچهمن
ببریدند کبنده فی الفور بر زمین افتاد و آسمان و زمین و اطراف همه مانند رعد باواز درآمد
او باز بازوی خود را بریده و بخون آغشته دیده پرسید شما هردو کیستید لچهمن جواب داد
این از اولاد اچهواکو رام نام ست و برادر خورد او لچهمن نام هستم عورت این را
راچهس برده ما بتلاش او تا اینجا رسیده ایم تو کیستی و برای چه مانند کبنده وجود بی سر هستی
دهن تو در سینه و پای نداری کبنده احوال گذشته خود را بخاطر آورده بالفت تمام
گفت خوب کردید که آمدید شما را دیدم و خود را فهمیدم از دست شمایان که هر بازوی من
بشکستند این را هم دیدم مرا ازین کالبد تصدیع بسیار بود که مانند کوه بود و درین جهان
زشت و خوفناک و خونخوار و دهشت افزائی همگنان هست هیچ ذیحیات از بازوی این
جان بر نشد و جاموس و شیر و آدمی از دست من رهائی نیافت حالا شما را که دید پس هیچکس
مثل من نیست و از زندگی عذاب کار خلاص شدم و صورت اصلی خود می یابم
و این صورت مرا از شاپ شده بود من دیده و دانسته شما را برای رها شدن از شاب

सर्ग-७०

कबन्ध और सुग्रीव का वर्णन

उन दोनों को अपनी भुजाओं में बन्दी देखकर कबन्ध ने कहा, ''मुझे धोखा देकर तुम यहाँ क्यों रुके रहे ?तुम मेरा भोजन बनने आये हो ?इसके अतिरिक्त और कुछ मत कहो, रामचन्द्र ने यह सुनकर लक्ष्मण से कहा ''मैं और तुम दोनों तलवार से इसकी भुजाएँ काट डालते हैं'', उसके बाद दोनों ने तलवार से उसकी दोनों भुजाएँ काट डालीं। दायीं भुजा राम ने और बाई भुजा लक्ष्मण ने काटी। कबन्ध तुरन्त धरती पर गिर पड़ा और आकाश और पृथ्वी और चारों ओर सब बिजली की कड़क जैसे शोर से भर गये। उसने अपनी कटी हुई भुजा और स्वयं को रक्त में लथपथ देखकर पूछा तुम दोनों कौन हो ?लक्ष्मण ने उत्तर दिया यह इक्ष्वाकु की संतान में से है। इनका नाम राम है और मैं इनका छोटा भाई लक्ष्मण हूँ। इनकी पत्नी को राक्षस उठा ले गया है। हम उसकी खोज में यहाँ तक पहुँचे हैं। तुम कौन हो किस कारण से बिना सर का शरीर लिये कबन्ध की भाँति हो तुम्हारा मुख छाती में है तुम्हारे पाँव नहीं है, कबन्ध ने अपने बीते हुए काल को सोचते हुए, प्रेम से कहा, तुमने अच्छा किया कि यहाँ आए। मैंने तुमको देखा और अपने को समझा और तुम्हारे हाथों से जो तुमने मेरी दोनों भुजाएँ तोड़ीं उसको भी देखा, मुझे इस शरीर से बहुत कष्ट था। जो करदोह की भाँति थी। इस संसार में बुरा, भयानक, खूंखार और सबको भयभीत करने वाला कोई जीवधारी मेरी भुजाओं से जीवित नहीं निकल सका। भैंस, शेर और आदमी ने मेरे हाथों से छुटकारा नहीं पाया। अब तुमको देखने में मेरी तरह कोई नहीं है। अब मैंने अपने कष्टदायी जीवन से छुटकारा पा लिया अब मैं अपना मूल रूप पा लूँगा। मेरा यह रूप अभिशाप के कारण हो गया था। मैंने तुमको जान बूझकर शाप से मुक्ति पाने के लिये पकड़ा था।

گرفتم این تقصیر من به بخشید و ماجرای من بشنوید پیشتر در هر سه لوک حسین مشهور بودم

و من خود را چنین زشت صورت ساخته رکهان را بیتر ساندم ناگاه به استهول شرم انام

رکهیه در خوردم بهمین صورت او را ترسانیدم او شاپ داد که تو بهمین شکل پیوسته خواهی بود

من بتقصیر خود نادم شدم و پرسیدم که این شاپ کی دور شود او گفت هرگاه که رام از اسی

یعنی شمشیر بازوی تو بشکند آن زمان صورت خود یابی و من دنو نام اول پسر شری هستم

و این صورت کننده بی سر مرا از غصه اندر شده است و آنچنان است که من بریاضت بسیار

برهما را خشنود کردم او مرا عمر دراز داد مرا نخوت شد که عمر دراز یافتم اندر مرا چه خواهد کرد

باین خیال با اندر شوخی کردم او بجر بر سرم زد که سر در کالبد من فرو رفت من باز

گفتم گفته برهما راست است من چگونه سر و رو شکسته بخورش بسیار خواهم زیست

اندر مرا بازو تا چهار کروه دراز و در سینه با دندان تیز ترسناک داد و من ازین

بازوان شیر و فیل و آهو و مار و هرچه بدست می آید میخوردم هرگاه شما باتش سوخته

ستکار نمائید من هم با شما اخلاص بجا آورم چون دنو چنین گفت رام گفت اهلیه مرا

راون نام که از جن استهان گرفته برده است صورت و مقاش نمیشناسم فقط نام او

میدانم بر ما غریبان رحمی کن که سیتا را کجا برده است اگر میدانی بگو و ما هیمه های خشک

آورده ترا خواهیم سوخت دنو گفت حق آنست که مرا دب کیان نیست یعنی آن خبری

मेरा यह अपराध क्षमा करो और मेरा विवरण सुनो। इससे पहले मैं तीनों लोक में अत्यन्त सुन्दर प्रसिद्ध था। मैं अपना यह कुरूप भेष बदलकर ऋषियों को भयभीत किया करता था। एक बार मैंने स्थूलशिरा नामक महर्षि को खा लिया और इसी वेष में उसको डराया। उसने अभिशाप दिया कि तुम सदा इसी रूप में रहोगे। मैं अपनी गलती पर लज्जित हुआ और पूछा कि यह अभिशाप कब दूर होगा ?उसने कहा, जिस समय राम तलवार से तेरी भुजा को तोड़ देंगे उस समय तुम अपना वास्तविक रूप पा लोगे। मेरा नाम दानव है और मैं शरबा का पहला पुत्र हूँ। बिना सर वाला मेरा यह रूप इन्द्र के क्रोध के कारण हुआ है। वह इस प्रकार कि मैंने घोर तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न कर दिया। उसने मुझे लम्बी आयु का आर्शीवाद दिया। मुझे गर्व हो गया कि मैंने लम्बी आयु पा ली। इन्द्र मेरा क्या कर लेंगे ?इस विचार से इन्द्र के साथ मैंने उसने अपना वज्र मेरे सिर पर ऐसा मारा कि सिर शरीर के अन्दर धँस गया। मैंने इन्द्र से कहा- ब्रह्मा का कहा हुआ सत्य है मैं किस प्रकार टूटे हुए सर और मुँह के साथ बिना खाये पिये अधिक जीवित रहूंगा ?और इन्द्र ने मेरी भुजा चार कोस लम्बी कर दी, और छाती में तेज दांतों के साथ दे दिया। और मैं अपनी इन भुजाओं शेर, हाथी, हिरन, सर्प और जो कुछ कि हाथ आता खाता था। जिस समय तुम आग में जलाकर सत्कार करोगे मैं भी तुम्हारे प्रति आभारी हूंगा। दानव (कबन्ध) की यह बात सुनकर राम ने कहा! मेरी पत्नी को रावण उठा ले गया है। मैं उसका रूप और उसके रहने का स्थान नहीं पहचानता हूँ। केवल उसका नाम जानता हूँ। हम परदेसियों पर दया करो। वह सीता को कहाँ ले गया है यदि जानते हो तो बता दो। हम सूखी लकड़ियाँ लाकर तुम्हें जला देंगे। दानव ने कहा सत्य तो यह है कि मुझे बद का ज्ञान नहीं है

که از وهمه معلوم کنم و سیتا را نمیدانم واگر چیزی هم هست بعد سوختن بظهور خواهد
و بغیر از سوختن کالبد هیچ طاقت ندارم عقل من رفته است پیشتر از غروب آفتاب
درین میان همه آورده اگر با حسن وجوه وجودمرا بسوزید بعد ازان نشان خواهم داد
یک زور آور را که همه ملک ها را دیده است با او آتش را در میان داده دوستی کنید
سیتا را خواهید یافت بعد ازان هر دو برادر همه آورده ابت کرده از چوب ها آتش
برآورده چتا ساخته کنیده را سوختند و روغن وغیره انداختند چون از چتا دود برآمد
او صورت گرفته سوب های خوب و مالای اسلوب پوشیده بر بمان که هنس ها با خود داشت
سوار شده نورآگین صورت شده بر هوا رسیده برام گفت تدبیر یافتن سیتا بشنو
سگریو نام بوزنه ایست با او دوستی کن و بغیر آن کار تو راست نشود و بالی
نام پسر اندر که برادر اوست او را از غصه بدر کرده است و او در کوه رکهه موک قریب پنپا
با چهار وزیر میباشد نزد او رفته آتش در میان داده دوستی کن و او را بوزنه دانسته
کم مدان دانا و کام روپی است و معاون و زور آور است و ملک و وقت را میداند
با تو خوب خواهد کرد و بد نکند آن بوزنه البته کار شما خواهد کرد خواه کار شود خواه نشود آن بوزنه ها را
برای جست جو خواهد فرستاد اگر سیتا را خواهی نزدیک پنپا او را بجو او پسر آفتاب است
و از بالی برادر خود آزرده است و آن سگریو جا های دب و همه خورندکان آدمیان را

अर्थात् वह चीज कि उससे सब कुछ मालूम कर लूँ। मैं सीता को नहीं जानता हूँ और यदि कुछ है भी तो वह जलाने के बाद सामने आयेगा। बिना इस शरीर के जलाए मेरे भीतर कोई शक्ति नहीं है। मेरी बुद्धि जा चुकी है। सूर्य अस्त से पहले लकड़ियां लाकर यदि अच्छी तरह मेरे अस्तित्व को जला दो तो उसके बाद मैं पता बताऊँगा। एक शक्तिशाली को जिसने सारे देश देखे हैं उसके साथ आग को मध्य में रखकर आग जलाओ। सीता को पा लोगे। उसके बाद दोनों भाईयों ने लकड़ियां लाकर और चिता बनाकर कबन्ध को जला दिया। तेल आदि डाल दिया। जब चिता से धुआं निकला उसने एक रूप बना लिया और सुन्दर वस्त्र, माला पहने और विमान पर सवार होकर जिसमें हंस लगे हुए थे नूर जैसा रूप अपनाकर हवा में पहुँचकर राम से कहा- सीता को प्राप्त करने की योजना सुनो। ''सुग्रीव नामक एक बन्दर है उसके साथ दोस्ती करो। उसके बिना तुम्हारा काम ठीक नहीं होगा। और बालि नामक इन्द्र का पुत्र है जो उसका भाई है, उसने क्रोध से उसको बाहर कर दिया है और वह ऋष्यमूक पर्वत में पम्पा के निकट चार मंत्रियों के साथ रहता है। उसके पास जाकर आग मध्य में लाकर मित्रता करो और उसको बन्दर जानकर कम मत समझो। वह बुद्धिमान और कार्य बनाने वाला है। सहयोगी व बलशाली है और वह देश व समय को जानता है वह तुम्हारे साथ अच्छाई करेगा, बुराई नहीं करेगा। वह बन्दर ही तुम्हारा काम करेगा और चाहे काम हो या न हो लेकिन वह बन्दरों को संघर्ष के लिये भेजेगा। यदि तुम सीता को चाहते हो तो पम्पा के निकट उसे ढूंढो वह सूर्य का पुत्र है और अपने भाई बालि से दुखी है। वह सुग्रीव दानव के स्थानों और मनुष्यों को खाने वालों को जानता है

میداند و من میدانم که هیچ از عقل او بیرون نیست و از امر او بوزنه ها بر کوه
سمیر رفته و پاتال را که زمین هفتم است برهم زده راچهسان راکشته اهلیه تو تو
خواهند داد درینجا صورت درختان و در زیر انها آهوان و کلبهای تو قلمون و رام و لچهمن
چتا کنده خت او را سوختند و آن کنده بالای آتش چتا بصورت خوب بر بمان سوار بر هوا استاده
باشاره انگشت با رام سخن میگوید

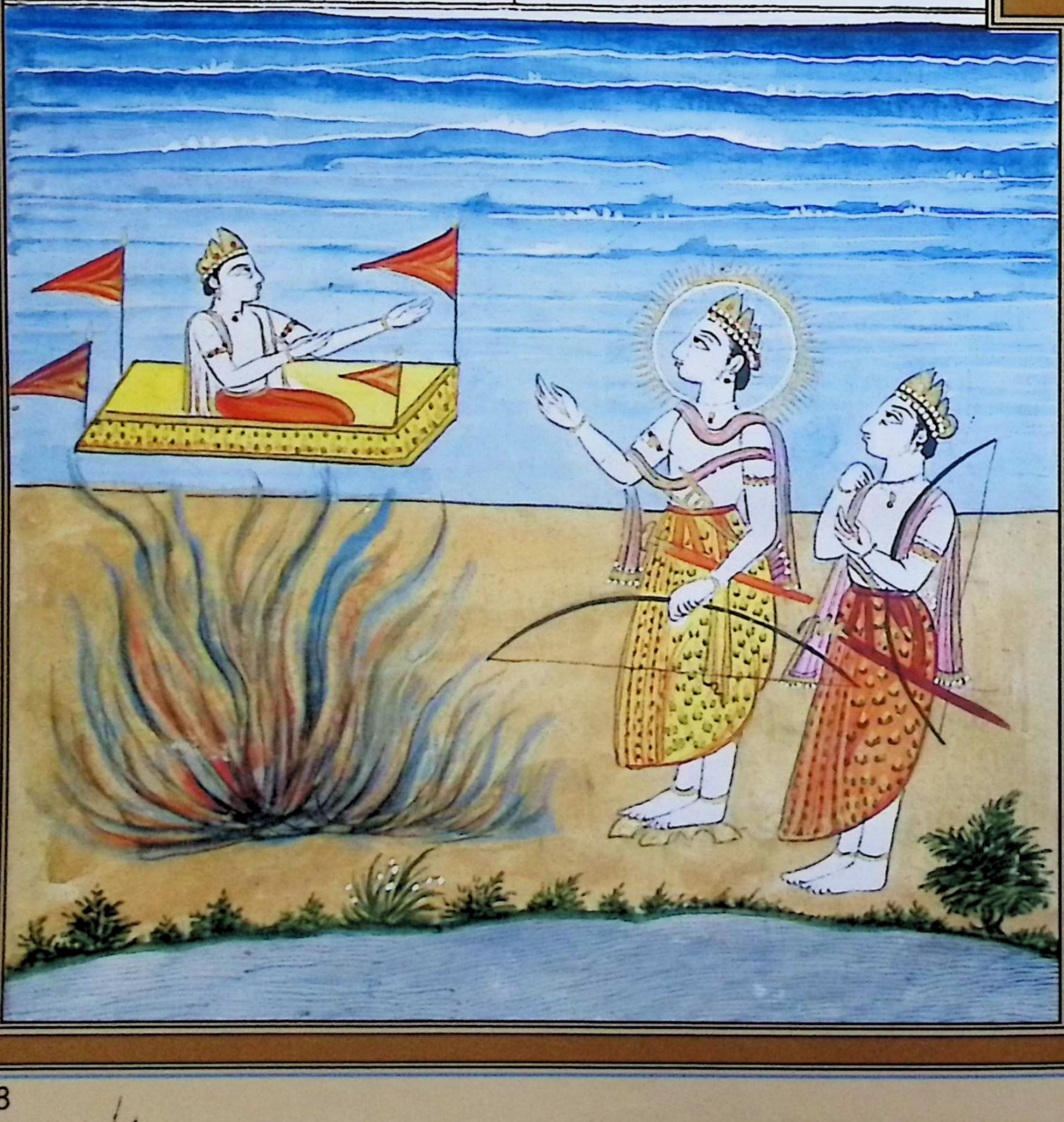

और मैं जानता हूँ कि कोई चीज उसकी सामर्थ्य से बाहर नहीं है। उसके आदेश से बन्दर सुमेर पर्वत पर जाकर और पाताल में जो सातवीं धरती है जाकर उसको तोड़-फोड़ करके राक्षसों की हत्या कर देंगे और तुम्हारी पत्नी को तुम्हें लाकर दे देंगे।

वृक्षों का चित्र- उनके नीचे हिरन और भाँति-भाँति के फल हैं राम और लक्ष्मण ने कबन्ध की चिता बनाकर उसे जला दिया और कबन्ध आग के ऊपर अच्छे रूप में विमान पर सवार बैठा है और इशारे (संकेत) से राम से वार्ता कर रहे हैं।

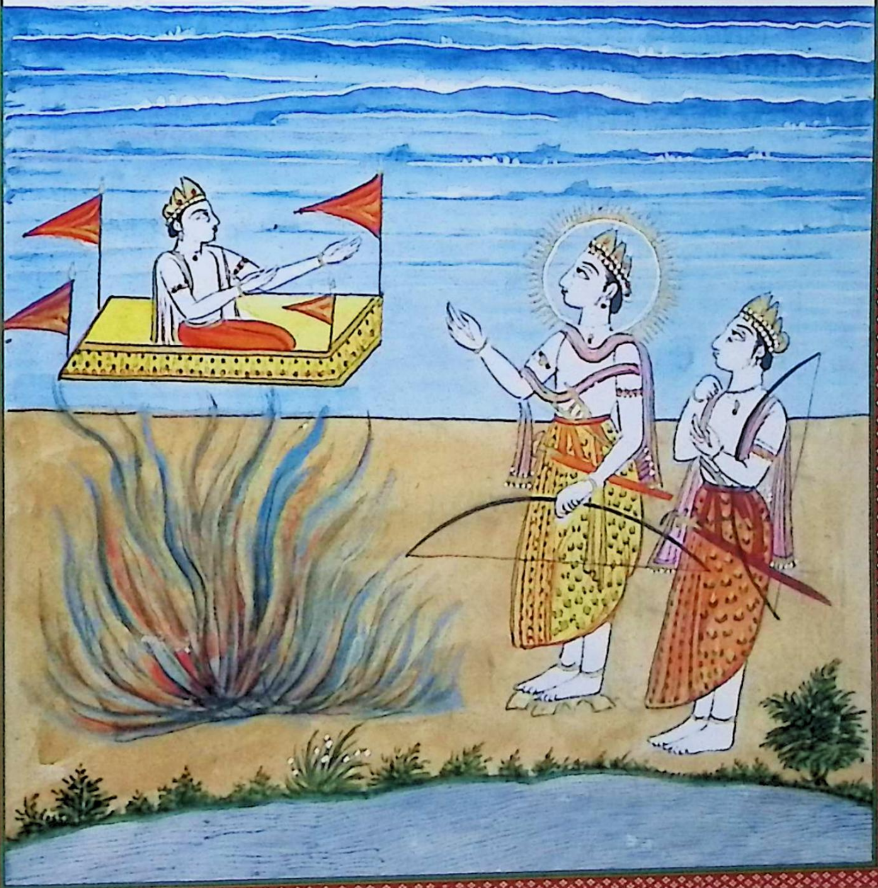

سرگ بیان مکان سگریو کبندهٔ تدبیر یافتن سیتا بیان کرده باز برام و لچهمن گفت اینک را ابنگان
سگریو خوب است که بطرف پرتچی یعنی مغرب درختان گل کرده اند بلوت و پربال و پنس
و ملچبه و نگروده و کنشوک و اشوتهه یعنی پپل و کرنکا و مدهوکا و چوت یعنی انب و چندن
همه را از راه بردارید یا بر زمین اندازید و ثمرات آنها بخورید و بروید و صحراها و کوهها
طی کنید در راه پنپا نام پهکرنی می آید آب صاف و نیلوفر انجا بسیار است و هنس و بلوه
و کرونچ و سارس انجا اند و در پنپا جانوران آبی را کشته لچهمن ترا خواهد داد در شاکهای
آنجا گوشت را خورده و خوشبوهای گلها شمیده آب سرد خواهی نوشید و در برگهای سبز
مانند بیدوریه لچهمن ترا خواهد نوشانید و غار و کوهها و گراز و غیره صحراییان و باشندگان آن
غیر از
پنپا را لچهمن ترا تماشا خواهد کنانید که از آن تماشا غم تو کم شود و باقسام گلها را آنجا که مالا را آنها
هیچکس نکرده و آنجا سکهای یعنی شاگردان متنگ رکهه بسیار بودند هرگاه آنان برای
گرو خود ثمرات خوردنی می آرند قطرات عرق از وجود شان می افتند و با مالاهای در تال آب
زیب آور میشوند از آن میان هم هنوز یک پرستش کننده عورت است شبری نام دارد
دراز عمر او ترا که مانند دیوتا هستی دیده زود بدیولوک خواهد رفت ای رام به پنپا
برو و نزدیک پنپا اشرم مایل بمغرب خواهی دید و شالی ها خواهی دید که برنج آن کوبا
در تهالی پخته اند بعده صحرا فلفل دراز و فلفل گرد خواهی دید و انجا برنج ها بسیار است و انجا فیلان

सर्ग-७१

सुग्रीव के भवन का वर्णन

कबन्ध ने सीता को पाने की योजना बताकर फिर राम और लक्ष्मण से कहा ''यह मार्ग सुग्रीव के घर की ओर सीधा जाता है। पश्चिम की ओर फूलदार वृक्ष उगे हुए हैं बलवस्त, परबाल, कटहल, बकजूदह कनशक पीपल, करनगा, मधुका, आम और चंदन उन सबको मार्ग से उठा लो या पृथ्वी पर डाल दो और उनके फल खा लो, और बढ़ते जाओ, वन और पर्वत पार करो, मार्ग में पम्पा नाम की पुषकरिणी आती है वहाँ स्वच्छ जल और नीलोफर बहुत हैं और वहाँ हँस, बालू, क्रौंच, और सारस है। पम्पा में जल पक्षी मारकर लक्ष्मण तुमको देंगे उनका माँस खाकर और फूलों की सुगन्ध सूंघकर तुम ठण्डा पानी पियोगे, और फिरोजे के समान हरे पत्तों में लक्ष्मण तुम्हें पिलायेंगे और गुफा पर्वत आदि पम्पा के जल निवासियों और बनवालों का लक्ष्मण तुम्हें दृश्य दिखायेंगे। इस दृश्य से तुम्हारा दुख कम हो जायेगा। और वहाँ के भाँति-भाँति के फूलों की माला पहनायेंगे जिनकी माला किसी ने न पहनी होगी और वहाँ मतंग ऋषि के शिष्य बहुत रहते हैं। जिस समय वह अपने गुरु के लिये खाने के फल लाते हैं तो उनके शरीर से बूँदे गिरती हैं और मालाओं के साथ तालाब की सुन्दरता बढ़ाते हैं। उनमें भी एक पुजारी स्त्री है जिसका नाम शबरी है, जिसकी आयु लम्बी है, वह तुम्हें देखकर कि तुम देवता के समान हो शीघ्र देवलोक में चली जायेगी। हे राम ! पम्पा में जाओ और पम्पा में तुम आश्रम को पश्चिम की ओर झुका देखोगे, और वहाँ शाली देखोगे जैसे जैसे उनके चावल को थाली में पकाया गया है। उसके बाद वन फल फल दराज़ और फलफल कर्द देखोगे वहाँ चावल बहुत है

ومار نمیرسند که زور ریاضت متنگ رکهه همچنان است درانجا بوده انواع طیور و اشجار
دیده غم تو دور خواهد شد و قریب رکهه موک و پنپا سوودر کاردهن نام کوهی است که
ششماران حراست آنجا میکنند آنجا رادیت ازیافتن برکرده بالای آن عذاب کار
نتوانست رفت اگر شاید برآید پس راچهسان اورا از دور برداشته میبرند انجا مکانیست
که هرکه آنجا رفته نخسپید و در خواب هرجا که زری بیند بیدار شده همانجا برود و زر بیابد واین
دهرم تپسویان و دانایان و جاک کنان و برهمنان آراسته اند و آواز ششماران
هنوز هم درانجا شنیده میشود که در جنگل متنگ و پنپا میباشند و آنجا فیلان با آب آلوده
مانند سحاب میگذرند آنجا آب خواهی خورد و غسل خواهی نمود و گرد دور خواهی کرد
و در آن کوه کوها یعنی غاریست عظیم و بر دروازه او از سنگ کلان بند است
و بر در آن تالاب کلان است و درختان بسیار اند و درانجا سکریو بوزنه
با چهار وزیر بوزنه میماند گاه گاهی بالای آن کوه برآمده می نشیند و برادر او
اورا از غصه بدر کرده با او دوستی کن و تو کنبده اینقدر گفته و از رام و لچهمن
جدا شده با مالا و روشنی چون آفتاب بفلک رفت و گفت برائی برآمدن مقصود او

بروید و از کنبده رخصت شده هر دو برادر روانه شدند درینجا هم صورت درختان
د کوه و گلها رنگارنگ بر درختان طایران اقسام اقسام و زیر درخت وحوش مثل اهو

वहाँ हाथी और साँप नहीं पहुँचते हैं क्योंकि मतंग ऋषि की तपस्या का बल ऐसा ही है। वहाँ रहकर और विभिन्न प्रकार के पक्षी और वृक्ष देखकर तुम्हारा दुख दूर हो जायेगा। ऋष्यमूक और पम्पा के निकट सोदूरकारधन नामक एक पर्वत है छः साँप जिसकी सुरक्षा करते हैं वहाँ कोई पापी नहीं जा सकता है। यदि कोई चाहे तो प्रकट हो सकता है लेकिन राक्षस उसको दूर से ही उठाकर ले जाते हैं।

वहाँ एक स्थान ऐसा है कि जो भी वहाँ जाकर सोता है और स्वप्न में कोई खज़ाना देखता है तो जागने के पश्चात् वहाँ जाता है और धन पाता है। इस धर्म को तपस्या करने वालों, जानने वालों और यज्ञ करने वालों तथा ब्राह्मणों ने सुसज्जित किया है। वहाँ छः साँपों की आवाज भी सुनाई देती है जो पम्पा में मतंग के वन में रहते हैं। वहाँ हाथी पानी में नहाकर सनजाब के समान चले जाते हैं। वहाँ तुम पानी पियोगे और स्नान करोगे और इस पर्वत में एक बड़ी सी गुफा है उसका द्वार एक बड़े पत्थर से बन्द है। उसके द्वार पर एक बड़ा तालाब है और बहुत से वृक्ष हैं वहाँ सुग्रीव बन्दर अपने चार बन्दर मंत्री के साथ रहता है। कभी-कभी उस पर्वत के ऊपर जाकर बैठता है उसे उसके भाई ने क्रोध में देश निकाला कर दिया है। उससे दोस्ती करो।" दानव कबन्ध यह कहकर और राम व लक्ष्मण से अलग होकर माला तथा सूर्य जैसे प्रकाश के साथ आसमान पर चला गया और कहा कि अपना उद्देश्य पाने के लिये जाओ और फिर दोनों भाई कबन्ध से विदा होकर चले गये।

यहाँ भी विभिन्न प्रकार के फूलों, पर्वतों और वृक्षों का चित्र है वृक्षों पर विभिन्न प्रकार के पक्षी बैठे हैं और वृक्ष के नीचे वन पशु हैं जैसे हिरन, शेर, हाथी, खरगोश और भैंस। राम व लक्ष्मण तरकश बाँधे और हाथ में धनुष लिये हुए जा रहे हैं।

و شیر و فیل و خرگوش و جاموس و رام و لچهمن ترکش بسته و کمان در دست گرفته میروند

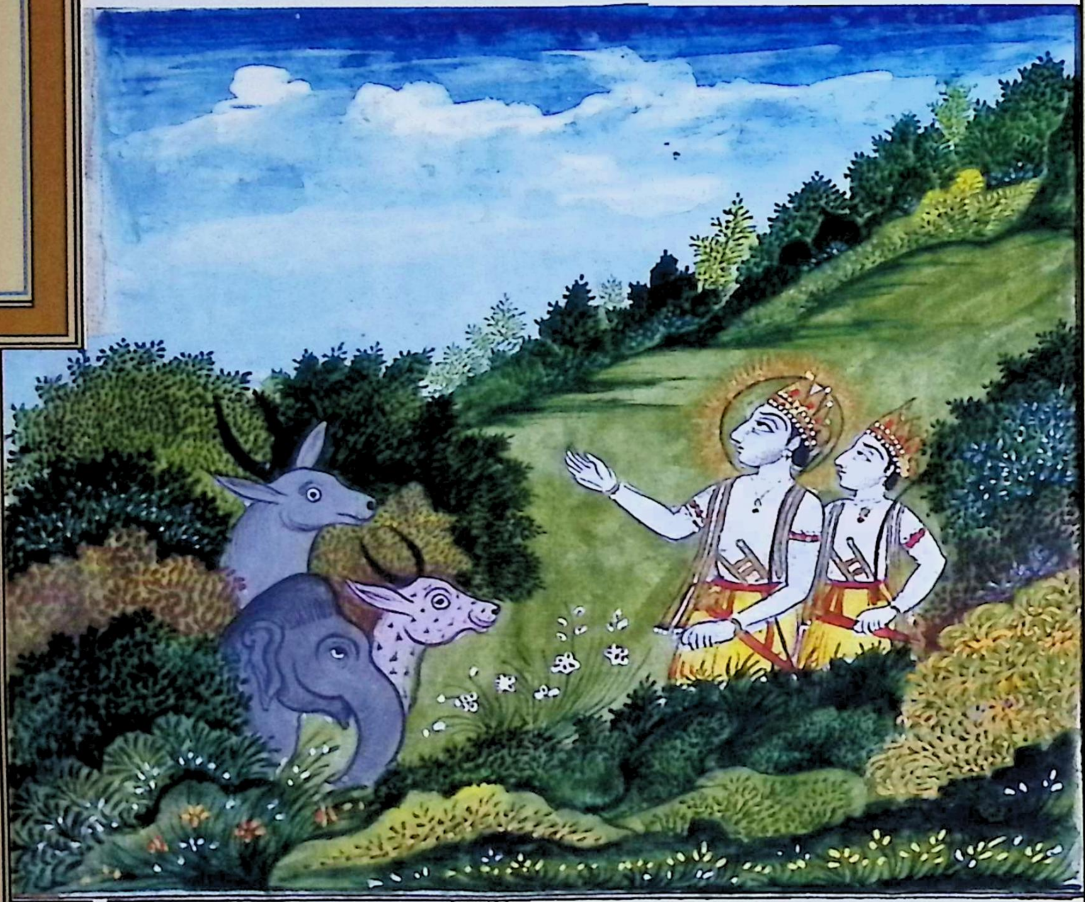

سرگ دیدن سُشبری بعد رفتن کبند بر آسمان بسواری بمان ایشان را عجب آمد

القصه بسمت پنپا روان شدند جبال احجار و اشجار را باراده دیدن سگریو طی کردند یک شب

بالای آن کوه منزل کرده پگاه بر خاسته راه دراز قطع کرده رفته بسمت مغرب پنپا

نشستند ناگاه نزدیک آشرم سُشبری را نظر کردند آنجا بار درختان مطبوع مشاهده نمودند

نزدیک سُشبری رفتند او دست بسته بر خاست و پای رام گرفت و لچهمن را نیز

सर्ग-७२

शबरी का देखना

कबन्ध का विमान की सवारी पर आकाश की ओर जाना उनको आश्चर्य लगा। अतः वे पम्पा की ओर चले, और सुग्रीव को देखने के विचार से पर्वत, पत्थर और वृक्षों को पार किया एवं एक रात्रि उस पर्वत पर निवास किया। प्रातः उठकर लम्बा मार्ग छोड़ा और चलते हुए पश्चिम की ओर पम्पा में बैठे। अचानक उन्होंने आश्रम के निकट शबरी को देखा। वहाँ उन्होंने प्राकृतिक वृक्षों के फलों का निरीक्षण किया फिर शबरी के निकट गये। वह हाथ बाँधकर खड़ी हो गयी और राम का पाँव पकड़ लिया तथा लक्ष्मण के भी पाँव पकड़े।

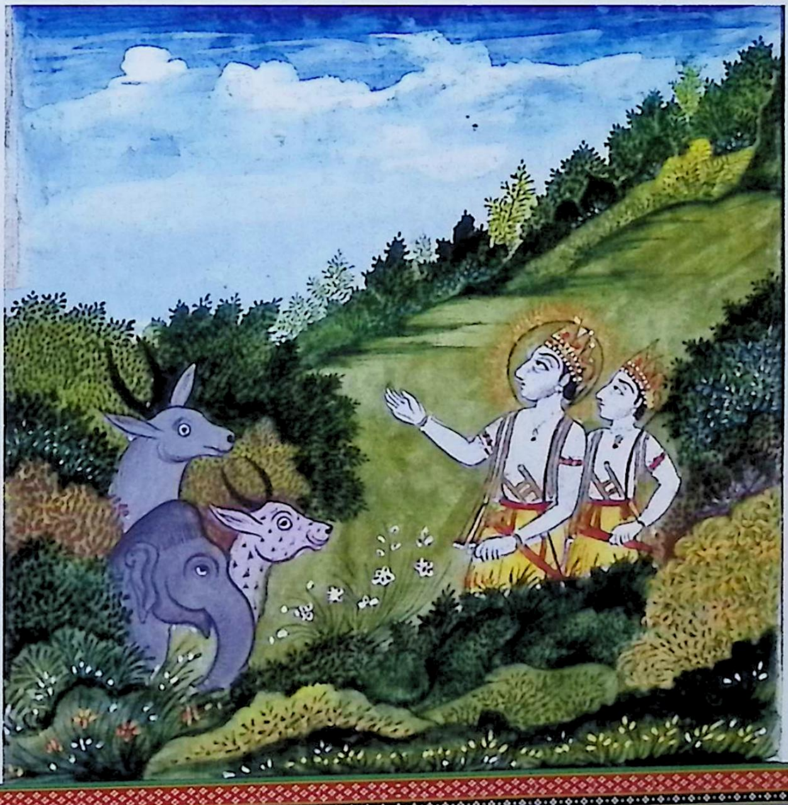

رامچندر از و پرسید چه ترا عارضی از ریاضت نیست و چه ترا ریاضت درافزو
هست چه ترا غصهٔ سنخر است و موه یعنی جهان را هیچ دانستن سنخر نو هست
چه ترا انچه میخواهی قریب یافتن هست چه ترا دل بآرام است چه ترا خدمت گرو یعنی پیر
نفع بخش است چه ترا غذی حاصل است چه ترا حواس سنخر است چه ترا با مهر که بسیده و
دل برخاست چون رام اینقدر پرسید شبری گفت از دیدن تو ریاضت من همه نفع
بخشید و هنگام رسیدن تو بچتر کوت مُن هایی که آنان را بیشتر پرستیدن میسر شده بود
و پرستیده بودم در آسمان بر بمان که تعریف آنها بگفتار در نیاید سوار بوده بمن گفتند
که رامچندر با لچهمن در بمکان خواهد آمد پرستش او خواهی کرد که از پرستش او ترا پیوسته
و همیشه سرگ مکان خواهد شد و من برائی تو انواع انواع ثمرات جنگلی جمع کرده ام این را
بگیر رام گفت از دنو بزرگی تو شنیده ام خواهش دیدن تو میداشتم امروز دیدم شبری
این را شنیده بهر دو برادر گفت صحرا مرا تماشا بکنید که به متنگ بن مشهور است همین جا
گرو من از منتر در آتش هوم میکرد اینک بیدی است که دیوتا ها را پرستش کرده و گلها گذرانده
از زور تپسیا یعنی ریاضت هنوز گلها را اینجا پژمرده نمیشوند و کُش یعنی گیاه خشک نمیشود
از سبب برت چون تصدیع کشیده بودند برائی غسل نتوانستند رفت بنابران هفت ساگر در ینجا
حاضر کردند اینجا غسل کردند و بگل یعنی پیرایه پوست بر درختان نهادند این قصه را بسیار سال

रामचन्द्र ने उससे पूछा - ''क्या तपस्या से तेरे लिये कोई चीज़ मना नहीं है और क्या तेरी तपस्या बढ़ी हुई है ?क्या क्रोध तेरे वश में है ?और क्या तुझे संसार को तुच्छ समझने पर नियंत्रण है ?क्या ऐसी बात है कि जो तू चाहती है उसको निकट पाती है ?क्या तेरा हृदय संतुष्ट है ?क्या ऋणी की सेवा तेरे लिये लाभकारी है ?क्या तुझे निर्धनता प्राप्त है ?क्या तेरा मन महर्षि और सिद्ध से हट गया है'' ?राम के यह पूछने पर शबरी ने कहा ''तुम्हारे देखने से मेरी तपस्या से पूरा लाभ हुआ और तुम्हारे चित्रकूट पहुँचने के समय मुनि ने जिनकी पूजा करने का अवसर प्राप्त हो चुका था, और मैंने पूजा था, आकाश पर विमान में सवार होकर, जिसकी प्रशंसा संभव नहीं है, से कहा कि रामचन्द्र इस स्थान पर लक्ष्मण के साथ आयेंगे। तुम उनकी पूजा करो क्योंकि उनकी पूजा से तुमको सदा के लिये स्वर्ग प्राप्त होगा। और मैंने तुम्हारे लिये विभिन्न प्रकार के जंगली फल एकत्र कर रखे हैं उन्हें ले लो। राम ने कहाः दानव (कबन्ध) से मैंने तुम्हारी प्रशंसा सुन रखी है। तुम्हें देखने की इच्छा थी आज देख लिया। शबरी ने यह सुनकर दोनों भाईयों से कहाः मेरे वन का अवलोकन करो जो मतंग वन के नाम से प्रसिद्ध है मेरे गुरू इसी मन्त्र से आग में होम करते थे। यह देखो वेदी है जिसमें देवताओं की पूजा की है और तपस्या के बल से फूल छोड़े हैं यहाँ के फूल अभी तक मुरझाए नहीं हैं और घास सूखती नहीं है व्रत के कारण चूँकि उन्होंने कष्ट उठाये थे इसलिये स्नान के लिये नहीं जा सके। इस कारण सात समुन्द्र यही उपस्थित कर दिये गये। उन्होंने स्नान किया और छाल (वल्कल) को वृक्षों पर

کذشته هنوز ساکرهای بی آب هستند سوائی این دیکر بزرکی و تپها بسیار است
آن منشیران مرا کفتند که رام و لچهمن هرکاه بیایند پرستش آنان بکن رامچندر کفته او را
بطور لطیفه قبول کرد بعده شبری کفت ترا دیدم اکر بفرمائی این کالبد را بکذارم
که آرزوی دیدن آن منیشران دارم رام از روی شادی کفت میدانم که پیروی بعد ازان
شبری باجازت رام در آتش بسوخت و با کالبد نوراکین بسرک رفت آنجا که مهرکیه بودند و رام

هم بسمت پنپار وان شد درینجا صورت درختان و بران طایران و زیر آنها آشرم شبری
وکرد و پیش او کلبها و کیاه سبز و تالاب خورد و رام و لچهمن مسلح استاده و شبری کالبد خود را سوخته

باصورت چون دیوتا در بمان بفلک میرود

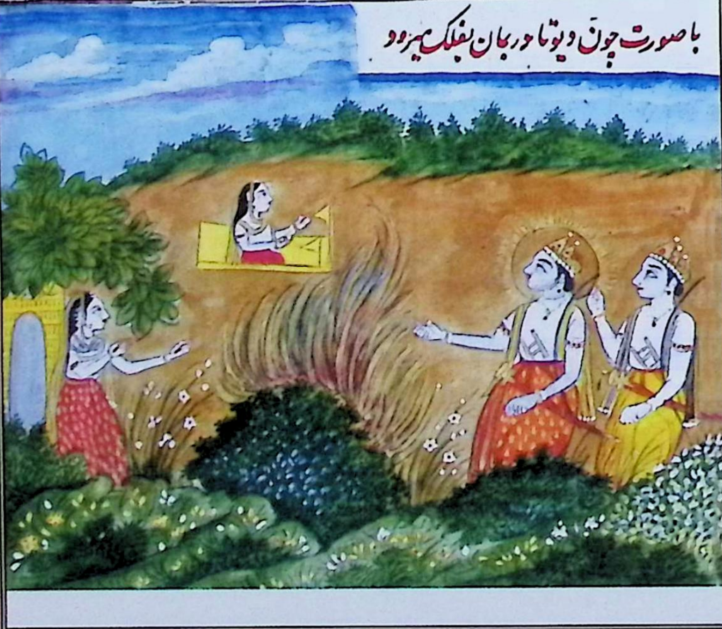

डाल दिया।

इस घटना को बहुत सारे वर्ष बीत चुके हैं। अभी तक समुद्र बिना जल के है। इसके अतिरिक्त दूसरी बड़ाई और तपस्या बहुत है। उन मुनीश्वरों ने मुझसे कहा कि राम और लक्ष्मण जब भी आयें तुम उनकी पूजा करना। रामचन्द्र ने इस बात को आश्चर्य के समान स्वीकार किया। उसके बाद शबरी ने कहा- मैंने तुम्हें देख लिया। यदि कहो तो यह शरीर त्याग दूँ क्योंकि मुझे उन मुनीश्वरों को देखने की इच्छा है। राम ने प्रसन्नता से कहाः मैं जानता हूँ तुम जा रही हो उसके बाद शबरी ने राम की आज्ञा से अपने को आग में जला डाला। तेजस्वी शरीर के साथ स्वर्ग को चली गयी जहाँ वे महर्षि थे और राम भी पम्पा की ओर चले गये।

वृक्षों का चित्र- जिन पर पक्षी बैठे हुए हैं और उनके नीचे शबरी का आश्रम है और उनके चारों ओर फूल, हरी घास और छोटा तालाब है राम और लक्ष्मण हथियार सहित खड़े हैं और शबरी अपने शरीर को जलाकर देवता के रूप में विमान में आकाश पर जा रही है।

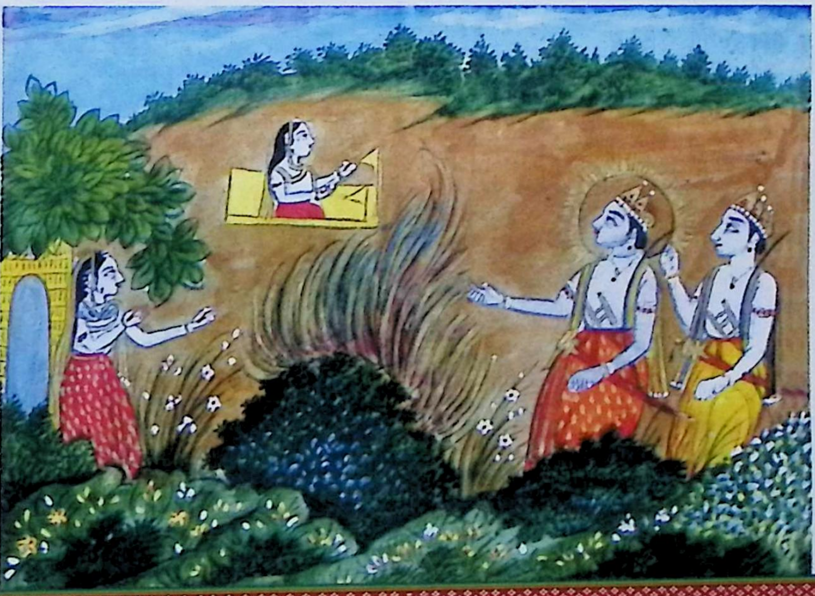

کیفیت دیدن پنپا بعد رفتن شبری بسرگ رامچندر خوبی او در خاطر کرده بلچهمن ملتفت
در بنمکان دیدم که آهوان و شیر و طیوران جمع اند و این تیرتهه که مجمع هفت ساگر یعنی سمدر است
دیدم بل غسل کردم و ترپن نمودم رنج ما همه رفت و راحت آمد و دلم شاد شد و فی الواقع دل کس
همه میگوید خواه بد خواه نیک اول در دل میگذرد بعد از آن در گفتار می آید درینجا توانم چندی ماند
و با تو تلاش سیتا خواهم نمود اگر ازینجا بروم در ده هزار سال هم چنان طبیعت خوش نخواهد شد
و تو همراه من بیا که در پنپا نزدیک رکهبه موک کوه برویم القصه ازانجا روانه شده زود به پنپا رسیدند
دیدند که مردمان نیک در پرستش اند و انواع درخت اند و نیلوفر خوشبو سرخ و سفید و رنگ آمیز هم
هستند و طیور مانند کٹشت و چکوک و کوتیک و پوتر پربه و بهردواج وغیره آواز میکنند و مینا از آب سرد
دیدند خوشوقت شدند خاطر او اول برآمدن سیل کم نمود و انواع اشجار و طیور تماشا کردند چنانچه تیر و برن سستی از

ببینند درینجا **صورت** تالاب **های** پنپا پر از **ماهیان** و نیلوفرها و **صورت** رام و **لچهمن**

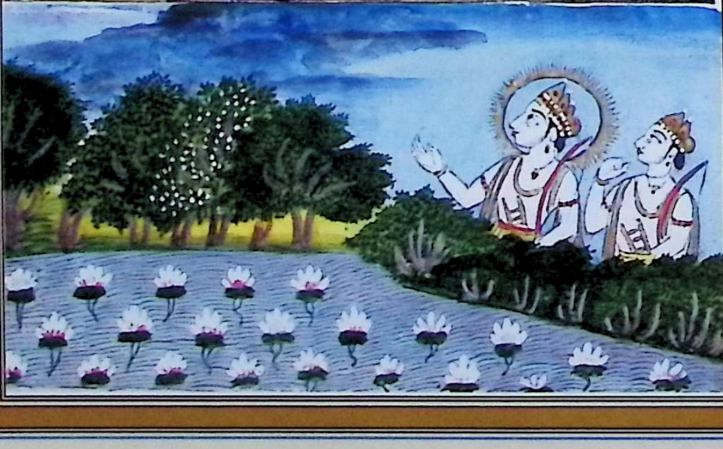

सर्ग-६३

पम्पा को देखना

शबरी के स्वर्ग में जाने के बाद उसके गुणों का विचार मन में लाते हुए रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा ''मैंने उस स्थान पर देखा कि हिरन, शेर और पक्षी सब एक साथ हैं और मैंने यह तीर्थ जो सात समुन्द्रों का संग्रह है, देखा, बल्कि स्नान किया और तर्पण किया हमारा सारा दुख दूर हो गया। और सन्तुष्टि मिली मेरा मन प्रसन्न हो गया। वास्तव में मनुष्य का हृदय सब कुछ कह देता है चाहे अच्छा चाहे बुरा। बात पहले हृदय में आती है उसके बाद मुख पर आती है मैं यहाँ कुछ समय रह सकता हूँ। और तुम्हारे साथ मिलकर सीता की खोज करूँगा। यदि यहाँ से चला जाऊँ तो दस हजार वर्ष में भी मन ऐसा प्रसन्न नहीं होगा और तुम मेरे साथ आओ कि पम्पा में ऋष्यमूक पर्वत के निकट जायें।

अतः वहाँ से विदा होकर अति शीघ्र पम्पा पहुँच गये देखा कि अच्छे लोग पूजा में व्यस्त हैं विभिन्न प्रकार के वृक्ष हैं और सुगन्धित रंग बिरंगे लाल सफेद नीलोफर भी है और पक्षी जैसे गौरैय्या पंचूक, कोतक और पोत्र आदि जैसे हैं और सब चहचहा रहे हैं और उन्होंने पम्पा सरोवर को ठंडे पानी से भरा देखा। प्रसन्न हुए और उनका मन नहीं भरा उन्होंने वहाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष और पक्षी देखे जैसे कि तहरूबरन सरस्ती को देखते हैं।

पम्पा के तालाब का चित्र- जो मछलियों और नीलोफर से भरे हैं और राम लक्ष्मण का चित्र

سرگ اضطراب رامچندر رام آن تالاب هائی پنپا را پر از ماهیان و نیلوفرها دیده متعه بهمز
تماشا کرد و غسل نمود و دانسته آنجا یعنی جان خود و لچهمن گفت ببین درختان را که مانند کوه
خوشنمایند و انواع گلها میبارند و نیله و زرد گیاه زیاده تر خوشنماست از یاد کردن
تصدیع حال بهرت و رفتن سیتا آتش غم من که منطفی شده بود باز مشتعل شد از باد سرد مرا
کام یعنی شهوت غلبه میکند و خوشبوی گلها کار میکند و گلها مانند باران میبارد و از باد
جابجا بصحرا می افتند و از باد سرد و صندلی بهرمر آواز میکنند و بر قله کوه ها درختان بادام فاکل
پر باهم شده اند و گلها زرد کرنکا ببین چنانچه مردم در ماه بسنت جامه زرد طلایی بوشند
و بسنت هم آمد و مرا از غم سیتا دل میطپد و تن غمگین را شهوت غلبه میکند و کوکلا
شیرین آواز شهوتم میکشد و آهو که بر ماده میدود و فیل که بر تلاب یعنی ماده خود میرسد
مرا غم سیتا می افزاید و طاوس با ماده هائی خود در کوه جمع آمده است عورت طاوس را
خود را چهس نبرده است درین ایام گل که از محبوبه خود دورم این گلها بچشم خار مینماید
و بهرمر منجری یعنی شاخچه گل انب را چنان میبوسد که کامی یعنی مغلوب شهوت با زن نو
صحبت کند درین زمان که آخر هنگام ششرت است جمیع طیور در خرمی اند و از مستی و معانقت
سخن میسرایند محبوبه نوجوان نیکو چشم من از من جدا شده مسکینه در قید دیگران افتاد
و در غم و الم متفکر و متردد است چنانچه منم این باد خنک که میوزد هر گاه او را یاد میکنم مرا

सर्ग-७४

रामचन्द्र की व्याकुलता

रामचन्द्र ने पम्पा के उन तालाबों को मछलियों और नीलोफर के फूलों से भरा देखकर लक्ष्मण के साथ खेल किया और स्नान किया और आत्मा अर्थात् अपने प्राण जानने वाले लक्ष्मण से कहा "वृक्षों को देखो जो पर्वत के समान सुदूर हैं और भाँति-भाँति के फूल बरसा रहे हैं और नीली पीली घास अधिक भली है। भरत का कष्ट और सीता को याद करने से मेरे दुख की आग जो बुझ गयी थी पुनः भड़क उठी। ठंडी हवा के कारण मुझ पर शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा बढ़ रही है और फूलों की सुगन्ध भी अपना काम कर रही है। वर्षा के समान फूलों की वर्षा हो रही है और वायु के कारण जगह-जगह वन में फूल गिर रहे हैं सरों की हवा के कारण बुलबुल मुझे आवाज दे रही है, पर्वत की चोटियों पर विभिन्न प्रकार के फूल बिखरे हुए हैं और सरसों की पीले-पीले फूल, देखो, ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे लोग बसन्त ऋतु में पीले और हरे वस्त्र पहने हों। बसन्त ऋतु भी आ चुकी है और सीता के दुख से मेरा मन व्याकुल है और मुझ दुखी के मन में कामवासना की इच्छा प्रबल हो रही है और मधुर वाणी वाली कोयल मेरी सहवास की इच्छा को और अधिक बढ़ा रही है। हिरन जो मादा पर चढ़ता है और हाथी जो अपना मादा तक पहुँचता है यह सब मेरे भीतर सीता वियोग के दुख में वृद्धि करते हैं। मोर अपनी मोरानियों के साथ पर्वतों पर एकत्र हैं। मोर की स्त्री को स्वयं राक्षस नहीं ले गया है। इस फूलों की ऋतु में जबकि मैं अपनी प्रियतमा से दूर हूँ। यह फूल मेरी आँखों में काँटे लगते हैं शाखें आमों के बौर को ऐसा चूमती है जैसे कि कोई शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा रखने वाला मनुष्य अपनी नई पत्नी के साथ संभोग करता है, उस समय जबकि रात्रि का अन्तिम पहर है। पक्षी मस्ती में चहचहा रहे हैं और आपस में बातें कर रहे हैं। मेरी सुन्दर नेत्रों वाली प्रियतमा मुझसे अलग होकर दूसरों की कैद में पड़ी है और दुख में चिन्तित एवं ग्रसित हैं जैसे कि मैं हूँ यह ठण्डी हवा जो चल रही है जिस

(मूल पाण्डुलिपि में पृष्ठ न० ५१३ पर दो न० लिखे हैं ५१३ और ५२५)

چون آتش مینماید واینک سیه زاغ برکوه در عشرت است هرجا که رنده سیتاست
این طیور مرا خواهد برد و چکرواک چنین اواز میکند و با اهلیه خود بعیش است که او بمقدار
چشم زدن دور نمیکند و شیر با عورت خود همچنانست من بی شعور پای خود را بپای او
چرا نه بستم واین آواز طیور در کلها به بین که مرا بکام می افزاید و در پنپا اقسام اشجار
سبزش
به بین و چون آفتاب در وقت صبح نیلوفر در آب مینماید و کلها تلک سرما را یاد کرده از خوف
غنچه شده اند واین آب خوش با پدم و انبل و هنس و کارندواک خوشنماست و چکرواک
و اقیال و آموان در انجا حاضرند واین نیلوفر که میشکفد مرا چون چشم سیتا نماید
واین باد از میان موی یعنی کیسر نیلوفر می برآید مانند دم سیتا دلخواه است
واینک بطرف عقب راست پنپا کلها کرنکا که خوشنمایند و بادهات ها که در کوه هستند
جمع میشوند و کلها که میبارند زیاده تر خوشنماست و اینک که دور نیست کنشوک یعنی
کل پلاس چون شعله مینماید و کردیکر د پنپا کیتکی و سندوار خوب اند در ماه مادهو یعنی بیساکهه
کرنکا کل میکند و چوت یعنی انب و پاتل و کو و دار و مچکوند و ارجن عقب کوه بنظر می آیند
و چنپا و اودالک او سرسن و سشب و دهو و شالملی و بکل یعنی مولسری و نیس
و رکت مال و چندن ای صندل و تلک و تال و تمال و ناک بلی یعنی پان و اودنبر
زرد
یعنی کولر و کدنب و پاربهدرک و کبجو و آمله همه شکفته اند و اقسام کیاه ها و نهال

समय उसको याद करता हूँ।

मुझे अग्नि के समान अनुभव होती है। यह काला कौआ पर्वत पर वहाँ आराम से है जहाँ कि सीता को ले जाने वाला है। यह पक्षी मुझको वहाँ ले जायेंगे। चक्रवाक ऐसी आवाज़ निकाल रहा है और अपनी पत्नी के साथ सुख में है कि वह उसको पलक झपकने के समय तक भी अपने से दूर नहीं करता है। शेर भी अपनी पत्नी के साथ ऐसा ही है। मैंने अपने पाँव या उसके पाँव क्यों नहीं बाँधे। और फूलों के अन्दर पक्षियों की यह आवाजें देखो जो मेरी सहवास की इच्छा को बढ़ा रही हैं। और पम्पा में विभिन्न प्रकार के वृक्ष देखो। सूर्य प्रातः ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि नीलोफर पानी में। फूल जाड़े की सर्दी को याद करके भय के कारण कली में परिवर्तित हो गये हैं। यह पानी पदम अनील, कारिन्दवाक के साथ भले लग रहे हैं और चक्रवाक, हाथी और हिरन वहाँ पर हैं। यह नीलोफर जो खिलता है मुझे सीता की आँख के समान लगता है और यह हवा जो नीलोफर के बीच से निकलती है हृदय प्रिय सीता की सांसों की भाँति है। और पम्पा के पीछे की ओर करनगा के फूल जो भले मालूम होते हैं और घाडू के साथ जो पर्वतों में है एकत्र है। जो फूल बरसते हैं और अधिक भले हैं और यह देखो पलाश का फूल जो अधिक दूर नहीं है शोले के समान लगता है और पम्पा के चारों ओर केतकी और सन्दरा बहुत है वैशाख के महीने में करनगा फूल खिलता है और जोत अर्थात् आंख ...

و سرخ و غیره بسیار شده اند و درین ایام که بسنت رت است همه را دوست

گلهاست و آب پنپا را که خنک است ملاحظه کن و چکرواک و کابندوا و کرنج و پلو و خوک و آهو بر وجع اند

شوقم می افزایند و یاد آن نوجوان نیلوفر رو شهوتم افزاید و آهوان با ماده های خود یکجا اند

و من از آن آهو چشم جدایم و یک چکرواک تا بودکی میگذراند که نظر او پیوسته در سایه ماده میباشد

و من احمق را پند میدهد که عورت خود را نگاهبانی چنان باید کرد و تو نکردی ای سیتای طلا رنگ تازه

کجائی و اخلاصت کجا و مهربانی تو کجا غم مرا نمیدانی بدین روش اضطراب کنان بر پنپا نظر افکنان

با لچهمن میرفت هرگاه نزد رکهه موک رسیدند بوزنه هائی آنجا که تابع سگریو بودند رام و لچهمن را دیده

هریک وحشت خوردند • تمام شد ارن کاند سیوم

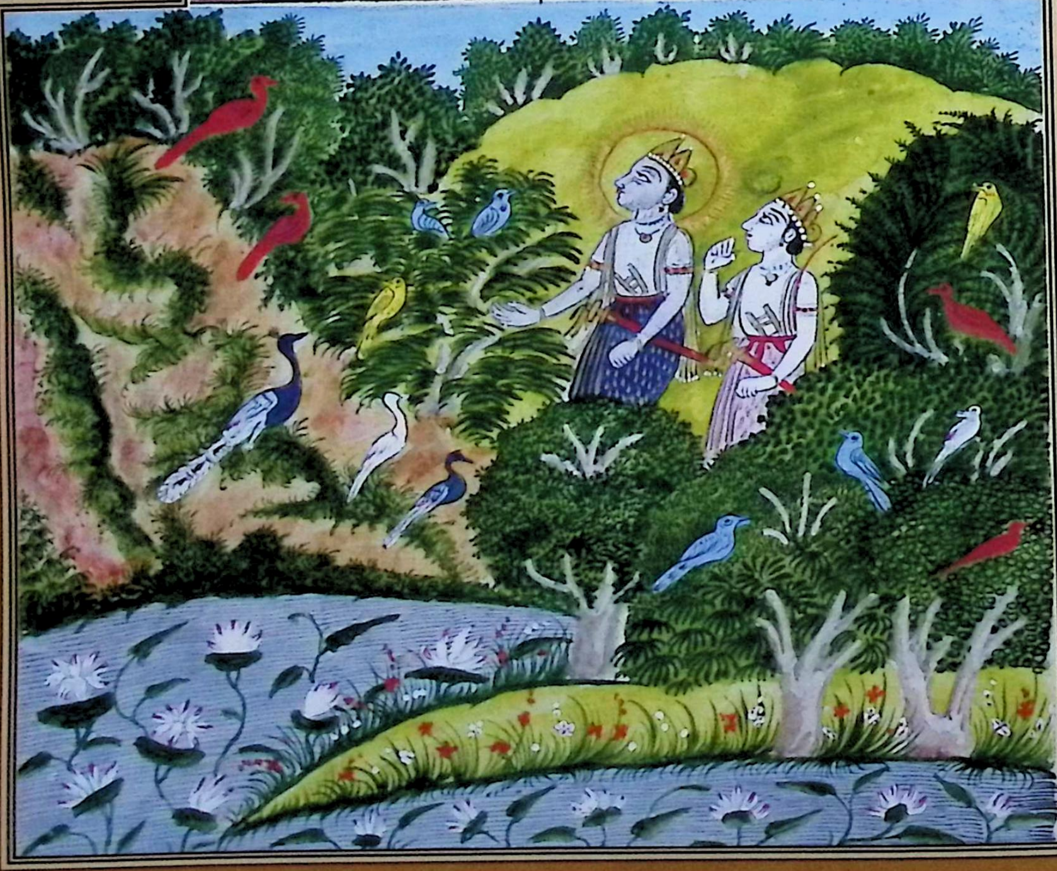

.... और लाल आदि बहुत हैं। और इन दिनों कि बसन्त की ऋतु है सबके लिये फूलों का धन है और पम्पा का जल जो ठण्डा है और चक्रवाक कारिन्द, करुंज, पीलू सब एकत्र हैं यह सब मेरी जिज्ञासा बढ़ा रहे हैं। नीलोफर जैसे मुखड़े वाली उस नवजवान युवती की याद में वृद्धि कर रही है और हिरन अपनी हिरनियों के साथ इकट्ठे हैं और मैं उस हिरन जैसी आँखों वाली से अलग हूँ और चक्रवाक आराम से जी रहा है जिसकी दृष्टि सदा मादह की छाया में रहती है। वह मुझे शिक्षा दे रहा है कि अपनी पत्नी की रक्षा इस प्रकार करनी चाहिए। लेकिन तुमने नहीं की। ऐ सोने जैसे रंग वाली सीता। तू कहाँ है और तेरी दया कहाँ है ?तू मेरा दुख नहीं जानती है।" राम इसी प्रकार दुखी चिन्तित पम्पा पर दृष्टि डालते हुए लक्ष्मण के साथ चल रहे थे जैसे ही ऋष्यमूक के निकट पहुँचे वहाँ के वानर जो सुग्रीव के अधीन थे राम और लक्ष्मण को देखकर उनमें से प्रत्येक डर गया।

तीसरा अरण्यकाण्ड (अर्थात् काण्ड तीन) सम्पूर्ण हुआ।

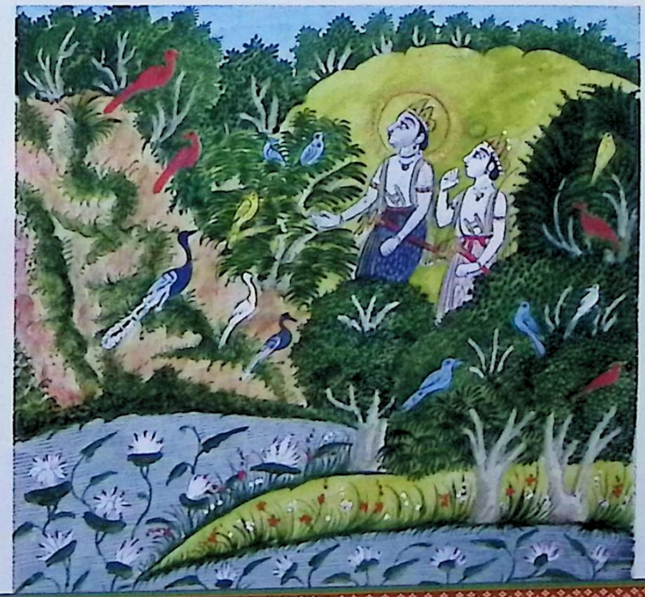

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

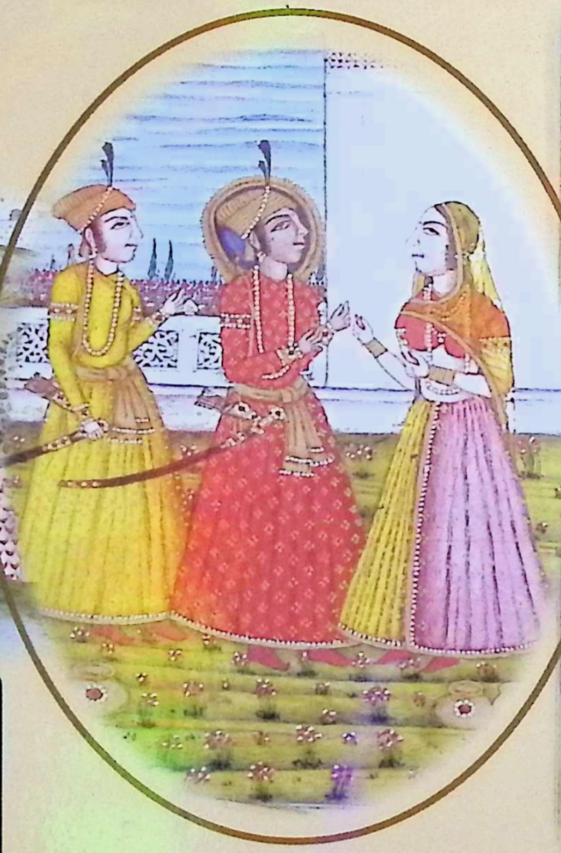

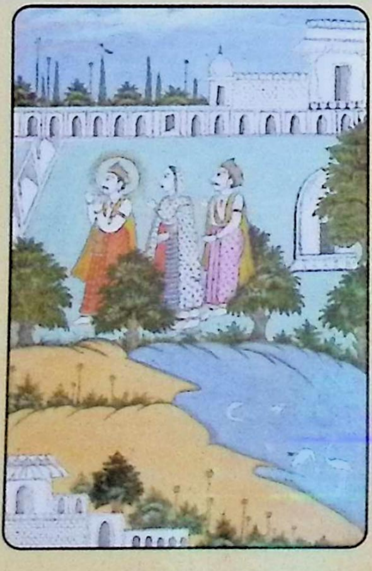

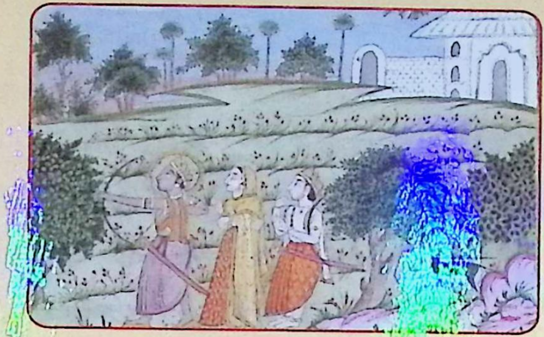

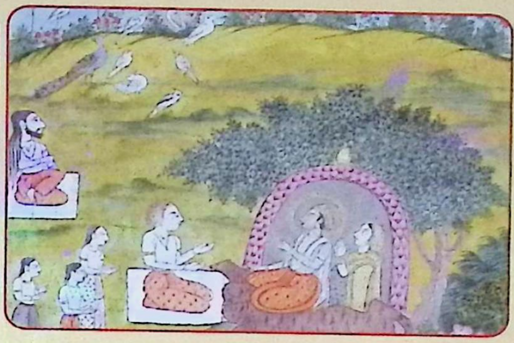

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

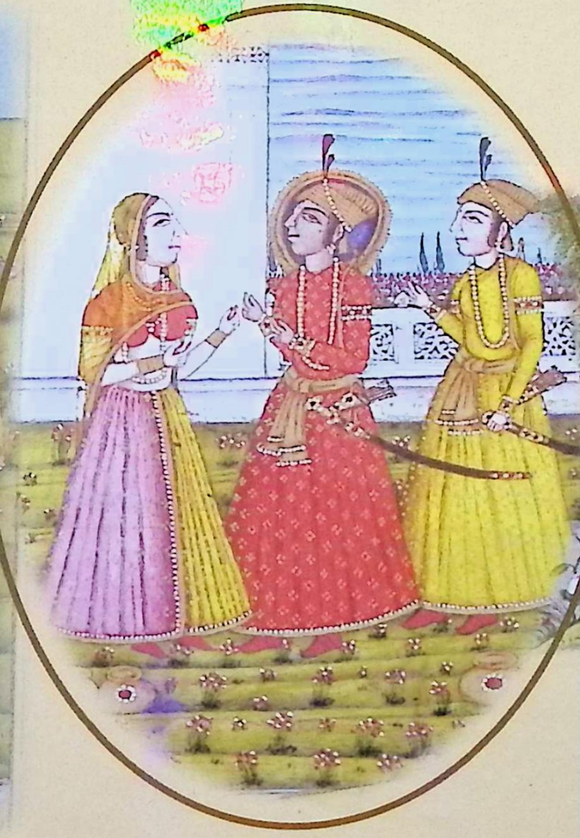

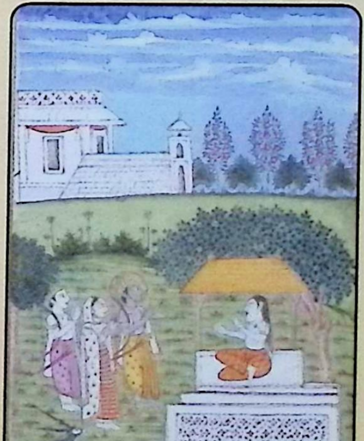

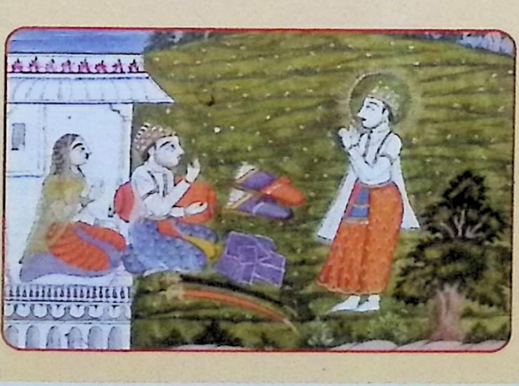

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

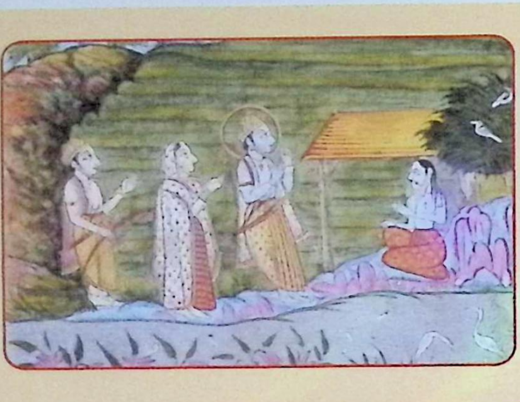

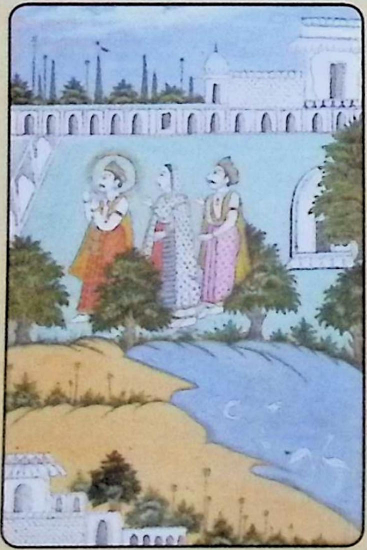

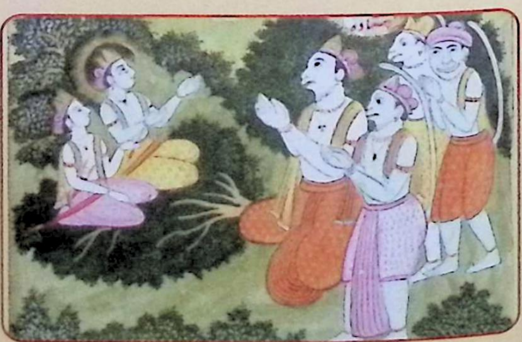

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

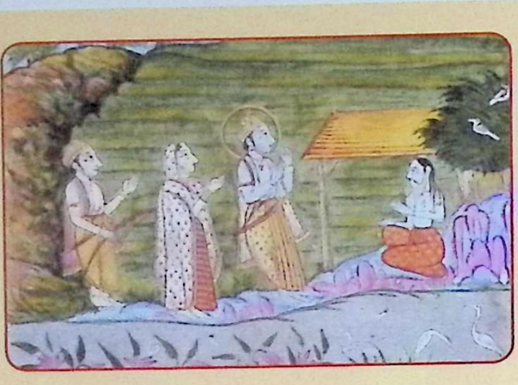

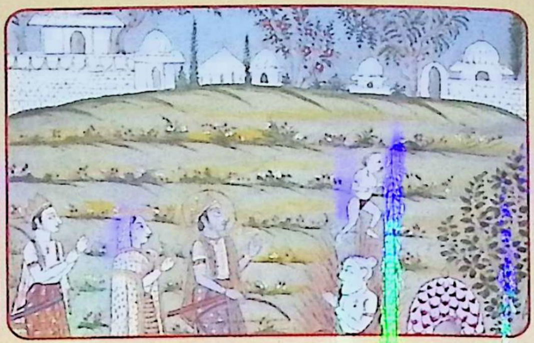

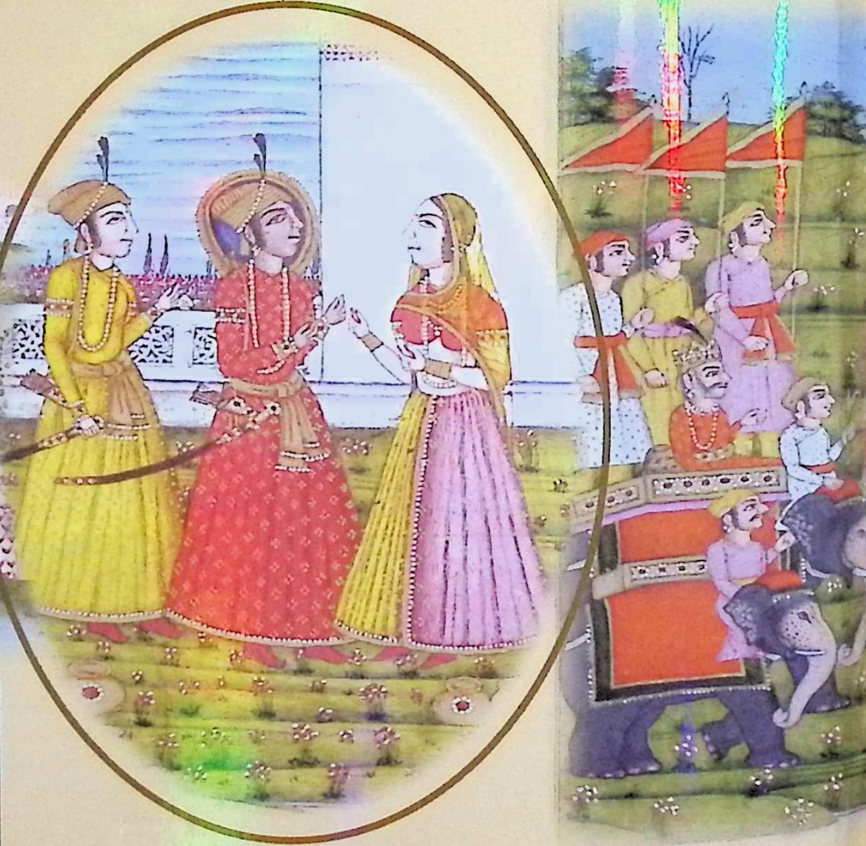

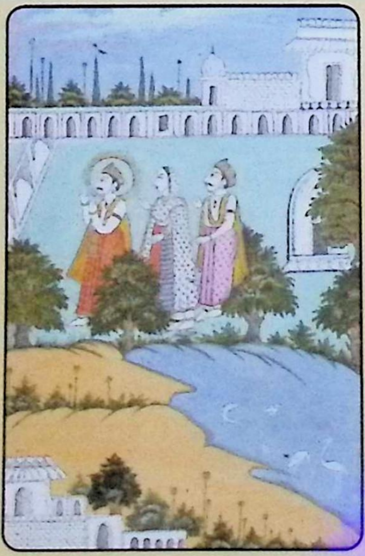

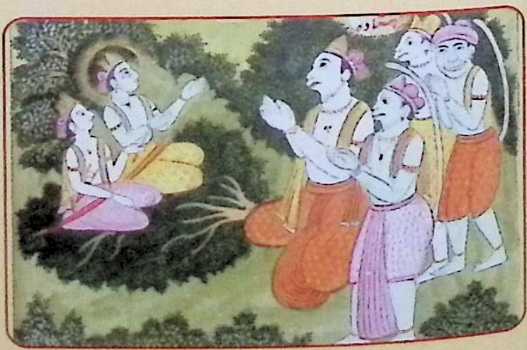

रामायण

(वाल्मीकि)

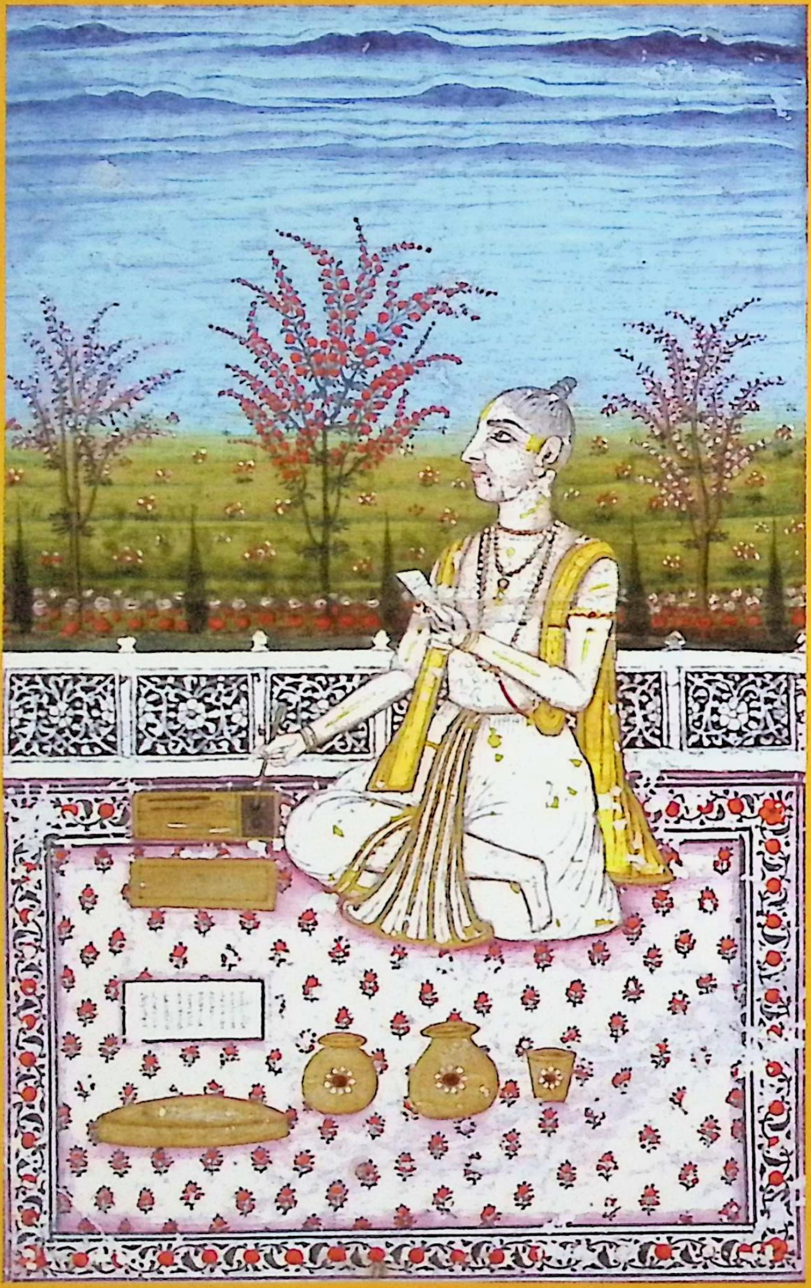

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR -244 901 (U.P.) INDIA

रामायण

(वाल्मीकि)

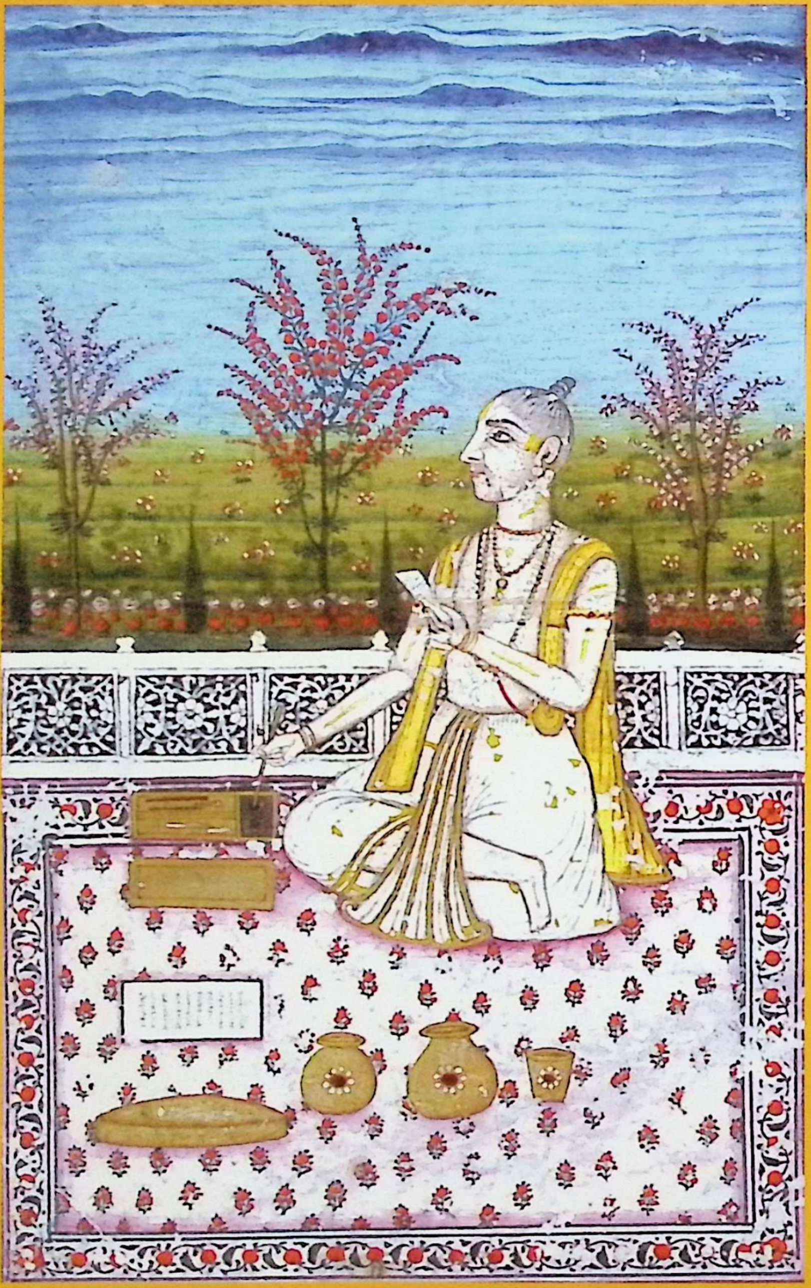

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR -244 901 (U.P.) INDIA